जमनालाल बजाज-सेवा-ट्रस्ट,
की ओर से
मार्तण्ड उपाध्याय
द्वारा प्रकाशित

पहली बार : १९५२

मूल्य
दो रुपये

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स
दिल्ली।

सपादक का निवेदन

जमनालाल बजाज-सेवा-ट्रस्ट माला का यह छठा पुष्प पाठकों की सेवा में रखते हुए हमें बड़े हर्ष का अनुभव हो रहा है।

जो पाठक पूज्य बापूजी विनोबाजी और पिताजी (जमनालालजी बजाज) के संबंधों को जानते है तथा उनके पत्र-व्यवहार से परिचित है उन्हें ज्ञात है कि किस प्रकार पिताजी के हृदय में बापू ने पिता के रूप म और विनोबाजी ने गुरु के रूप में प्रतिष्ठा पाई थी। बापू के उस रूप के दर्शन 'बापू के पत्र' नामक पुस्तक में मिलते है। उसी प्रसंग की दूसरी पुस्तक तैयार हो रही है।

प्रस्तुत पुस्तक से पता चलता है कि किन संकल्पो एवं साधना के द्वारा पिताजी ने विनोबाजी को गुरु के रूप मे प्राप्त किया और किस प्रकार अपने परिवार के लोगों को विनोबाजी के संपर्क में लाकर उनका मार्ग-दर्शन प्राप्त कराते रहे, उनकी शिक्षा में नवीन चेतना और नवीन प्रेरणा लाने का प्रयत्न करते रहे।

पुस्तक तीन खडों में विभक्त है—

१ पत्र-व्यवहार, २ डायरी के अश और ३ संस्मरण

पहले खंड मे विनोबाजी का बजाज-परिवार के साथ हुआ पत्र-व्यव हार है। दूसरे में पिताजी की डायरी में से विनोबाजी-संबंधी अंशो का संकलन है। तीसरे में बजाज-परिवार के छोटे-बड़े सदस्यो द्वारा लिखित विनोबाजी से संबंधित संस्मरण है।

कुछ छूटे हुए पत्र पिताजी के जीवन की प्रमुख घटनाएं तथा संस्मरण और लेखकों के परिचय परिशिष्ट म दे दिये गए है।

इस संपूर्ण सामग्री का चयन इस दृष्टि से किया गया है कि विनोबाजी

के अनंत व्यक्तित्व के कुछ पहलू पाठकों के सम्मुख सहज रूप में उपस्थि
हो जायें ।

आदर्श गुरु की खोज पिताजी के बचपन की साध थी । जीवन मे
व्यक्ति के संकीर्ण दायरे से निकालकर सार्वजनिक कैसे बनायें ? जो सम
मिला है उसे कैसे सार्थक करें ? बापू और विनोबाजी के मार्ग-दर्शन
पिताजी इन तथा ऐसे ही अन्य प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करते रहे और उन
स्वतः ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ अपने आस-पास के समाज को भी
विचारों तथा अनुभवों से लाभान्वित कराते रहे ।

पूज्य विनोबाजी भावे ने अपनी व्यस्तता में से समय निकालकर इ
ग्रन्थ की भूमिका लिखने की कृपा की । हम उनके कृतज्ञ हैं । साथ ही ह
उन स्नेही बन्धुओं के भी आभारी हैं, जिन्होंने इस पुस्तक की तैयारी
हमारी सहायता की ।

—रामकृष्ण बजा

भूमिका

बीज मिट्टी में छिप जाता है, तभी वह वृक्ष के रूप में धीरे-धीरे विकसित होता है। वृक्ष के पीछे छिपकर धीरे-धीरे कलिका की मधुरता झूमती जाती है। कलिका के पीछे छिपा रहता है तभी फूल आगे आकर डोलने लगता है। फूल के पीछे रहकर ही धीरे-धीरे रसभरा फल वृक्ष पर उच्च स्थान प्राप्त करके अपने आत्मवैभव की परिसीमा से सबको मुग्ध कर देता है। ओहो! छिपने में कैसा मजा है! इस मजे को वही जानता है जो छिपने का गूढ़ रहस्य सचमुच समझता है। छिपते-छिपते अंतरतम सत्य का रहस्य जीवन में केंद्रित होने लगता है, यही वैराग्य है। अरे, वैराग्य क्या उदासी है? नहीं बिलकुल नहीं। यह अंतर्मुख अवस्था ही वैराग्य है। इसी अवस्था में 'य इदं परमं गुह्यं'—भगवान का परम गुह्य—प्राप्त होता है। क्या छिपने में भय है? नहीं-नहीं कदापि नहीं! यह तो बिलकुल निर्भय अवस्था है। उस अवस्था में नवनवोन्मेषशाली सत्य की सुवर्ण कुंजी हाथ लगती है। सत्य का सार-का-सार सार—अनंत आनंदमय अवकाश—हाथ में आता है। फिर क्या देखना है! इसलिए ऐ जीव सारी प्रकटता (बाह्य दृष्टि) छोड़ दे और मधुरता की मधुरता अंदर-ही-अंदर प्राप्त करता जा।

पूज्य विनोबाजी के अंतर्मुख साधनामय जीवन का अमृतदीप कैलासवासी पूज्य जमनालालजी जैसे महाभक्तों के सिवा कौन प्राप्त कर सकता था! आज पूज्य विनोबाजी के पीछे हजारों लोग दौड़ते हुए दिखाई देते हैं क्यों? उनकी विख्याति के कारण ही न? कुछ लोग ऐसा सवाल पूछते हैं। सवाल की भूमिका भले ही पूर्ण सत्य न हो लेकिन इसमें शक नहीं कि यहां शक की गुंजाइश है। लेकिन जब पूज्य विनोबाजी बिलकुल अप्रकट थे तब स्व. जमनालालजी ने उन्हें पहचाना। वह तो समयातीत बात थी। पहचाना ही नहीं अपितु अपना संपूर्ण हृदय समर्पित किया।

अपने लाड़ले बच्चों को, एक के पीछे एक उन्हींकी शिक्षा-दीक्षा में वह सौंपते गए। जिनकी भी विरोधी टीका होती रही हितैषियों का जितना

भी हितोपदेश मिलता रहा, तो भी उन्होंने उसकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। ध्यान नहीं दिया, इसलिए नहीं कि वह व्यवहार कुछ कम समझते थे बल्कि इसलिए कि उनकी पूज्य विनोबाजी की अध्यात्म-शिक्षा में पूरी श्रद्धा थी।

बी. ए. पास करने के बाद नरेन्द्रनाथ (स्वामी विवेकानंद) रामकृष्ण परमहंस के पास गये थे तो रामकृष्ण परमहंस ने पूछा, "और भी परीक्षा पास करेगा न?" तब नरेन्द्रनाथ ने जवाब दिया, "गुरुदेव, अबतक जो कुछ पढ़ा है, वह सब कैसे भूल जाऊं, इसकी कोई तरकीब हो तो बताइये।" इसी तरह जगत की सारी उपाधियां पूज्य विनोबाजी के अध्यात्मज्ञान के सामने तुच्छवत् हैं, ऐसा जमनालालजी ने माना था और वह यह स्पष्ट रूप में मानते थे कि आजकल की शिक्षा में आध्यात्मिक ज्ञान तो छोड़ ही दीजिये, बल्कि जो विषय पढ़ाये जाते हैं, वे भी बिलकुल कच्चे और केवल परीक्षा पास करने की दृष्टि से ही पढ़ाये जाते हैं। विद्यार्थियों के ऊपर तो शिक्षा का एक भारी बोझ ही लादा जाता है। लेकिन शिक्षा का ध्येय तो बोझ से पूर्ण मुक्ति—'सा विद्या या विमुक्तये' होना चाहिए।

उन दिनों में तो कोई-कोई ऐसा भी कहनेवाले थे कि देखो, विनोबाजी के आश्रम के विद्यार्थी या तो कबीर जैसे संत होंगे या गंवार, बुद्धू, बैल और न जाने क्या-क्या होंगे! कबीर बनेगा तो एकाध बन सकता है, बाकी तो अवश्य बेवकूफ बनेंगे—ऐसा ही कुछ उस समय पूज्य विनोबाजी की आश्रम-शिक्षा के बारे में लोगों का, खास करके बड़े गिने जानेवाले लोगों का, ख्याल था। लेकिन जमनालालजी व्यवहार-ज्ञान में किसीसे तनिक भी कम न होते हुए भी विचलित नहीं हुए और अपने बच्चों को बार-बार पूज्य विनोबाजी के पास सम्बन्ध का काम रखने के लिए प्रेरित करते रहे। निदर्शनस्वरूप इस विभाग (पत्र-मोती) के सम्बन्ध में जमनालालजी की डायरी के कुछ अंश दिये गए हैं। उसमें पाठक देखेंगे कि जमनालालजी ने सिर्फ अपने बच्चों को पूज्य विनोबाजी की अध्यात्म-शिक्षा में रहने का प्रोत्साहन दिया, इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने खुद जेल में और बाहर बिलकुल एक जिज्ञासु विद्यार्थी की हैसियत से पूज्य विनोबाजी का सत्संग प्राप्त किया और उनके ग्रंथों का परिशीलन किया।

जमनालालजी की पुत्र-पुत्रियां भोली-भाली थीं और ऐसे ही भोलेपन से उन्होंने आश्रम-शिक्षा को स्वीकार किया ऐसी भी बात नहीं है। इस पत्रपोथी के संग्रह में कमला नेवटिया के लेख में पाठक देखेंगे कि जो बात जैसी लगी वैसी स्पष्टरूप से कहने में उन्होंने किसी प्रकार की हिचक नहीं की। कमला नेवटिया के बाद के कमलनयन बजाज के लेख में भी पाठक देखेंगे कि कमलनयन बजाज किस तरह से पूज्य विनोबाजी के साथ तर्क करते जाते थे। श्रद्धा होते हुए भी तर्क करने में वह जरा भी कमी नहीं रखते थे। यहां एक प्रसंग याद आता है। शायद रामायण के वर्ग में या प्रार्थना-प्रवचन में पूज्य विनोबाजी ने इस आशय का वाक्य कहा—"रामचंद्रजी बरसों तक अरण्य में घूमते रहे, हवा, वर्षा, धूप सेवन करते रहे, इसी कारण उनका रंग श्यामल हुआ।" तुरंत कमलनयन ने पूछा "फिर लक्ष्मणजी का रंग गोरा क्यों रहा? वह भी रामचंद्रजी के साथ थे।" यह प्रश्न पूछते ही पूज्य विनोबाजी और सारा श्रोतृवृन्द एकदम हँस पड़ा। प्रश्न का जवाब मुक्त-हास्य में मिल गया। गुरु-शिष्यों के ऐसे मनोहर वार्ता-प्रसंगों की कोई गिनती ही नहीं थी। ऐसे वार्तालापों का इस पत्रपोथी में नाम-निशान भी नहीं मिलेगा। उफनता हुआ दूध थोड़ा-सा ही तो होता है। सारा-का-सारा दूध बर्तन में ही रह जाता है। इस किताब की ऐसी ही स्थिति है।

उपरोक्त बात से ऐसी कल्पना करना ठीक नहीं होगा कि पूज्य विनोबाजी के ये बजाज-शिष्य तर्क-प्रधान ही थे उनमें श्रद्धा कम थी। सचमुच वे इतने नम्र थे कि शायद ही इतनी नम्रता कहीं प्रकट हुई हो। इस किताब के प्रथम दल में मदालसा अग्रवाल के नाम बहुत-से पत्र दीख पड़ेंगे। इतने पत्र मदालसाजी की परम नम्रता के सिवा लिखे जाना असंभव था।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥

भगवद्वाक्य हमेशा ही इस कथन की पुष्टि करता आया है। इन पत्रों में मदालसाजी की भक्ति-मग्न व्याकुलता—या कमजोरी भी कुछ कह सकते हैं—प्रतीत होगी लेकिन क्या किया जाय! व्याकुलता से ही तो भक्तिशास्त्र का उद्यान हमेशा हरा-भरा रहता है। पूज्य विनोबाजी का मदालसाजी न

'बाबा' नाम दिया था। आज सारा भारत उसी नाम से अपनी भक्ति प्रकट करता है।

लेकिन भक्ति की चरम सीमा—बजाज-परिवार की पूज्य विनोबाजी के प्रति जो भक्ति थी उसकी चरम सीमा—इस किताब के तीसरे खंड के अंतिम लेख में पाठक देख सकेंगे। जहां जमनालालजी और उनका संपूर्ण परिवार पूज्य विनोबाजी को गुरुतुल्य मानता रहा वहां जानकीदेवी बजाज (पूज्य माताजी) ने हमेशा पूज्य विनोबाजी को छोटे भाई के रूप में देखा और वैसा उनका वात्सल्य-विनोद का बर्ताव भी हमेशा पूज्य विनोबाजी के साथ रहा।

बजाज-परिवार का अहोभाग्य था कि उसको जमनालालजी जैसा सर्वश्रेष्ठ महाभक्त पारसमणि प्राप्त हुआ। इस पारसमणि का लाभ उठाकर बजाज-परिवार ने अपने जीवन का सेवा के सोने में परिवर्तन किया। आज पूज्य माताजी (जानकीदेवी) रामकृष्णजी बजाज श्रीमन्नारायण अग्रवाल ने बजाज-परिवार के सेवाकार्य के अलावा भारत के प्रथम पंक्ति के निष्काम सेवाकार्य करनेवालों में हमेशा आगे ही रहेंगे ऐसी योग्यता रखते हैं। कमला नेवटिया कमलनयन बजाज रामकृष्ण बजाज मदालसा अग्रवाल उमा अनसूया बजाज और अन्य परिवार सेवाकार्य में किसीसे पीछे पड़नेवाले नहीं हैं। परिवार के छोटे बच्चों को भी सेवा की कुछ-न-कुछ शिक्षा मिली है। इस किताब के अंतिम भाग में लिखे हुए छोटे बच्चों के संस्मरण बड़े रोचक और कौतुकास्पद हैं।

'स्वगुणैरविमलाः सिद्धये बोधकैः
भक्तिविनयतया वै वृत्तिरेवविवेक।'

जमनालालजी का यह आदर्श सामने रखकर सारा बजाज-परिवार अपनी-अपनी शक्ति और रुचि के अनुसार हमेशा अपने जीवन के साथ सेवा का चिंतन करता रहता है। भारत में दो मुख्य परंपराएं हैं—एक पितृ-परम्परा दूसरी गुरुपरम्परा। दोनों पवित्र परंपराओं का लाभ बजाज-परिवार ने उठाया और सेवायोग्यता प्राप्त की। इस किताब के पन्नों में पद-पद पर इसका दर्शन पाठक कर सकेंगे।

इसके अलावा सरल और निर्मल बड़े और छोटे श्रेष्ठ और सामान्य

ऐसे अनेक प्रसंग और व्यक्तियों की अस्फुट छाया इस पोथी में दीख पड़ेगी। यह किताब दूर से सुनाई देनेवाला एक स्वप्नगीत है। अपरिचित वाचक इस संगीत की संगति का अर्थ समझने में असफल ही रहेंगे। लेकिन वे इतना तो जरूर समझेंगे कि पूज्य विनोबाजी—बापूजी का आत्मज्ञान और जमनालालजी और परिवार की आत्मीयता का यह संगम-स्थान है। इस में इधर-उधर थोड़ा-सा भी गोता लगाकर अगर वाचकों को—आत्मज्ञान तो और, दूर की बात रही जाती है—लेकिन कुछ आत्मीयता का लाभ हुआ तो यह समझने में आपत्ति नहीं कि श्री रामकृष्ण बजाज द्वारा बड़े परिश्रम से प्रकट किये हुए इस विरल पत्रपोथी का कार्य जैसा सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ है, वैसा ही सफल हुआ है।

महादेव मंदिर, —शिवाजी न. भावे
धूलिया (महाराष्ट्र)

विषय-सूची

●

विनोबा के पत्र

पहला खण्ड

पत्र-व्यवहार

जमनालाल बजाज और उनके परिवार के सदस्यों के नाम

१ जमनालाल बजाज के नाम

१

सत्याग्रहाश्रम
वर्धा ११ १ २८

श्री जमनालालजी

साबरमती-आश्रम में ब्रह्मचर्य के संबंध म जो नियम बने हैं उस विषय में यहां भी सहज भाव से चर्चा होती रहती है। यहां भी वही नियम रहें ऐसा सहज ही लगता है तथा संस्था के व व्यक्ति के तेज की रक्षा भी उसी-में है यह स्पष्ट है। नियम बनाने से कुछ लोग चले जायंगे यह भी दिखाई देता है। तथापि नियमो का पालन करने में ही कल्याण होनेवाला है इसलिए नियम होना ही चाहिए, ऐसा लगता है। आपका भी विचार जानने की इच्छा है। आपकी राय जानने में आपकी स्थिति जरा कठिन हो जाती है। पर विद्यालय की दृष्टि से आपके विचार जानना आवश्यक भी है।

आपका स्वास्थ्य अब कैसा है? यहां कब आने का इरादा है?

विनोबा के प्रणाम

२

वर्धा ७-८ ३२

श्री जमनालालजी

यहां से यहां आना तबसे आपका 'मैंडेट' तोड़ने का प्रसंग नहीं आया। मेरी तबीयत यहां वैसी ही ठीक है। काम सदा की भांति चल रहा है।

भिन्न-भिन्न आश्रमों की कल्पना साथियों को पसंद आई है। पर अमल में लाने में काफी अड़चनें आने की आशंका है। फिलहाल तो नीचे लिखे अनुसार योजना कर रहा हूं।

१ धूलगांव—मनोहरजी
२ देवली—मोघेजी (केशवराव)

३ सिकापुर—गुलाराम बुआ
४ धुलिया—वल्लभस्वामी
५ पिंपरी—छोटेलालजी
६ रोहिणी—हीरालालजी
७ पामनी—रामदास बुआ (बहुत करके)
८ वर्धा—साथी लोग हैं ही।

स्थान तीन और होने चाहिए। गोपालरावजी फिलहाल घूमेंगे। इसी प्रकार बालकोबाजी भी।

बालक-बालिकाओं की शिक्षा नाना पुणताम्बेकर ने शुरू कर दी है। इस विषम काल में यथा-संभव संतोषदायक योजना यह है। कमलनयन आदि के बारे में आपसे बातचीत होगी ही। मैं उसकी जिम्मेदारी लूं तो आपको आनंद होगा और निश्चितता भी आयेगी यह मुझे मालूम है। मुझे यह स्वीकार करने में अड़चन भी नहीं है। लेकिन कमलनयन अब समझदार हो गया है और हम उसे केवल सलाह दे सकते हैं।

काम के दर्द के बारे में जो करना जरूरी हो उस ओर जरूर ध्यान दें। जिन-जिनसे पत्र-व्यवहार जारी रखना जरूरी है उनसे जारी रखा है। पत्र लिखने में हाथ में तकलीफ नहीं है। बापू को अभीतक पत्र नहीं लिखा है। लिखने का विचार है।

मैंने पिताजी को पत्र भेजे थे। लेकिन वे कुछ अर्से से इन दिनों आबू रहने चले गये हैं इसलिए मेरे पत्र उन्हें नहीं मिले। अब आबू के पते पर उन्हें सविस्तर लिखा है।

महालक्ष्मी रोज मेरे पास आती है। रामायण का अभ्यास चलता है। सुबह के वक्त आने-जाने में तीन मील का घूमना हो जाता है, यह अच्छा है। शाम को गांव के कुछ लोग आते हैं। उन्हें गीता के बारे में तथा कुछ और कहता हूं।

सारे साथियों को बाहर भेज दिया है। अपने पास किसीको नहीं रखा है। कुकर और चक्की दोनों को हाथ में लिया है। बीच-बीच में कोई-न-कोई आता रहता है।

'गीता-प्रवचन' की कापियों की ओर ध्यान देने का बिलकुल समय

नहीं मिलता। खास देखने के उद्देश्य से कापियों को पास रख लिया है। 'गीताई' की पहली आवृत्ति समाप्त हो गई है। दूसरी की तैयारी कर रहे हैं। प्रभाकर को प्रूफ देखने के लिए दिये हैं। छपना अभी शुरू नहीं हुआ।

मेहनत-मशक्कत जितनी हो सकती है उतनी करता हूं। बाकी तो सब भगवान पर है।

धूलिया में जो प्रेम-सम्बन्ध स्थापित हो गया वह जन्मभर के लिए बंध गया।

विनोबा के प्रणाम

३

वर्धा ९.११.३२

श्री जमनालालजी

आपके जन्म-दिन का स्मरण करके प्रातःकाल की प्रार्थना के बाद यह लिख रहा हूं। आज की मेरी प्रार्थना मानो धूलिया-जेल में हुई।

आपके स्वास्थ्य की मैं चिंता करना नहीं चाहता। मेरे लिए सब प्रकार की चिंता करनेवाला सर्वज्ञ विद्यमान है।

आपकी ओर से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष मिली हुई सूचनाओं पर, अपनी मनोवृत्ति के अनुसार, यथासंभव अमल करता हूं। लोगों के साथ पहले की अपेक्षा अधिक परिचय रखता हूं। पत्र भी थोड़े-बहुत लिखा करता हूं और हजामत भी नियमित बनाने की कोशिश करता हूं।

कमलनयन की शिक्षा का सवाल है। उस विषय में आपकी सूचना के अनुसार जिम्मेदारी उठाने की मेरी इच्छा होना स्वाभाविक है लेकिन डेढ़ सौ पौंड का बोझ उठाने में मैं कामयाब हो सकूंगा या नहीं यह तो भग वान जानें। उसके मन की सरलता और वृत्ति की सद्भावना मुझे मधुर प्रतीत हुई हैं लेकिन संयम की और विचारों की भी कमी देखता हूं।

प्रह्लाद और रामदास दोनों बच्चे मनोहरजी को अच्छे मिले हैं। पूर्व-जन्मों के किसी पुण्य से मनोहरजी को पावन संगति उन्हें मिली है। श्री रामेश्वरजी के पुत्र श्रीराम की व्यवस्था जमा रहा हूं। पोद्दानीस के साथ मेरा पत्र-व्यवहार हो रहा है।

महात्मा को भगवान ने असफलता दी है। भगवान की इस भेंट को भी

कल्याण-कारक बनाया जा सकेगा यदि वैसी दृष्टि होगी। इस बस्ती में निवास अभी थोड़ा कम प्रतीत होता है लेकिन हरि-प्रेम है और जिसमें हरि-प्रेम है उसके विषय में मुझे जो ममता महसूस होती है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। मैं वर्धा में जिस दिन रहा करूँ उस दिन सबेरे ७ से ८ का समय मैंने उसे दिया है। लिखावट जो मुझे मिल है, वही 'ज्ञानेश्वरी' शुरू की है। उस वक्त ओम् और तत्सत् भी गाती है।

मेरा स्वास्थ्य सदा की भांति उत्तम है। आरोग्यवान् और दुर्बल। बीच में पवनार में प्रातःकाल नदी पर स्नान करने का प्रयोग किया। इसलिए दो दिन जरा जुकाम हो गया था। उसका बिना मतलब विज्ञापन हो गया और आपका संदेशा पाने पड़ा।

लिखने का कुछ खास नहीं था फिर भी चार पंक्तियाँ लिखने की इच्छा हुई सो लिख डाली है।

विनोबा के प्रणाम

४

वर्धा, १८ ११ ११

पूज्य विनोबाजी,

कल आते समय चि० कमला से मालूम हुआ कि चि० मदालसा की भी इच्छा कुछ रोज वहाँ पहाड़ पर, अपनी माँ के साथ रहने की है। मैंने उससे पूछा तो उसने कहा कि विनोबाजी की अनुमति प्राप्त नहीं की है। अगर वह आना चाहे और आप भेजना चाहो तो उसे भी चिरंजीलाल बड़जाते के साथ भिजवा सकते हैं। अमरावती से एक ही बार सुबह सात बजे के लगभग में चिखलदरा के लिए मोटर निकलती है, और वह वहाँ ११॥ के करीब आती है। वहाँ की आबहवा ठीक मालूम देती है। मुझे तो एक ही रात में अच्छी शांति व दिमाग में हलकापन मालूम देने लगा है। मदालसा अगर आना चाहे और सोमवार को वहाँ पहुँच जाय तो ठीक रहेगा ऐसी इसकी माँ की इच्छा है।

जमनालाल बजाज का प्रणाम

५

वर्धा ८-८-३४

श्री जमनालालजी

आप यहां से शरीर से गये हैं फिर भी मन से यहां की चिंताओं में अभी घिरे हुए हैं ऐसा स्वामी के कल के पत्र से मालूम पड़ता है।

कन्याश्रम के बारे में निश्चित निर्णय अभी नहीं कर सका हूं। लेकिन जो भी निर्णय होगा धर्म-रूप ही होगा। चाहे संस्था का रूपांतर करना पड़े चाहे देहांतर मगर जो शुभ कल्याण-कारक और आवश्यक होगा वही करेंगे। इसलिए इस विषय में आप पूर्ण-रूप से निश्चित रह सकेंगे तो अच्छा होगा। संस्था में जरा दिक्कत पैदा हुई कि उसे भंग कर दें ऐसी मेरी वृत्ति नहीं है। बापूजी की तो कतई नहीं है। लेकिन भंग करना ही धर्म हो जाय तो फिर उसे भंग कर देने की भी वृत्ति रखनी ही चाहिए, नहीं तो सेवा करने की इच्छा होते हुए अ-सेवा हो जायगी। संस्था हमने आसक्ति से शुरू नहीं की है। जिस हेतु से शुरू की है, उस हेतु के संरक्षण के लिए जो करना उचित होगा वह करेंगे।

स्त्रियों की उन्नति के बिना हिन्दुस्तान की सारी उन्नति रुकी हुई है इसमें जरा भी शंका नहीं है। यह मैं निश्चित रूप से मानता हूं कि उसके लिए प्रयत्न करना अत्यन्त आवश्यक है। स्त्रियों की सेवा में ही भविष्य में मेरा उपयोग हो यह भी ईश्वर की इच्छा हो सकती है। धूलिया-जेल में किसे कल्पना थी कि स्त्रियों की सेवा करने का अवसर मुझे मिलेगा? लेकिन ईश्वर की वैसी मर्जी थी। जो कुछ हो ईश्वर की इच्छा से हो मेरी इच्छा से न हो। ईश्वर की इच्छा को मान लेने के लिए मैं तैयार रहूं तो मेरा कर्तव्य पूरा हो जाता है। यही आपका कर्तव्य है और यही औरों का।

आपका कल का पत्र अभी मिला। आपका यह कहना सही है कि किसी विशेष स्त्री के मिले बिना स्त्रियों की संस्था चलाना कठिन है। मैं इससे अधिक सूक्ष्म अर्थ करता हूं। विशेष स्त्री हम कहां से पायेंगे? ऐसी कोई होगी तो वह स्वयं ही काम क्यों शुरू नहीं करेगी? इसलिए स्त्रियों की सेवा माने ब्रह्मचर्य यह समीकरण मैं अपने मन में समझता हूं। उसी पर आघात हो तो कितनी ही बड़ी संस्था चलाकर भी क्या सेवा होगी?

भक्त मीराबाई एक बार वृन्दावन गई थीं। वहां एक संन्यासी आये हुए थे। उनके पास हजारों लोग उपदेश-श्रवण के लिए जाते थे। मीराबाई को भी श्रवण की आतुरता थी ही। इसलिए उन्हें वहां जाने की इच्छा हुई लेकिन संन्यासी बाबा का स्त्रियों के दर्शन न करने का नियम था। मीराबाई को यह बुरा लगा। उन्होंने उन संन्यासीजी को पत्र लिखा—

"हुं तो जाणती हती
के व्रजमां पुरुष छे एक।
व्रजमां वसीने तमे पुरुष रह्या छो,
कैसो भलो तमारो विवेक"।[1]

इस सिद्धान्त के अनुसार अगर हम जान सकें जगत के एक ही पुरुष को पहचान सकें तो सत्ता का संचालन न करके भी हम स्त्रियों की सेवा कर सकेंगे ऐसी मेरी श्रद्धा है। आपकी भी है ऐसा मैं मानता हूं। इसलिए वहां की परिस्थिति के संबंध में पूर्ण रूप से निश्चिन्त रहकर आप पूरे वर्ष में आराम—शरीर से एवं मन से भी—लेंगे तो वह योग्य होगा। ऐसा कर सकेंगे तो बापू को भी यहां आराम मिलेगा।

बापू के इस समय के उपवास ईश्वर की कृपा से निर्विघ्न ही नहीं बल्कि आनन्दमय होंगे ऐसा प्रतीत होता है।

विनोबा के प्रणाम

६

वर्धा १०-८-३४

श्री जमनालालजी

कल आपका बिना कारण स्मरण हो रहा था। 'बिना कारण' कहने का कारण यह है कि आपका ईश्वर पर विश्वास होने की वजह से स्मरण करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। इसलिए फिर कुछ समय भजन में बिताया। हालांकि आपका स्मरण हो रहा था तब भी चिन्ता जरा भी नहीं थी।

आपकी बहन ने सगुण भक्ति शुरू की है। मेरे नसीब में तो सदा

---

[1] मैं तो समझती थी कि व्रज में पुरुष एक ही है। पर व्रज में बसकर भी तुम पुरुष बने रहे, यह कैसा तुम्हारा विवेक है?

निर्गुण भक्ति ही जिन्दी है।

विनोबा के प्रणाम

७

बम्बई से वर्धा जाते हुए
ट्रेन में २२-८-३४

श्री जमनालालजी

यह मैं ट्रेन में लिख रहा हूं। इस बार मेरा आना आवश्यक है ऐसा मुझे लगता ही नहीं था। लेकिन कमलनयन की इच्छा महादेवभाई की सिफारिश और बापू की सलाह का खयाल करके मैंने आना उचित समझा।[1] मुख्यतया कमलनयन की इच्छा का मैंने अधिक खयाल किया और उसके लिए मुझे पछतावा नहीं है। मेरे आने से जानकीबाई को संतोष हुआ इस में मुझे संतोष है। जानकीबाई के प्रति अनेक कारणों से मुझे आदर है। यह सही है कि उनमें निर्णय-शक्ति कम है लेकिन उनकी बुद्धि 'आपरेशन' करने लायक है ऐसा मुझे नहीं लगता। कुछ बातों में वह जैसा सूक्ष्म विचार कर सकती है उसे देखकर उनकी बुद्धिमत्ता के संबंध में अनुकूल धारणा पैदा होती है। उदाहरण के रूप में दुःख का उद्गार प्रकट करने में उनका जो गुण दिखाई दिया और सबकुछ सहन करके दुःख का उद्गार बिलकुल ही प्रकट न होने देने में जो हानि है वह दिखाई, उसमें भी कुछ अर्थ था। "हे मां अरे मां" आदि चिल्लानेवाला इन्सान जिस प्रकार से आस-पास के लोगों को चिंता में डालता है उसी प्रकार सब दुःखों को दबा देनेवाला भी आस पास के वातावरण में चिंता पैदा कर सकता है। मेरा मतलब यह नहीं कि दुःख को चिल्लाकर प्रकट किया जाय। किंतु 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' इतना ही भावार्थ लिया जाय। परंतु जानकीबाई की जो दलील मुझे कुतूहलजनक जान पड़ी उसके दृष्टान्त के रूप में मैं इसे दे रहा हूं।

इस आपरेशन के समय संभव हो तो बापू उपस्थित रहें ऐसा उन्होंने चाहा था। मगर इस इच्छा को बाद में उन्होंने विचारपूर्वक छोड़ दिया।

---

[1] जमनालालजी के कान के आपरेशन के समय का जिक्र है। यह आपरेशन खतरनाक भी हो सकता था। इस कारण उनके आपरेशन के समय विनोबाजी वर्धा से बंबई गये थे। —सं

किन्तु उनकी उस मांग में भी एक मधुर हेतु था। बापू की उपस्थिति में आपरेशन निर्विघ्न रूप से संपन्न होगा इस खयाल से उन्होंने यह नहीं कहा था। बापू के आशीर्वादों पर उनकी श्रद्धा थी ही। लेकिन यदि कहीं आपरेशन के समय आपके प्राण चले गये तो? ऐसी स्थिति में बापू पास में हों तो अंत समय में आपको उनके दर्शन होंगे यह उनकी कल्पना थी। ये कल्पनाएं किसीको पागलपन-भरी भी लग सकती हैं लेकिन मुझे वे पावन और मूल्यवान मालूम देती हैं यह मैं स्वीकार करता हूं।

कवि ने कहा है 'अति स्नेहः पाप शंकी'। अति स्नेह के कारण उल्टे पल्टे संशय आने लगते हैं। बिना कारण संदेह होने लगते हैं। कुछ ऐसी ही जानकीबाई की स्थिति है। इसलिए उनकी बातों का शब्दार्थ छोड़कर और भावार्थ लेकर उनको संतोष देने का प्रयत्न करना उचित है।

नर्स से गलती हो जाय तो गुस्सा नहीं आता, घरवालों से गलती हो जाय तो गुस्सा आता है। यह सिद्धान्त भी विचारणीय है। मेरे पिताजी मुझे खूब मारते थे। एक दिन विचार करके मारना उन्होंने बिल्कुल छोड़ दिया। पहले दिन मुझे आश्चर्य हुआ कि मुझे मार कैसे नहीं पड़ी? क्योंकि मार खाना तो हमारी रोज की खुराक थी। पर दूसरे दिन भी जब मार नहीं पड़ी तब मैं समझा कि अब तरीका बदला है। और यही बात थी। वह मारते भी थे तो विचारपूर्वक और मारना छोड़ा भी तो विचारपूर्वक। अगर मैं बाहर के किसी आदमी को कहता कि वह मुझे मारते थे तो कोई भी सच न मानता क्योंकि सारी दुनिया के साथ उनका व्यवहार प्रेम और दयालुता का होता था। वह मुझे मारते थे तो वह भी प्रेमपूर्वक और दयापूर्वक, ऐसा ही मैं उस समय समझता भी था। लेकिन यह समझते हुए भी मुझपर उस मार का अनुकूल असर नहीं होता था। मुझपर गुस्सा करने का उनको पूरा हक था ऐसा मैं आज मानता हूं और उस समय भी मानता था। लेकिन उस हक का उन्होंने इस्तेमाल न किया होता तो अधिक परिणाम होता ऐसा मुझे लगता है। ये बातें जरूर मेरे दिमाग में आती थीं कि मेरा स्वभाव काफी नम्र और आग्रही था। इसलिए जो विचार मैंने पिताजी के बारे में पेश किये हैं उन्हें पेश करने का मुझे वस्तुतः कोई भी अधिकार नहीं है।

यह सब लिखने का कोई खास उद्देश्य नहीं है। ट्रेन में समय मिल गया

तो उसे काम में ले लिया है, बस। अब यह समाप्त करके कातने बैठूंगा।

तकली कातने में मुझे ऐसी अनोखी स्फूर्ति और शांति मालूम होती है कि मेरे मानसिक शब्दकोष में माता, गीता और तकली ये तीन शब्द अक्षरशः समानार्थक बन गये हैं। 'आई' (मां) इस शब्द में मेरे घर की सारी कमाई संचित हो जाती है। 'गीता' शब्द में वेदों से लेकर संत-परंपरा तक जितना अध्ययन किया वह सब आ जाता है। और 'तकली' में बापू-जैसों की संगति का सार उतर आता है।

विनोबा के प्रणाम

८

वर्धा २१-११-३४

श्री जमनालालजी

जन्म-दिन का पत्र मिला। आपके हाथ से आजतक जितनी सेवा हुई है उससे कहीं अधिक सेवा भगवान को आपसे लेनी है, ऐसी मेरी श्रद्धा है। पिछले साल आपको जो शारीरिक यातनाएं भोगनी पड़ीं उन्हें आगे की सेवा का मैं पूर्व-चिह्न समझता हूं। भगवान की दया अद्भुत है। उसका यथार्थ ज्ञान किसे हो सकता है? किन्तु हमें उस ज्ञान की आवश्यकता भी नहीं है। श्रद्धा ही पर्याप्त है।

विनोबा के प्रणाम

९

अनंतपुर, १०-२-३५

श्री जमनालालजी

आपका पत्र मिला। ता. १४ अथवा १५ को वर्धा पहुंचने का खयाल है। यहां का सूक्ष्म निरीक्षण जेठालालभाई की सूचना और निर्देश के अनुसार कर रहा हूं। जो योग्य प्रतीत हुईं वे सूचनाएं दी हैं और दे रहा हूं। सब सूचनाओं का सार अंत में लिखकर रखनेवाला हूं।

इस महीने के अंततक बहुत करके वर्धा में ही रहना होगा। बीच में तालुका के एक-दो गांवों में जाना होगा। मार्च के पहले सप्ताह में मेलघाट की ओर लौटना होगा।

मेरा कार्यक्रम आपने पूछा इसलिए लिख रहा हूं। आगे मेरी इच्छा कहूं या कामना कहूं या विचार कहूं तो वे मुझे दो ही बातें करने की प्रेरणा देती हैं। एक, भगवान का नाम लेना; दूसरे, दिन भर कातना। इसके सिवा तीसरी प्रेरणा मुझे होती ही नहीं। पढ़ना, लिखना, चर्चा, व्याख्यान इत्यादि इनकी कीमत मुझे करीब-करीब शून्य प्रतीत होती है। नाम-स्मरण और कातना इन दोनों का अर्थ मुझे अपने लिए एक ही मालूम देता है। इसलिए मैं इन दोनों को मिलाकर एक समझता हूं। इस १ पर   रक्खें तो १   १ इत्यादि होंगे। लेकिन १ की मदद न हो तो सारे   (शून्य) बेकाम हो जायंगे।

१ की चिंता मैं करूं।   (शून्य) की चिन्ता करने के लिए सारी दुनिया समर्थ है। इसलिए मेरा नित्य का कार्यक्रम (आश्रम में) दिन भर कातना और रात में चिंतन करना इतना ही रहता है और यही आगे भी रहेगा ऐसा लगता है। इस विषय में आपको शायद मदालसा से जान-कारी मिली होगी।

पिछले दिनों मैंने दोनों वक्त की प्रार्थना के दरम्यान मौन शुरू किया। यह आश्रम तक ही लागू था, बाहर नहीं। आगे चलकर उसे बाहर भी लागू किया। वैसा ही इस कार्यक्रम का होगा ऐसा भविष्य दिखाई देता है। इस तरह से पहले मर्यादित नियम का 'प्रयोग' और बाद में व्यापक नियम का 'योग' ऐसी मेरी वृत्ति है। इस प्रकार धीरे-धीरे आगे बढ़ने का विचार है। गति अथवा कालमान का तो पता ही नहीं है।

उपरोक्त मुख्य कार्यक्रम के अतिरिक्त से सब सके तो फिलहाल निम्न कार्य करने हैं—

१ महाराष्ट्र-धर्म (साप्ताहिक) के लेखों का चुनाव मैंने आखिरकार कर लिया है। यह पूरा करके छपने के लिए देना।

२ महादेवभाई का गीता का भाषान्तर ठीक करके देना।

३ खानदेश (पूर्व और पश्चिम) में दिये गए व्याख्यान और कैदी-यों के साथ जेल की चर्चा इत्यादि संकलित करके प्रकाशित हों, ऐसी साने गुरुजी की इच्छा है। इसके लिए मैंने सम्मति दी है। इस प्रवास में वह साथ में थे ही। उनका लेखन पूरा हो जाने पर वह वर्धा आकर मुझे पढ़कर सुनायेंगे। उनमें

संशोधन आदि कर देना।

४ गीता के प्रवचन ध्यानपूर्वक बारीकी से जांचना।

यह अन्तिम काम जरा फुर्सत से होगा।

पहला सात दिन में होगा। दूसरा एक महीना लेगा। तीसरा संभवतः तीन सप्ताह में हो सकेगा। चौथा जल्दी नहीं किया जा सकेगा।

साथ में सत्यदेवजी का दिया हुआ शृंगार प्रकरण नत्थी किया है। इस प्रबंध में आप जो कुछ कर सकेंगे वह आप करेंगे ही।

मेरा स्वास्थ्य आश्रम में और बाहर समान ही रहता है। निरंतर उत्साहपूर्वक काम हो पाता है यह स्वास्थ्य की मेहरबानी है। नींद जाड़े भर खुले में ली। काठ के पुतले की भांति सोता हूं और चैतन्य की तरह काम करने की इच्छा और प्रयत्न रखता हूं।

आपका सदा स्मरण होता है। आपके स्वास्थ्य की ओर ध्यान जाता है लेकिन क्योंकि बापू ख्याल रखते हैं, इसलिए मैं बीच में दखल नहीं देता।

जानकीबाई को प्रणाम।

विनोबा के प्रणाम

१

वर्धा, २८-२-३५

श्री जमनालालजी

यह मैं सायंकालीन प्रार्थना के बाद लिख रहा हूं। कल सुबह आपके साथ बातचीत हो जाने के बाद आपटे गुरुजी का पत्र मिला। उसमें मेरे जाने की तारीख पूछी थी। वास्तव में मार्च का पहला सप्ताह उन्हें देने का तय हुआ था। उसके अनुसार उनके पत्र में कार्यक्रम लिखकर आयगा इसीकी मैं राह देख रहा था। लेकिन अभी कार्यक्रम तय होना बाकी था। इस वजह से उन्हें ऐसा सूचित किया है कि अप्रैल के दूसरे सप्ताह में बाक्कु-काई की ओर से सीधे उनकी ओर आयेंगे। मार्च के पहले सप्ताह में आने का तय हुआ था। उस समय यह ख्याल नहीं था कि अप्रैल में मुझे तालनेर जाना पड़ेगा। तालनेर की बात बाद में निकली नहीं तो बैठक और

कामदेव दोनों का एक साथ ही हल हो सकता था, क्योंकि उसमें पैसे की और मेरे समय—जिसे मैं त्रिभुवन से भी अधिक मूल्यवान समझता हूं—की बचत स्पष्ट थी। लेकिन अब सब ठीक हो गया। आपकी सूचना के अनुसार तारीख १ से १५ तक का समय वहां देना होगा यह तय रहा। तबतक तालुका के केन्द्रों में घूम आऊंगा।

इस तरह आपके कहे मुताबिक, यद्यपि मैं वहां रहूंगा फिर भी मेरी प्रार्थना यही रहेगी कि ध्यान करें, मुझे किसी सभा में भाग न लेना पड़े। सभा में कहने या सुनाने योग्य मेरे पास खास कुछ नहीं है न वृत्ति है। मेरे लिए सभा का उपयोग बहुत ही कम होता है ऐसा मेरा अनुभव है। सभा में मैं बहुधा शून्य भाव से बैठता हूं। कभी-कभी तो गीता के या वेद के या इसी तरह के एकाध वचन का या विचार का चिंतन करता रहता हूं। सभा में चलनेवाली सारी कार्रवाई निरुपयोगी होती हो सो बात नहीं है। उसमें सीखने योग्य भी बहुत कुछ रहता है लेकिन मेरे हाथ से कौन-सी सेवा हो सकेगी इसकी मुझे पूरी कल्पना है और उस सेवा में मेरी शक्ति और बुद्धि के अनुसार अखण्ड चौबीसों घंटे व्यतीत हों इसके अतिरिक्त और कोई विचार ही मुझे नहीं सूझता। इसलिए सभाओं में मुझे केवल संकोचवश समय काटना पड़ता है।

यह सब लिखने में समय जा ही रहा है। पर आपकी और हमारी फिलहाल 'भाऊ-भाऊ शेजारी आणि भेट नाही संसारी' (यानी 'भाई भाई पास-पास मिलने की बात में बड़ी बात') ऐसी हालत हो गई है इसलिए लिखना पड़ता है।

अपनी दिनचर्या का संक्षिप्त सार आपकी जानकारी के लिए यहां दे रहा हूं

घूमना—२ घंटे
देहकृत्य—३ घंटे
निद्रा—७ घंटे
} (इसमें मुलाकातें चर्चा आदि हो सकती हैं।) =१२ घंटे

शरीरश्रम—६॥ घंटे
तकली—॥ घंटा
प्रार्थना—१ घंटा
} (२ में का सूत ८ घंटी) =८ घंटे

बेलन-कातन १॥ घंटा } ४ घंटे
पत्र-व्यवहार १॥ घंटा
ध्यान-चिंतन १ घंटा
अध्यापन ६ घंटा =६ घंटे

कुल १० घंटे

भगवान ने २४ घंटे दिये उसके बदले में १० दिये।

विनोबा के प्रणाम

११

मान्यवर मिर्जापुर ५-१२-३५

श्री जमनालालजी

श्री पोतनीस के साथ अनेक विषयों पर बहुत बातें कीं। मुख्य बात विवाह के बारे में उनकी मनोभूमिका जान लेना और उस संबंध में अपने विचार सूचित करना था। विवाह-संबंधी चर्चा का जो निष्कर्ष निकला वह उन्होंने मुझे लिखकर दिया है। उसकी नकल साथ में है।

उनके साथ बात करते हुए किसी भी व्यक्ति का उल्लेख मैंने नहीं किया। लड़की के माता-पिता के विचार जाने बगैर इस प्रकार से उल्लेख करना मुझे ठीक नहीं लगा। अब लड़की के पिता को पोतनीस के विचारों की नकल भेज दूंगा। आपको पोतनीस के साथ का संबंध उत्तम लगता है यह आपने मुझसे पहले ही कह दिया है। आपकी भी सम्मति उसके साथ सूचित करूंगा। सम्मति आ जायगी तो फिर पोतनीस से पूछा जा सकेगा।

ऐसे सवालों के संबंध में पहले से ही किसीके साथ चर्चा करना नुकसानदेह है। इसलिए मेरा यह पत्र व्यक्तिगत समझा जाय। आपकी जानकारी के लिए लिखा है।

साथ के पत्र में अंक १ की बात कुछ अस्पष्ट है। किन्तु जिस परिभाषा में चर्चा हुई उसी परिभाषा में वह लिखा है।

विनोबा के प्रणाम

१ श्री पोतनीस का पत्र नीचे लिखे अनुसार है—

पूज्य विनोबाजी

(१) विवाह के बारे में मेरी मनोवृत्ति तटस्थ रही तो अनिर्णीत ...

आपको मानसिक निश्चिन्तता रखना आवश्यक है। ऐसा हो सका तो आरोग्य-प्राप्ति के साथ-साथ शान्ति की भी पूंजी हाथ लगना सम्भव है।

मेरा ठीक चल रहा है।

विनोबा के प्रणाम

●

२ जानकीदेवी बजाज के नाम

१४

मिनापुर, १८.१.४२

श्री जानकीबाई,

मैं कल अचानक ही यहां आया। मेरा कार्यक्रम परसों ही तय होने से मुझे फिर यहां आना ही चाहिए था पर बीच में रामदेव से मिलने के लिए और पवनार के नतीजे के लिए थोड़ा ठहर गया था।

मदालसा के शिक्षण की चिन्ता न करें। उस संबंध में मैंने योजना बनाई है। बालकोबा उसका वर्ग लेंगे और यथावकाश थोड़ी देर सितार भी सिखायेंगे। संस्कृत भी चालू है ही। कन्याशाला में उसका रहना ही उचित है यह मेरी निश्चित राय है।

मैं यहां कितने दिन रहूंगा यह पता नहीं। बाकी यहां व्यवस्था तो ऐसी रखी है कि वहां से डाक, चिट्ठियां 'गीताई' के प्रूफ आदि लेकर डूंगर यहां रोज शाम को आयगा और सुबह मेरी डाक आदि लेकर जायगा। बालकों की इस सेवा के लिए मैं उनको बदले में क्या दूं?

इस तरह से मेरे साथ रोज का संबंध रखा जा सकता है। मेरी इच्छा है कि मेरे द्वारा आप लोगों की सेवा आपकी शर्तों के मुताबिक ही हो।

कमलनयन, ओम्, रामकृष्ण की ओर आप ध्यान दे ही रही हैं।

विनोबा के प्रणाम

१५

मिनापुर, २४-८-४२

श्री जानकीबाई,

आपकी और रामेश्वरजी की चिट्ठी मिली। जमनालालजी को मैंने आज सुबह पत्र लिखा है। तार देने की जरूरत नहीं थी। तार में और पत्र में एक ही दिन का अंतर रहता। पत्र आज मेल से रवाना हो ही जायगा।

इसके अलावा सुपरिंटेंडेंट को भी मैं पत्र लिखनेवाला हूं। बाकी

१८

नालवाडी, ४।१।१८

श्री जानकीदेवी[1]

आपने तार देकर मुझे बुलाया। तुम तीनों वहां हो और तीनों के लिए मुझे श्रद्धा है। इसलिए स्वाभाविक रूप से आने का विचार भी हो रहा था लेकिन आखिर न आने का ही तय किया। वहां आकर भी मैं आपको क्या शांति दे सकनेवाला था ? मेरी मनोवृत्ति उदास और तटस्थ सी है। उसपर भी मिथ्या मातम कर बैठा हुआ मैं एक रसहीन आदमी वहां के नैमित्तिक आनन्द में शायद समझ भी कभी बन गया होता। रविबाबू ने एक गीत लिखा है। उसमें कहा है

"एकला चलो एकला चलो
ओरे ओरे ओ अभागा !"

ऐ अभागे! तू अकेला ही चल। यह गीत मैं हमेशा अपने ऊपर लागू करता हूं लेकिन 'अरे अभागे' नहीं कहता 'अरे भाग्यवान' कहता।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

विनोबा

---

[1] जानकीदेवी, महादेवीताई और मदालसा

३ राधाकृष्ण बजाज के नाम

१

सत्याग्रहाश्रम (वर्धा) २५-१२-२७

चि. राधाकिसन

तुम्हारे पत्र मिले। तुमने खादी-भंडार का काम हाथ में ले लिया यह अच्छा हुआ।

विवाह करने की आवश्यकता महसूस होती हो तो विवाह करने में कुछ भी हर्ज नहीं है। आवश्यकता के बारे में डाक्टर को प्रमाण न मानकर अपनी स्वतः की आत्मा को ही प्रमाण मानना। अंतःपरीक्षण करने पर विवाह करने से चित्त को अधिक स्थिरता व संयम मिलेगा ऐसा लगता हो तो विवाह अवश्य करना।

विवाह करना हो या न करना हो—दोनों बातें संयम के लिए ही होनी चाहिए। संयम का लाभ ज्यादा हो इसके लिए ईश्वर-भक्ति की ओर मन लगाना चाहिए और हाथ से कर्म करते रहना चाहिए।

रोज 'ज्ञानेश्वरी' का एक पृष्ठ मनन करना चाहिए।

तुम्हारे सविस्तर पत्र से तुम्हारी मन-स्थिति की कुछ कल्पना हुई। समय-समय पर इसी प्रकार लिखते रहा करो।

(हिन्दी में) विनोबा के आशीर्वाद

२

पौनपुर, ७-१-११

श्री राधाकिसन

यहांकी सारी परिस्थिति को देखते हुए ऐसा टिकाऊ रेंटा (चर्खा) जिसमें किनीके न टूटें और आठ घंटे में कम-से-कम चौबीस तार कपास ओटी जा सके और जिसकी कीमत दो रुपये के अंदर-अंदर हो, मिल सके तो, यहांके लोगों के लिए बहुत ही उपयोगी हो सकेगा ऐसा मुझे लगता है। क्या ऐसी कुछ चरखियां तैयार हैं? अथवा तैयार की जा सकेंगी?

कर दें। दो वर्गों को दिक्कत है और मैंने उन्हें आश्वासन दे रखा है। अवश्य ही यह आश्वासन मेरे तरीके का अर्थात्—अनेक शर्तों से युक्त है।

मैं फिलहाल दूध-दही ३।।। रतल किशमिश-खजूर १५ तोला मोसंबी ४ पानी १ रतल (उबला हुआ) और थोड़ा नमक या सोडा लेता हूं। चार समय में इतना जमाया है। ठीक चला है।

फिटर का काम जाननेवाला इस समय कोई ध्यान में नहीं है। वासुदेव बर्वे नाम का एक युवक विद्यार्थी है जो केवल बढ़ई का काम सीखना चाहता है। शरीर से मजबूत है और २४ वर्ष की अवस्था का है। चार आने तक मजदूरी मिले तो वह रह सकेगा। छः महीने बढ़ई का फुटकर काम भी सीखा हुआ है। गुंजाइश है?

विनोबा

२२

पैमपुर, ११ १०-३९

श्री राधाकिसनजी

कल का पत्र मिला। तुम्हारे पिछले दो पत्रों में से एक का मैंने उत्तर दिया है। वह तुमको नहीं मिला ऐसा दीखता है। आश्रम में तलाश की जाय। अनेकों के पत्र एक ही लिफाफे में डालता हूं। इसलिए कुछ गड़बड़ होती होगी।

पहले कल के पत्र के सम्बन्ध में—

'सूत' की रजिस्ट्री करना आवश्यक है अगर ऐसी कानूनी राय है तो रजिस्ट्री करा ली जाय। प्रकाशक तुम या गोपालराव रहें सम्पादक दत्तात्रेय।

तुकारामजी का मुझसे थोड़ा ही परिचय रहा है। तुम्हींसे जो कुछ है वह है। ऐसा मालूम होता है कि तुमने उनको पहले कर्ज दिया है। अधिक देने का प्रयोग कर देखने में हर्ज नहीं है। लेकिन २ रुपये क्यों खर्च होंगे यह समझ में नहीं आता है।

कुमार स्वामी को आश्रम में रखना स्वीकार किया ही नहीं था। उनको 'ग्राम सेवा मंडल' के ही किसीने रख लिया था। ऐसे करके एकाएक 'ग्राम

सेवा मंडल' के लिए उपयोगी हो जाय ऐसी बहुत ही कम संभावना होती है। अटपटे कुर्मों को आश्रम देने का प्रयोग करना हो तो आश्रम भले ही करे। लेकिन भला लड़का होते हुए भी आश्रम में कुमार स्वामी को कुछ काम होगा ऐसा नहीं लगता। वह अपने ही प्रान्त में जाय तो ठीक रहेगा। 'ग्राम उद्योग संघ' के प्रशिक्षण वर्ग में जाने की बात वह कुछ दिन पहले करता था। वहां भी जाय तो हर्ज नहीं है। बुनाई-काम की संस्था के संबंध में मैं निश्चिन्त हूं। मुझे लगता है कि उस संबंध में मैंने तुमको कुछ नहीं लिखा होगा। सरंजाम उत्तम बनाना ही तुम्हारा पहला काम है। मुकुंदन कहता है कि वह बुनाई का काम देखेगा। वह मेरे लिए पर्याप्त है। सरंजाम का काम पूरा करके तुम्हारे पास समय बचे तो तुम्हारी नजर उस ओर सहज ही जायगी। पर मेरे लिए तो बुनाई-काम की अपेक्षा मनुष्य का निर्माण हो इसका महत्त्व अधिक है और बुद्धि ने वह काम हाथ में लिया है, इसमें मैं उसका विकास देखता हूं। मेरे लिए मनुष्य प्रधान है कार्य गौण। कार्य मनुष्य के विकास के लिए उपयुक्त साधन है। लोगों की नजर में कार्य प्रधान मनुष्य गौण है और कार्य करने का साधन है। यहां यह दृष्टि-भेद है।

अब पिछले पत्र के मुद्दों के संबंध में—

सरंजाम कार्यालय के लिए दस हजार की योजना देना मुझे कठिन नहीं लगता। सामान्यतः छोटी योजनाएं मुझे पसन्द आती हैं। दस हजार की योजना मुझे छोटी ही लगती है। सरंजाम यह वस्तु ही ऐसी है कि उसके प्रमाण में १ हजार विशेष अधिक नहीं है। इसलिए ऐसी योजनाएं हमें करनी आनी चाहिए, यह आज की स्थिति में भी मेरी अपेक्षा है आशा है।

मेरी अपनी मनःस्थिति का प्रसंगवश सहज ही उल्लेख करता हूं। किसीसे कोई रकम लेकर उसका 'नाम' रखना की देने की कल्पना मुझे अटपटी लगती है। इस पद्धति को बड़े पुरुषों ने स्वीकार किया है यह बात सही है। लेकिन मुझे तो नाम बिलकुल ही न हो तो भी चलेगा पर वह 'नाम लेना' ठीक नहीं है ऐसा मुझे लगता है। नाम लेना हो तो भगवान का ही लें। दानों के 'नाम रखने' की यह कल्पना किस शैतान ने खोज निकाली यह मैं नहीं जानता। लेकिन वह शैतान हमारे धर्म का नहीं था यह निश्चित है। हिन्दू-धर्म में ऐसी व्यक्तिपूजा कभी भी नहीं थी। आज वह

रद्द होना चाह रही है। लेकिन यह तो मेरी राय हुई और बाकी तो जिसकी जैसी राय हो।

बिना ब्याज के अथवा ब्याज से कर्ज देने की झंझट में 'ग्राम-सेवा-मंडल' को नहीं पड़ना चाहिए। कर्ज के लिए योग्य व्यक्ति का नाम सूचित करने में हर्ज नहीं है लेकिन वह भी बहुत सावधानी के साथ।

कार्यकर्ता को काम के लायक स्पष्ट और व्यवस्थित लिखना-पढ़ना आना ही चाहिए। उसमें साहित्य भले न हो परन्तु काम ठीक होना चाहिए।

'दिसा खालि कोही तरी लें लिहावें' अर्थात् प्रतिदिन कुछ-न-कुछ तो लिखें ऐसा अभ्यास रखना चाहिए। रोज के समाचार, विचार अनुभव को रोज नोट करना और उस नोट से पत्र तैयार करना। ऐसा करें तो सुलभ होगा।

अन्य जानकारी मेरे पिछले पत्र में है।

विनोबा के आशीर्वाद

२१

फैजपुर १७-१०-३६

श्री राधाकिसन

मेरी ओर से तुम्हारे सब पत्रों का उत्तर मिला है।

नरकासजी बोस आकर गये। उनकी सब व्यवस्था हो गई।

'आश्रम-वृत्त' का संपादक व प्रकाशक दोनों होने की दत्तोबा की तैयारी है। लेकिन 'ग्राम सेवा मंडल' की ओर से वह प्रकाशित हो रहा है इसलिए उन्हींमें से किसीका प्रकाशक होना उचित होगा ऐसा मुझे लगता है।

ठाकुरजी उपदेश के बारे में मेरे लिखने की बात नहीं है। अप्पासाहब फुरसत से लिखेंगे। दूर के स्वयंसेवकों की अधिक आवश्यकता अब यहां नहीं है। मेरे मन पर ऐसा असर है। फिर भी इस बारे में अप्पासाहब अब जैसा लिखेंगे उसके अनुसार करना चाहिए।

विनोबा के आशीर्वाद

२४

फैजपुर २०-१०-३६

राधाकिसनजी

मुकदमे की मैं कल्पना नहीं करता। 'सूत' का उद्देश्य ही भिन्न है। जब उसमें परिवर्तन करना होगा तब सब ही प्रकाशक व संपादक एक किये जा सकते। दत्तोबा के प्रकाशक होने का सवाल ही नहीं है। 'ग्राम सेवा मंडल' का व्यक्ति प्रकाशक होना चाहिए। गोडेजी का नाम उस दृष्टि से ठीक लगता है। उन्हें पूछ देखो कि उनको आपत्ति तो नहीं है?

तुम्हारी इस समय की दिक्कतों की तो हद ही हो गई। लेकिन शुक्ल-पक्ष और कृष्ण-पक्ष चांद के लिए भी नहीं टले हैं। ये भी दिन जायेंगे।

विनोबा

२५

फैजपुर २१-१०-३६

राधाकिसनजी

इन्फ्लुएंजा को इंजेक्शन का कोई खास उपाय हो ऐसा मुझे नहीं लगता। ये सब उपाय तात्कालिक स्वरूप के प्रतीत होते हैं। लेकिन उठ कर अभी फिर काम करने की जल्दी नहीं करनी चाहिए। पूरी शक्ति आने तक खाटबाजी में ही पड़े रहो ऐसी मेरी राय है।

फोड़े के इंजेक्शनों से तो पौष्टिक आहारादि का सेवन करना अधिक उपयुक्त समझना चाहिए।

'सूत' में विविध विचारों का समावेश अच्छी तरह होना चाहिए, ऐसी वल्लभस्वामी की सूचना है। मुझे लगता है पत्रिका के आकार के आठ पृष्ठ हम दे सकते हैं। इस बार मैंने विविधता अधिक दी है लेकिन कुछ सब सूत ज्यादा नहीं है।

बापूजी ने जाजूजी की ओर से 'ग्राम उद्योग शिक्षणालय' के लिए (कताई शिक्षक के तौर पर) वल्लभस्वामी की मांग की है। दत्तोबा की राय प्रतिकूल है। तुम्हारी क्या राय है?

विनोबा

२१

फैजपुर, २८-१०-३६

चि. राधाकिसन

वल्लभ के सम्बन्ध में नालवाडी से प्रतिकूल राय आई, और अपने ही घर में कई तरह की दिक्कतें होने के कारण बाहर से आई हुई मांग को स्वीकार करना ठीक मालूम नहीं दिया इसलिए महादेवभाई को आज उसके अनुसार सूचित कर दिया है। इसलिए इस प्रश्न का निपटारा हो गया यह समझना चाहिए। अगर वल्लभ मुक्त हो सके तो बढ़ई के काम में उसे मेहनत करनी चाहिए, ऐसा मैं सोचता हूं क्योंकि पहले वह उसी काम में था। बुद्धिमान और स्वेच्छा से शरीर-श्रम स्वीकार करनेवाले लोग जबतक तैयार नहीं होंगे तबतक अपने काम की किसी भी तरह प्रगति नहीं होनेवाली है, ऐसा मैं समझता हूं। जो सरंजाम कार्यक्रम हमने पक्का किया है उसे खूब अच्छी तरह सफल बनाना है। मुझे तो उसमें अपने कार्य की कुंजी नजर आती है। इसलिए हमारे हाथ में जो लोग हैं, उन्हें परिपूर्ण बना लेना ही अंत में कामयाबी सिद्ध होगा। वल्लभ आगे चलकर सरंजाम की जिम्मेदारी संभालेगा ऐसा आज तो कोई ख्याल नहीं है फिर भी उसके काम करते रहने का अवश्य बहुत उपयोग होगा।

पवनार का समाचार का यह किस्सा बहुत ही भयानक प्रतीत होता है। ऐसे दुराचारी आदमी का समर्थन अगर सब लोग करते हों तो उस भयानकता की सीमा ही कहां रही!

बुनाई-काम-विषयक योजना बनाने के संबंध में मेरे निम्न विचार हैं—

१ मैं जिसे आदर्श पूनी समझता हूं ऐसी सर्वोत्तम पूनियां जिसे चाहिए, उसे मोल मिलने की सुविधा होनी चाहिए। आदर्श पूनी का मतलब है अधिक-से-अधिक उत्तम जैसी कि मैंने अभी किसी समय इस्तेमाल की है।

२ पूर्ण मजदूरी पाते हुए उत्तम बारीक सूत कातनेवाले कम-से कम पांच-छः व्यक्ति हमेशा एक स्थान पर कातते रहें।

३ रोज एक ताना नित्य नियम से तैयार होता रहे।

४ पांच-छः व्यक्तियों के अथवा सात-आठ व्यक्तियों के बारीक

सूत में से एक ताना तैयार नहीं हो सकेगा। इसलिए उसकी पूर्ति के लिए उत्तम स्वावलम्बी सूत बुनने की व्यवस्था हो।

५. उपरोक्त चारों बातें एक ही स्थान में एक साथ चलें। इसका उद्देश्य यह है कि आश्रम में आनेवाले लोगों के प्रशिक्षण के लिए अनुकूल वातावरण रहे। अर्थात् ऐसे प्रशिक्षण की सुविधा यहाँ हो।

६. बुनाई के काम से सम्बद्ध सारी प्रवृत्ति जैसे कातना, पींजना, बुनना आदि की खोजबीन और प्रयोग होते रहें।

७. शरीर-परिश्रम के सिद्धांत को माननेवाले कुछ लोग यहाँ काम करते हों।

८. बुनाई आदि का काम करनेवालों को मजदूरी से रखने में आस-पास के देहातों के बेकारों को काम देने की दृष्टि हो, और—

९. उनमें से नये कार्यकर्ता निर्माण हों यह दृष्टि भी रहनी चाहिए।

१०. वस्त्रालय में तैयार होनेवाला कुछ माल व्यापारी दृष्टि से सर्वांग सुन्दर होना चाहिए।

११. प्रतिदिन एक ताना तो अवश्य ही तैयार होना चाहिए, लेकिन उससे अधिक का पसारा जहाँतक हो सके टालना चाहिए।

वातावरण शिक्षण-पोषक, शोधक (अन्वेषक) और औद्योगिक तो हो ही, साथ ही यथासम्भव स्वावलम्बी भी हो।

इन बातों से मेरी दृष्टि समग्र में आ जायगी और नालवाड़ी में ही बाकी यहाँ मेरा काम हो या नहीं या सब क्या हो यह भी इससे ध्यान में आ जायगा। मैं कहीं भी रहूँ वहीं मेरे आसपास इस प्रकार का वातावरण उपस्थित किये बगैर मेरा जीवन-क्रम चल ही नहीं सकता।

अब बैठक के लिए सोची हुई एक-दो बातों के सम्बन्ध में अपने विचार लिखता हूँ।

मुद्दा १६—सरंजाम कार्यालय का आर्थिक बोझ 'मंडल' पर न रहे परन्तु महारोग निवारण-कार्य और चर्मालय को जैसे हम स्वतंत्र संस्था के तौर से चलाते हैं उसी तरह सरंजाम कार्यालय के संबंध में बिलकुल तय न करें, क्योंकि 'ग्राम-सेवा-मंडल' और 'आश्रम' की प्रवृत्तियों से सरंजाम की प्रवृत्ति करीब-करीब बुनियादी स्वरूप की ही है।

अभिज्ञा के संबंध में शायद मित्र लोग विचार करेंगे। करना भी चाहिए। लेकिन उस संबंध में अनुकूल अथवा प्रतिकूल प्रस्ताव 'ग्राम-सेवा मंडल' न करे। अभिज्ञा व्यक्तिगत बात समझी जाय। उसके प्रचार का भार मुझपर है ही। साथी जो उठा सकें वे केवल आधार का भार उठा लें। अभिज्ञा की सहायता से मेरी बुद्धि में एक व्यापक संगठन तैयार हो रहा है। 'ग्राम-सेवा-मंडल' से बाहर के बहुत-से लोग अभिज्ञा देते हैं। 'ग्राम-सेवा-मंडल' के अन्तर्गत यथा-संभव सभीको देनी चाहिए, ऐसा मैं चाहूंगा। निरपवाद रूप से सभी देनेवाले निकलें तब भी इस संबंध में प्रस्ताव नहीं होना चाहिए। अभिज्ञा को मैंने संघ-भावना का प्रतीक माना है और इस विषय पर इस बार के 'आश्रम-वृत्त' में मैंने लिखा है। अबतक इस विषय पर 'आश्रम-वृत्त' में जो कुछ लिखा गया है और कभी जो कुछ मैं बोला होऊंगा उसका विवरण रखा गया हो और वह एकत्र करके अगर मुझे मिल जाय तो उसका उपयोग करके और जरूरत हो तो उसमें कुछ और जोड़ करके एक छपा हुआ पत्रक तैयार किया जाय ऐसा भी मेरे मन में है। लेकिन वह जब होगा तब होगा। अभी तो मेरा इतना ही कहना है कि इस बात का विचार एकांगी न हो सर्वांगी हो और इसपर जो शंका आक्षेप आदि किये जाय उनके सहित वह मुझे सूचित हो।

कांग्रेस के लिए साथियों को भेजने के संबंध में—सर्व-सामान्य स्वयं सेवकों की विशेषतः दूर से आनेवालों की मैं अधिक आवश्यकता नहीं देखता हूं। विशेष विभागों की जिम्मेवारी तो बांटी ही जा चुकी है। लेकिन इन दोनों को छोड़कर भी जिम्मेवारी के कुछ छोटे-मोटे काम बच रहते हैं। उनके लिए उपयोगी व्यक्तियों की जरूरत है ऐसा समझना चाहिए। बीमार, दुर्बल अथवा उनके जैसे व्यक्तियों को आना ही नहीं चाहिए।

बाबाराम की जिम्मेवारी उनका स्वास्थ्य पूरी तरह ठीक होने तक अर्थात् उनकी इच्छा हो तबतक मेरी समझी जाय। मेरी ओर से उसे आश्रम' समाने एमा सुन्दर को सूचित करे।

विनोबा

यज्ञ-भावना से बनाई हुई पूनियां

२७

४-७-३७

श्री राधाकिसनजी

मुझे क्षमा करें। वैसे मुझे देरसे लिखना भया हूँ।

१ खादी की मूल वृत्ति को ध्यान में रखकर वस्त्र-स्वावलम्बी खादी को उत्तेजन देना उसके लिए तालुका में से बुनकर तैयार करना।

२ खादी का उपयोग करनेवालों की संख्या बढ़ाना आज के खादी-धारियों के लिए, तालुका में पैदा होनेवाली कपास की लोढ़ाई, धुनाई, कताई, बुनाई आदि कराके खादी तैयार करना।

३ पूर्ण मजदूरी का प्रयोग करके मजदूरी की अधिक-से-अधिक मजदूरी कितनी दी जा सकती है इसका अंदाज लगाना।

४ चर्खा धुनकी तकली करघा-चक्र गति-चक्र-युक्त तकली चलाना मगन चर्खा इत्यादि की गति के प्रयोग करके उनमें सुधार और संशोधन करना।

५ खादी-शास्त्र के विद्यार्थियों के शिक्षण की व्यवस्था करना।

६ खादी उद्योग में (काम आनेवाले) औजार बनाना और सुधारना।

७ सूत की मजबूती समानता इत्यादि के बारे म प्रयोग करके बुनकर की शिकायत दूर करके यथासम्भव मिल के जैसा सूत निर्माण करना।

८ तालुका के विशिष्ट विभागों मे विभिन्न प्रकार के कपास उगाने के प्रयोग करवाना।

९ गत वर्ष की तरह अगर बेकारी बढ़ जाय तो कम-से-कम अपने केन्द्रों में कताई की मजदूरी के द्वारा उसका सामना करना।

विनोबा

२८

पवनार, १७-२-३८

राधाकिसन

साथ में मोहनभाऊ की चिट्ठी है। इस विषय में उससे बात कर लें। विद्यामंदिर शिक्षण-योजना पर, जो मुझपर आ पड़ी है, पूरी ताकत

लगाम बिना यह चलनेवाली नहीं है। इतने बड़े पैमाने पर यह पहला ही काम हम ले रहे हैं। उसकी उपयोगिता स्पष्ट ही है। जिस वस्तु की साधना में बरसों गुजारे उसके प्रचार की यह योजना सहज हुई प्राप्त है। इस बारे में वल्लभ से चर्चा कर लें। इस काम में अपनेको पूरा ध्यान देना होगा।

लक्ष्मी-उपासना का वातावरण आश्रम ग्राम सेवा मंडल' बुनाई काम कार्यालय सरंजाम ग्राम-सुधार, चर्मालय एवं सामग्री कोष आदि सबों में उत्पन्न होना जरूरी है। इस विषय में क्या किया जा सकता है ?

विनोबा

२९

पवनार, २-५ ४८

राधाकिसनजी

बाबाराम के संबंध में मैं विचार कर रहा हूं।

सरंजाम-कार्यालय का काम घर पर देने की रीत ठीक नहीं है। काम तो कार्यालय में ही होना चाहिए, नहीं तो दूसरे मजदूर से काम करवा कर नफा लेने की वृत्ति निर्माण होती है, ऐसा मैंने पाया है।

विनोबा

३

पवनार, ११ १२ ४८

राधाकिसन

चोलकेकर का कंदील (लालटेन) देखा। उसमें कल्पकता दिखाई देती है। बत्ती बुनने की उनकी योजना में भी कल्पकता है। मेरी दृष्टि से अभी तो कंदील में सुधार की काफी गुंजाइश है। उनको एक बार बापूजी से मिला देना उचित होगा। शाम का समय ठीक रहेगा। वह शायद बापू के लिए भी सुविधाजनक हो और दीपक के प्रदर्शन के लिए भी वह अच्छा रहेगा। इसलिए वैसी व्यवस्था करें।

नयी-शिक्षण-पद्धति के लिए बम्बई प्रान्त से विद्यार्थी १५ दिन के लिए आनेवाले हैं। उनके रहने की क्या व्यवस्था की जाय इसका विचार करने के लिए कल—सोमवार को सुबह ९ बजे जाजूजी के घर पर साथियों की सभा है। उसमें मुझे बुलाया है। मेरे बदले में तुम चले जाओ क्योंकि

उस दृष्टि से तुम्हारा उपयोग हो सकेगा—मेरे जाने का विशेष उपयोग नहीं है। इसलिए मैं जानेवाला नहीं हूँ।

विनोबा

११

परंधाम (पवनार) १-२-४७

राधाकृष्णजी

वनस्पति घी-सम्बन्धी साहित्य वापस भेज रहा हूँ। उस विषय में एक छोटी-सी टिप्पणी इस अंक में भी है। कुमारप्पा का लेख परिपूर्ण है वह भी दिया जायगा।

११ तारीख के कार्यक्रम में सामुदायिक कताई के बदले सम्भव हो सके तो सामुदायिक पूनी-यज्ञ किया जाय ऐसा मैं सूचित करना चाहता हूँ। कताई को अब प्रोत्साहन की जरूरत नहीं है। धुनाई-पुनाई को है। परंधाम में हम सामुदायिक पूनी-यज्ञ करते हैं। इस बार न बन सके तो आगे जब ऐसे प्रसंग आयेंगे तब यह सूचना ध्यान में रखें।

खादीवालों की पोशाक में सफाई की ओर कम ध्यान रहता है। अथवा ध्यान रहता है तो भी सफाई पर्याप्त नहीं होती। यह मेरी पुरानी शिकायत है। 'गो-सेवा-संघ' के काम के बारे में कुछ लिखने की बात सोचता हूँ तो मुझे इस कमी का ख्याल हो जाता है और लेखनी आगे नहीं सरकती तथापि 'गोसेवा-दिवस' के निमित्त लिखे हुए लेख में हिचकते-हिचकते हिम्मत की है।

विनोबा

१२

बरेली ४-१-५२

राधाकिसन

चुनाव के बारे में श्रीमन्जी को तार व पत्र द्वारा सुझाया किया है।

पवनार में नदी के ऊपर एक छोटा-सा पुल बनवाना पड़ेगा ऐसी मुझे भी शंका थी। जरूरत पड़ने पर पुल करना ही पड़ेगा।

गोपुरी की पाठशाला सर्वोत्तम आदर्श बुनियादी शाला के रूप में

चले यह मेरा आग्रह है। तत्सम्बन्धी साहित्य भी तैयार होना चाहिए— उद्योगों के अनुभवों पर आधारित लिखा साहित्य!

विनोबा

११

परसोनी (वरगांव) २ १५४

रामकिशन

तुम जानते हो कि स्मारकों की मैं कम ही जानकारी रखता हूं। बहुत से स्मारक जो बनते हैं मुझे प्रेरणा नहीं देते यह सही बात है।

जमनालालजी ने अपना आखिरी निवास-स्थान पास-पुसवाड़ा जो बनाया था उसीकी प्रतिमा वहां रही होती तो आज शांति-कुटीर से वह बहुत अधिक शांति और स्फूर्ति देता। और जो हो गया सो हो गया।

'सर्व-सेवा-संघ' का दफ्तर वर्धा में और गया में जैसे रहा है, वैसे ही दक्षिण में भी एक तीसरी जगह आगे बननेवाला है। वर्धा में वह शांति-कुटीर के स्थान में ही शोभा देगा।

मेरी राय में जमनालालजी का सर्वोत्तम स्मारक जो हो सकता है उसीमें मैं लगा हूं। मैंने इस तरह का अभिप्राय अभीतक जाहिर नहीं किया था। अब तुम पूछ ही रहे हो तो प्रकट कर रहा हूं।

शांति-कुटीर में प्रार्थना की सुन्दर जगह बने यह बहुत उचित है। उस बाबत जैसा सोचा जायगा मुझे लिखोगे ही।

(हिन्दी में) विनोबा

१४

प्रयाण-यात्रा ९-४-५

रामकिशन

'ब्रह्म-विद्या-मंदिर' मेरी शायद अंतिम कृति होनेवाली है। अर्थात् इसके बाद मुझे अन्य कोई भी योजना सूझे ऐसी सम्भावना नहीं दिखाई देती। पद-यात्रा चालू है। वह ब्रह्मविद्या के अंग के रूप में ही चल रही है। उस यात्रा के महत्त्व में चाहे जो (फर्क) दिखने पर ब्रह्मविद्या से वह भिन्न नहीं होगा।

'बालविद्या-मंदिर' में बहुत भी कोई भी कल्पना अभी अन्त में नहीं बनती। अनुभवानुसार परिवर्तन होगा।

आश्रमी भाग (कारोबार) समिति-मंडल की इच्छानुसार चलना चाहिए। उनकी इच्छा के अनुसार उनकी मदद करना तुम लोग अपना काम समझो। ऊपर से कोई भी कल्पना लादने की मेरी इच्छा नहीं है। सुझाना मेरा काम है। लेकिन निर्णय उनका होना चाहिए और उसे बिना मालूम के हम लोगों को भार लगता है।

यहां कोई प्रश्न उलझन हुआ तो यहां तुम और हम मिलकर विचार करेंगे। लेकिन बहनों को मुक्त चिंतन की सुविधा कर देनी है।

विनोबा

१५

पंजाब-यात्रा १९-१०-५९

राधाकिसन,

साथियों ने तीन-चार दिन चर्चा की। विचारों की सफाई होने में वह उपकारक हुई है और मुझे भी 'ग्राम सेवा मंडल' की आवश्यक की स्थिति की अधिक स्पष्ट कल्पना मिली। मुझे 'ग्राम सेवा मंडल' को जो कहना था वह मैं एक पत्र में लिख ही चुका हूं। नई जानकारी जो मिली उसके बाद भी उसमें फर्क नहीं पड़ा है।

संस्था के विभिन्न विभागों की जिम्मेदारी विभाजित करके विभिन्न व्यक्तियों को सौंपी जाय और उनमें तारतम्य रखने का बचा-बचाया काम आफिस के द्वारा सम्पन्न करें, तुम्हारी यह सूचना मुझे पसन्द आई। धीरे-धीरे ये सारे विभाग 'आटोनमस' अर्थात् स्वसंचालित और स्वयंपूर्ण हो जाय इस प्रकार क्रमशः उत्तरोत्तर विकास होना चाहिए। अपनी-अपनी ताकत के अनुरूप उन विभागों से यथोचित कर (टैक्स) मूल संस्था को मिले और घाटेवाले विभागों को यथावश्यक जो मदद देनी पड़े वह मूल संस्था से प्राप्त हो, ऐसी बहुत सुन्दर रचना हो सकती है जो अन्य संस्थाओं के लिए भी आदर्शरूप होगी।

स्त्री-शक्ति को इस प्रकार शिक्षित किया जाय कि जिससे धीरे-धीरे संस्था का संचालन उनके हाथ में आ जाय अगर इस कल्पना को बढ़ा

बनाना है तो आज की स्थिति में तुमको संस्था की ओर अधिक ध्यान देना होगा। अर्थात् यह समझो कि हर महीने कम-से-कम दस दिन तो तुम संस्था में उपस्थित रहो और अनुपस्थिति के दिनों में भी आफिस और आफिस के सेक्रेटरी के द्वारा सारी जरूरी जानकारी से परिचित रहते रहो ऐसी व्यवस्था करनी होगी। और भी कई कारणों से इसकी जरूरत है। वर्धा जिले की ओर जिस दृष्टि से देखने का मैंने सुझाव दिया है या वर्धा शहर का दूध का और सर्वोदय-पात्र का काम भी सौ फीसदी पूरा होने के लिए, या सेवाग्राम में अप्पासाहब सहस्रबुद्धे आनेवाले हैं उस दृष्टि से भी कुछ ज्यादा समय वर्धा में बिताना आवश्यक ही है। 'ग्राम सेवा मंडल' के मुख्य मुख्य सदस्यों में सौहार्द की कमी है ऐसा बहुत निरर्थक-सा ही आभास होता है। मुझे ऐसा लगता है कि बाबी पर कम अंकुश होना ही शायद इसका मुख्य कारण है। शक्तिशाली लोगों को मामूली कामों में लगा देने से भी दोष निर्माण होते हैं। आदमी शक्तिशाली हों और निरहंकारी भी हों यह तो ईश्वरी देन ही समझनी चाहिए। अतः जिम्मेदारी का विभाजन करने की तुम्हारी कल्पना इस दृष्टि से भी अच्छी है।

परंधाम में 'ब्रह्मविद्या-मंदिर' बना है। हम सब लोगों का उसमें जाकर रहना न सम्भव है न उसकी जरूरत ही है। फिर भी हममें से हरेक का हृदय-मंदिर ब्रह्मविद्या का मंदिर बने ऐसी आकांक्षा हम रखें। मुंह से ऐसी भाषा बोलने की आदत भी हम डालें। मराठी में कहावत है कि "काशीस जावें नित्य वदावें"। काशी को जाने की बात हमेशा बोलते रहें। 'ब्रह्मविद्या-मंदिर' को जो स्थूल मदद चाहिए या आगे जरूरत होगी उसे पूरा करने का प्रयत्न 'ग्राम सेवा मंडल' करेगा। उसमें से सहज ही यह अपेक्षा उत्पन्न होती है कि हम सबका अन्तिम लक्ष्य ब्रह्मविद्या है इसका भान 'ग्राम सेवा-मंडल' के लोगों को सदा रहेगा। ऐसी दृष्टि रहने पर 'ग्राम सेवा मंडल' की गाड़ी सहज ही सरलता से चलने लगेगी इसमें मुझे संदेह नहीं है।

विनोबा का जयजगत्

१६

पंजाब-यात्रा १८-११-५९

राधाकिशन

विचार-गोष्ठी का विचार अच्छा है। मैं उसमें उपस्थित होऊंगा कि नहीं मैं नहीं जानता। देखें क्या होता है।

पंचवार्षिक योजना में खेती के बाद गो-सेवा का महत्व का स्थान होना चाहिए, यह भी ढेबरभाई का विचार मुझे पूर्ण संमत है। ढेबरभाई उस काम में एकाग्र हो सकें तो उससे अधिक वांछनीय क्या हो सकता है?

(हिंदी में) विनोबा का जयजगत

१७

इन्दौर, १४-७-६

राधाकिशन

उपवास के आरम्भ का और पांचवें दिन का ये दो पत्र मिले। खाना छोड़ने को 'फाका' या संस्कृत में 'अनशन' कहते हैं। उसके लिए भक्तों का शब्द है 'उपवास'। उपवास याने परमेश्वर के समीप रहना। परिमित आहार लेते हुए भी उपवास हो सकता है और आहार छोड़कर भी उपवास नहीं हो सकता। आशा करता हूं कि आहार छोड़कर उपवास तुमको सध जायगा जिससे कि आगे आहार लेने पर भी वह जारी रह सके।

देशभर में हड़ताल है। मालूम नहीं यह तुम्हारे पास पहुंचेगा या नहीं। पर मेरा अपना अनुभव है कि [illegible] मानसिक भी भेजे जा सकते हैं और पाये जा सकते हैं। तो यह अगर पहुंच गया तो पहुंच ही गया और न पहुंचा तो भी पहुंच ही जायगा।

तुमने अपने तीन दोष लिखे हैं। अब इस तरह मैं अपनी तरफ देखता हूं तो दोषों की लम्बी यादी (सूची) होती है। लोग मेरे गुणों की भी सूची बनाते हैं। यह भी है और वह भी है। लेकिन पहचानने की चीज यह है कि दोनों से हमारा ताल्लुक नहीं। और, यह एकदम कैसे छूटेगा?

'सूझत सूझत सूझे'

(हिन्दी में) विनोबा का आशीर्वाद

४ अनसूया बजाज के नाम

१८

आश्रम (वर्धा) १ ४-३१

चि० अनसूया

अभी यहां जो सूत का प्रयोग चल रहा है वह कुछ मर्यादा में और कुछ व्यक्तियों के लिए ही उपयोगी है। उसमें कुछ कठिनाई नहीं है। सादा और सरल प्रयोग है और तुमको अब उसका अनुभव प्राप्त करने का मौका भी अच्छा मिला है। इस स्थिति में उसका शास्त्रीय अध्ययन करके कम-से-कम इतनी प्रवीणता तो सम्पादन कर लेनी चाहिए कि स्वतन्त्ररूप से वह प्रयोग हम यहां भी कर सकें। हर वक्त गौरीशंकरभाई को तक-लीफ देने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। हर दिन का इतिहास लिखा हुआ हो और समय-समय पर जो प्रश्न उत्पन्न होते हैं उनके बारे में क्या-क्या चर्चा होती है कौन-से सवाल खड़े होते हैं क्या परिवर्तन किये जाते हैं इसकी सम्पूर्ण और सुव्यवस्थित जानकारी होनी चाहिए। इसके अलावा इस विषय पर जो साहित्य उपलब्ध हो उसकी सूची और गौरीशंकरभाई की सलाह से इस सम्बन्ध की २ ४ सर्वोत्तम पुस्तकें भी साथ ले आना चाहिए। एक ऐसे चौकस व्यक्ति के लिए, जिसे राधाकिसनजी-जैसे अनेक व्यक्तियों की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है इस विषय की पर्याप्त प्रवीणता प्राप्त करना कठिन नहीं है। इसलिए उत्तम शक्ति और विद्या दोनों सम्पादन करके इस कार्यक्रम को पूरा करना है। इतना तुम्हारे ध्यान में रहना चाहिए।

पूनियों के सम्बन्ध में क्या विधि हो यह दत्तोबा से पूछा। यह ५ तोले की कल्पना उसकी है। और इस बारे में उसकी राय तुम्हारे-जैसी ही है। जो पूनियां दे दी सो दे दी। अप्रैल से ५ तोले की जायं। बंधन-रूप में न सही फिर भी महीने की सर्वोत्तम १ तोला अथवा इतनी ही पूनियां स्वतः के उपयोग के अलावा स्वतन्त्र रूप से बनाना सम्भव हो तो बनाई जायं। और वे २॥ रु० सेर के हिसाब से मुझे बेची जायं। इस तरह जो मजदूरी

मिले उसका अपने पास हिसाब रक्खा जाय। समझो कि इस तरह से २ तोले की पूनी भी अगर प्रतिमाह भेजी या खर्चे तो साढ़ाना ३।।। रुपये मजदूरी हुई। हिन्दुस्तान के ७ करोड़ कुटुम्बों में से (प्रति परिवार) कम-से-कम एक व्यक्ति साढ़ाना ३।।। रु मजदूरी खादी के कार्य में दे तो भी २६। करोड़ रुपये राष्ट्र में बढ़ जायेंगे। इसके अलावा पूनी के कच्चा माल होने की वजह से उसका रूपान्तर खादी में होगा इससे कितनी वृद्धि हो सकेगी इसका हिसाब तुम खुद कर देखो। यह है 'शरीर-परिश्रम-व्रत' की महिमा। 'बूंद-बूंद से तालाब भरता है' यह है उसका सूत्र। आश्रम में हमने स्वतन्त्र मजदूरी खाता खोला है उसका विवरण तुम 'आश्रम-वृत्त' में पढ़ती ही होगी। शिक्षित समाज अगर थोड़ी भी शुद्ध कमाई करे तो उससे उनका और देश का उद्धार होने का रास्ता खुलेगा। लेकिन जैसा १ तोले का बंधन था वैसा यह बंधन नहीं है। अगर बंधन कहा जाय तो यह पाँच ही तोले का है। 'श्यामची आई'* तुम ले गई हो लेकिन यह पुस्तक केवल पढ़ डालने की नहीं है बल्कि पढ़कर उसमें जो महत्त्व के मुद्दे हों उनको कापी में नोट करके उसकी नकल मेरे पास भेजना।

वहाँ तकली कातने को छुट्टी क्यों दी है? अम्बाई तकली से डरती है क्या? मुझे लगता है कि आज बटे का स्वामित्व तो तकली को दिया ही जाय। इससे अधिक का मालिक चरखा बैठा ही हुआ है।

विनोबा

१९

पौनपुर, ९-१०-३९

चि० अनसूया

तुम्हारे दैनिक कार्यक्रम में रात की प्रार्थना के बाद ८।। से ९ का समय व्यर्थ मालूम होता है। सामान्यतः प्रार्थना के बाद मौन न रखा जाय। फिर भी समय व्यर्थ अथवा फजूल काम में न बिताते हुए, हरि स्मरण करते हुए सो जाने की रीत उत्तम है। सेवा-कार्य को छोड़कर प्रार्थना के बाद अन्य किसी भी कार्य में समय न खोना ही उपयुक्त है। ९ बजे से

---

* प्रसिद्ध लेखक श्री साने गुरुजी-कृत मराठी पुस्तक।

५ बजे तक नींद के लिए ८ घंटे तो अवश्य ही चाहिए। रात में ८ घंटा नींद मिल जाने से थकान महसूस नहीं होगी। इसलिए अगर सम्भव हो तो ९ के बाद न जागने का क्रम आजमा कर देखो।

पींजन को ८ महीने विश्राम मिला इसकी मुझे कल्पना नहीं थी। मुझे यह उचित प्रतीत नहीं होता। अभिक्रम का एक मूल उद्देश्य यह भी है कि सेवक का हाथ पींजन पर सदा ताजा रहे। पींजने में जिस दिन प्रकृति की अथवा परिस्थिति की दिक्कत हो तो उस दिन छोड़कर, सम्भव हो तो नियमित रूप से रोज पींजना चाहिए। अपनी पींजी हुई रुई द्वारा भी दोष युक्त रहे यह शोभा देनेवाली चीज नहीं है। बापूजी पूनियों को मान्य कर लेते हैं, इतने से हमें संतोष नहीं मान लेना चाहिए। यह तेरे ध्यान में है ही।

शरीर-परिश्रम-विषयक भावना से प्रायः बड़े लोग या तो अलग हो गये हैं या होनेवाले हैं। मुझे इसमें स्पष्ट रूप से भय दिखाई देता है। इन 'बड़े' लोगों में तेरी गणना तो नहीं करती है न ?

जमनालालजी दौरे पर हैं यह तो मुझे मालूम ही था लेकिन वह कब आनेवाले हैं आदि विशेष जानकारी दी होती तो वह उपयोगी हुई होती। जानकारी देनी हो तो केवल गोलमोल लिखने में कोई लाभ नहीं उसमें सुव्यवस्थितता चाहिए।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है। गांव से और कांग्रेस की जगह से अलग एक खेत में हमारी बस्ती है।

आज शरीर दुर्बल है फिर भी चरखे की तरह तकली का भी ८ घंटे का प्रयोग कुछ दिन कर देखने का मेरे मन में है। यह कब होगा यह नहीं मालूम। लेकिन उसीके लिए बांये हाथ का अभ्यास साल भर से किया है। दोनों हाथों से तकली चलेगी तो थकान नहीं होगी। लेकिन यह तो जब होगा तब।

इसमें पहले दोनों हाथ आध-आध घंटा तकली पर चलाकर दोनों की गति नोट कर रखने की कल्पना कर देखने-जैसी है।

विनोबा के आशीर्वाद

४

सोपुरी (वर्धा) १५ १०-५९

चि अनसूया

तेरा स्वास्थ्य यहां जो मैंने देखा उससे मुझे काफी खराब लगा। अब वहां कुछ ठीक होगा ऐसी आशा करता हूं।

परन्तु इस प्रारम्भ से जीवन का कुछ परीक्षण करना तुम दोनों के ही लिए, उपयोगी होगा। अपने जीवन का कोई हेतु है। उसको पहचानकर उसके लिए मनुष्य को जीना है। अपने मूल उद्देश्य की ओर, ईश्वर द्वारा हमारे लिए नियोजित हेतु की ओर, हम कितने जा रहे हैं यह परीक्षण करते रहना चाहिए।

तुम दोनों की वृत्ति कुल मिलाकर बहुत शुभ है। और थोड़े आत्मचिंतन की आदत से दोनों का ही मंगल होगा ऐसा मेरा विश्वास है।

विनोबा के आशीर्वाद

४१

पठान-कुनुवाहा (पूर्णिमा)
१०-१०-५४

अनसूया

सदा संतुष्ट रहना भक्तों का एक लक्षण है। गीताजी (अध्याय १२ १४) देख लो। यह लक्षण तुम्हें साधना चाहिए और सध सकता है।

मैं सुनता हूं कि गौतम भी बीमार हो गया। हमारी यात्रा में वह काफी संयम से रहा और बहुत नियमित अच्छा रहा। बाद में उसका संयम टूट गया। तैरने का मोह वह संवरण नहीं कर सकता। फिर उसको शीत-ज्वर लागू हुआ। मेरा यह अनुभव है कि बगैर अपनी गलतियों के रोग अक्सर आता ही नहीं। और वह तो बालक है। एक-एक अनुभव से सबक सीखता जायगा।

प्राकृतिक उपचार के लिए अपने पास एक बड़ा ही सुन्दर स्थान है। उस स्थान से मुझे तो बहुत ही लाभ मिला है। शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार का। उपचार के साधनों का थोड़ा इस्तेमाल करने पर यह आश्चर्य

इससे जीवन में धर्म-दृष्टि उतारने में मदद होगी। खादी-ग्राम के लिए तत्काल चल पड़ना धर्म था। वहां से सर्वोदय-सम्मेलन के लिए जाना ही चाहिए, ऐसा कोई धर्म नहीं है। धीरेनभाई कहें तो जाने से कोई हर्ज नहीं है और वहीं काम हो तो रहने में भी हर्ज नहीं है। ऐसी भावना रखोगी तो 'दस दिन में क्या करोगी' यह सवाल ही खड़ा नहीं होगा।

विनोबा

४७

केरल राज्य २-७-५७

अनसूया

मित्रे गुरुजी एक अखंड सेवक थे। उनसे अधिक मजदूरी करनेवाला कोई भी मजदूर सहसा नहीं मिलेगा। उनके जाने की खबर किसीने मुझे दी थी लेकिन शिवराजजी चूड़ीवाले मरे यह तेरे पत्र से ही मालूम हुआ। हमारे साथ की यह सारी पीढ़ी थी।

विनोबा के आशीर्वाद

४८

पटियाला (पंजाब) १४-५९

अनसूया

तेरा सुन्दर पत्र मिला। अठारह महीनों का मौन समाप्त करके लिखा हुआ पत्र स्वाभाविक रूप से ही हृदय को सुख देनेवाला हुआ। ऐसा न हुआ होता तो ही आश्चर्य था।

तूने कुछ अच्छी सूचनाएं की हैं। देखें उनमें से कितनी की जाती हैं। ब्रह्मविद्या अंदर से अंकुरित होनेवाली है। बड़े लोग जो और बातों में समर्थ सिद्ध हुए, वे ब्रह्मविद्या में समर्थ सिद्ध होंगे ही सो बात नहीं है। इसीलिए कहा है

'व्हावे लहानाहूनी लहान।' (अर्थात् छोटे से भी छोटा बनो।)

देह, इन्द्रियां और मन से अपनेको और उसी तरह दूसरों को भी अलग देखने की बात सतत अभ्यास के द्वारा ही सधनेवाली है। यह अभ्यास जागृत रहकर प्रतिक्षण करना पड़ता है। बहुत बड़े पुरुषार्थ का यह काम है।

परिचित लोगों के सम्बन्ध में मनुष्यों की कुछ भावनाएं, धारणाएं बन जाती हैं। उनको निकाल देना मनुष्य के लिए बहुत ही कठिन होता है। पर मुझे यह अक्सर लगा है। उसके लिए मेरी एक सरल युक्ति है। मैं ऐसी धारणाएं बनाता ही नहीं हूं। प्रतिक्षण मनुष्य नया-नया ही होता है यह बात मेरे मन में जम गई है। तुम्हें यह सब लाभ।

विनोबा के आशीर्वाद

४९

नवाब नगर (पंजाब)
१५ । १ ।

अनसूया

राधाकिशन की मां बहुत दिनों से बीमार है और तकलीफ में भी शांति रख रही है ऐसा लोगों से मुझे कहा। उससे खुशी हुई। आत्मा अखंड है। अनेक देह आते-जाते हैं। देह में बचपन जवानी बुढ़ापा और उसमें अनेक सुख और अनेक दुःख यह सब चक्कर चलता ही रहता है। उसमें जो ईश्वर पर श्रद्धा रखकर चित्त को शांत रखता है, वह भक्त ईश्वर का प्यारा होता है। तुम माजी की सेवा में रही हो यह तुम्हारा भाग्य है। मेरी शुभकामनाएं माजी को सुनाओगी।
(हिन्दी में)

विनोबा के आशीर्वाद

५ कमलनयन बजाज के नाम

५

नालवाड़ी (वर्धा) २९ २ ४८

कमलनयन

२९ जनवरी का पत्र मिला। शिक्षण के बारे में जो विचार व्यक्त किया वह ठीक किया। शिक्षण में उद्योग का केवल उद्योग की दृष्टि से स्थान नहीं है। परन्तु वह सारे शिक्षण का द्वार है यह समझना चाहिए। उद्योग से जो समस्याएं पैदा होती हैं उनके हल के लिए कुछ समय उसकी उपपत्ति के लिए देना आवश्यक हो तो देना चाहिए।

मुझे लगता है कि तुमने मुझे जो पत्र लिखा उसके बाद तुम्हें मेरा पत्र मिला होगा। किसी भी एक स्कूल की पहली कक्षा से लगाकर मैट्रिक तक की अंग्रेजी की सभी पाठ्य-पुस्तकें (गद्य और पद्य दोनों ही) मुझे चाहिए—प्राइमरी वर्ग से मैट्रिक के अंत तक की व्याकरण आदि की पुस्तकों को छोड़कर। पहले मैंने सिर्फ जानकारी मंगवाई थी। लेकिन समय ज्यादा हो गया है इसलिए अब जानकारी नहीं बल्कि पुस्तकें ही भेज दो तो ठीक रहे।[1]

विनोबा

५१

१९५२

कमलनयन,

तुम्हारा चिन्तन अच्छा लगा। त्रिगुण के विषय में अनेक प्रकार से विचार किया गया है और किया जा सकता है। तमोगुण से नीचे की

---

[1] श्री कमलनयन बजाज के नाम लिखे विनोबाजी के सारे पत्र हिन्दी में हैं।—सं

गीता-प्रवचन के दूसरे अध्याय में रजोगुण और तमोगुण की तुलना की गई है। उसे पढ़कर श्री कमलनयन ने अपनी निम्नलिखित शंका विनोबाजी को लिख भेजी थी। उपरोक्त पत्र उसीका समाधान करने के लिए लिखा गया था—

अथवा सत्वगुण से ऊपर की वृत्ति की कल्पना नहीं की जाती। सारे जगत् का विकास तीन गुणों में करता है। तीनों गुणों से अलिप्त एक अवस्था है। उसे गुणातीत पुरुष की भूमिका समझना चाहिए। उसमें किसी प्रकार की वृत्ति नहीं रहती अतः उसे निवृत्ति कहते हैं परन्तु निवृत्ति का अर्थ प्रवृत्ति विरोध नहीं। प्रवृत्ति-विरोध भी एक वृत्ति ही है उसे तमोगुण कहना चाहिए।

इतने प्रास्ताविक कथन के बाद अब मूल प्रश्न लो। सत्वतः त्रिगुण प्रकृति के घटक हैं। प्रकृति में तीनों की आवश्यकता एक समान ही है। स्थिति प्रकाश और गति तीनों मिलकर जीवन बनता है। यह तात्विक दृष्टि है। इसमें ऊपर या नीचे का कोई भेद नहीं है।

इससे भिन्न नैतिक दृष्टि है। इस दृष्टि से तम रज सत्व में उत्तरोत्तर श्रेष्ठ गुण हैं। सामान्यतः लोग इस दृष्टि से विचार करते हैं।

"गीता-प्रवचन के दूसरे अध्याय में कर्म करनेवालों की दुहेरी वृत्ति बताते हुए रजोगुण और तमोगुण की समता मानली गई है। 'लूँगा तो फल-समेत ही' यह रजोगुण की वृत्ति बताई। और 'छोड़ूँगा तो कर्म-समेत ही' यह तमोगुण की वृत्ति बताई है। दोनों वृत्तियों में कर्म नहीं है, यह भी आप कहते हैं। मेरे विचार से दोनों वृत्तियों का समावेश रजोगुण में ही हो जाता है। ८, ९, १ के हिसाब से तमोगुण, रजोगुण और सत्वगुण एक-दूसरे से दूर हैं। रजोगुण और तमोगुण एक ही वृत्ति के भावात्मक और अभावात्मक (पाजिटिव और नेगेटिव) स्वरूप नहीं हैं। कर्म करके फल को छोड़ना सत्वगुण है। 'लूँगा तो फल समेत ही' और 'छोड़ूँगा तो कर्म-समेत ही' ये दोनों वृत्तियां रजोगुण में ही जानी चाहिए। 'केवल फल लूंगा, पर कर्म नहीं करूंगा' यह वृत्ति तमोगुण में जायगी। इससे भी एक भिन्न लापरवाही की वृत्ति हो सकती है। कर्म किया तो किया, अथवा हुआ तो हुआ। फल की अपेक्षा परवाह, आवश्यकता, मोह आदि नहीं होता। फलतः फल आया, किया तो किया। कर्म की जरूरत जवाबदारी नहीं मालूम होती। यह वृत्ति मन की स्थिति के अनुसार कदाचित् तीनों गुणों में हो सकती है। ज्ञान-शून्य स्थिति में यह वृत्ति तमोगुण से भी नीचे की होगी और ज्ञानवान स्थिति में तात्विक वृत्ति से भी ऊपर की निकलेगी।" —

सृष्टि-तत्त्व को समझानेवाली प्राकृतिक अथवा तात्त्विक और दूसरी नैतिक इन दोनों से भिन्न एक तीसरी साधना की दृष्टि है। तदनुसार रज और तम एक-दूसरे के प्रतिक्रियारूप अथवा परीक्षकरूप अथवा पूरक हैं। दोनों मिलकर एक ही वस्तु हैं। रजोगुण की थकावट से तमोगुण आता है तमोगुण की थकावट से रजोगुण आता है दोनों से सत्वगुण भिन्न है और वही साधकों का सखा है। रजोगुण और तमोगुण मिलकर आसुरी सम्पत्ति सत्वगुण दैवी सम्पत्ति—ऐसा संघर्ष चल रहा है।

गीता में प्राकृतिक नैतिक और साधनिक तीनों प्रकार का विवेचन मिलता है। मैं प्राकृतिक विचार को छोड़कर नैतिक और साधनिक दृष्टि से मुख्यतः विचार करता रहता हूं। कभी नैतिक कभी साधनिक। जिस विवेचन के सम्बन्ध में शंका उत्पन्न हुई है उसमें साधनिक दृष्टि है इसलिए रजोगुण और तमोगुण की एकत्र कल्पना की गई है।

कर्मयोग के विचार की अधिक छानबीन 'स्थितप्रज्ञ-दर्शन'[1] और 'गीताई-कोश' में की गई है।

विनोबा

५२

७-१ -५८

कमलनयन

११ -५८ का पत्र मिला। उसके साथ मित्रों के लिए भेजने का मसविदा भी देखा। जिस दृष्टि से तुम देखते हो वह उचित ही है। मसविदा भी ठीक है। मैं तुम्हारे उत्साह को कम नहीं करना चाहता क्योंकि उसमें मुझ कुछ भगवान की प्रेरणा-सी मालूम हो रही है।

विनोबा का जयजगत्

---

[1] 'सस्ता साहित्य मंडल' से प्रकाशित विनोबा की पुस्तक। मराठी में 'ग्राम सेवा मंडल' वर्धा से प्राप्य।

'ग्राम सेवा मंडल' वर्धा से प्रकाशित व प्राप्य।

६ श्रीमन्नारायण के नाम

५१

बाटा (लखनऊ) २०-५-५२

श्रीमन्,

पत्र मिला। पाटिल ने जो चर्चा उठाई, उससे हमारे काम को लाभ ही हुआ है। कई जगह लोगों ने उसके बारे में मुझसे पूछा और मुझे सब समझाने का मौका मिला। पाटिल को कुछ लोगों ने भूमिदान-यज्ञ के विरुद्ध मान लिया यह तो बिलकुल ही गलतफहमी थी। जो प्रश्न उनका बहुत-कुछ पहले ही हो चुका उसके बारे में ऐसी आशंका करने को स्थान ही नहीं। लेकिन वितरण के बारे में जो शंकाएं उन्होंने पेश की हैं उसके पीछे भी जहांतक मैं समझता हूं उनकी जिज्ञासा और शोधन की वृत्ति है। आपने जो जवाब दिया है, वह ठीक ही है।

लेकिन पाटिल को बिना किसी शाब्दिक चर्चा के समाधान-कारक जवाब मिल जाता अगर वह मेरे साथ प्रवास में कुछ दिन घूम लेते। पांच एकड़ तो और, हम देने का सोचते हैं लेकिन उत्तर प्रदेश के कई जिलों में पांच मनुष्य के एक परिवार के लिए मांगनेवाला पांच बीघा ही पर्याप्त समझता है। और दूसरे परिवार, जो बीसों बरस से खेती पर आजीविका चला रहे हैं ऐसे हैं जिनके पास पांच एकड़ भी जमीन नहीं है। यह सारी स्थिति देखने पर मनुष्य सहज ही एक दूसरे रूप से सोचने लगता है।

अभी परसों मेरे हाथ से वितरण हुआ। लोगों का आग्रह था कि वितरण का एक नमूना मैं पेश करूं। उसका जिक्र तो मैं अभी यहां नहीं करता बल्कि वह सारा दृश्य देखने लायक था। जो जमीनें दी गईं वे सारी मैं खुद देखकर आया। लेनेवाले देनेवाले और देखनेवाले इतने खुश हुए कि कई लोग आनन्द के अश्रु रोक नहीं सके। लेनेवालों ने हमें विश्वास दिलाया कि हम ठीक काश्त करेंगे और हमारे सारे नियमों का पालन करेंगे। 'प्रत्यक्षे सति कि अनुमानम्?' हाथ कंगन को आरसी क्या?

अगर ये जो लोग पहुंचे हैं उनमें कई भाई ऐसे हैं जो कि बहुत सद्भावना

रखते हैं। विकेंद्रित अर्थ-व्यवस्था और ग्रामोद्योगों पर भरोसा रखते हैं और अहिंसक रचना को दिल से चाहते हैं। वे बहुत-कुछ कर नहीं पाते क्योंकि उनका परस्पर सम्मिलन कम होता है। और संसद का कुछ ढांचा भी ऐसा होता है कि जिससे कुछ असली काम बनना कठिन हो जाता है। कई तो बोल भी नहीं पाते। लेकिन मैं मानता हूं कि कोई 'उभयान्वयी' मित्र काम तो परस्पर सम्मेलन से बहुत-कुछ बन सकता है।

अपना ग्रुप या पार्टी बना लेना तो गलत तरीका है। लेकिन जैसे शक्कर सारे दूध को ही मीठा बना लेती है प्रेम-सम्मेलन और विचार-सम्मेलन से सारी संसद का ही स्वाद मीठा किया जा सकता है। यह काम करनेवाले की कुशलता होगी जिसे भगवान् ने 'योग' नाम दिया है। मैं उम्मीद करता हूं कि वह योग आपको सधेगा।[1]

विनोबा

५४

मांझी (पटना) ७-१०-५२

श्रीमन्

तुम्हारा पत्र मिला। लेख पढ़ा। अच्छा लगा। पच्चीस एकड़ की हद तुमने रखी यह बहुत ठीक किया। आजकल बहुत-से लोग पचास एकड़ की बात करते हैं। मुझे वह निकम्मी मालूम होती है। परिस्थिति से इसका कोई ताल्लुक नहीं है।

छोटे-बड़े टुकड़ों का वाद भी ऐसे लोग ही उठाते हैं जिन्हें देहाती जीवन का अनुभव नहीं है। जिनके पास बहुत ज्यादा जमीनें हैं ऐसे देशों की मिसालें हमारे किस काम की? मैं तो इस वाद में पड़ता ही नहीं। जो लोग कल्पना-सृष्टि में विहार करना चाहते हैं, वे यथेष्ट विहार कर लें। ऐसी कवि-कल्पना राष्ट्रीय योजना में दाखिल न हो तो बस है। कांग्रेस वालों के लिए निकाला हुआ सरक्यूलर पढ़ा। अच्छा है। लेकिन बहुत-से समझदार कार्यकर्ताओं का जोश नहीं बढ़ा है यह ध्यान में रखकर वैसा आदेश उन्हें मिलना चाहिए। बात यह है कि इन लोगों के गुट के पास काफी

[1] श्री श्रीमन्नारायणजी के नाम लिखे विनोबाजी के पत्र हिन्दी में हैं।—सं

भाषा होती है। और उस गन्दी को वे छोड़ नहीं सकते न होली कर सकते हैं। इसलिए एक पत्रक दूसरे पत्रक को जन्म देता है, पर प्राप्ति होती नहीं है। यह बिहार में देख रहा हूं यू पी में भी देखा। बिहार में तो अब मैं शरीर पर प्रहार कर रहा हूं। कुछ समझ भी रहे हैं। छठा हिस्सा मांग रहा हूं। जो खुद नहीं देता वह दूसरों से क्या दिलायेगा? फिर भी उस पत्रक से कुछ तो गति मिलेगी।

अमल में होना तो यह चाहिए कि हमारी समितियों को मदद करने के लिए कांग्रेस की ओर से जगह-जगह स्थानों में कांग्रेस-कमेटियों को कोटा निश्चित करके काम में लगना चाहिए तो शायद कुछ रफ्तार बढ़े।

गांव-गांव घूमता हूं तो कांग्रेसवालों से और दूसरे पक्षवालों से भी काफी निकट संबंध आता है। नजदीक से देखने का मौका मिलता है। उनकी मेंबरशिप में अब क्या सार रहा है यह ध्यान में नहीं आता है। एक मनुष्य ही रुपया देता है चारसौ मनुष्य के दस्तखत ले लेता है और अपनी पोजीशन मजबूत कर लेता है। यह सब 'ओपन सीक्रेट' है। त्याग का कुछ कार्यक्रम सामने रखे बगैर, जिसमें सबकी भी कुछ कसौटी हो शुद्धि कैसे होगी?

यह सब मेरे लिए अगम्य विषय हो गया है। और, यह तो सहज लिख दिया। तुम उसमें पड़े हो। देखो जो भी हो सकता है।

मैं तो किसी कला चुना हूं और इसलिए निश्चिन्त होकर काम करता जाता हूं। सफलता हुई तो वह भगवान को समर्पण करना निष्फलता हुई तो वह भी उसीको समर्पण होगी।

किशोरलालभाई जमनालालजी की समाधि के पास पहुंच चुके। उस पार अब अच्छा सत्संग चलता होगा। हमें तो अभी अपना काम करना है।

शरीर का स्वास्थ्य ऊपर-नीचे हुआ करता है। फिर भी शरीर इतना काम दे रहा है यही उसका उपकार है।

बीच-बीच में जहां प्रविष्ट हुए हो वहांका अनुभव लिखा करो तो मेरा चिंतन एकांगी नहीं होगा।

विनोबा की शुभेच्छा

लोकसभा की सदस्यता से आशय है।—सं

५५

चांडिल (बिहार)
३०-१-५१

श्रीमन्

तुम्हारा २९ जनवरी का पत्र मिला। आज बापू का प्रयाण-दिन है। हृदय भावना से भरा है।

पंडितजी इन दिनों ग्रामोद्योगों पर जोर देते हैं, यह खुशी की बात है। पर संस्कृत में कहावत है, भूखा व्याकरण नहीं खा सकता और प्यासा काव्यरस नहीं पी सकता। पिछले पांच सालों में ग्रामोद्योग बहुत जोरों से न सिर्फ टूट रहे हैं बल्कि तोड़े जा रहे हैं। मैं अपनी आंखों से देख रहा हूं और हर महीने दो-चार जगह से ऐसे पत्र आते ही रहते हैं। अभी एक पत्र उसी रोज मिला, जिस रोज तुम्हारा मिला। वह तुम्हें देखने के लिए भेज रहा हूं।

मेरा स्वास्थ्य धीरे धीरे सुधर रहा है। बच्चों को और उनकी माता को आशीर्वाद।

विनोबा की शुभेच्छा

५६

चांडिल १७-२-५१

श्रीमन्

सर्वोदय-सम्मेलन में अगर उपस्थित रह सकते तो अच्छा होता। साल भर में एक दफा परस्पर विचार-विनिमय के लिए एकत्र होते हैं, उसमें हाजिर न हो सकना एक सजा ही है।

विनोबा

५७

गया ११-४-५१

श्रीमन्

२८ मार्च का पत्र मिला। लेख भी मिला है। समाचारों के अनुसार सम्मेलन का सारे देश पर अच्छा असर पड़ा है। मैं आशा करता हूं कि उसके काम को पुष्टि मिलेगी।

इधर बिहार के लोग काम रहे हैं। चांडिल-सम्मेलन के बाद दो जिले समाप्त करके अब मैं गया जिले में प्रवेश कर रहा हूँ। बिहार का पहली किस्त का तीन चार लाख एकड़ का मांगा था वह पूरा हो गया है और अब दूसरी किस्त चल रही है। २१ मई को बिहार के कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन गया में रक्खा है। उसके बाद बिहार-भर में कार्यकर्ता जोर काम में जुट जायेंगे ऐसी आशा की जाती है।

संसद के सदस्य दिन बाँधकर समय देंगे तो अपनी जगहों में वे बहुत कुछ कर सकते हैं। मतदाताओं के पास पहुँचने का यह एक बहुत अच्छा साधन होगा। यह उनका कर्तव्य भी गिना जायगा।

स्वास्थ्य ठीक है। आठ-दस मील चलने का रहता है। अक्सर साढ़े सात बजे के करीब मुकाम पर पहुँच जाते हैं।

विनोबा की शुभेच्छा

५८

गया १४-७-५३

श्रीमन्जी

ता. ९ जुलाई का पत्र मिला। पुस्तिका भी मिली है। हाँ, तुमसे जो बन सकता है कर रहे हो, वह मैं देखता हूँ। कुल मिलाकर देश में सुस्ती बहुत है। वैमनस्य भी काफी है। बिहार में काम बहुत अधिक होता अगर ये दो दुर्गुण नहीं होते। लेकिन दुर्गुणों के रहते उनका मुकाबला करने में जो मजा आता है वह फिर न आता।

आसाम का हाल वैसे अखबार में तो पढ़ा पर वहाँ के कुल वातावरण के बारे में जानने की इच्छा है। कभी फुरसत से लिखो।

विनोबा

५९

गया ११-१०-५३

श्रीमन्जी

८-१०-५३ का पत्र मिला। हाँ, उस बिल के बारे में काफी चर्चा चली। लेकिन जिम्मेदारी उत्तम स्थान पर ही आती है। पर इसके बारे में अब सोचने की जरूरत नहीं है। वह तो पुरानी बात हो गई।

न्धर से साहब मिल गये। हमारा सहयोग कैसे मिल सकता है इस बारे में वह पूछते थे। मैंने कहा कि जितने कम्युनिटी प्रोजेक्ट हैं उन सबमें गांव के कच्चे माल का गांव में ही पक्का माल बनाने की योजना प्रमुख के तौर पर मानी जानी चाहिए। इधर कम्युनिटी प्रोजेक्ट अपने ढंग से काम करते जायं। उधर 'खादी ग्रामोद्योग बोर्ड' भी काम करता रहे। इसमें सार नहीं देखता हूं। दोनों कामों का जोड़ होना चाहिए। तभी बेकारी हटेगी।

विनोबा

६

पटना २८-१-५३

श्रीमन्

२ अक्तूबर के पत्र का जवाब दे रहा हूं। कांग्रेस की शुद्धि के लिए भगीरथ प्रयत्न करना होगा। निराशा का तो कोई सवाल नहीं है लेकिन अल्प संतोष से भी काम नहीं चलेगा। सर्व सम्मति महत्व का मुद्दा है। सेवक पंचायत एक उपाय हो सकता है। कांग्रेस के काम के लिए पैसा ही चाहिए तो लोकदान से भी मिल सकता है। लेकिन मतदान का अधिकार श्रमिक को ही होना चाहिए। आज की चवन्नी पुराने एक आने की भी कीमत मुश्किल से रखती है। वह चवन्नी भी अपनी ही कमाई की होनी चाहिए, ऐसा निर्देश शायद न कांग्रेस विधान में किया होगा न वह व्यावहारिक भी होगा।

जबतक कोई ऐसा कार्यक्रम नहीं दिया जायगा जिसमें कांग्रेसवालों को कुछ त्याग करना पड़े और लोगों के पास जाना पहुंचना पड़े तबतक शुद्धि की आशा मृगजल ही साबित होगी। आजकल 'शुद्धि' शब्द को भी लोग टालते हैं। 'मजबूत' बनाने की भाषा लोग बोलते हैं। मजबूत तो रावण भी होता है। शुद्धि के बिना सच्ची कल्याणकारी शक्ति नहीं हो सकती इस बात का ध्यान लोगों में आना चाहिए। मैं मानता हूं कि इस दिशा में भूदान-यज्ञ का कुछ उपयोग हो सकता है।

बिहार छ में गहरे जाने की कोशिश कर रहा हूं। सबका सहयोग हासिल होगा तो काम बनेगा। वैसे मेरी बात सबकी समझ में तो आती है। बिहार का काम पूरा करके ही आगे बढ़ना यह तो मैंने तय कर ही लिया

इधर बिहार के लोग काम रहे हैं। शान्ति-सम्मेलन के बाद दो जिले समाप्त करके अब मैं गया जिले में प्रवेश कर रहा हूं। बिहार का पहली किस्त का थोड़ा चार लाख एकड़ का माना था वह पूरा हो गया है और अब दूसरी किस्त चल रही है। २१ मई को बिहार के कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन गया में रखा है। उसके बाद बिहार-भर में कार्यकर्ता तीव्र काम में जुट जायेंगे ऐसी आशा की जाती है।

संसद के सदस्य दिन बोलकर समय देंगे तो अपनी जगहों में वे बहुत कुछ कर सकते हैं। मतदाताओं के पास पहुंचने का यह एक बहुत अच्छा साधन होगा। यह उनका कर्तव्य भी गिना जायगा।

स्वास्थ्य ठीक है। आठ-दस मील चलने का रास्ता है। अक्सर साढ़े सात बजे के करीब पड़ाव पर पहुंच जाते हैं।

विनोबा की शुभेच्छा

५८

गया १४-७-५१

श्रीमन्जी

ता. ५ जुलाई का पत्र मिला। पुस्तिका भी मिली है। हां तुमसे जो बन सकता है कर रहे हो वह मैं देखता हूं। कुछ मिलाकर देश में सुस्ती बहुत है। वैमनस्य भी काफी है। बिहार में काम बहुत अधिक होता अगर ये दो दुर्गुण नहीं होते। लेकिन दुर्गुणों के रहते उनका मुकाबला करने में जो मजा आता है वह फिर न आता।

आसाम का हाल वैसे अखबार में तो पढ़ा पर वहां के कुल वातावरण के बारे में जानने की इच्छा है। कभी फुरसत से लिखो।

विनोबा

५९

गया ११-१०-५१

श्रीमन्जी

८-१०-५१ का पत्र मिला। हां उस दिन के बारे में नाहक चर्चा चली। लेकिन जिम्मेदारी प्रथम स्थान पर ही आती है। पर इसके बारे में अब सोचने की जरूरत नहीं है। यह तो पुरानी बात हो गई।

पड़े। मैं इससे सहमत नहीं हूं। संस्थाएं किसी तरह चालू रहें ऐसा मैं नहीं मानता। तिलक महाराज के बाद 'केसरी' ३१ साल से चल रहा है। उनकी नीति पर वह चल रहा है ऐसा संचालकों का दावा है। लेकिन थोड़ा फरक होते-होते आज वह पूरा प्रतिक्रियावादी पत्र बना है। संस्थाओं का लोभ हमें छोड़ना ही होगा। शरीर से बढ़कर सुन्दर संस्था हो ही नहीं सकती और वह भी हमें छोड़नी ही पड़ती है।

अलावा इसके मुझे आज लिखने की अंतःप्रेरणा नहीं हो रही है। ऐसे ही बाहर के उपयोग के लिए मैं लिखा करूं यह मुझसे बननेवाली बात नहीं है।

इसके सिवा भूदान-यज्ञ का पत्रात्मक ताल्लुक है प्रान्त प्रान्त में अखबार निकल रहे हैं। बिहार में तो कोशिश यह है कि हर गांव में 'भूदान-यज्ञ बिहार' पहुंचे। अभी उसकी दस हजार प्रतियां निकल रही हैं और उसका प्रचार बढ़ता ही रहेगा। इस हालत में 'हरिजन' का बहुत ज्यादा उपयोग इस काम के लिए मैं नहीं देखता।

और मान लीजिये कि मुझे स्वतन्त्र कुछ लिखने की प्रेरणा हो जाय तो यह समझने की जरूरत है कि मैं वैसा 'प्रोफेट' (नबी) नहीं हूं जैसा कि शायद कुछ लोगों ने मान लिया है। मेरे अपने विचार हैं। मुझे विश्वास नहीं कि वे हमारे सत्तात्मक आत्मा को हजम हो ही सकेंगे। 'दूरस्थ पर्वता रम्या' कहावत है ही कि पर्वत दूर से सुहावने दीखते हैं।

विनोबा

१२

पटना २८-१२-५१

श्रीमन्,

देश में अनेक विचार प्रवाह काम कर रहे हैं। और चूंकि मैं जनता के सीधे सम्पर्क में रहता हूं उनका बारीकी से निरीक्षण करने का मौका मिलता रहता है। इसका परिणाम जहांतक मेरा ताल्लुक है यह हो रहा है कि मैं बहुत अधिक तटस्थ बन रहा हूं और समन्वय का मनन भाव रहता है।

हूँ कि पश्चिम से आये हुए चुनाव के तरीके अगर हमने वैसे-के-वैसे अपनाये तो देश की दरिद्रता पर जो चोट करके सामूहिक हमला होना चाहिए, वह नहीं हो सकेगा। इसलिए राजनीति-शास्त्र का चिंतन भी छोड़ दिया है। कांग्रेस प्रजा-समाजवादी और रचनात्मक कार्यकर्ता जिस तरीके से एक ठौर आ सकेंगे वह तरीका हमें ढूँढ़ना होगा। उसके लिए राजनीति के विधि (कनवेन्शन) जो माने गये वे तोड़ने पड़ेंगे।

यह मेरा निरीक्षण है परिस्थिति भी बलात् हमें उस तरफ मोड़ेगी।

पंडितजी ने तुमको कांग्रेस-सेक्रेटरी के काम के लिए बुलाया तो मैंने भी अपनी सम्मति दी। इसमें भी ईश्वर की कोई योजना दीखती है। पंडित जी का बुलाना भी स्वाभाविक और मेरा संमति देना भी मेरी हमेशा की वृत्ति से कुछ भिन्न बात थी। सर्वोदय पर विश्वास रखनेवाला कोई मेरा साथी किसी एक राजनैतिक पक्ष में फँस जाय चाहे वह पक्ष कितना ही बड़ा हो अक्सर मैं पसन्द नहीं करता। लेकिन तुमको बिल्कुल सहज भाव से संमति दी मुझे कुछ सोचना भी नहीं पड़ा। सहज ही लगा कि ईश्वर कुछ पुल बनाने की योजना कर रहा है।

तुम्हारे जिस गुण ने मुझे खींचा है वह है तुम्हारी शांत प्रकृति। जवानी में जो शांति रख सकता है वह बुढ़ापे (वृद्धावस्था) में भी उत्साहहीन नहीं होगा। परमेश्वर तुम्हारा यह गुण बढ़ाये यही मेरी कामना है। इस गुण का भेदों को मिटाने में उपयोग होगा।

विनोबा की शुभेच्छा

१४

चौपार (गया) २१-१-५४

श्रीमन्नारायण

पत्र मिला। मैं भी चाहता हूँ कि सम्मेलन में मिलना-जुलना व परस्पर चर्चा अधिक रहे व्याख्यानों की भरमार न रहे। १८ ता. का प्रोग्राम जो वल्लभस्वामी ने तुम्हारे पास लिख भेजा है वह आखिरी नहीं है। आखिरी तो तुम्हारे आने पर सबकी राय से ही तय होगा।

पंडितजी को बुलाने में मुझे बहुत दिलचस्पी रही। अब उनका ठीक उप-योग कर लेना आप लोगों पर निर्भर है। मुझे सूझना जितना उत्तम सधना

कभी मिलना होगा तो कान-मुख सुनूंगा और समझने की कोशिश करूंगा।

'गांधी-ज्ञान-मन्दिर' के उद्घाटन समारंभ के लिए संदेश भेज दिया है।

विनोबा

११

१४-१-५४

श्रीमन्नारायण

आखिर पंडितजी को मैंने निमन्त्रण लिख दिया। वह पत्र अब तुमको मिला ही होगा। इन दिनों जितना मेरा अर्थशास्त्रीय चिंतन चलता है उतना ही राजनैतिक चिंतन भी चलता है। वैसे मेरा स्वभाव मूल में धर्म-चिंतन का है। पर बिना आर्थिक समता के धर्म टिक ही नहीं सकता इस लिए अर्थशास्त्र का चिंतन करने की भी आदत पड़ गई। अब यह देश रहा

यह संदेश निम्न प्रकार है—

"वर्धा के 'गांधी-ज्ञान-मन्दिर' का उद्घाटन पंडितजी के कर-कमलों से होने जा रहा है, यह बहुत खुशी की बात है।

"यह 'गांधी-ज्ञान' क्या चीज है, जरा समझने की जरूरत है। अपने देश में आत्म-ज्ञान का उदय प्राचीन काल में ही हुआ था और उसकी परम्परा आजतक यहां अखंडित चली आ रही है। विज्ञान का भी उदय अपने यहां हुआ था। पर उसकी परम्परा अखंडित नहीं चली और आधुनिक जमाने में विज्ञान का विकास पश्चिम में हुआ। आत्म-ज्ञान और विज्ञान के संयोग से सामूहिक अहिंसा का जन्म हुआ है। उसीको 'गांधी-ज्ञान' कहते हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि उसीसे दुनिया का भला होनेवाला है। इतना ही नहीं उससे हम इस दुनिया में स्वर्ग ला सकते हैं। जैसे हाइड्रोजन और आक्सीजन मिलकर पानी बनता है, वैसे ही आत्म-ज्ञान और विज्ञान मिलकर सर्वोदय या साम्य-योग बनता है।

"मैं आशा करता हूं कि 'गांधी-ज्ञान-मंदिर' इस तरह के समग्र जीवन का केंद्र साबित होगा और पंडितजी को जो तकलीफ दी जा रही है, उसकी सार्थकता होगी।"

वैदिकों की आजीविका के वास्ते भूमि की मांग की थी। मैंने वह मंजूर की थी बशर्ते कि वैदिक लोग अपने हाथ से खेती करना मंजूर करें। वह शर्त उन्होंने मानी थी। करजमाई को मैंने कह भी दिया।

बाद में मेनेजी मुझसे कई दफा मिले और वेद-रक्षा के बारे में उनसे चर्चा भी हुई। उनके कथनानुसार संपूर्ण भारत में आज सिर्फ १५ वैदिक रह गये होंगे जिन्हें वेद मुखस्थ होगा। इस विद्या का उत्तरोत्तर ह्रास हो रहा है और कुछ वर्षों में शायद मुश्किल से कोई ठीक स्वरयुक्त वेद-पठन करनेवाला मिले ऐसा भी हो सकता है।

तुम शायद जानते हो कि वैदिक संहिता की रक्षा के लिए भारत में प्राचीन काल से सतत प्रयत्न होता रहा है जिसके परिणाम-स्वरूप आज वेद में कहीं पाठभेद नहीं मिलता जबकि तुलसी रामायण जैसे अर्वाचीन ग्रंथों में भी पचासों पाठभेद होते हैं। इतनी मेहनत से रक्षित की गई वस्तु, माने उसका स्वर-युक्त पठन हम खो न बैठें। उसकी चिंता करना हमारा कर्तव्य हो जाता है। तो मैंने सुझाया था कि आज के जमाने में इसका उपाय वेदों का पूर्ण रेकार्ड करने से हो सकेगा। यह सूचना मेनेजी को जंची।

वेदों में कुल मिलाकर २ हजार मंत्र होंगे। बोलनेवाला शान्ति के साथ बोलेगा तो मेरा ख्याल है २ मंत्र घंटे भर में हो जायंगे। उस हिसाब से १ घंटों का वह रेकार्ड होगा। उसका क्या खर्च होगा इसका मुझे कोई अंदाज नहीं है। पर जो भी होगा कर लेना कर्तव्य है ऐसा मैं समझता हूं। श्री केसकर से और दूसरे भी सर्वाधित व्यक्तियों से यथासमय बात कर लो। श्री मेनेजी का पता नीचे दिया है।

विनोबा की शुभेच्छा

गोपाल शास्त्री मेने
संचालक म मा वैदिकाश्रम
राम मंदिर, बनारस–१

१७

परमौली (बरमंपा) २०-९-५४

श्रीमन्

बाढ़-रिपोर्ट पंचायत-रिपोर्ट और पत्र मिले हैं। बाढ़ मुझ उतनी

है उसका बोझ्ना नहीं लगता। और जिसका बोझ्ना लगता है वह काम सभा में। व्यक्तिगत चर्चा में भजन-भक्ति का मुझे बहुत अभ्यास है। लेकिन मैंने इसका देखा कि पश्चिमी कीर्तन-भक्ति कर रहे हैं। दोनों भजन-भक्तिवाले होने का कठिन ही काम था।

विनोबा की शुभेच्छा

६५

माड़ीतोला (गया) १८-५-५४

श्रीमन्

९ मई का पत्र मिला। प्रादेशिक कांग्रेस समितियों के अध्यक्षों के भूदान में समय देने आदि की खबरें अखबारों में पढ़ी थीं।

वर्किंग कमेटी में आर्थिक प्रश्नों की चर्चा हुयी यह अच्छा है। जिस तरह शिक्षण-माध्यम के विषय में वर्किंग कमेटी ने सर्वांग परिपूर्ण व्यवस्था दी वैसी व्यवस्था अगर ग्रामोद्योगों के क्षेत्र के विषय में वह दे सके तो कितना अच्छा होगा। लेकिन नेताओं के दिमाग इस विषय पर साफ हैं ऐसा अभीतक मुझे आभास नहीं हुआ है। फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी है। परिस्थिति भी अपना काम कर रही है।

स्वास्थ्य ठीक है। लोगों की तरफ से सद्भावना की कोई कमी नहीं है। जीवन-दान की प्रेरणा कुछ काम कर रही है।

बोधगया जाने में सेवाकार्य तो शुरू कर दिया है। समन्वयाश्रम में शिवराज दामोदर है। विनोबा

६६

रेवासी ९-६-५४

श्रीमन्

तुम्हारी और मेरी मानसिक मुलाकात दरभंगा जिले के बल-बिष्णुपुर मकाम में हो गई। यह पत्र एक विशेष काम के लिए लिख रहा हूँ। जब मैं काशी था तब गोरक्ष शास्त्री वेणे नाम के एक वैदिक विद्वान मुझसे मिले थे। वह वहां अखिल भारतीय वैदिक आश्रम चला रहे हैं। उन्होंने ता ५-९-५२ की एक लिखित प्रस्ताव वहां के वैदिक ब्राह्मणों की ओर से मुझे भेजा था जिसमें वेदविद्या की रक्षा के लिए

मालूम है जो मृत्यु के नजदीक पहुंच चुका था और जिसको डाक्टर का प्रमाण-पत्र भी मिला था और उसने दो दिन के बाद पूर्णिमा आनेवाली थी उसपर अपनी श्रद्धा रक्खी थी। उसीकी तीव्र भावना उसके मन में रही होगी और उसी दिन वह गया।

कांग्रेस-कमेटियों से भूदान-निश्चय आप लोग करा रहे हैं इससे खुशी होती है। बड़े निश्चयों के साथ तीव्र और सतत प्रयत्न भी रहे तो शोभन होगा अन्यथा—

"बोलाचीच कढ़ी बोलाचाच भात।
जेवोनीया तृप्त कोण झाला।"[1] —तुकाराम

अभी हमारी यात्रा बहुत रमणीय लेकिन विकट रास्तों से हो रही है। बीच का 'लेकिन' शब्द है। उसकी जगह 'क्योंकि' रख दो।

कल और परसों मिलकर २५ ग्रामदान सुनाये गए। घोर वर्षा में दूर-दूर के गांवों में कार्यकर्ता अविश्रांत घूम रहे हैं। जाहिर है बाबा घूम रहा है इसीलिए यह हो सकता है। फिर भी बाबा के लिए सब प्रकार की सुविधाएं होती हैं, उनके लिए सब प्रकार की दुविधाएं। ईश्वर जब एक चीज चाहता है तो अचेतन को भी वह चेतन बना लेता है। उसकी लीला अपार है। लेकिन लोगों को ईश्वर के अस्तित्व में शंका होती है। मुझे तो इस दुनिया के अस्तित्व में ही शंका होती है।

मदालसा इन दिनों मुझे पत्र न लिखकर बहुत लिख देती है। मुझे यह अच्छा लगता है।

"कोरा कागज काली स्याही।
लिखत पढ़त वाको पढ़वा दे॥
तू तो राम सुमर

आगे की बात हम नहीं बोलेंगे। कबीर जो चाहे बोल सकता है।

विनोबा

---

[1] बोलने की कढ़ी और बोलने का ही भात खाकर कभी कोई तृप्त हुआ है?

मयवर आपत्ति मालूम नहीं हुई जितनी ग्रामोद्योगों के छिन जाने के कारण ऐसे मौकों पर जनता की पूरी बेकारी। ग्रामोद्योगों के विनाश का सिलसिला हर दिन जारी है। बालापुर पंचवार्षिकी के।

विनोबा

१८

कोरिया शाही कटक ५ ६ ५५

श्रीमन्

२१ और २५ मई के पत्र मिले। फ्रेंच कविता तुम्हारी सूचनानुसार भेज रहा हूँ। कविता की रचना पर मैं अभिप्राय दो क्या दूँ? मेरे फ्रेंच ज्ञान की परीक्षा उससे हुई। अंग्रेजी अनुवाद के आधार से अर्थ समझ सका।

'फ्रीडम फर्स्ट' वाला लेख मेरे पास भी आ पहुँचा था। मैंने उसको कोई महत्व नहीं दिया था। हमारी यात्रा यथापूर्व चल रही है। चित्त उत्तरोत्तर अन्तर्मुख हो रहा है। पद-यात्राओं से चित्त की चिंतन शक्ति बढ़ती ही है। विचारों के नये-नये क्षितिज दीख पड़ते हैं। किसी प्रकार के कष्ट का लव-मात्र अनुभव नहीं होता।

बहादुर के बाद बाहर आन्दोलन का मैं विचार ही नहीं करता। आप लोगों के सामने जो कुछ कहना था कह दिया। अब वह अध्याय समाप्त हो गया है।

विनोबा

१९

जयदम्पुर (कोरापुट)
२-८-५५

श्रीमन्‌जी

ता. १६ का आपका पत्र मिला। पहले के दोनों भी।

आपकी माताजी का स्वर्गवास जन्माष्टमी के दिन हुआ। जन्म-मरण की तिथियों का क्या महत्व हो सकता है? पर हमारे-जैसे भोले लोगों पर उसका भी कुछ असर होता है। मुझे एक ऐसे प्रसंग का उदाहरण

अनुसार मिला ही करता हूं। यह मिलन एक दूसरे प्लेन पर होता है पर 'फिजीकल प्लेन' से वह कम 'रीयल' नहीं है।

विनोबा का जयजगत्

७२

जबलपुर, १७-११ ६

श्रीमन्जी,

पत्र मिला। मेरी सूचना के विषय में तीन बातें स्मरणीय हैं।

(१) रेलवेवालों को वे बहुत सारी चीजें देते थे। मैंने सब नौकरों के लिए (बेसिक पै का एक हिस्सा) सिर्फ अनाज देने का प्रस्ताव रखा है।

(२) उनका उद्देश्य डी ए में से छुटकारा पाने का था। मेरी योजना में डी ए देना ही है। पर देने पर भी 'इन्वेस्स फिगर' के साथ उसका मेल नहीं रहेगा और शिकायत बनी रहेगी। कम-से-कम अनाज मिलता रहा तो उतनी राहत रहेगी। लेनेवाले ने वह अनाज बेचा तो भी मुझे हर्ज नहीं।

(३) किसान से लगान अनाज में लेना है। मेरा कुछ सुझाव अनाज के फ्रंट पर और न्यूनतम करना पर खड़ा है।

यदि पोस्टरों के लिए मुझे कुछ करना पड़ रहा है इसका मुझे दुख है। इन पोस्टरों के रहते बच्चों की तालीम का कोई अर्थ ही नहीं रहता। पोस्टरों के जरिये जो भी एक कम्पलसरी (नि-शुल्क और अनिवार्य) तालीम आंख के जरिये बच्चों को दी जाती है वह नागरिकों के मूलभूत अधिकारों पर प्रहार है ऐसा मैं मानता हूं। इसके रहते मुझे जीवन ही बलाद-सा मालूम हो रहा है। इन्दौर शहर में महीना भर मैं रहा उसमें मेरी आंखें खोल दीं।

कल अचानक मेरी कमर में मोच आई और आज के पड़ाव पर मुझे मोटर से आना पड़ा। प्रभु की लीला है। पीर-पंजाल लांघने का जिसको वह बल देता है उसकी मैदान में वह कमर तोड़ता है। आशा करता हूं एक-दो रोज में ठीक हो जायगा।

विनोबा का जयजगत्

७०

हैदराबाद ४-२-५६

श्रीमन्,

२-१ का पत्र मिला। उसके पहले का भी मिला था। अमृतसर में बहुत-से रचनात्मक कार्यकर्ता मिल रहे हैं यह बहुत खुशी की बात है। इस वक्त खास कुछ सुझाने की मन-स्थिति में नहीं हूं। राज्य-सीमा-समिति की रिपोर्ट के बाद जो बहुत सारी घटनाएं, विघटनाएं और दुर्घटनाएं हुईं उनसे मेरा हृदय बहुत व्यथित है। इस बीच आप लोगों से कुछ सम्पर्क रहता तो अच्छा होता ऐसा लगा।

तरुणकुमार ने जो प्रोग्राम सुझाये हैं उनमें विद्यार्थियों से पत्रातीत सम्पर्क यह एक विषय जोड़ा जा सकता है।

महात्मा के साथ हमारी यात्रा में चंद दिन तुम रहोगे यह जानकर मुझे न सिर्फ खुशी हुई, बल्कि तसल्ली हुई।

इस्माइल मिले थे। इधर भूदान-यात्रा ठीक चल रही है। जो काम करते हैं वे करते हैं, नहीं करते हैं वे नहीं करते हैं। इस सबकी मुझे चिन्ता नहीं होती। यह मैंने ईश्वर पर सौंप दिया है। बहुत अच्छा होता जिन बातों से मन अभी व्यथा हो रही है अगर उनकी चिन्ता भी मैं ईश्वर पर सौंप सकता। मुझे कबूल करना चाहिए, यहां मेरी कुछ भक्ति कम पड़ रही है।

विनोबा की शुभेच्छा

७१

अज्ञात यात्रा (पंजाब)
२१-२-६

श्रीमन्जी

पत्र मिला। माफ दिलाने का काम आपको करना ही नहीं चाहिए। उसके पीछे बहुत काम है। इधर मैं अज्ञात-वास में हूं यह भी मुश्किल है। लेकिन सबसे बड़ा कारण यह है कि मैं उससे अपनी प्रतिष्ठा के

श्री जवाहरलाल नेहरू।

अनुसार मिला ही करता हूं। यह मिलन एक दूसरे प्लेन पर होता है, पर 'फिजीकल प्लेन' से वह कम 'रीयल' नहीं है।

विनोबा का जयजगत्

७२

जबलपुर, १७-११ १

श्रीमन्जी,

पत्र मिला। मेरी सूचना के विषय में तीन बातें स्मरणीय हैं।

(१) रेलवेवालों को वे बहुत सारी चीजें देते थे। मैंने सब नौकरों के लिए (बेसिक पे का एक हिस्सा) सिर्फ अनाज देने का प्रस्ताव रखा है।

(२) उनका उद्देश्य डी ए में से छुटकारा पाने का था। मेरी योजना में डी ए देना ही है। पर देने पर भी 'इन्फ्लेशन स्पिरल' के साथ उसका मेल नहीं रहेगा और शिकायत बनी रहेगी। कम-से-कम अनाज मिलता रहा तो उतनी राहत रहेगी। रेलवेवाले ने वह अनाज देना तो भी मुझे हर्ज नहीं।

(३) किसान से लगान अनाज में लेना है। मेरा मुख्य सुझाव अनाज के फ्रंट पर और न्यूनतम करना पर खड़ा है।

मेरे पोस्टरों के लिए मुझे कुछ करना पड़ रहा है इसका मुझे दुःख है। इन पोस्टरों के रहते बच्चों की तालीम का कोई अर्थ ही नहीं रहता। पोस्टरों के जरिये जो भी एक कम्पल्सरी (निःशुल्क और अनिवार्य) तालीम बोर्ड के जरिये बच्चों को दी जाती है वह नागरिकों के मूलभूत अधिकारों पर प्रहार है ऐसा मैं मानता हूं। इसके रहते मुझे जीवन ही असह्य-सा मालूम हो रहा है। इन्दौर शहर में महीना भर मैं रहा उसने मेरी आंखें खोल दीं।

कल अचानक मेरी कमर में मोच आई और आज के पड़ाव पर मुझे मोटर से जाना पड़ा। प्रभु की लीला है। पीर-पगार कांपने का जिसको वह बल देता है उसकी मैदान में वह कमर तोड़ता है। आशा करता हूं एक-दो रोज में ठीक हो जायगा।

विनोबा का जयजगत्

। ७१

ग्राम निर्माण कार्यालय
नार्थ लखीमपुर—आसाम
१९-७-६१

श्री श्रीमन्‌जी

आप जानते हैं इधर दो महीने से हमारी यात्रा बिलकुल देहात में चल रही है जहां ग्रामदान की अच्छी हवा निर्माण हुई है और उस काम में मैं मशगूल हूं। इस हालत में सिनेमा वगैरह के बारे में जानने का और सोचने का मौका इधर मुझे नहीं मिला। पर पुराने अखबार कुछ मिलते हैं उससे पता चला जिसका आपके पत्र में भी जिक्र आया कि सरकार के निर्णय पर फिल्मों का पहले से कुछ अच्छा सेन्सरिंग हो रहा है जिसके खिलाफ फिल्म उद्योग-पतियों ने एक चिहाड़-सा उठाया है। मुझे इस खबर से दुःख हुआ। आप जानते हैं कि मैंने कई दफा कहा है कि फिल्म उद्योग के खिलाफ मैं नहीं हूं बल्कि अगर उसका ठीक नियमन और आयोजन किया जाय तो मनोरंजन का और शिक्षण का वह अच्छा जरिया हो सकता है। जैसा रस्किन ने लिखा है हर उद्योग के सामने लोकहित का एक ध्येय होना चाहिए। उसके अन्तर्गत उचित मुनाफे का स्थान हो सकता है। लेकिन लोकहित की तरफ ध्यान दिये बिना और लोकहानि प्रत्यक्ष हो रही हो उसकी परवा किये बिना केवल मुनाफे की दृष्टि से ऐसा धंधा उद्योगपति करते जायें यह सर्वोदय के इस जमाने में असह्य है। इतना ही नहीं अगर ऐसा ही रवैया रहा तो लोकमानस पर इतना व्यापक असर डालने वाला यह धंधा प्राइवेट सैक्टर में रहने देना ही खतरनाक माना जायगा। आप यह भी जानते हैं कि मैं प्राइवेट सैक्टर के खिलाफ नहीं हूं बल्कि प्राइवेट सैक्टर को सौ फीसदी अवकाश होगा साथ-साथ पब्लिक-सैक्टर को भी सौ फीसदी अवकाश होगा और दोनों मिलकर भी सौ फीसदी होगा ऐसा हमारा सर्वोदय का गणित है। १ + १ = १ यह गणित किसी युनिवर्सिटी ने मान्य नहीं किया है जो हमने मान्य किया है। ऐसी हालत में सिनेमा इंडस्ट्री को प्राइवेट सैक्टर में रखना चाहिए या नहीं रखना चाहिए, यहां तक सोचने की नौबत आवे यह शोचनीय बात होगी।

धोमसीम क्या मद्योमसीम क्या इस विषय में कोई दकियानूस विचार मैं नहीं रखता बल्कि वैज्ञानिक ढंग से सोचना चाहिए, यही मेरा आग्रह रहता है। यह मेरे सब साथी जानते हैं बल्कि गंदे पोस्टरों के खिलाफ मुझे सत्याग्रह करना पड़ा यह मेरे लिए एक कष्टदायक बात थी। पर लाचार होकर मुझे वह करना पड़ा। पोस्टर्स तो आंतरिक रोग का एक बाहरी चिह्न मात्र था। पोस्टर के नियमन के साथ खराब सिनेमा मंदे गाने आदि का भी सेंसरिंग करना ही था। इस तरफ सरकार ध्यान दे रही है, इसकी मुझे खुशी है। मेरी सिनेमा-उद्योगपतियों से प्रार्थना है कि वे भी इस काम में सहयोग की वृत्ति रखें और देश की तरुण पीढ़ी को प्राणवान् और स्वस्थ बनाने में नेतृत्व करें।

आप मेरा यह निवेदन प्रेस को दे सकते हैं।

विनोबा का जयजगत

७ मदालसा अग्रवाल के नाम

७४

मिर्जापुर, २१-८-५२

चि. मदालसा

माताजी ने रुख लिया तो कुछ फिकर नहीं। इसमें बुद्धि अस्थिर होने का कोई कारण नहीं है। हम जानते तो हैं कि दुनिया में कुछ भी स्थिर नहीं है। फिर भी हमारी बुद्धि तो स्थिर ही होनी चाहिए।

अभिमान के लिए तो सोचना चाहिए। मैं जो कुछ जानता हूं वह तो ठीक लेकिन क्या-क्या नहीं जानता हूं इसका तो पार नहीं है। अब अभिमान का मुद्दा क्या रहा? सॉक्रेटीस ज्ञानी था क्योंकि वह जानता था कि वह अज्ञानी था। सच्चे ज्ञान से विवेक से अभिमान नष्ट होता है।

(हिन्दी में) विनोबा के आशीर्वाद

७४

पवनार, १९५२

चि. मदालसा

चिट्ठी मिली। दुकान[1] में रहो या कन्याशाला में रहो हमें अपने जीवन का नियमन करते तो आना ही चाहिए। रात को ८ बजे और सुबह ४ बजे प्रार्थना दोपहर में १२ बजे तकली (उपासना)। तीनों समय का आहार नियत समय पर। अध्ययन का एक घंटा तो चलता ही है। उस निमित्त घूमना भी हो ही जायगा। इस तरह से बाकी के बचे हुए समय का नियमन भी किया जा सकता है। थोड़ा समय निश्चित रूप से खादी भी रखना चाहिए।

"जाके हिरदे वास-वास विट्ठल बाई रखुमाई"[2]

---

[1] जमनालालजी का गांधी-चौक वाला मकान।

[2] विचार देह ऊपर विट्ठल और रखुमाई के रूप में पिता और माता ही दिखाई देते हैं।

आहार में क्या-क्या रहता है ?
मेरा स्वास्थ्य तो उत्तम ही है।

विनोबा के आशीर्वाद

७६

पवनार, १६ ९ ३२

चि मदालसा

अतिथि को देव क्यों माना जाय ? यह जो प्रश्न मुझसे कल पूछा था उसका उत्तर दे रहा हूँ।

जिन-जिनका अपने ऊपर उपकार हुआ है उन-उनके संबंध में देव भावना रखकर उनकी सेवा करना और उनके ऋण से अंश-मात्र ही क्यों न हो मुक्त होने का प्रयत्न करना अपना धर्म है।

मातृदेव पितृदेव आचार्य-देव ये तीनों देव क्यों माने जायं यह आसानी से समझ में आनेवाली बात है। हमारे ऊपर इनके अनन्त उपकार हैं। उसी तरह से समाज के भी हमारे ऊपर महान उपकार हैं। अनन्त रूप से हम समाज की सेवा ही लेते रहते हैं। इसलिए समाज को देवरूप मानकर उसकी भी सेवा करना यह हमारा सहजधर्म है। हमारे घर आया हुआ अतिथि समाज का एक प्रतिनिधि है ऐसा समझना चाहिए। अतिथि के रूप में समाज हमारी सेवा मांग रहा है यह समझ होनी चाहिए, अन्यथा समाज तो केवल अव्यक्त है। इसलिए 'अतिथि-देव' का अर्थ 'समाज देव' है। समाज अव्यक्त है अतिथि व्यक्त। अव्यक्त समाज की व्यक्त मूर्ति अतिथि है।

अतिथि की भांति दीन दुखी पीड़ित रोगी इत्यादि की सेवा करना भी समाज-पूजा का ही अंश है। दरिद्रनारायण भी महान देव ही है। उसका हमपर जो उपकार है वह कभी भी अदा होनेवाला नहीं है।

विनोबा के आशीर्वाद

७७

नालवाड़ी २९ ११ ३३

चि मदालसा

मैं २ तारीख को यहां से हरिजन-कार्य के लिए पुल्गांव गया था

उसके बाद कल ता० २८ को शाम को वापस आया हूं। आश्रम के पांच केन्द्र देख आया। पुरुषोत्तम साथ में था। उसके अतिरिक्त स्थानीय आश्रम के व्यक्ति भी साथ में रहते थे। पुरुषोत्तम सावंगी कोल्हापुर, नालवाड़ी देवली में पड़ाव हो चुके हैं। इस बार के भ्रमण में मुझे बहुत-कुछ देखने को मिला है। प्रत्यक्ष आंखों से देखने में और कितनी ही अच्छी तरह सुनने में बहुत अन्तर होता है। इस प्रवास से नये विचार भी सूझे। वे केन्द्रों के कार्यकर्ताओं के सामने प्रगट किये हैं। इसके अलावा जनता को क्या लाभ हुआ होगा सो तो राम जाने। व्याख्यान आदि तो करी होने थे, वे हुए ही।

तेरा पत्र प्रवास में ही मिला था। उसका जवाब देने का सवाल ही नहीं था। आज चार लाइनें लिख देता हूं।

तुम लोग आजकल निसर्ग-उपासना का आनन्द लूट रहे हो। इस वाले की कल्पना से निसर्ग का पूरा फायदा नहीं मिल पाता। इसलिए केवल उतनी ही कल्पना न रखते हुए उसके साथ दूसरी भी व्यापक कल्पना हम कर सकें तो ऐसे स्थानों में हरि-दर्शन प्राप्त हो सकता है। पर्वत नदी आदि स्थानों में शिमला महाबलेश्वर इत्यादि विलास-स्थानों का निर्माण करना ईश्वर का बड़ा अपमान है। ऐसा अपमान हमारे पूर्वज नहीं करते थे। इसलिए निसर्ग की कृपा से उन्हें आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होता था। आज के कार्यकर्ता जिन्हें कर्मयोग का नया चस्का लगा है उन निर्जन स्थानों की ओर वहां 'बाग' लगानेवाले तत्त्वज्ञानियों की कितनी ही निंदा क्यों न करें, फिर भी ऐसे स्थानों की पावनता जो अनुभव-सिद्ध है वह तो कायम ही रहती है। वैदिक ऋषियों उपनिषदों गीता योग-शास्त्र एवं संतजनों के अनुभवों में एकांत-सेवन तथा निसर्ग-परिचय के अनेकविध लाभ वर्णन किये गए हैं। जैसे कि

"एक [illegible] शार्दूलिका, वसती वनस्थलिका।
सांपातिका शालिका। एकाकी चर" इत्यादि

—'कोलाहलरहित वनस्थलियों को अकेले अपने जपो से जो आबाद करते हैं' इत्यादि भी ज्ञानदेव के वचन तुझे ज्ञात हैं ही। इस पत्र में मनुष्य-समाज के सबसे पुरातन ग्रन्थ का एक वचन यहां उद्धृत करता हूं।

उपह्वरे गिरीणां संगथे च नदीनां ।
धिया विप्रो अजायत"—ऋग्वेद ।

इस मंत्र के ऋषि 'वत्स काण्व' हैं । छंद गायत्री और देवता इन्द्र है । इन्द्र माने परमात्मा । उसीको इस मंत्र में 'विप्र' माने 'ज्ञानी' कहा है । वह कहां और कैसे प्रकट हुआ 'अजायत' जन्म पाया—प्रकट हुआ यह इस मंत्र में बताया गया है । पर्वतों की कंदराओं में और नदियों के संगम पर (धिया) माने ध्यान-चिंतन से ज्ञानी का जन्म हुआ ।

ज्ञानी पुरुष का जन्म कहां हुआ और वहां क्या करने से हुआ ये दोनों बातें इस मंत्र में हैं ।

यह वैसे ही लिख डाला । लेनेवाले को जो रुचे सो वह ले बाकी का मेरा मुझे वापस दे ।

जमनालालजी और जानकीबाई को मेरे सप्रेम प्रणाम । उनको लिखकर मेरी और उनकी भी शांति में खलल किसलिए ?

विनोबा के आशीर्वाद

७८

नालवाडी ११ १२ ४१

चि. मदालसा

दोनों पत्र मिले । भिन्न-भिन्न पदार्थ खाने में आये इसकी कोई बात नहीं । अगर शरीर का वजन बढ़ा तो वनदेवी की कृपा होगी ।

निर्भयता तीन प्रकार की है । जानकार निर्भयता ईश्वर-निष्ठ निर्भयता विवेकी निर्भयता । जानकार अर्थात् भिन्न-भिन्न प्रकार के भयों से परिचय पाकर उनका इलाज सीख लेने से जो निर्भयता आती है वह । इसकी मर्यादा है । जितनी वह प्राप्त कर लेना सम्भव हो उतनी जमा लेनी चाहिए । जिसे सांपों की पहचान हो जाय निर्विष सविष की परख हो जाय सांप पकड़ने की कला सध जाय काटने के बाद करने के इलाज मालूम हो जायं सांप को कैसे टालना यह सब जान ले तो उसे सांपों के संबंध में बहुत-कुछ निर्भयता आ जायगी । अर्थात् यह सांपों तक ही रहेगी और हरेक के लिए इसे हासिल करना संभव भी नहीं होगा । लेकिन जिसे सांपों के बीच रहना है वह यथा-सम्भव इसे प्राप्त कर ले तो यह व्यवहार में उपयुक्त होने जैसी है, क्योंकि

इसकी वजह से मनुष्य में भी हिम्मत आ जाती है। यह उसके हाथ से अच्छा धार्मिक वर्तन नहीं होने देती बल्कि उसकी मर्यादा वाणी से भी दोस्ती करने की वृत्ति निर्माण होना सम्भव है। फिर भी यह निर्भयता मर्यादित है। दूसरी है ईश्वर-निष्ठ। यह पूर्ण निर्भय करनेवाली है। हरेक को इसे प्राप्त कर ही लेना चाहिए। लेकिन दीर्घ प्रयत्न उत्तम पुरुषार्थ ('पुरुष' अर्थात् स्त्री भी) और भक्ति इत्यादि साधनों को सतत आचरण में लाये बगैर यह प्राप्त नहीं होगी और जब प्राप्त होगी तब दूसरी किसी भी प्रकार की मदद की अपेक्षा नहीं रहेगी। इस निर्भयता की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ती रहे तो कभी-न-कभी पूर्णता प्राप्त होगी। इन दोनों तरह की निर्भयता का उल्लेख तेरे खत में है। इसके अलावा तीसरी विवेकी निर्भयता है। यह मनुष्य को निरर्थक साहस नहीं करने देती और इतने पर भी अगर भय निर्माण हो ही जाय तो विवेक से बुद्धि को शांत रखना सिखाती है। यह विवेकी निर्भयता अपने अंदर जमा लेने का प्रयत्न करना चाहिए। यह सबके लिए सुलभ है। समझो कि मैं शेर के पंजे में फंसने ही वाला हूं पर यह संभव है कि मेरी मौत अभी लिखी न हो। अगर लिखी होगी तो टलेगी नहीं। लेकिन मैं अगर भयभीत न होते हुए बुद्धि शांत रखने का प्रयत्न करूं तो बचाव का कोई-न-कोई मार्ग निकल आना संभव है। और कुछ नहीं तो बुद्धि को सावधान रखा जा सका तो अंत में हरि-स्मरण तो किया ही जा सकेगा। यह लाभ भी कम नहीं है बल्कि विचार करें तो परम लाभ है।

विनोबा

७१

बजाई गुरुटी ११ ९ ३५

चि० महालक्ष्मा

गाय का दूध दुहना शुरू किया, यह अच्छा है। दूध दुहने के पहले पहले गाय को खाना देने का रिवाज है। जो मनुष्य खाना दे वही दूध दुहने-वाला हो तो गाय को प्रेम महसूस होता है और वह सुगमता से दूध निकालने देती है। इसके अलावा दूध दुहना भी एक कला ही है। लेकिन दूध दुहने से पहले गाय के सामने खाना रखने पर गाय दूध किस तरह निकालने देती है यह, देखने लायक है।

तेरे अक्षर थोड़े-से प्रयत्न से सुधर सकते हैं। १ होल्डर छोड़कर बरू की कलम बनाई जाय। २ मोड़ □ चौरस है। वह जरा लम्ब चौरस [] किया जाय। और ३ अक्षर का नमूना आंखों के सामने रखकर अक्षरों के अवयवों का प्रमाण ध्यान में लिया जाय। मेरी समझ से इस काम में १५ मिनिट काफी होंगे। अगर जरा धीमे तो लिखने ही होंगे।

यह मैं पांच-पचीस लोगों के सामने ही लिख रहा हूं। अगर इस तरह समय न निकाला जाय तो समय मिलेगा ही नहीं। मेरा प्रार्थना का समय निश्चित रूप से शाम को ८ और सुबह ४ और दोपहर को १२ बजे का तकली कातने का तय है। वह टलने का मौका आजतक नहीं आया है। इस प्रवास में टलने की कोई सम्भावना भी नहीं है।

अब समाप्त करना चाहिए।

विनोबा के आशीर्वाद

८

पेवर्डे ८ ४ ३५

चि. मदालसा

देवली की खादी-यात्रा के लिए तू जान-बूझकर गर्मी में वहां रही। गाड़ी आदि से न जाकर पैदल जाने का तय किया। किन्तु पांव से भी अधिक श्रेष्ठ वाहन—मन से तू आई। जो मन से आया वही दरअसल आया। चित्त के समीप भगवान है। नैवेद्य (सूत की गुंडी) आगामी वर्ष के लिए हममें से हरेक को अर्पण करना चाहिए।

खादी-यात्रा की यह कल्पना शक्तिशाली प्राणदायी कल्पना है। उसमें अगर हम अपना हृदय उड़ेलें तो वह राष्ट्र को नवीन स्फूर्ति दे सकेगी यह इस बार की यात्रा ने दिखा ही दिया है। मेरी स्फूर्ति की तो सीमा ही नहीं रही। दो घंटे तक सतत बोलता ही रहा। उसका सार तो वल्लभस्वामी के पास तैयार होगा। अनेक नई कल्पनाएं सूझीं। उनका अमल आगामी वर्ष में करेंगे।

इस बार अपने साथ तुकारामबुवा को भी रखा है क्योंकि उसकी मनोदशा बहुत ही व्याकुल है। वह पास में है वह मेरे आनन्द के लिए है। अन्य अनेक—शरीर से नहीं तो मन से—साथ में फिरते हैं। वे कौन-कौन

एक ओर पर्वत और दूसरी ओर माता इन दोनों के दरम्यान बाकी सारी सृष्टि और उसे-संबंधी बैठा दिये जायं। माँ की याद चार दिन में चालीस बार आई होगी।

गीता माता और तकली—मेरे जीवन की त्रिमूर्ति। मेरा सारा विष्णु सहस्रनाम इन तीनों में समा जाता है।

९॥ बजे जाने के कारण यहीं समाप्त करता हूं क्योंकि यह मर्यादा बंध गई है। बाकी का प्रातःकाल की प्रार्थना के बाद लिखा जायगा।

रोजाना ८ लटी (१६ तार की) कातने का नियम किया है। ३ १२ नम्बर की ६ ६॥ लटी सुबह तीन घंटे में होती है। उस समय मौन रहता है। बची हुई पढ़ाते समय कातता हूं। सुबह ६ से ७ और दोपहर में १२॥ से ७॥ बोलने का समय बाकी मौन।

विनोबा के आशीर्वाद

८२

नालवाड़ी ८-५-३५

चि. मदालसा

हाल ही में लिखा हुआ पत्र अबतक मिल गया होगा। वह रवाना हुआ उसी दिन तेरी ओर से खुलासेवार पत्र मिला।

अनंत गुणदोष प्रकृति में भरे हुए हैं। किन्तु उन सबसे परे कोई एक तत्व है। उसे इन गुण-दोषों का जरा भी स्पर्श नहीं है। और वह मैं हूं। यह मुख्य बात जंच जाय तो बाकी का काम सुलभ हो जाता है। इस बात पर मेरा विलक्षण विश्वास बैठ गया है। किसीके गुण-दोष आममान होते हैं। उस ओर जरा भी ध्यान न दिया जाय ऐसा मेरे कहने का अर्थ नहीं है। गुण बढ़ाये जायं दोष निकाले जायं ऐसा यह दुहेरा प्रयत्न सतत करते रहना तो अत्यन्त आवश्यक ही है। लेकिन वैसा करते रहने में अधीरता या अशांति उत्पन्न होना ठीक नहीं है। इसके लिए जो उपाय मुझे अनुभव से जंच गया है वह उपरोक्त विचारधारा में मिलता है। यह विचारधारा गीता के अध्याय ३ श्लोक २७ २८, अध्याय १३ श्लोक २९, अध्याय १४ श्लोक १९ इत्यादि में व्यक्त हुई है। मुझे वह बहुत प्रिय है क्योंकि इसका मुझपर अपार उपकार हुआ है और आगे भी होनेवाला है।

मैंने तुझे जिस तरह से २ २।। वर्ष सतत स्मरण किया है उसी तरह से आगे भी मेरी ओर से सब चाहो मिलता रहेगा । इन दिनों मेरा जीवन मौन में समाया हुआ दिखाई देता है, पर इस मौन में भी तेरे लिए तो स्मरण रखा ही हुआ है ।

रोने-गाने की जरूरत ही न रखना उत्तम मार्ग है पर अगर वह जाना ही पड़े तो उसे किसके आगे जाया जाय इतना विवेक होना चाहिए । चाहे जिसके आगे 'मैं चंचल मैं दुर्बल मैं मूरख' —ऐसा पहाड़ा पढ़ते रहना भी एक तरह का जप होता है और ऐसा जप करने से मनुष्य वही अवगुण युक्त हो जाता है । इससे उलटी भाषा भले ही सतत जपते रहें और उसीके अनुसार दुनिया में प्रसंगवश बोलते भी रहें, इसमें असत्यता नहीं है बल्कि वह सत्य-दर्शन है । 'मैं चंचल' आदि कहना ही असत्य है । यह सब मन-देह बुद्धि में तो सत्य होगा ऐसी मैं आशा रखता हूं । योग्य व्यक्ति के आगे स्वभाव के जो अवगुण दिखाई दें उन्हें प्रसंग-वश प्रकट किया जा सकता है । लेकिन तेरा सवाल है ऐसा योग्य व्यक्ति मैं हूं यह मैं कबूल करता हूं ।

व्याकरण को अभी मेरे पास वेदाभ्यास करना बाकी है । प्रभु की इच्छा होगी तो उसे इस काम के लिए अवश्य समय दूंगा । महात्माजी ने अपना समय उसको देना ही है । और अब तीसरा प्रयोग शुरू किया है पतीना का । एक किनारे आ लगा है । दूसरा मध्य में है । तीसरे का आरम्भ है । ऐसा ही यह मरणांतक चलनेवाला है क्योंकि जीनेवाले की चोट सहे बिना छूटी नहीं निकलती बल्कि मरने पर भी निकलेगी या नहीं, यही आशंका है ।

उद्योग प्रयोग और योग यही साधक के जीवन का संक्षिप्त स्वरूप है । मेरे प्रयोग सर्वस्व की बाजी लगाकर चल रहे हैं और वे पूर्णरूप से सफल हैं ऐसी मेरी राय बनी है । उस सफलता का प्रमाण हृदय की बालकता में प्रत्यक्ष दिखाई देता है । ज्योंही बटु आकर पास बैठता है कि मेरे हृदय में हुए, न हुए, सारे दोष एकदम दूर हो जाते हैं—इसके मानी ही यह है कि मैं विद्यार्थियों के लिए ही पैदा हुआ हूं ।

अपने जीवन में आज जो कुछ मैं करूंगा उसकी कीमत जगत को जो

मानी होगी यह कविता। किन्तु मेरी दृष्टि से यह हृदय धोने की शिक्षा अध्यापन का यह तीर्थ-स्नान ही मेरा मुख्य जीवन है। मेरे विद्यार्थी और मेरे पारस्परिक संबंध का वर्णन करना हो तो चंद्र-चकोर, मेघ चातक इत्यादि काल्पनिक दृष्टांत ही खोजने होंगे। ९॥ बज गये।

विनोबा के आशीर्वाद

८१

वर्धा १ ९ ३५

चि. मदालसा

तेरा पत्र प्रवास से आने के बाद यहां मिला। अब यह दोपहर में तकली-उपासना के बाद लिखता रहा हूं। सुन्दर अक्षरों के लिए कौन किसको शाबाश करे, क्योंकि ज्यादा अक्लमंद या ज्यादा पढ़-लिखे की यह एक पहचान है।

अब रोज १६ लटी[1] कातने का महायज्ञ[2] शुरू किया है। कुछ दिन से ३ नम्बर का सूत निकालने का प्रयत्न चालू है। परसों ८॥ घंटे लगे। कल भी इतने ही। थोड़े प्रयास से ८ घंटे में हो जायगा। लेकिन अध्यापन पत्र-व्यवहार इत्यादि उद्योग बचे हुए समय में होते हैं। साधारण रूप से ८॥ घंटे का अंदाज लगा रखने में हर्ज नहीं है। प्रार्थना १ घंटा तकली आध घंटा। इस तरह कुल मिलाकर १० घंटे का हिसाब लगता है। इसके अलावा २ या ३ घंटे बचेंगे जो बाकी के कामों के लिए पर्याप्त होंगे। कातते हुए भी कुछ उद्योग हो सकते हैं। रोजाना इतना कातना काम तो चरखा-संघ की मजदूरी के हिसाब से ५)रु. मासिक मजदूरी होगी। खासकी (धारा जिले) की तरफ रहनेवाली औरतों की मजदूरी का हिसाब चरखा-संघ की रिपोर्ट में इस प्रकार दिया है

कातनेवाली बाई की ८ घंटे की औसत मजदूरी ७॥ पाई मध्यम मजदूरी ~) एक आना उत्तम मजदूरी ~)॥ डेढ़ आना। इस हिसाब से

---

[1] एक लटी याने १६ तार की सूत की आंटी या लच्छी।

[2] आश्रम में १६ तार की एक लटी रोज कातना यज्ञ कहलाता है। १६ लटी रोज कातने का विनोबाजी का यह प्रयोग उनकी भाषा में महायज्ञ ही था।—सं

प्रतिदिन की करीब =)॥ २ (अढ़ाई आने और दो पाई) मजदूरी कताई-कर्ता को पर्याप्त प्रतीत होगी। मेरी राय में मेहनत के प्रमाण में यह मजदूरी चार आना अवश्य होनी चाहिए। पू. बापू की राय में आठ आने हैं, किन्तु इतनी मजदूरी देकर खादी खरीदना हमारे श्रीमानों को पुसाता नहीं। इसका इलाज यही है कि मुझ जैसे को ऐसी मजदूरी पर ही जीवन-निर्वाह करना चाहिए। फिलहाल मैंने इसमें हाथ नहीं डाला। अभी तो जितना शारीरिक परिश्रम करना उचित है उतना करने में ही संतोष माना है। इन सब बातों का महत्त्व अथवा असमुन्नता क्या है इस विषय में कुछ लिखकर पाठकों की बुद्धिमत्ता का अपमान नहीं करना चाहता।

पिछले दिनों सोडा से १६ लटी बनवाने का प्रयत्न किया था। बेचारे ने १२-११ घंटे काम करके ज्यों-त्यों १२ नम्बर की १६ लटी पाँच दिन दी फिर उसकी शक्ति खतम हो गई। उस वक्त मेरी निष्ठुरता देख बहुतों को ताज्जुब होता था पर अब ध्यान में आयेगा कि वह निष्ठुरता नहीं थी बल्कि विशुद्ध दया थी। नदी समुद्र में मिल जाती है फिर आगे उसे कहीं जाने का बाकी नहीं रहता। उपरोक्त नियम के बाद मेरी भी यही स्थिति हो गई है। १६ लटी में १६ कलाएं पूर्ण होती हैं।

नमक के बारे में तुझे जो शंका आई है, वह मुझे मान्य नहीं है परन्तु वैद्यक अभी गणित के समान निश्चित शास्त्र नहीं बना है। इसलिए थोड़ा नमक लेकर देखना अनुचित नहीं है।

ईश्वर के विषय में श्रद्धा रखनेवाला इन्सान सहज रूप से ही निर्भय होकर विचरता है। सहज वर्तन करने में थोड़ी-बहुत भूलें भी हो जायं तो उसमें हानि नहीं है। गीता में यह आया ही है।

माँ के साथ तुम्हारा मेल बैठता जा रहा है इसमें दोनों का ही कल्याण है। तुमको चांदनी बहन-सी लड़कियों की ओर से मिलने लगी है। पुर्जों

श्री महादेवभाई देसाई ने खेल से बचाने के लिए विनोबाजी से पूनियों की मांग की थी। विनोबाजी के पास भेजने के लिए पूनियां नहीं थीं, तब उन्होंने कन्या-आश्रम की लड़कियों से विधिवत रूप से पूनियों की भीख की थी। उसको उन्होंने चांदनी कहा था। —सं १

में से मनोहरजी और रामदासभाई कंकड़ी भेजते हैं। सभी पूनियां जितनी बढ़िया होनी चाहिए उतनी नहीं हैं पर उनमें सुधार किया जा सकेगा। आज जो बिल्कुल ही अभ्यास छूट गया है इसमें महसूस से यह कुछ कम होगा। आजकल तकली की गति[१] साधारणतया ११८ के आसपास आती है। यह डेढ़ महीने में अधिक-से-अधिक १९९ व कम-से-कम १ ८तार की गति आई थी।

बाल कटवानेवाली लड़कियों की संख्या बढ़ी है। इसमें निष्ठा की भावना कितनी और मौज की भावना कितनी यह मैं नहीं जानता।

विनोबा

८४

वर्धा, १४ ६ ३५

चि मदालसा

बहुत-से सवाल बड़े सवाल हैं ऐसा कहकर मैं जवाब न देकर ही छोड़ देता हूं। इसका अर्थ स्पष्ट करने की आज इच्छा है।

अर्थ पहला—बड़े प्रश्न यानी फुटकर निकम्मे प्रश्न, जिनमें समय बिताने की बड़ों लोगों की आदत होती है, लेकिन जिनमें मुझे कोई रस नहीं मालूम होता। "रामाय स्वस्ति रावणाय स्वस्ति" यह है इन प्रश्नों का जवाब।

अर्थ दूसरा—सामान्य तत्व की बातें समझ लेना समझा देना। तफ-सील अपनी मैं तय करूं दूसरे की दूसरा तय करे। ऐसा मेरा ढंग है। मैं तफ-सील के प्रश्न एक तरह से तो बिल्कुल मामूली होते हैं पर हरेक की अपनी मनोदशा के अनुसार महत्व के होते हैं। उसका उत्तर कोई तीसरा दे यह लाभ दायी होता हो तो बात नहीं है बल्कि हर कोई अपना हल गुन ढूंढे इसमें बुद्धि का भी विकास होता है।

अर्थ तीसरा—कुछ लोगों की श्रद्धा के अनेक स्थान होते हैं। जैसे तू यह आनन्द की बात समझनी चाहिए। लेकिन उसके साथ स्वतन्त्र-बुद्धि माने

---

१ प्रतिदिन दोपहर को ठीक १२ बजे नियत तक का हिसाब लगा-कर तकली का कौशलपूर्वक सूत काता जाता था और जितने तार हुए यह लिखा जाता था। ११८ तार उत्तम गति का द्योतक था। —सं

अपनी अक्ल काम में लाने का प्रश्न न रहे तो उस आदमी की स्थिति या बहुविध फजीहत होती है। उदाहरणार्थ मुझे अगर एकाध सवाल का हल खोजना हो तो माँ की, शास्त्री की, मेरी और बापू की और पता नहीं किन-किनकी, सलाह पूछनी ही चाहिए। अब चारों पर्वे अगर समान विचार के हों तो भी उनकी राय में थोड़ा-बहुत फर्क तो होगा ही। और यह राय पूछकर पूछनेवाले की बुद्धि का दीवाला बढ़ेगा। ऐसी स्थिति में सलाह न देने में मैं उस हदतक उस आदमी का दीवाला घटाता हूँ।

ऐसी यह 'बहुधा' स्थिति हर आदमी की नहीं होती है पर मैं स्पष्ट सलाह प्रसंगवशात् देता भी हूँ। प्रसंगवशात् कहने का कारण नं० २ में दिया है।

आश्रम में नमक छोड़ा गया है, यह जानकर केवल इसी वजह से नमक छोड़ने की उतावली करने की जरूरत नहीं है। कोई एक सिद्धान्त सही हो तो भी उसका प्रति-सिद्धान्त भी सही ही हो यह जरूरी नहीं है। उदाहरण के लिए तर्कशास्त्र का ही दृष्टांत लिया हो तो कौवे काले होते हैं यह सच है। फिर भी जो कोई काले हों वे कौवे ही हों सो बात नहीं है। इसी तरह आश्रमवासियों ने नमक छोड़ा हो तो भी नमक छोड़ने से मनुष्य आश्रमवासी बनता हो सो नहीं है। कोई भी कदम जल्दी में न उठाते हुए विवेक के साथ और निश्चयपूर्वक उठाना सीखना चाहिए।

अल्मोड़ा से जल्दी नीचे उतरने के बजाय माँ के साथ वहीं रहो, इसमें मुझे कोई हर्ज नहीं मालूम देता।

समय बरबाद होता है यह मानना ठीक नहीं। समय बीतेगा तो सही क्योंकि उसके बीते बिना न दिन का अस्त होगा न उदय होगा। केवल देखना यह है कि बरबाद होने का मतलब क्या। आजकल हमारे बहुत-से साथी देहातों में बसे हुए हैं। दो-चार बच्चे उनके पास आ जाते हैं। इसके अलावा आसपास कोई उनको पूछता ही नहीं और विचारों का बहुत-सा समय लोगों की दृष्टि से तथा उनकी अपनी दृष्टि से भी बरबाद होता है। मुझे लगता है कि इसी परिस्थिति में मैं रहूँ तो मेरा वक्त बरबाद नहीं होगा। मेरा चरखा मेरे साथ रहेगा। प्रार्थना रुकेगी नहीं। तकली तो निर्मलजीव माला है जो मरने पर भी हटाकर अथवा बचाकर चली रहेगी। और

राम-नाम को तो कोई छुड़ा ही नहीं सकता। अभ्यास तो समीप उपस्थित रहेगा ही। पांवों को छिलने की आदत हो गई है वह बदलेगी नहीं। दैनिक देहकार्य नियमित रूप से होते रहेंगे। रोज के अनुभवों का कल्पनाओं का विचारों का लेखा-जोखा रखा जायगा। अगर दो-चार ही बच्चे पास आयें तो उनकी अवहेलना न करते हुए, उनपर अपना सर्वस्व लुटा दिया जायगा। अगर सारी दुनिया भी ऐसा कहे कि तेरा समय बरबाद हो रहा है तो उसे सुनने में समय बरबाद नहीं किया जायगा। इससे अधिक आज भी मैं यहां क्या कर सकता हूं और वहां भी क्या कर सकूंगा?

हिन्दू-धर्म मूर्तिपूजक है। मूर्तिपूजा के मानी है कि प्रत्येक वस्तु के पीछे कोई अमूर्त तत्त्व छिपा हुआ है अथवा दूसरे शब्दों में मूर्त माने अमूर्त का प्रकाश है यह ध्यान में रखते हुए आस-पास की हर वस्तु में से या घटना में से या व्यक्ति में से बोध ग्रहण करना। ऐसी जिसकी दृष्टि हो जाय उसका समय कहीं भी और कभी भी और किसी भी तरह बरबाद नहीं हो सकता।

प्रवास में मेरा स्वास्थ्य बिगड़ा था यह तेरे पत्र से मुझे मालूम हुआ। इस समय के प्रवास में तीन पौंड वजन बढ़ाकर आया हूं। मेरी राय में इसका श्रेय चरखे को है। मेरे ये पत्र बहुधा काकाजी को मिलते होंगे। उनको और जानकीबाई को प्रणाम न लिखते हुए भी पहुंचे।

विनोबा

८५

वर्धा, १९-७-१५

चि. मदालसा

भगवान् ने हिमालय की गणना विभूतियों में की है। उसकी महो-च्चता का अब प्रत्यक्ष अनुभव मिल रहा होगा। कुछ विभूतियों का महत्त्व तात्कालिक होता है। वैसी ही गीता में भी आई हैं। पर कुछ विभूतियां जो विशेष नित्यसिद्ध होती हैं उन्हें चिरंतन कहा जा सकता है। यों तो दर असल इस जगत में एक आत्मतत्त्व ही चिरंतन है और विभूतियों का वर्णन करते समय 'अहमात्मा गुडाकेश' इसी प्रकार आरंभ किया है। इस महान् विभूति में बाकी की सब विभूतियों का सहज ही समावेश हो जाता है।

बाह्य विभूति-दर्शन से जो आनन्द होता है, उसका भी कारण यही है कि उसमें आत्मा का गुण प्रकट होता है। समुद्र को देखकर आत्मा की गंभीरता, कमल को देखकर आत्मा की अलिप्तता, रात को देखकर आत्मा की प्रसन्नता, सूर्य को देखकर आत्मा की तेजस्विता, चंद्र को देखकर आत्मा की आल्हादकता, हिमालय को देखकर आत्मा की स्थिरता इत्यादि आत्म भावों का अनुभव होता है, इसलिए आनन्द-अनुभूति होती है। सजे हुए अक्षर सुंदर प्रतीत होते हैं, क्योंकि उनमें आत्मा की व्यवस्थितता प्रकट होती है और व्यवस्था के मानी है समता। छिपे हुए अक्षर भी सुंदर प्रतीत होते हैं। उसका कारण यह है कि उनमें आत्मा की स्वच्छंदता और स्वतन्त्रता प्रकट होती है। जहां-जहां आत्मा की प्रतीति भी उपलब्ध होती है, वहीं सौंदर्य, संतोष, समाधान और सुख का भास होता है। सृष्टि-दर्शन से प्रायः सभीको आनन्द होता है। परन्तु सृष्टि में समाये हुए आत्मतत्त्व की जिसे पहचान होती है, वह कवि कहलाता है।

हिमालय की सन्निधि में रहकर अनेकों ने महान् तपस्या की है। उस तपस्या की पावनता हिमालय के मुख्य अंग की शान्ति के रूप में झलकती है। अनेक ऋषियों ने उस (हिमालय) की गुफा में बैठकर जगत के हित का चिंतन किया है। उनकी वह विश्व-कल्याण की कामना गंगा आदि नदियों के प्रवाह के रूप में आज भी बह रही है। हिमालय के शिखरों का शरीर से और उसके शिखरों का अनेक ऋषियों ने आक्रमण (उल्लंघन) किया है। वहांसे बहनेवाले उनके विचारों की पवित्र हवा के प्रवाह हिंदुस्तान के हर मनुष्य के हृदय का आलिंगन करके उसे जगाते रहते हैं। रात को सोते समय एक बार उत्तर दिशा का दर्शन करके ध्रुव तारे की निश्चलता का ध्यान करके सोनेवाला शुद्ध-चित्त मनुष्य एक हजार मील दूर रहकर भी हिमालय के सान्निध्य का अनुभव कर सकता है। उत्तर दिशा में सप्त ऋषियों के तारे भी दिखाई देते हैं। उनकी आकृति के संबंध में अनेकों ने अलग कल्पनाएं की हैं। परन्तु हिंदुस्तान के नक्शे के उत्तर प्रदेश की आकृति—काश्मीर और हिमालय को मिलाकर, जैसी बनती है वैसी ही मुझे वह सप्तर्षियों की आकृति दिखाई देती है।

जमनालालजी कह रहे थे कि तेरी मां कोई जप करती है। यह

सुनकर मुझे कितना आनन्द हुआ है। मनु (महाराज) ने कहा कि इन्सान के हाथ से और कोई साधना हो पावे या न हो पावे फिर भी अगर वह श्री प्रान से पवित्र भगवन्नामों का जप करता जाय तो वह सिद्ध हो सकता है। सर्व यज्ञों में मैं जप-यज्ञ हूं इसका अर्थ यह है कि बाकी यज्ञों में कुछ-न-कुछ बाह्य साधनों की सिफारिश की अपेक्षा रहती है। ऐसे किसी भी साधन की अपेक्षा न रखते हुए सहज रूप से सब कोई जिसे कर सकते हैं ऐसा कोई यज्ञ है तो वह जप-यज्ञ ही है। हमारी मा कहा करती थी कि "आपण जप जपतों तर जप आपल्याला जपतो" यानी जब हम जपों का जाप करते हैं तब जप हमारी रक्षा करते हैं।

फिलहाल हमारे अध्यापन में सुबह की प्रार्थना के बाद कठोपनिषद् चालू है। नामदेव और सत्यव्रतन् प्रातः ३॥ बजे उठकर नित्यकर्म से निपटकर कन्याश्रम की प्रार्थना में आते हैं और प्रार्थना समाप्त होते ही पाठ शुरू होता है। पाठ में अभी जप ही चलता है यानी संथा[1] चालू है। अर्थ का बाद में देखा जायगा। वेद की ध्वनि में जो सामर्थ्य है उसका प्रभाव अर्थज्ञान से कम नहीं। प्रतिदिन प्रायः आध घंटे में ३ श्लोकों का उच्चारण होता है। तीन वल्ली समाप्त हो चुकी हैं। चौथी चालू की है। एक महीने में इतना हुआ। तू अनेक बार ऐसा कहती थी कि अभ्यास करते समय विचार सूझते हैं पर बाद में दिन भर कुछ याद नहीं आता। इसमें मेरी भूल थी। अर्थ समझाने के गौरव में मैंने संथा नहीं दी। अगर वह दी होती तो दिनभर विचार सूझते रहते। ध्वनि का विलक्षण सामर्थ्य है। इसीलिए उसे शब्द-ब्रह्म या नाद-ब्रह्म कहते हैं। सायंकालीन प्रार्थना में एकाध भावभरा भजन सुनने को मिल जाय तो सुबह-उठते-उठते कुछ भी विचार किये बिना वही याद आ जाता है। यह सबों का अनुभव है। मन के अंदरूनी परदे पर, यानी बुद्धि के समीप के हिस्से पर नाद-ब्रह्म का गहरा असर होता है। इसलिए आगे कभी भी जो हिस्सा पढ़ा जा चुका है उसमें स्मरणीय हिस्से की संथा लेना।

भाऊ अंग्रेजी सीखता है। जैसे कुम्हार के पास सारा माल मिट्टी का

---

[1] संस्कृत श्लोकों का शुद्ध उच्चारण के साथ सस्वर पाठ किया जाना।—सं.

ही बनता है। जैसे हमारे पास अंग्रेजी हो, संस्कृत हो या मराठी हो या हिन्दी हो, सबकी मूल मिट्टी एक ही है। आकार जिसको पसन्द हो वो मांग ले। इसलिए अंग्रेजी में बाइबिल चलता है।

वत्सला हाल ही में घर की सेवा से उत्तीर्ण होकर आई है। उसका गणित आगे चलने लगा है। उसके साथ अनसूया तो रहती ही है। वत्सला के ऊपर सत्याग्रहाश्रम के कताई-विभाग की जिम्मेदारी आई है और अनसूया ने एक नया प्रयोग शुरू किया है। कपास साफ करने से लेकर लोढ़कर, पींजकर २ तोले पूनी रोज बनाना। उसकी कमी हो तो ५ आने मजदूरी तय की है। इस प्रकार मजदूरी लेकर उसपर आजीविका चलाना। इसमें पांच घंटे जायेंगे ऐसा उनका अंदाज है। अभी छः के आसपास जाते हैं। अब ये पूनियां निःसंकोच इस्तेमाल हो सकेंगी। मनोहरजी ने हाल ही में ११ आनी कातना शुरू किया है। शुरू में महीने भर तैयार पूनी से और बाद में अपनी बनाई पूनी से कातेंगे ऐसी उनकी योजना है। उनके लिए दो सेर पूनी चाहिए थी। वह तत्काल भेज दी। इसको मैं आश्रम का वैभव समझता हूं। आदर्श पूनी की कीमत दो रुपये सेर के बजाय अब ढाई रुपये सेर करनेवाला हूं।

यह मेरे आनन्द का विषय है। उसके साथ वर्ड्सवर्थ नाम के एक निसर्गोपासक महान् कवि की कविता पढ़ा करता हूं। एक कविता में वह ऊंचे उड़नेवाले चंडूल (पक्षी) को संबोधन करके कहता है—

"मुझे अपने साथ ऊंचा उड़ा ले जा या ऊंचा जैसे जाना चाहे वह मुझे सिखा दे। तेरे चारों ओर उस ऊंचाई पर एक पागलपन फैला है और मेरे चारों ओर शान्त समानपन का वातावरण फैला हुआ है। मैं अब इस समानपन से ऊब गया हूं। उस पागलपन का थोड़ा अनुभव मुझे दे।"

संपूर्ण जगत के सब विचारों को छोड़कर एकान्त में आत्मचिंतन अथवा निसर्गचिंतन करनेवाले सचमुच पागल ही नहीं हैं क्या? मान्यवानों को यह लगे।

'आश्रमवृत्त' भेजने का प्रबन्ध करता हूं।

विनोबा के आशीर्वाद

८६

वर्धा २९-८-३५

चि मदालसा

इस बार का तेरा ११ घंटे की मेहनत का (लिखा हुआ) खत पढ़कर आनन्द हुआ। तुझे भेजने के लिए पूनियां भाया को दी है। आगे रवाना करना उसका काम है। अबतक अनसूया पूनी बनाती थी। अब वह सिलसिला बंद हो गया है। अब हमें एक-एक तोला पूनी मिलती है। उतनी ही हमारे हाथ में बची। उसमें तो जितनों की मांग हम पूरी कर सकेंगे उतनों की तो पूरी करेंगे ही। लेकिन पूनियों के लिए कोई स्थायी योजना बनाने का विचार है।

आजकल मैं सुबह छः बजे नालवाड़ी जाता हूं और शाम को ५ बजे कन्याश्रम लौट आता हूं। कन्याश्रम में शाम को बालकोबा बापू, बाबाजी शिवाजी आदि के साथ बातचीत प्रार्थना रात को सूत कातना। सिर्फ प्रातर्विधि सुबह की प्रार्थना बाद में उपनिषद् का वर्ग और फिर लौटना। उपनिषद् का वर्ग पहले तो वामदेव व वत्सन् के लिए शुरू किया। फिर उसमें लड़कियों को आने की इजाजत दी। ८-१० लड़कियां आती हैं और कुछ शिक्षक भी होते हैं। नालवाड़ी में कताई के अलावा कुछ वर्ग और पत्र-व्यवहार का काम चलता है। अब तारीख १ सितम्बर १९३५ से एक नया उपक्रम (प्रयोग) शुरू करनेवाला हूं। ऐसे तो यह नया नहीं है पर प्रत्यक्ष में नया है। कताई के कार्यक्रम में यह मान ही लिया था कि यथाशक्य जीवन-खर्च मजदूरी में से ही हो अर्थात् मजदूरी जो मैंने मानी है और खाद्य-पदार्थों के दर भी जो निश्चितरूप से तय किये गए हैं मतलब यह कि उसके बाजार-भाव में फर्क हो जाय तब भी हमें फर्क नहीं करना है। साधारण रूप से मासिक छः रुपयों में भोजन होना चाहिए, ऐसा सोचा है। उसमें निम्न चीजें होंगी

१ दूध ५ तोला
२ भाजी ३ तोला
३ गेहूं १५ से २० तोला
४ तेल ४ तोला

५. शहद अथवा गुड़ अथवा कन्द (प्रतिदिन)
—चार आना

तूने जिन पुस्तकों के नाम सूचित किये हैं उनमें से मैंने कोई भी न पढ़ी है न सुनी है और न अब सुनने की वृत्ति ही है। हां कोई बांचे तो सुनने की तैयारी है। लेकिन किसीको कुछ पढ़ने के लिए कहता हूं तो उसे कुछ ठीक से पढ़कर सुनाना आता नहीं तो फिर स्वयं पढ़ने लग जाता है। बहुत से पढ़े-लिखे लोग हों तो उनमें से एक भी अच्छा पढ़नेवाला होगा या नहीं पाया जाये। मुझे पढ़कर सुनानेवाले को संस्कृत मराठी और अंग्रेजी ये तीन भाषाएं तो अच्छी तरह से आनी ही चाहिए। इसके अलावा हिंदी भी करीब-करीब उतनी ही चाहिए। बाकी और भाषाएं तो 'अधिकस्य अधिकं फलम्' (जितनी आवें उतना अच्छा ही है)। लेकिन ऐसा पक्का माल मुझे कहां से मिलना और तैयार पक्का माल लेने की मुझे इच्छा भी नहीं है। कच्चे माल का पक्का कर लेना चाहिए। ग्रामोद्योग संघ की यह दृष्टि है और मैंने भी वही उद्योग चला रक्खा है।

वजन बढ़ रहा है यह संतोष की बात है। आहार जो कुछ चल रहा है उसकी मुझे चिंता नहीं है। उस बारे में मातृ-देवता को प्रमाण माना जा सकता है। मानने में हर्ज नहीं है।

मातृदेवता शब्द का मैंने उपयोग किया है। अक्षरशः, उसमें ऐसी ही मेरी श्रद्धा है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि सत्य को अथवा सिद्धांत को छोड़कर केवल आसक्ति से मातृवाक्य को प्रमाण मान लेना। तेरी मां और तेरे बीच में जो मजेदार झगड़ा होता है उसकी हकीकत तुम दोनों ने बापू को जो पत्र लिखे हैं, उनमें आई थी। बापू ने मुझे वह पढ़ने को दी थी। वह पढ़कर मुझे केवल मौज मालूम दी और कुछ नहीं। तेरी मां का स्वभाव अति चिंता और आग्रह करने का है। लेकिन वह प्रेममूलक है और मामूली तौर से मां का हठ बेटी पूरा करे तो इससे कुछ बिगड़नेवाला भी नहीं है। दरअसल जो छोटी-छोटी बातों में आग्रह रखता है वह बड़ी बातों का आग्रह रख भी नहीं पाता है। इसलिए छोटी बातों में खींचातानी न करके उनके अनुकूल हो जाने में ही मिठास और सीख दोनों मिलती है।

आश्रम की गिरा मुझे सुनने को मिली यह अच्छा हुआ। आश्रम अगर

सचमुच पावन है तब तो निंदा करनेवालों को मोक्ष ही मिलनेवाला है। विरोधी भक्ति भी भक्ति का एक प्रकार ही है न ! आजकल बहुत-से देश-सेवकों के विचार नास्तिकता की ओर झुक रहे हैं। किन्तु मुझे तो यह नास्तिकवाद भी ईश्वर के अस्तित्व का नहीं बल्कि उसकी क्षमाशीलता का एक प्रमाण ही प्रतीत होता है। कुछ नास्तिक कहे जानेवाले सदाचारी भी होते हैं। उनकी नास्तिकता केवल नाममात्र की बिना विष के सांप जैसी ही समझनी चाहिए। भगवान बहुधा ऐसे ही सांप के मस्तक पर सोते रहते हैं। शेषशायी भगवान का यह एक अर्थ है।

तुम्हारी मां को प्रणाम।

विनोबा के आशीर्वाद

८७

वर्धा २८ ९ ४५

चि. मदालसा

केरल का एक लड़का था। यहां के आश्रम से उसका नित्य का परिचय था। वह जेल हो आया था और वहां की सारी सजाएं भोग चुका था और टेक रखकर पास हुआ था। वह परसों यहां के दवाखाने में गुजर गया। उसकी यह मृत्यु बोध-दायक है। वह अधिक पढ़ा-लिखा नहीं था। बढ़ईगिरी आदि कुछ कलाएं उसे ज्ञात थीं और व्यायाम का उसे शौक था। उसने और उसके मित्रों ने मिलकर एक व्यायाम-शाला खोली थी। वहां कुश्ती करते हुए उसकी गर्दन की हड्डी टूट गई और शरीर का नीचे का और ऊपर का हिस्सा अलग-सा हो गया। गोपालरावजी उसे यहां के अस्पताल में ले आये थे। उसके साथ उसकी सेवा के लिए उसके अनेक मित्र आये थे। आखिरी घड़ी तक इन मित्रों ने ही सेवा की। (उसकी) उम्र करीब २२-२४ साल की होगी।

एक दिन शाम की प्रार्थना आश्रम में करने के बजाय अस्पताल में उसके कमरे में कर आया। गीताई के ५, ६ अध्याय उसे याद थे। बाबाजी (मोघे) के साथ याद करके वह उन्हें बोला करता था और उसी चिंतन में उसने शरीर छोड़ा। मुझे देखकर उसे आनन्द हुआ और बड़े उत्साह से वह बोला कि मैं अच्छा होने ही वाला हूं तब आसन पद्मासन में न रहे

इस सवाल से मैंने कहा कि "अच्छा होना न होना यह तो भगवान के हाथ में है। उसकी चिंता हम क्यों करें। तब वह बोला कि "कोई चिंता नहीं। फिकर की क्या बात है? कर्तव्य करने का अपना अधिकार है (और) फल उसके हाथ में। अनासक्ति का आचरण करना यही अपना धर्म है। बापू जब उससे मिलने आये तब बापू से उसने कहा— आत्मा अमर है। शरीर मरने ही वाला है। जीऊँगा तब भी सेवा करूँगा और मरूँगा तब भी सेवा ही करूँगा।" उससे जब यह पूछा गया कि किसीको कोई संदेश देना है तो उसने जो संदेश दिये वे भी बोधप्रद हैं। पत्नी को संदेश मिला कि "दूसरा विवाह करके और आनन्द से रह।" मित्रों को संदेश मिला कि "मेरा देहांत (हाल) हुआ यह देखकर कुश्ती लड़ना न छोड़ें। छोड़ देने का कोई कारण नहीं है। बालक ज्ञानी था मुझे यह सूचित नहीं करना है अथवा मुझपर वैसी छाप भी नहीं पड़ी है। लेकिन वह निर्भय सदाचारी और सेवा-परायण बालक था और उसकी यह इस तरह की मृत्यु दुःखान्त प्रतीत नहीं हुई, पर सुखान्त ही दीख पड़ी है।

वास्तव में मृत्यु तो भगवान की ही देन है। जब नजदीक-से-नजदीक के सगे-सम्बन्धी मित्र अनुभवी जानकार कोई भी दुःख से नहीं छुड़ा सकते तब यह छुड़ाता है। मृत्यु के जो दुःख माने गए हैं वे वास्तव में जीवन के दुःख हैं। रोग आदि के कारण जो दुःख होते हैं, वे मृत्यु के नहीं अपितु जीवन में जो असंयम होता है उसके फल हैं। मृत्यु तो उसमें से छुड़ाता है। मृत्यु का उससे कोई सम्बन्ध नहीं है। इसलिए वैष्णवजन मौत के मारे मरे हुए ये शारीरिक दुःख अगर कम कर दिये जायें तो फिर दो तरह के दुःख शेष बचते हैं। एक पूर्व पापों की स्मृति से होनेवाले और दूसरे आसपास के लोगों को छोड़ना होगा इस आसक्ति के कारण होनेवाले। पहले के लिए मृत्यु की क्या जिम्मेदारी? वह तो जीवन में किये हुए पापों का फल है। और दूसरे मोहजनित हैं। अगर हमारा प्रेम सच्चा होगा और सेवा करने की लगन होगी तो देहपात के कारण हम मित्रों से दूर न जाकर अधिक नजदीक पहुँचेंगे। एकदम उनके भीतर प्रवेश कर सकेंगे। जबतक देह का परदा पड़ा था तबतक चाहे जो उपाय करके भी हम उनके अंदर नहीं जा सकते थे। कितनी ही गहरी सेवा करके भी वह ऊपर-ऊपर की ही होती

की। पर जब देह का परदा दूर हो जाने से दूसरे की अंतरात्मा में घुल-मिलकर उसकी सेवा की जा सकती है।

लेकिन सेवा करनी हो तबकी यह बात है अर्थात् इसके लिए निष्काम-भाव चाहिए। (जब) एक दुःख और बचता है लेकिन वह मृत्यु की वजह से नहीं बल्कि हमारे अज्ञान के कारण है। मृत्यु के बाद क्या होगा कौन जाने? लेकिन अपने मन की सद्वासना के विरुद्ध मृत्यु के बाद कुछ होने ही वाला नहीं है। और अगर वह कुवासना ही हुई तब तो जो कुछ बुरा होगा वह उस कुवासना का ही फल होगा ऐसी श्रद्धा अर्थात् भगवान् की न्याय-बुद्धि पर श्रद्धा हो तो वह काल्पनिक भय भी टल जायगा। इसका सारांश यह हुआ कि कुछ दुःख चार प्रकार के हैं (१) शरीर वेदनात्मक (२) पाप स्मरणात्मक (३) सुहृन्मोहात्मक (४) भावी चिंतात्मक।
और इनके उपाय क्रमशः ये हैं

(१) नित्य संयम (२) धर्माचरण (३) निर्ममता (४) ईश्वर के प्रति श्रद्धा।

आज एक निमित्त से मरण-विषयक ये विचार लिख डाले हैं। इनमें और कोई मुद्दा विचार करने का रह जाता हो या कोई शंका उत्पन्न होती हो तो पूछना।

तेरी मा को भी यह पत्र देखने को मिल ही जायगा। मरण का निरंतर स्मरण करना बुद्धि को मरण-चर्चा करके निःशंक रखना और रोज रात को सोने के पहले मरण का अभ्यास करना ऐसी तिहेरी साधना करते रहना चाहिए। पहली बात गीता के १३वें अध्याय के ज्ञान-लक्षणों में दी गई है। उसपर ज्ञानदेवजी की टीका बहुत सुस्पष्ट है। दूसरी बात दूसरे अध्याय के आरम्भ में ही आयी है और तीसरी आठवें अध्याय में है।

बस आज इससे ज्यादा नहीं लिखता हूं। यहांके समाचार इस बार 'आश्रम-वृत्त' में अच्छी तरह दिये गए हैं। हिमालय के सान्निध्य का पूरा लाभ लिये बगैर नीचे उतरने की जरूरत नहीं है। प्रातःकालीन उपनिषद का पाठ बहुत अच्छा चल रहा है। गांव में से तीन-चार प्रेमीजन आते हैं। और तो कहनेवाला क्या जानता है यह तो हरी ही जानें।

"आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धा
आश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः

विनोबा के आशीर्वाद

: ८८

वर्धा २१-१०-४९

चि. महालसा

विस्तृत पत्र लिखने की आशा में रहकर तू छोटा पत्र भी नहीं लिख पाती है। इसलिए विस्तृत पत्र जब भगवान लिखावेंगे तब लिखोगी ऐसा समझकर नियमित रूप से स्वास्थ्य की एवं अन्य जानकारी का संक्षेप में एकाध कार्ड भेज दिया करो तो भी चलेगा।

इधर की बहुत-सी जानकारी 'आश्रम-वृत्त' द्वारा ही मिल सकती है। 'आश्रम-वृत्त'-सम्बन्धी पत्र-व्यवहार अब मैं खुद देखने लगा हूँ और उसका संकलित सम्पादन वल्लभ करेगा। बालकोबा अहमदाबाद गया है जल-चिकित्सा के लिए, यह शायद तुझे विदित हुआ होगा। सेवा के लिए साथ में नूर्मलाल और बाबाजी है। बालकोबा का जप बहुत आगे बढ़ा हुआ नहीं है, प्रारम्भिक ही है। लेकिन मैं देखता हूँ कि वह प्रारम्भिक हो या प्रगति पर, बालकोबा को उसकी तनिक भी परवाह नहीं दीखती। देह का क्षय हो भी रहा होगा फिर भी उसकी आत्मा की वृद्धि ही देख रहा हूँ। एक साधु की एक कहानी बताते हैं—सम्भव है काल्पनिक ही हो, पर उससे हमें क्या करना है। बात यों है कि उस साधु के पाँव के जख्म में कीड़े पड़ गये थे। उसमें से एक कीड़ा सरसर करते-करते बाहर निकल आया। उसने उसे उठाकर फिर से उस जख्म में डाल दिया और उस कीड़े से बोला "मूर्ख अपना आहार क्यों छोड़ रहा है ?

हमें इस कथा का अक्षरार्थ नहीं लेना है। ज्ञानी के पैर में जख्म हो सकता है क्या ? और ऐसा आचरण उचित समझा जायगा क्या ? इस तरह से बहस भी नहीं करनी चाहिए। तुकाराम महाराज का कहना है कि सार ग्रहण करो। यहाँ सार इतना ही लेना है कि शरीर भिन्न है और मैं भिन्न हूँ। यद्यपि मेरे कर्तव्य देह से सम्बद्ध माने जायँगे फिर भी देहबद्ध नहीं है। दूसरे ढंग से देखा जाय तो वे देह से सम्बद्ध हैं भी नहीं। सम्बद्ध

और ब्रह्म इनमें क्या फर्क है यह तुम समझती हो ऐसा मानकर चलता हूं। यह सब गीता के १३वें अध्याय में आया है। यह ध्यान में होना कठिन नहीं है। हां तदनुसार जीवन की रचना करना अवश्य कठिन है। परन्तु पहले समझ में आ जाय तो धीरे-धीरे जीवन भी उस तरह से रचा जा सकता है।

नामदेव को बुनाई के लिए सावली भेजा है। उसका हाल ही में मुझे एक पत्र मिला है। उसको अभी लिखना-पढ़ना भी मामूली-सा ही आता है यह तुझे मालूम ही है। उसका पत्र मैं तेरे देखने के लिए भेज रहा हूं। उसे पढ़कर लौटा देना। मैंने उसे जो पत्र लिखा था उसमें कहा था कि विमला का हाथ कताई से और नामदेव का हाथ बुनाई पर से कभी भी न हटे। इससे (पत्र का) संदर्भ समझने में मदद होगी।

सच्चा आरोग्य प्राप्त होने के साथ वृत्ति भी निर्विकार होने लगती है और वृत्ति के निर्विकार होने से शरीर में आरोग्य प्रकट होने लगता है। इसलिए आरोग्य केवल शारीरिक अथवा स्थूल वस्तु है ऐसा नहीं मानना चाहिए, बल्कि वह आत्मिक और सूक्ष्मतम है, यही समझना चाहिए। गीता में सत्त्वगुण के लक्षणों में वह ज्ञान व आरोग्य बढ़ाता है ऐसा कहा गया है। इससे यह ध्यान में आता है कि एक ही सत्त्वगुण का यह दुहेरा परिणाम है। ज्ञान आरोग्य और सात्त्विकता तीनों अन्दर से एकरूप ही हैं। यह तिहेरी एकरूपता मदालसा को प्राप्त हो ऐसा मैं भगवान से कहता रहता हूं। बाकी तुकोबा (संत तुकाराम महाराज) का कहना भी सच ही है—

"नाहीं देवापाशीं मोक्षाचें गाठोडें।
आणूनी निराळें द्यावें हातीं।
इंद्रियांचा जय साधुनियां मन।
निर्विषय कारण असे तेथें।

इसमें प्रथम चरण का अर्थ तो स्पष्ट ही है कि भगवान के पास मोक्ष की गठड़ी नहीं रखी है कि जो अलग से लाकर हाथ में दे दी जाय। दूसरे चरण का अर्थ यह है कि इन्द्रियों को जीतकर मन को निर्विषय करना इसका साधन है अर्थात् प्रयत्नवाद पर जोर दिया है। पर प्रयत्नवाद और हरि-शरणता दोनों एक ही हैं। देखो गीता—

अध्याय २ श्लोक ५५ से ७२ अध्याय ३ श्लोक ४१ से ४३ अध्याय ४ श्लोक ३८, ३९ अध्याय ५ श्लोक २८, २९ अध्याय ६ श्लोक ३५, ४७ अध्याय ७ श्लोक १ २९ अध्याय ८ श्लोक ७ १ अध्याय ९ श्लोक ११ १४ २७ २८ अध्याय १२ श्लोक १४ अध्याय १८ श्लोक ४५, ५ ७८। इन सब श्लोकों का अभ्यास करके अर्थ ध्यान में लेना। बस आज इतना काफी है।

विनोबा के आशीर्वाद

८९

देहली ११ १-५१

चि मदालसा

गणित के सवालों में चित्त तन्मय होता है यह बहुत अच्छा है। पर हरेक सवाल को उपपत्ति के साथ हल करना चाहिए। केवल सवाल हल होने से काम नहीं चलता। हरेक सवाल के साथ उपपत्ति के चिंतन के साथ एक ऐसे ५ २५ सवाल कर लेने के बाद वह उपपत्ति चित्त में जम जाती है, फिर उसके चिंतन की आवश्यकता नहीं रहती।

व्याकरण थोड़ा-थोड़ा होने से भी चलेगा पर वह रोज होना चाहिए। भगवान बुद्ध का एक श्लोक है —

"अनभ्यास मला मंत्रा
अनुत्थान मला घरा।"

जैसे घर रोज न झाड़ने से मलिन होता है वैसे ही रोज स्वाध्याय न करने से मंत्र मलिन होते हैं। अध्ययन को रोज ताजा करते रहना चाहिए। मैंने मन से क्या पढ़ा इसका एक-एक दिन का फिर एक-एक सप्ताह का या पखवाड़े का या बाद में महीने का या वर्ष का यों उत्तरोत्तर निरंतर चिंतन और स्मरण करते जाना चाहिए। मैं आज भी १५ १६ २०-२ साल पहले के विषयों का चिंतन करता हूं। कुछ चिंतन औरों को सिखाने से अपने-आप हो जाता है और कुछ अपनेको ही करना पड़ता है। 'चिंतने चिंतने व्युत्पत्ति।' जो इस प्रकार चिंतन में मग्न हो सकता है उसके लिए चित्त गुणवान के समान है अथवा उसके चिंतन की ही कमाई है।

अभ्यास करते हुए जहां कोई दिक्कत आये उसे नोट कर लेना चाहिए और पत्र में पूछ लेना चाहिए। कल मैं यहां से निकलूंगा। नागपुरी ठहरता हुआ जामठेवा जाऊंगा। हमारा कातना शान्तरूप से और व्यवस्थित चला है। पूनी का क्या प्रबन्ध होगा इसकी मुझे भी चिंता रहती ही है। आज मैं कातने पर अधिक जोर दे रहा हूं—मेरे अपने लिए उतना ही मुझे पींजने पर भी देना होगा यह सम्भव है। इसकी मैंने कल्पना कर रखी है। पिंजाई का महत्व तो स्पष्ट ही है लेकिन जिस तरह से कातना हरेक के लिए यज्ञरूप है वैसे ही पींजना यज्ञरूप मानने के मार्ग में अनेक दिक्कतें हैं। और सबके लिए वह सधने जैसा नहीं है। यह भी सच है।

विनोबा

९

वेडी २-२-४९

चि. मदालसा

तुम्हारी मां को नाकमारी के बारे में नाराजी प्रतीत हुई है। यह अकारण हो तो रोज नाकमारी जाने की आवश्यकता नहीं है। मेरी आशा के विपरीत तेरा क्या चला है यह मैं नहीं जानता। ममतापूर्वक निश्चित बुद्धि से किसी के व्यर्थ के दबाव में न आते हुए, तेरा व्यवहार अच्छा रहे, इससे अधिक मेरी कोई अपेक्षा नहीं है। अभ्यास में या और किसी बात में तन्मय हुए बगैर उसके आनन्द का अनुभव नहीं हो सकता। इसलिए जो कुछ करो, तन्मयता से करो। अब स्वास्थ्य ठीक होगा ऐसी मैं आशा रखता हूं। जिस देहात से मैं यह लिख रहा हूं वह छोटा-सा १५ घरों का गांव है। चांदी-चौक जैसी रचना है। किसी बहुत बड़ी हवेली-सा मालूम देता है। कल शाम की प्रार्थना में गांव के या रहनेवाले करीब सभी स्त्री-पुरुष आये थे ऐसा कहा जा सकता है। ऐसे गांव में काम करने की अच्छी सुविधा होती है। दो-चार व्यक्तियों की सेवा करने से ही सारे गांव पर उसका सहज असर हो जाता है। कल मैंने एक सूत्र बनाया है। सेवा व्यक्ति की भक्ति समष्टि (समाज) की। इसका अर्थ तू खुद समझ ले।

विनोबा

११

समय १ घंटा खादी निवास अमनपुर, ९-२-३९

चि. मदालसा

तुम लोग बम्बई गये हो, ऐसा जमनालालजी का पत्र था। यहाँ की कुछ जानकारी तो खादी के बारे में है, लेकिन वह आज नहीं लिखता। काफी और थोड़ा समय मिलता है। लेखन आदि के लिए यहाँ आज ही थोड़ा समय निकल पाया है। इसके पहले आसपास के गाँवों में घूमना और देखना रहता था। उनमें से थोड़ा-सा ही समय निकालकर जरूरी पत्रों का उत्तर देने के अतिरिक्त अवकाश ही नहीं था।

पहली बात मोटर का अनुभव है, जो मुझे इसके पहले नहीं आया था। ऐसी बातों में कुल मिलाकर मैं बहुत ही पिछड़ा हुआ हूँ, यह कबूल कर लेना चाहिए। मोटर में कायदे के अनुसार १८+२ आदमियों के बैठने की जगह थी। मेरी व्याख्या के अनुसार १४+२ आदमियों का ही बैठना उचित था। इसके बजाय आदमी थे २८+२। २ का मतलब है एक मोटर चलानेवाला और एक उसका सहायक। उसमें भी मेरे आस-पास बैठे हुए तीन व्यक्ति काफी भारी-भारी थे जो सभी एक साथ धूम्रपान कर रहे थे। हमें लिवाने के लिए आया हुआ आदमी जरा मोटा और फूहड़-सा था। उसके इंतजाम में दखल देना मुझे ठीक नहीं लगा। लेकिन अनुभव बढ़िया मिला। यद्यपि इस तरह से लोगों में बैठने की मुझे चिढ़ है फिर भी बैठने के बाद उसके विषय में स्थितीय भावना रखकर आनन्द का उपभोग लेने की दूसरी वृत्ति भी है, इसलिए सबकुछ मीठा हो गया।

यहाँ एक बात खास ध्यान में आई कि स्त्रियों की और पुरुषों की प्रतिदिन की मजदूरी एक-सी इन दिनों ९ पैसे है। पर दूसरी जगह ऐसा मेरे ध्यान में नहीं आया। स्त्रियाँ पुरुषों से कम काम करती हैं ऐसा अनुभव तो कहीं भी नहीं हुआ, बल्कि कुछ अधिक ही करती हैं ऐसा अनेक जगहों का अनुभव है सही। अधिक जोरदार काम के लिए इधर अधिक मजदूरी देते हैं अर्थात् ऐसे काम पुरुष ही करते हैं पर यह ज्यादा मजदूरी पुरुष की नहीं बल्कि उस काम की समझनी चाहिए।

पर यह स्त्री-पुरुषों की समता अपने (यहाँ के) खादी-कार्यकर्ताओं

में जरा भी नहीं है। सब स्त्रियों को कार्यकर्ताओं ने अपने कार्यक्षेत्र से बाहर सम्भालकर रख दिया है मानो सब प्रकार के ज्ञान से और कौटुंबिक भार-वहन छोड़कर अन्य सब प्रकार की सेवाओं से पूर्णतया बचाकर बेचारियों को केवल महलों में लाकर अलग रख छोड़ा है। यहां सामुदायिक प्रार्थना तक नहीं होती इसलिए उसमें भी स्त्रियों के आने का सवाल नहीं रहता। अभी तक इतने दिनों में मैं बहनों से बोल नहीं पाया हूं। अब आज दोपहर को उनके लिए समय रखा है। छः बनी है। उनमें भी अलग-अलग विचारों की ओर उनके मुख हैं।

लेकिन इस सामाजिक वर्णन को छोड़कर हम फिर जरा निसर्ग की ओर चले जायें। एक ही ताल्लुका के किसी हिस्से में चावल किसी हिस्से में ज्वार-कपास तो किसी हिस्से में गेहूं-चना ऐसी विविधता है। और अनंतपुर के समीप तो ये सारी चीजें होती हैं। इनके अलावा गरीबों का 'कोंदो' 'कुटकी' 'तिवा' आदि भी है। 'तिवा' एक तरह की दाल है। रही चीज है। सबसे सस्ती होने की वजह से गरीब की तो वही मां है। उसीकी रोटी बनाकर ये खाते हैं। आरोग्य की दृष्टि से केवल दाल की रोटी को अत्यन्त हानिकारक समझना चाहिए। दाल एक 'द्विदल' धान्य है और बतौर द्विदल धान्य के ही उसका उपयोग होना चाहिए, बल्कि मुख्य अनाज के नाते उसका उपयोग किया जाना आयु-घातक समझना चाहिए।

मेरा आहार यहां दूध खजूर और टमाटर का है। खजूर यहां का स्वाभाविक नहीं है। इसलिए इन दिनों में लेना नहीं चाहता लेकिन यहां केले अच्छे नहीं मिलते इसलिए उसे रखा है। फिर भी यहां के धान्य का भी अनुभव लेना चाहिए, इसलिए दोपहर को 'तिवा' आदि लेता हूं। अब कोदो आदि भी लूंगा। इनके साथ दूध वगैरा तो सदा की भांति रहता ही है।

कार्यकर्ताओं की स्त्रियों के ख्याल से प्रार्थना रखनी हो तो सायंकालीन भोजन बनाने के कारण वे कैसे एकत्रित हो सकेंगी यह सवाल उठा था। उसका जो जवाब देना था वह मैंने दिया। लोग समझदार हैं इसलिए ध्यान से सुन लेते हैं। लेकिन ऐसी कोई भी दिक्कत यहां होने का तो कारण ही नहीं होना चाहिए। गाय के दूध का भाव यहां एक रुपये का १२॥

रतल है। इतना सस्ता माल हाल की वजह से बाजार में मुश्किल से ही समावेश किया जा सकता है। कम-से-कम सार्वजनिक भोजन पदार्थ की श्रेणी तो मिल ही जाती है। दोपहर को भी डालकर रोटी बनाकर एक की जाय तो यह काम भी चल सकती है। इसके अलावा दूध सब्जी सब्जी और तेल में कम-से-कम खाद्य के एक समय के लिए तो पर्याप्त है। वास्तव में तो ये जन्म भर के लिए पर्याप्त है। गाय का भी रास्ता है। इसमें का एक सेर (माने १ तोला)। सेर आजोंगी लिखे रहते हैं। उनकी सब्जी चाहे जितनी बन सकती है पर बनाते नहीं हैं। अलबत्ता रही है लेकिन भरपूर है। गुड़ दो तरह का है। एक गन्ने का और दूसरा ताड़ के ही भाई-बंध का जिसे पानी देने की जरूरत नहीं होती। यह गुड़ अच्छा है। उसमें कचरा कुछ ज्यादा होता है सही पर कचरा तो हमारे जन्म का साथी है इसलिए कोई बात नहीं।

जिस तरह से मैंने मंदरी में सोती है उसी तरह से जमीन पर मंदरी में आराम से स्त्रियों और पुरुषों को सोते हुए देखता हूं। उनका मुख्य कार्यक्रम भिक्षा का है। सुबह सब मुकाम रहता है। यह हमारी प्रार्थना के लिए उपयुक्त है। आटा घर घर ही पीसना पड़ता है, क्योंकि इधर अभी 'मिल' नहीं आई है लेकिन यह पिसाई दोपहर को होती है। सूर्योदय के बाद कटने-वाले बहुत लोग दिखाई देते हैं। भीख पूरी हो जाने के बाद आलस्य का कार्य-क्रम शुरू होता है। दोनों में से बचा हुआ समय काम में लगाना ही पड़ता है पर उसमें मन नहीं होता। गीता में तमोगुण का वर्णन है, उसका प्रत्यक्ष दर्शन दो जगहों में ही मिलता है। एक तो नदी के उस किनारे और दूसरा दक्षिण के इस किनारे। एक है लक्ष्मीनारायण और दूसरा है दरिद्र नारायण। दोनों हैं भिक्षा-नारायण। प्रेम-स्वामी हमारा अंतिम आदर्श है न?

मठ के चूल्हे में एक खास तरह का सौंदर्य है। एक नमूना इस्तेमाल करने के लिए लिया है। कमलनयनजी ने भी लिया था, कहते हैं। उनसे वर्णन सुनने को मिलेगा।

मठों की दीवारें पत्थर की पपड़ी—चिप्पी की हैं। एक पर एक चिने रखते हैं। बीच में चिपकने के लिए मिट्टी। वह मिट्टी बरसात से बह

जाती है। पर एकदम अंदर थोड़ी-थोड़ी रहती है। बाहर से एक के ऊपर एक पत्थर रख दिये हों ऐसा दीखता है।

चिलम पीने में लोग स्वावलम्बी हैं। अनेकों के घर के आंगन में तुलसी और तमाखू एक साथ पनपती हुई दिखाई देती हैं। गृह-उद्योग में धान कूटना चक्की पीसना और चाहे तो भोजन पकाना कहा जा सकता है। चावल दलने की चक्कियां सुन्दर हैं। मिट्टी की होती हैं। कीचड़ में थोड़ी घास मिलाकर बनाई जाती हैं। चार-पांच खंडी चावल दल लिये तो चक्की चकना चूर हुई। ज्यादा के लिए नई बना लेते हैं। चक्की के नीचे का पाट मिट्टी का ही होता है। करीब दो इंच मोटा तो जमीन में गाड़ा हुआ होता है। ऊपर का करीब एक बालिश्त मोटा होता है। उसका आकार उलटी टोकनी के जैसा होता है।

यहां एक कार्यकर्ता की बहुत-सी पुस्तकें हैं उन्हें पलटकर देखा। उनमें 'रघुवंश-कथा' नामक मराठी पुस्तक नई देखी। 'भारत गौरव-ग्रंथ माला' की है और कर्नाटक प्रेस बम्बई की छपी है। कीमत १। रुपया। रघुवंश की सारी कथा संक्षेप में मराठी गद्य में दी है। तू रघुवंश पढ़ रही है इसलिए उल्लेख किया है। सारी कथा थोड़े में मालूम हो जाती है।

मैं १४ या १५ को वर्धा पहुंचने की आशा रखता हूं। शंकररावजी के साथ में रहने का अच्छा उपयोग हुआ है। यहां के बुनाई के काम को मदद मिली। यहां ताड़ पेड़ की पीठ के चमड़े की बनाते हैं। यह बनाना शंकरराव-जी ने सीख लिया है।

विनोबा के आशीर्वाद

१२

आश्रम वर्धा २१ १-३६

चि. मदालसा

काकाजी के साथ रहने का तय किया यह बहुत ठीक हुआ। जिन्दगीभर उन्हीं के साथ रहो तो हर्ज नहीं है। विकारों में जो मोहजाल होता है, वह विकारों का निदर्शक है। वह विवेक से संयम-शक्ति से और भक्ति से मिटनेवाला है। और यह सब सुयोग्य सत्संग से ही साध्य हो सकता है। काकाजी के साथ रहने में ऐसी संगत भी मिलेगी और मन को लगाये रखने

के लिए भरपूर काम भी मिलेगा। ऐसे एकाग्र काम की जिसे धुन लग जाय उसकी बहुत-सी बातें अपने-आप बनती जाती हैं। मैं ता. २१ को यहाँ आया। इस बार वेरूल की गुफाएं देख आया। उन्हें देखते-देखते ज्ञानदेव महाराज ने गीता की गुफा का जो रूपक रचा है, वह आंखों के आगे खड़ा हो गया और दोनों की सादृश्यता का प्रत्यक्ष ध्यान हुआ। साथ ही इन दोनों का निर्माण जिस हमारे देश में हुआ है उसके रहनेवाले भी हम धन्य हैं इसकी प्रतीति हुई। भुसावल में वत्सला के विवाह में उपस्थित होकर अब यहाँ आ गया हूँ।

"अता अविवेक कुमारत्वा मुकली।
अणा विरक्तीसें पाणिग्रहण जाली॥

—अब अविवेक रूपी कुमारावस्था से (वह) मुक्त हो गई है और उसने विरक्ति का पाणिग्रहण कर लिया है।

विनोबा के आशीर्वाद

११

गुरुकुल कांगड़ी ११-४-३६

चि. मदालसा

वर्धागंज का ता. ३ का और रामपुर स्टेशन से ता. ८ का लिखा हुआ ये दोनों पत्र आज यहाँ मिले। इसके अलावा पहले के एक पत्र की नकल भी भेज चुकी थी। तो तीनों पत्रों का यह उत्तर है।

'आर्य प्रतिनिधि सभा' के अर्धशताब्दी महोत्सव के निमित्त होनेवाली परिषद में ब्रह्मचर्य-सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिए मैं लाहौर आया था। अब यहां गुरुकुल में कुछ दिन रहकर और काशी का थोड़ा काम देखकर २२ ता. के करीब वर्धा पहुँचने का इरादा है। उस समय तुम लोग बहुत करके वर्धा होओगे ऐसा अंदाज है। चित्रकूट वगैरा देखने का मौका साध लिया, यह अच्छा ही किया। इस तरह ये सहज-प्राप्त अवसर का उपयोग कर लेना लाभदायी होता है। लेकिन उसमें केवल मनोरंजन की भावना नहीं होनी चाहिए। यों मनोरंजन तो अपने-आप हो ही जाता है। चित्रकूट का दर्शन अर्थात् राम का ही दर्शन है। रामचन्द्रजी किसी काल में हो गये हैं, इतना ही नहीं बल्कि आज भी उन्हें हम देख सकें तो दिखाई दे सकते हैं।

वे अपने हृदय में ही विराजमान हैं। यह बात ध्यान में आने के लिए चित्रकूट के समान स्मारक स्थानों का दर्शन अवश्य उपयोगी हो सकता है।

विनोबा के आशीर्वाद

९४

फैजपुर, २७-१ ३६

मदालसा

विष्णु-सहस्रनाम तुलसी रामायण इत्यादि सब वस्तुएं हम हिन्दुओं के लिए मन का मैल धोने के लिए उपयोगी है। मुझपर भी उनका विलक्षण परिणाम होता है। वह क्यों होता है यह नहीं कहा जा सकता। होता है सही। इसीलिए हम 'हिन्दू' कहलाते हैं।

विनोबा

९५

नालवाड़ी (वर्धा) ५-२ ३८

मदालसा

तेरे पत्र में अशुद्ध मराठी भाषा देखकर अच्छा नहीं लगा। इसलिए यह लिख रहा हूं। 'एक साधे सब सधे सब साधे सब जाय' यह अनुभव मैं अनेकों के बारे में देखता हूं। उसमें से जो बात एक बार हम सीख लें उसे आगे बढ़ावें। या कम-से-कम वह भूल न जायं इतनी खबरदारी तो लेनी ही चाहिए, नहीं तो होगा यह कि नया सीखने जायगे और पुराना भूलते जायगे।

विनोबा

९६

पवनार, २४ १ ३८

मदालसा

तूने हारमोनियम शुरू किया है यह पढ़कर ही मेरे कान में भनभनाहट होने लगी। यद्यपि मुझे हारमोनियम नहीं बाद्य मालूम देता है फिर भी यह सच है कि फैशनेबल लोगों में इसकी मान्यता है। हारमोनियम फ्रेंच और सिलाई का काम यानी उत्तम गृहिणीत्व अर्थात् ऐसी व्याख्या टाम्स्टाय ने

भी ही है। लेकिन कुछ भी करे तो भी तू उस आदर्श तक पहुंच सकेगी ऐसे लक्षण मुझे नहीं दिखाई देते ।

जानकी अम्मा को प्रणाम ।

विनोबा

९७

पवनार, १ ४ १८

महालसा

तेरी मां में अतिचिंता करने का दुर्गुण है इसलिए बात ज्यादा बिगड़ती है ऐसा मुझे लगता है। तुममें भी दृढ़ निश्चय व हिम्मत न होने की वजह से बात बढ़ जाती है। बचपन में मैं कभी भी किसीकी परवा नहीं करता था। आज भी करीब-करीब वैसा ही है। मेरी मां ईश्वरनिष्ठ थी इसलिए सेवा करती थी पर अतिचिंता नहीं करती थी। मुझपर उसका विश्वास भी असाधारण था। इसलिए तेरे जैसा अनुभव मुझे नहीं हुआ। ऐसी स्थिति में मैं तुझे क्या सांत्वना दे सकता हूं।

विनोबा

९८

पवनार, २९ ११ १९

चि महालसा

तेरा एक पत्र मिला था। उसे बहुत दिन हो गये। उसके बाद फिर मौन क्यों ?

वहां इलाज तो हो रहा होगा। उसके साथ आरोग्यकारक आहार के नियम समझ में आ जायेंगे। उनका पालन करने से नित्य का काम हो सकेगा।

विनोबा के आशीर्वाद

९९

पवनार, २२-१ ४

चि महालसा

दुख में भी ईश्वर-स्मरण न हुआ तो बिचारा दुख व्यर्थ गया कहना चाहिए। सुख में उसकी याद रहे तो दुख का प्रसंग ही न आयेगा।

विनोबा

१

पवनार, ११ १ ४

चि. मदालसा

मैं यह रात को १ बजे लिख रहा हूं। मेरी सत्याग्रह की तैयारी हो रही है। आज पत्रों को निपटा रहा हूं।

पतिव्रता के आदर्श के विषय में तेरा प्रश्न समझ में आया। हमारे शास्त्रों में जो आदर्श बताया है वह मुझे ठीक लगता है। पति और पत्नी दोनों का ही 'दरजा' समान है। परस्पर एक दूसरे के व्रतों में लीन होना है। 'पतिव्रता' शब्द के अनुसार 'पत्नीव्रत' ऐसा शब्द भी है ही। व्रत और है तथा मत और है। पति का अथवा पत्नी का मत हो कि चोरी की जाय तो परस्पर एक-दूसरे को उस काम में मदद देनी चाहिए, ऐसी बात नहीं है उसे विरोध करना चाहिए और एक-दूसरे के व्रतों में परस्पर सहायता देनी चाहिए।

"पतीचिया व्रता। अनुसरोनि पतिव्रता।
अनायासें आत्महिता। साधे देखीं ।"

—पति के व्रत का अनुसरण करके पतिव्रता सुलभता से आत्महित साध लेती है।

यह ज्ञानदेवजी की ओवी है। इसमें 'मता' यह पसन्द पाठ इन दिनों रूढ़ हो गया है।

स्वास्थ्य अच्छा रखो। नियमितता जितनी सध सके उतनी साधी जाय। भगवान की भक्ति और एकाग्र बाह्य नियम के रूप में सूत कातना इतना अवश्य पालन करो।

विनोबा के आशीर्वाद

११

नालवाड़ी १४-७-४१

मदालसा

बाल-राम का या बालकृष्ण का ध्यान करना चाहिए।

हवा में सारे शब्द फैले हुए हैं ही। रेडियो अपने घर पर हो तो वे शब्द हमें प्राप्त हो सकते हैं। जो चाहें सो। इसी तरह हवा में सब लोगों

के सारे विचार भी फैले हुए हैं। मानसिक रेडियो—अर्थात् सम-विचार की अनुकूलता—के द्वारा से हवा में फैले हुए विचार ग्रहण किये जा सकते हैं—जो चाहिए सो।

विनोबा के आशीर्वाद

(हिन्दी में)

१२

सिवनी जेल १४-९-४४

चि. महालसा[1]

तेरा व्याकुलता-भरा पत्र मिला। उसका उत्तर देना इस समय सम्भव हो रहा है यह एक अनपेक्षित घटना है।

तू व्याकुल मत हो। तेरी भगवान पर श्रद्धा है उसीको उत्तरोत्तर पुष्ट करती रह, तो सबकुछ शुभ होनेवाला है। चंचल मन बहुत छल करता है यह सही है लेकिन तू उस मन से अलग है। तू निश्चल है। मुझे समझने की ताकत सचमुच उस मन में नहीं है, किन्तु यह ज्ञान भी भगवान की कृपा से ही होनेवाला है। इसलिए नित्य उसीको प्रेम से पुकारा करें। यही तेरा मेरा और सबका काम है।

हाल ही में तामिल की एक सुन्दर कविता मेरे पढ़ने में आई उसमें कहा है

"सारी दुनिया विरोध में खड़ी हो जाय। विश्व की सारी आशाएँ निष्फल हो जाय। चाहे माथे पर आसमान फट पड़े। भय नहीं है। भय नहीं है। भय नहीं है।"

---

[1] महालसा को बच्चा होनेवाला था, उस अवस्था में उसने विनोबाजी से नीचे लिखे प्रश्न पूछे थे। उनके उत्तर में उपरोक्त पत्र लिखा गया :—

(१) इन दिनों में कौन-से विचार और किसका ध्यान मुझे विशेष रूप से करना चाहिए?

(२) दूर रहकर भी समीप रहने का अनुभव किन विचारों द्वारा मिलेगा?

(संत) तुकाराम ने अपना अनुभव एक अभंग में इस प्रकार प्रथित किया है—

"जे काहीं करितो तें पावसें स्वहित ।
माझी हे प्रचीत कळली चित्ता ॥"

—(भगवान) तू जो कुछ करता है वह मेरा स्वहित है उसीमें मेरा भला है इसका अनुभव मेरे चित्त ने पा लिया है।

यही मेरा भी अनुभव है और अनेकों का है।

साथियों को मैं क्यों नहीं लिख सकता हूं यह सहज ही तेरी समझ में आने जैसी बात है। सबका स्मरण तो मुझे हमेशा ही होता रहता है। उसे मैं अपनी ईश्वर-प्रार्थना का भाग ही समझता हूं।

विनोबा के आशीर्वाद

१ १

परंधाम ५.१२.४५

चि. मदालसा

तुझे या किसीको भी लिखने में मुझे आजकल एक आनन्द यह मिलता है कि मेरे लिपि-सुधार का प्रचार होता है।

महादेवी को इन दिनों 'केकावली'[1] की केकाएं समझाता हूं। केकाओं की कल्पना यह है कि केका माने मोरों का मेघों के लिए कूकना—पुकारना। आर्तभाव से जब मनुष्य मोर की तरह पुकार उठता है तब उसपर भगवान 'मेघ की तरह' कृपा करते हैं। यह भक्तों की दया की प्रक्रिया है। अगर कोई पूछे कि इस तरह (व्याकुल होकर) पुकारने के लिए ईश्वर क्यों मजबूर करते हैं तो उत्तर नहीं देते चुप रहते हैं। सच पूछो तो मनुष्य के हाथों जो गलतियां होती हैं, वे ही रोने-चिल्लाने के लिए मजबूर करती हैं। उसमें अनुताप के मिलने से वही 'भक्ति' बन जाती है। भक्ति से ध्यान होता है। ध्यान से गलतियां नहीं होतीं। गलतियों से सदा के लिए छुटकारा हो जाता है। यही मोक्ष नहीं है क्या ?

विनोबा के आशीर्वाद

---

[1] मराठी के प्रसिद्ध कवि मोरोपंत का कविता-संग्रह।

१४

परंधाम १८-११-४९

मदालसा

बाल-लीला देखने में और उसके द्वारा ईश्वर स्वरूप का ग्रहण करने में निःसंशय अपार आनन्द है। उसकी बराबरी यह बिचारा सिनेमा क्या करेगा? बालक का मन योगी के लिए भी अभ्यास का विषय है। ऐसी दृष्टि प्राप्त होने से प्रत्येक माता को योगिनी ही होना चाहिए।

विनोबा के आशीर्वाद

१५

परंधाम २०-१२-४९

चि. मदालसा

तेरी ठीक परीक्षा हो रही है। ईश्वर का जो अधिक लाड़ला होता है उसकी वह अधिक परीक्षा करता है, ऐसा हमारी मां कहा करती थी। अर्थात् इसका अर्थ दूसरी भाषा में यह हुआ कि ईश्वर का भक्त आई हुई आपत्ति से उत्तम लाभ उठाता है। उस निमित्त वह आत्मपरीक्षण करता है। व्याकुल होकर ईश्वर की याद करता है। उसपर सारा भार सौंपना सीखता है।

आज मैंने अभिनव तुनाई का आरम्भ किया है। अभिनव तुनाई, यह शब्द सुन्दर बना है और यह कल्पना भी सुन्दर है। खेत में से अच्छा चुना हुआ कपास लाकर, उसके फूलों को अच्छी तरह खोलकर पटिये पर सीधा रखकर बिनौले निकालने से रेशे एक दिशा में बहुत-कुछ समानान्तर हो जाते हैं। फिर उसी आकार में पूनी बना लेते हैं। सोलह नम्बर से नीचे के सूत के लिए अच्छा कपास हो तो चल जाता है। अभिनव तुनाई अथवा नव तुनाई की आसान और स्थूल आवृत्ति है। अधिक अभ्यास करके उसमें कुछ संशोधन हो सकते हैं। मैंने अब ऐसा संयोजन किया है कि सूत कातना यह एक सहक्रिया समझी जाय और तुनाई को मुख्य-क्रिया का स्थान दिया जाय। कारण बार-बार स्वच्छ-साफ होता है। उसी तरह सूत निकालने के लिए तुनाई के सिवा कोई गति नहीं है। और बार-बार सूत-कताई होना ही खादी का सही तत्त्व है।

विनोबा के आशीर्वाद

१ ६

गोपुरी २ १ ४६

मदालसा

हमारी माँ कहा करती थी कि 'खाना-पीना सुख से सोना' यह भी कोई जीवन हुआ? पर मुझे तो मानो यही जीवन है ऐसा लगता है। सबको उत्तम खाने-पीने को मिले और किसीकी नींद कभी भी न बिगड़े अगर ऐसी युक्ति बन जाय तो स्वर्ग यहीं उतर आय। यह सूत्र सरल-सा दिखाई देता है पर दुनियावालों की जान के लिए तो यह संकट-रूप हो गया है। सबके लिए उत्तम खान-पान की सुविधा करने का मतलब है शरीर-परिश्रम अन्याय प्रतिकार, बल-पराक्रम और स्वराज्य-सिद्धि आदि सब बातें साध लेनी होंगी और नींद खराब न होने के लिए चित्त का पूर्णरूप से निर्विकार करना होगा। इन दोनों बातों का मेल कर लेने के बाद जीवन में साध्य करने को और क्या बचता है?

बस आज इतना ही।

विनोबा के आशीर्वाद

१ ७

परंधाम १४ १ ४६

मदालसा

आजकल मैं तुम्हारे लिए एक काम करता हूँ—ज्ञानदेव के भजनों का अर्थ अक्षरशः नहीं परन्तु भावार्थ अपनी भाषा में लिखना शुरू किया है। रोज ५ ६ अभंग (भजन) होते हैं। पन्द्रह-बीस दिन में पूरे हो जाने चाहिए। लेकिन यह तो आगे का उधारखाता हुआ। अबतक जितने हुए उतने ही पक्के समझने चाहिए। आज के आखिर के अभंग में ज्ञानदेव ने योगी और भक्त इन दोनों की तुलना की है। ज्ञानदेव दोनों से परिपूर्ण थे इसलिए इन्होंने तुलना बिलकुल सहज-भाव से की है। इतना होने पर भी आखिर में पूर्ति ही हुई है। योगी की जीवन-कला सधी हुई होती है। भक्त को नामामृत की मिठास होती है। एक अपनी कला की मंजिल पर पहुँचता है वहाँ उसे मंजिल का सार मिलता है। दूसरा नाम-स्मरण करता रहता है उसमें से अनेक धक्के-थपेड़े खाते-खाते ही क्यों न हो अंत में जीवन

भक्ति का फल उसके पल्ले पड़ता है। उसे भटकते जाना ही चाहिए, ऐसा नहीं है और ज्ञानदेव ने ऐसा लिखा भी नहीं है। लेकिन मैं तुम-जैसों की ओर देखकर ऐसा भावार्थ निकालता हूँ अर्थात् वह भक्ति की अपूर्णता का ही लक्षण माना जायगा। ऐसे तो मोक्ष में भी अपूर्णता होगी तो जीवन-कला का अभ्यास करते-करते भटके जाने ही पड़ेंगे। अंत में ज्ञानदेव ने मुहर लगा दी कि दोनों मार्ग एक-से ही समर्थ हैं किन्तु नाम-स्मरण सुलभ है। पर यह सुलभ होते हुए भी उसके लिए चाहिए उत्कट ममता। और उत्कट ममतावाला मनुष्य होता है दुर्लभ ऐसा कहकर ज्ञानदेव ने यह अभंग और अपनी युक्ति की बात दोनों एकदम ही समाप्त कर दी है।

विनोबा के आशीर्वाद

१८

पवनार, २१-२-४६

चि. महालसा

तेरी दिक्कतें मेरे ध्यान में हैं। श्रीमन्‌जी से धीमे-धीमे परिचय कर लेना। वैसे मेरा उनसे आध्यात्मिक परिचय तो है ही।

शिवराम बाबाजी आ रहे हैं उनका तुझे अच्छा अनुभव आयेगा। बाहरी बातों की ओर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिए। भीतर ध्यान होना चाहिए। नौकरों पर गुस्सा नहीं करना चाहिए। उनके रूप में भगवान ही हमारी सेवा करता है न? मुझे कुछ दिनों तक रोज लिखा कर।

विनोबा के आशीर्वाद

१९

परंधाम १४-५-४६

चि. महालसा

'जें कांहीं करिशी तें माझें स्व-हित'—अर्थात् ईश्वर जो कुछ करता है वह मेरे हित के लिए होता है ऐसा मुझे प्रतीत हुआ है। तुकाराम महाराज का ऐसा एक वचन है

'आली हे प्रचीत माझे चित्ता।' अर्थात्—मेरे चित्त को यह प्रतीत हो गया है।

श्री शिवराम पंत

प्रतीति न होने पर भी वैसी श्रद्धा होने से शांति मिल सकती है।

विनोबा के आशीर्वाद

११०

परंधाम २२-५-४९

चि० मदालसा

अभी श्रीमन्जी से मेरी बातें हुईं। तेरी मनःस्थिति मुझे मालूम ही है। उनसे भी वैसी ही जानकारी मिली। मेरा मन यह कहता है कि तू मेरे पास कुछ दिन रह। यहां सब व्यवस्था हो जायगी। तुझे शांति मिलेगी। बहुत साल हो गये तुझे मेरे पास रहे। मुझे भी अच्छा लगेगा।

विनोबा के आशीर्वाद

१११

पवनार, ३०-५-४९

चि० मदालसा

'जिस मनुष्य में विवेक नहीं है उसको शोक और भय के असंख्य कारण प्रतिदिन प्राप्त होते हैं।' व्यास महाराज का यह प्रसिद्ध वाक्य है। विवेक करनेवाले को वे कारण नहीं मिलते। गृहस्थ-आश्रम में सामूहिक जीवन होता है उसीमें अनासक्ति सीखने की साधना होती है। प्रेम देता ही रहता है मांगता नहीं। जो मांगता है वह प्रेम नहीं होता वह ममता होती है। 'ममता' याने मेरे-पने की मालिकी की हक की अथवा सत्ता की भावना। यह दुःख का कारण होती है। प्रेम में सुख का झरना है।

विनोबा के आशीर्वाद

११२

पवनार, ३-८-४९

चि० मदालसा

तू बिना कारण क्लेश भोगती है ऐसा मेरा मत बना है। सांप से डरनेवाले का इलाज हो सकता है। डोरी से डरनेवाले का इलाज क्या? ज्ञान ही न?

विनोबा की शुभेच्छा

१११

परंधाम २-९-५५

चि० मदालसा

तुम्हारा २४-८ का पत्र मिला। स्पष्टीकरणात्मक कौन-सा पत्र भेजा था? वह तो नहीं मिला है। बहुतों की चिन्ताओं की बातें मैं सुनता हूँ तब मुझे कुछ सूझ नहीं पाता, क्योंकि चिन्ताएँ क्या हैं, यह मेरी समझ में ही नहीं आता। फिर उनको कहना नहीं आता या मुझमें समझने की अक्ल नहीं है, यह कौन बतावे? सब तो नहीं पर अधिकतर चिन्ताएँ घबराहट और भ्रम मुझे तो काल्पनिक ही मालूम देते हैं। कल ही मुझसे एक ने प्रश्न पूछा कि भूत होते हैं या नहीं और आपकी कभी किसी भूत से भेंट हुई या नहीं?

मैंने उनसे कहा, "मनुष्य की कल्पना-शक्ति में भूतों का अस्तित्व निःसंशय है और भूतों से भेंट होने के सम्बन्ध में कहो तो भूतों से मेरी हमेशा ही भेंट होती है। अभी ही तो मिला है, तू भी तो भूत ही है।

जो भूतों की गति है, वही संसार की आपत्तियों की है। अर्थात् भूतों की भाँति ही वे भी काल्पनिक ही हैं। लेकिन जिनको उनका भास होता है उनके लिए वे सच्ची ही हैं। मां मरी। लोग कहते हैं बड़ी आपत्ति आई। मुझे लगता है वह जन्मी थी यह अगर आपत्ति नहीं थी तो मरी यह आपत्ति कैसे होगी? मरे बगैर और कहीं जन्मेगी कैसे? अच्छा आपत्ति किस पर? उसपर? या उसके लड़के पर? या जगत पर? या ईश्वर पर? ईश्वर पर होना सम्भव नहीं है, कारण उसकी योजना के अनुसार ही सब-कुछ चलता है। जगत् पर होना सम्भव नहीं है। कारण, जन्मे हुए सब जीव जिन्दा रहें, यह जगत् को पुसा नहीं सकता। मरे हुए मनुष्य पर होना सम्भव नहीं है, कारण पुरानी शरीर को छोड़कर नया प्राप्त करने का अवसर मिलना आपत्ति कैसे हो सकती है?

इसलिए अन्त में उस लड़के पर आपत्ति आई, यह कहना होगा। तो फिर बिगड़े हुए शरीर में अपनी मां की दुर्दशा देखते रहने को क्या आपत्ति नहीं कहा जाय? यों इस प्रकार से विचार करते हुए उसे आपत्ति नहीं कहा जा

सकता बल्कि तुकाराम कहते हैं वैसे यह भी छूटी वह भी छूटा यही सच दिखाई देता है।

"बाईल मेली मुक्त झाली,
देवे माया तोडविली
विठो तुझें माझें राज्य"

—माँ मर गई वह मुक्त हो गई, भगवान ने माया से छुड़ा दिया विठोबा! अब तेरा-मेरा राज्य आ गया! श्री शंकराचार्यजी ने कहा 'जग भ्रम है'। अनेकों की काल्पनिक दिक्कतें सुन-सुनकर कम-से-कम मेरे गले तो उनका कहना सहज ही उतर जाता है। उसके लिए उनका तात्विक भाष्य पढ़ने की भी जरूरत मालूम नहीं होती। समय बढ़ जाता तो दुःखादि सब भूल जाते हैं। उसका जोर कम हो जाता है। आगे चलकर मनुष्य उसकी ओर तटस्थ भाव से देखने लगता है। अधिक समय बीत जाने पर अपने ऊपर आई हुई अनेक दुःसह आपत्तियों का वह बड़ा रस-भरा वर्णन लोगों को सुनाता है। वह एक 'रस' बन जाता है—सुननेवाले और सुनानेवाले दोनों के लिए ही। साड़ी का रंग जैसे उत्तरोत्तर उतरता जाता है वैसे आपत्ति का भी रंग फीका पड़ता जाता है। आखिर में केवल सटमा बचती है। वस्त्र के ऊपर का रंग ऊपर से चढ़ाया हुआ होता है। वह कोई उसका असली रंग नहीं होता। उसके उतरे बिना चारा ही नहीं है। यही दशा आपत्तियों की है अर्थात् आत्मा के ऊपर मन की उपाधि (आवरण) उस मन में अनेक कल्पनाएं, और उन कल्पनाओं द्वारा कल्पित आपत्तियां और इन आपत्तियों से आत्मा का तड़पते रहना—यह नाटक आत्मा कितने दिन करेगा? दूसरे के द्वारा अपने ऊपर लादा हुआ यह बोझ वह कितने दिन ढोयेगा? अतः अंत में वह सबकुछ फेंक देता है और सुखी हो जाता है।

लेकिन जो आपत्तियों से भले ही वे कल्पना की ही क्यों न हों आज प्रत्यक्ष घिरा हुआ है, उसको इस विचार से चाहे वह कितना ही सुचित युक्त हो समाधान नहीं होता।

वह कहता है 'मुझे आपका विचार नहीं चाहिए। मुझे समाधान दीजिये। मैं कहता हूं विचार नहीं चाहिए तो क्या अविचार में से समाधान

मिलेगा ? अविचार में से ही तो यह आपत्ति आई है। इसलिए विचार, विवेक के समान कोई दूसरा तारक साधन ही मनुष्य के लिए नहीं है।

परन्तु यह कहता है विचार मुझसे होता नहीं है। तो मैं कहता हूं कोई हर्ज नहीं। कम-से-कम श्रद्धा तो तुमसे रखी जा सकती है ? अगर उसीको मीरा की तरह सीधी और स्थिर रख सकेगा तो भी तेरा काम हो जायगा। राम विचारपूर्वक आचरण करता है। हनुमान श्रद्धा से काम करता है। दोनों ही रावण से नहीं डरते हैं। बाकी के रावण की अंदीशाला में पड़े ही हैं। उनकी भी आगे मुक्ति होनी ही है।

विनोबा की शुभेच्छा

११४

पवनार, २५-९-४९

चि मदालसा

ज्ञानेश्वरी से तेरा परिचय बचपन से हुआ है। स्वाभाविक ही वह एक बड़ा आधार हो गया है। मुझे लगता है जैसे-जैसे समय मिले उसके अनुसार, विशेषकर कठिनाई के समय ज्ञानेश्वरी का आसरा लेना चाहिए। उसके अभ्यास से मन को अवश्य शांति होनी चाहिए।

बच्चों की सेवा पावन ही है।

विनोबा के आशीर्वाद

११५

पवनार, ४ ११ ४९

चि मदालसा

पत्र में समाचार अनंत थे। मुझे ऐसे समाचार प्रहण होते हैं। परन्तु बीच-बीच में थोड़ी स्थिरता भी होनी चाहिए। बीच में मुझे बुखार आया था। सुरगांव का काम इसलिए स्थगित हुआ है। आरोग्य रहना भी साधक की साधना ही होनी चाहिए न ?

विनोबा के आशीर्वाद

११६

परधाम ११ १२ ४९

चि मदालसा

ज्ञान-बीज बोया हुआ कभी भी अंकुरित हुए बगैर नहीं रहेगा। यह

क्या ज्वार का दाना है जो दो दिन में निकल जायेगा ? ज्वार का दाना उगेगा ही ऐसा निश्चय नहीं है, लेकिन ज्ञान-बीज अमर है इसलिए उसकी कोई चिन्ता नहीं । अपने पर सबका अधिकार है किन्तु अपना ईश्वर के सिवाय और किसीपर हक नहीं यह ध्यान में आ जाय तो मनुष्य निरंतर प्रसन्न रह सकता है ।

विनोबा के आशीर्वाद

११७

पवनार, १६-९-४७

चि मदालसा

पत्र तेरे अनेक आये । लेकिन अब ठिकाना स्थिर हुआ दीखता है । इसलिए उत्तर देता हूं । हिन्दुस्तान का राजकीय बटवारा हो रहा है तो भी उसमें दु ख मानने की बात नहीं । हृदय एक रखना आया तो काफी है ।

विनोबा के आशीर्वाद

११८

पवनार, ८-९-४७

चि मदालसा

'भिस्तायन' मुझे चाहिए। गुरगांव के लोगों को पढ़ने के लिए देना है । किन्तु मैने ही अभीतक वह देखा नहीं है ।

विनोबा के आशीर्वाद

११९

पवनार, ४-१-४८

मदालसा

मन व्यवस्थित होता जा रहा है यह शुभ लक्षण है । निःसंशय यह ईश्वरी कृपा का द्योतक माना जायगा । ईश्वर की कृपा इसी तरह से जारी

---

१ देवरेन्द्र तिलक की मराठी में ओवीबद्ध ईसाकृत (ओवी) में लिखी ईसा मसीह की जीवनी । यह जीवनी रे तिलक अधूरी छोड़ गये थे । बाद में उनकी पत्नी लक्ष्मीबाई तिलक ने उसे पूरा किया । —सं

जा सकती है। बाकी बाहरी अन्य बातों का व्यवस्थित होना या न होना इसका सही माप नहीं है।

मैंने पुराने पत्रों का संग्रह करके रखने का उद्योग कभी नहीं किया फिर भी मुझे यह अच्छा लगता है। किसी वस्तु की ओर काफी दूर के अंतर से देखा जाय तो कुछ निराला ही बोध मिलता है जोकि उस वक्त नहीं मिला था। इस प्रकार मुक्तास्य और एकदम अंधयोग—आंख मूंदकर विचार हैं उन्हें ऐसे होने चाहिए।

'कोई' के वर्णन कोई भी करना चाहेगा। अमेया अब देखेंगे। काम उत्तम किये जायं तभी तो कभी-न-कभी नाम भी उत्तम होंगे न? —

विनोबा

१२

पवनार, २७-७-५८

मदालसा

बुनने का घर में प्रयोग हो सका तो करने जैसा है। मनोरंजन भी होगा और देश के लिए जरूरी भी है।

शार्टहैंड का अभ्यास निरन्तर रखो वर्ना उसका उपयोग नहीं होता है।

ज्ञानेश्वरी की गीताई के साथ तुलना करो और जहां नवीन प्रकाश मिलता है, वह देखो।

रोज का अनुभव लिखने का रखो। पांच मिनिट में हो जाना चाहिए।

घुटने चलते पर कताई करना लाभदायी है।

विनोबा

(हिन्दी में)

मदालसा ने विनोबाजी से निम्नलिखित प्रश्न पूछे थे, जिनके उत्तर में उपरोक्त पत्र लिखा गया—

१ अब श्री ज्ञानेश्वरी का क्या अभ्यास करना, कैसे करना? कुछ प्रश्न दे दीजिये कि उनको सामने रखकर अभ्यास—स्वाध्याय किया जा सके।

२ शार्टहैंड और सत्यपरायणीय नागरी लिपि का सीखूं क्या? बहुत काम के साथ मन लगेगा, स्पर्धा से अभ्यास भी ठीक होगा। भविष्य में

१२१

परंधाम १०-७-४९

मदालसा

तुम्हारा २१-६ का पत्र दो-चार दिन पहले मिला। बहुत दिनों की भ्रांति (भटकने) के बाद हाल ही में स्थानापन्न हुआ हूं। १०-५ दिनों में बहुधा पुनः चलकर चालू होगा। शरीर कमजोर, पर स्वास्थ्य अच्छा है। यह पहले ही कह देने से आगे की हकीकत के लिए राह खुल जायगी।

पृथ्वी की गति को पीछे डाल देने का चमत्कार मौजूद है। हम काल को ही पीछे डाल रहे हैं यह विक्षेप (कल्पना) है। आज बुधवार को यहां से रवाना होकर मंगलवार को हम मुकाम पर पहुंच सकते हैं। वैसी तरह जुलाई में प्रवास के लिए निकलकर पिछले जून में पहुंच सकेंगे ऐसा चमत्कार सिद्ध हुआ चाहता है—देखो पहेली बूझती है क्या?

मृत व्यक्तियों के लिखे ग्रंथ पढ़ सकते थे—यह एक चमत्कार था। पर काफी परिचय के कारण वह वैसा प्रतीत नहीं होगा। लेकिन आज मृत व्यक्तियों के भाषण उनकी आवाज में सुन सकते हैं। आगे चलकर मृतक का रूप भी हू-ब-हू दिखाई देने की सुविधा होगी। मनुष्य के मर जाने पर भी उसका विचार बचता है उसकी कृति बचती है उसकी आवाज बचती है उसका रूप बचता है और गुण तो बचते ही हैं। फिर नष्ट क्या होता है? जो नष्ट होता होगा वह माया होते हुए भी मिथ्या होगा। जो बचता है वह सत्य है। बचने की प्रतीति न होने पर भी सत्य है। ऐसी यह मजे की बात है। देह की आसक्ति न हो मैं व मेरा न हो यह इस विनोद का सार है। विनोद विनोद ही है पर सार-ग्रहण करना भी तो भारी पड़ता है। 'मामुचा विनोद, ते ते आमा मरण।' अर्थात् हमारे लिए जो हँसी-

---

उपयोग हो सकेगा। कुछ मतलब चाहें तो, ऐसा यह अभ्यास है। इसी तरह का कुछ करने को मन होता है।

३ 'सेवक' आदि में क्या लिखने लगूं? शुरू में कुछ नाम दीजिये।

४ घर पर कर्मचारियों की सामूहिक पढ़ाई शुरू करना चाहती हूं। कैसे क्या कराऊं?

विनोद की बात होती है, वही औरों के लिए मरण के समान दुःखदायी हो सकती है।

हमारे प्रयोगों के जो परिणाम होते हैं, उनका पूर्ण लाभ लोगों को जितना दिया जा सके उतना दिया जाय यह तेरी सिफारिश गैर-वाजिब नहीं है। लेकिन वैसेवाला ने ही कहा था, देनेवाले को लेना नहीं आता था। यही रहस्य था। और आज भी वह उसी भांति शेष है। गंगा अगर परोपकार करने के उत्साह में अपनी मर्यादा छोड़कर घर-घर जाने लग जाय तो लोगों को वह कितनी पुसायेगी यह युक्तप्रान्त और बिहारवालों से पूछना चाहिए। चीन देश की एक बड़ी नदी ऐसा पागलपन किया करती है। इसलिए मुझे भरोसा है कि जैसे हम गंगा मैया का नाम प्रेमादर से लिया करते हैं ऐसा कुछ चीनी लोगों के नसीब में नहीं रहा है।

कार्यक्रम हमारे लिए कुछ भी नहीं है। कार्यक्रम कर्मयोग का होता है। हमारा पक्ष है अकर्मयोग। इसलिए विश्रांति का भी प्रश्न पैदा नहीं होता।

विनोबा

१२२

परंधाम १७-१-५

महालसा

परीक्षा-सम्बन्धी मेरे विचार मेरे पास ही रहने दे। परीक्षा ने मेरे ज्ञान में वृद्धि नहीं की बल्कि थोड़ी रुकावट ही हुई। मैंने होने नहीं दी यह बात अलग है। लेकिन लोगों का अनुभव ऐसा नहीं है। वे कहते हैं कि परीक्षा से लाभ होता है। हर कोई अपने अनुभव का खयाल करे।

सिखलाने से ज्ञान पक्का होता है यह मेरा अनुभव है। तेरे नसीब एक संस्था[1] है। लड़कियों की ऐसी संस्थाएं, अखिल भारतीय स्वरूप की अपने देश में बहुत थोड़ी ही हैं। अगर वहां नियमित रूप से कुछ सिखलाती तो ज्ञान-वृद्धि का सहज अनुभव आता। सेवा भी होती। कामों को वैतनिक नाम से नियमितता लगती है। ऐसा हो तो एकाध घंटा नियम

[1] वर्धा का महिलाश्रम

—संपादक

से सिखलाकर दस-पांच रुपये पगार लेने में भी हर्ज नहीं है। लेकिन यह सहज सूचना है। विनोद समझो तो विनोद है और विचार कहो तो विचार है।

विनोबा

१२३

परंधाम २५-५-५

चि० मदालसा

पत्र मिला। तुम्हारे अंदाज के अनुसार मैं परंधाम ही हूं। गर्मी भरपूर होती है, पर भयंकर नहीं होती। अभयंकर और स्वास्थ्यकर होती है। महादेवीताई की तबीयत भी गर्मी में सुधर रही है। हमारा भी उस ओर ध्यान है ही। वल्लभस्वामी परंधाम के ग्रीष्म आरोग्यधाम की अनुभूति ले रहे हैं।

'वसंत इन्नु रंत्यो ग्रीष्म इन्नु रंत्यः ?'—वसंत रमणीय है, ग्रीष्म रमणीय है। वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर, रमणीय हैं। यह ऋषि-वाक्य पवनार और परंधाम दोनों को समान लागू होते हैं। आज है गुरुवार। ऋषि-गुरु बलवंतरावजी का परंधाम की खेती का दिन है। उनकी देखरेख में आज कुछ नये बीजों की बुवाई होगी।

विनोबा

१२४

परंधाम १५ ११-५

शुभ संकल्प के लिए शुभ दिन की प्रतीक्षा न करें। जिस दिन शुभ संकल्प हो जाय वही सर्वोत्तम शुभ दिन है ऐसा समझकर तत्काल आरम्भ कर दिया जाय।[1]

विनोबा के आशीर्वाद

१२५

परंधाम २७-७-५१

मदालसा

पांडुरंग से बात हो गई है। पत्नी को लेकर वह घर आय। तुम्हारे यहां

---

[1] मदालसा की डायरी के आरम्भ में विनोबाजी ने स्वयं अपने हाथ से यह शुभाशीर्वाद लिख दिया था। —सं०

है जल्दी-से-जल्दी चला जाय। पत्नी की बच्ची आदि (उसके) घर होगी। उसको तुमने कुछ पैसे दिये हैं। वह काम के बदले में कहो या प्रेम के बदले में कहो बँट समझी जाय। इससे अधिक कुछ उसे देना नहीं है। परिवार को घर छोड़कर अगर उसे नौकरी की जरूरत हो तो वह मुझसे मिले। तब उसका मैं विचार करूँगा। इसलिए तुम उसकी चिंता से अब मुक्त हो जाओ। वैसे तो वह भला आदमी है। उसकी इच्छा होगी तो उसका उपयोग यहीं भी कर लिया जायगा।

विनोबा

१२६

बाजपुर (नैनीताल) १०-१२-५१

महालसा

बहुत दिनों के बाद तुम्हारे पत्र से तुम्हारी खबर मिली। चुनाव के बारे में 'हरिजन सेवक' में किशोरलालभाई ने 'खुलासा' शीर्षक में जो खुलासा किया है उसमें मेरे विचार आ गये हैं।

सर्वोदय के विशेष काम में लगे हुए सेवकों से चुनाव के प्रचार में मदद की अपेक्षा करना गलत है। ये अपना खुद का बोझ ढोवें तब भी बहुत है। जो लोग खड़े हो गये हैं, उनको बहुत ज्यादा प्रचार की जिस हालत में आवश्यकता रहती है उस हालत में सर्वोदय की दृष्टि से उनका चुनाव में खड़े रहना ही गलत माना जायगा। जिन लोगों को प्रचार की फुरसत है, उन्हें जरूर प्रचार करना चाहिए।

इधर ठंड जबर है तो ज्यादा होना स्वाभाविक है लेकिन दूर से जितनी कल्पना होती है उतनी नहीं है। मेरे पैर में जो चोट लगी है, वह विशेष तो नहीं फिर भी उसकी मुद्दत बढ़ रही है। चिंताजनक नहीं है ठीक हो जायगी।

भरत और रजत दोनों की प्रगति अच्छी हो रही है यह मैं देखता हूँ। उनके इर्द-गिर्द अनेक प्रकार का ज्ञानमय उद्योगमय अच्छा वातावरण है। उसमें से वे सहज ही बहुत-कुछ ले लेंगे। ज्यादा फिकर करने से काम के बदले हानि हो सकती है।

दूसरे पत्र हिन्दी में लिखवाये उस प्रवाह में यह भी हिन्दी में लिखा गया। इधर आजकल उसी वातावरण में रहता हूँ। उसका भी असर होता

यह मंगल गीत लिखा गया, बंदी बना लिया गया, वह मस्त हो गया।

'कांकिला' का अर्थ है बंदी बना लेना। यह शब्द तुकाराम (महाराज) से लिया है।

> "भक्त जाला भूत,
> तेणें कोंडिले अनंता,
> हें कि मूर्खाचें अंग।"

—जो जीवमात्र के लिए मग्न हो जाता है वह अनंत को बंदी बना लेता है, यही मूर्खता का रूप है ऐसा तुकाराम का कहना है। उसमें भी बलि राजा की ओर इशारा है। बलि राजा ने वामन के आगे मस्तक झुकाया अर्थात् वह मग्न हो गया। इसलिए वह पाताल में तो गया परन्तु भगवान् वहाँ द्वारपाल होकर अटक गये। बलि राजा शूर था, अनेकों को उसने जीता था लेकिन भगवान् के आगे मस्तक नमाकर और उनको हराकर उसने बहुत बड़ा पराक्रम दिखाया। यह कांकिला का अर्थ है। भक्त कहता है कि 'समर्पण में इतनी शक्ति होती है' इसलिए मैं नित्य समर्पण के गीत गाता हूँ। और हे मेरे बच्चा विनोबा! तू भी वैसा ही गाता चल।

लेकिन इस समय तो विनोबा वामन का काम कर रहा है तथापि उसमें भी वह बलि राजा की नम्रता साधने का प्रयत्न करता है।

विनोबा के आशीर्वाद

: १२१ :

गया १७-४-५१

वत्सला

पत्र मिला। साहित्य-सम्मेलन में और बाद में भी कुछ दिन तुमने मेरे व्याख्यान सुने हैं। उनमें कहीं सुधार सुझाना चाहो तो सुझाओ। और प्रेस में छापा हुआ एकाध आलोचनात्मक नमूना मुझे भेज दो तो मुझे कुछ कल्पना ही आयेगी।

भरत का मन अभी शादी में नहीं लगा है। यह बात बड़ी चिंताजनक है। किंतु इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, क्योंकि उसके बचपन के संस्कार यही हैं कि वातावरण में कुछ भी मैल हो तो उसे सहन नहीं हो पाता है।

परमेश्वर की मुझपर एक बड़ी कृपा है कि लोगों द्वारा पक्षपातमूलक के कारण मुझपर की गई टीकाओं का मेरे चित्त पर कोई असर नहीं होता। ईश्वर जैसे नचायगा वैसे मैं नाचूंगा। काम मेरा नहीं उसका है। वह मुझे घुमा रहा है। इसलिए घूम रहा हूं। इससे अधिक प्रकार की मैं चिंता नहीं करता। तुम्हारे जैसों को भी पुस्तकें लेकर वही दौड़-धूप कराता है। इसलिए मैं रात को सुख से सोता हूं।

विनोबा के आशीर्वाद

११२

३-६-५१

मदालसा

तू देहरादून गई, इसमें कोई गलती नहीं हुई। यहां पलामू जिले में इस साल बेहद गर्मी है। ११२ ११४ फैरनहाइट है, ऐसी बात सुनाई देती है। मुझे गर्मी बाधा नहीं देती इसलिए मेरी चिंता नहीं है। लेकिन भरत तो शायद भुन ही जाता।

टंडनजी उत्तर प्रदेश भूदान-समिति के अध्यक्ष हैं। इसलिए वह लोगों को अच्छी तरह जोर देकर समझाते होंगे यही मेरी अपेक्षा है।

बीच में मुझे एक बार बुखार आ चुका। अब ठीक है।

विनोबा की शुभेच्छा

११३

मेदिनीपुर (बिहार) १२-६-५१

मदालसा

पत्र मिला। तबीयत ठीक है। यात्रा चालू है।

गीताप्रवचन की शंकाओं के जवाब अनेक बार दिये जा चुके हैं। उसमें नई बात कुछ नहीं है। उसके लिए एकाध लेख लिखने की मेरी प्रवृत्ति नहीं है। परमेश्वर का नाम जपना है करते जाना। उसमें से शंकाओं का निरसन अपने-आप होता जाता है यह मेरी भूमिका है। और तो समय-समय पर व्याख्यानों में जो कहना होता है वह कहता रहता हूं। ईश्वरेच्छा से जब कभी गीताप्रवचन के लिखने का मौका आयेगा तब देख लेंगे।

विनोबा के आशीर्वाद

११४

गया ११-७-५१

मदालसा

पंच-भूतों का खुलासा हो गया यह अच्छा ही हुआ है। लेकिन उनके पंजे से छूटना चाहिए। उसमें मुख्य रुकावट आती है मन की। यह सब भूतों से बड़ा भूत है। भले-भलों की मत ढीली कर देता है। लेकिन जब वश में हो जाता है तब विचार इतना सरल हो जाता है कि कभी पहले इतना जाल बना रहा होगा इसकी कल्पना भी नहीं हो पाती।

विनोबा के आशीर्वाद

११५

गया १५-८-५१

मदालसा

आज १५ तारीख को बिहारशरीफ नाम के शहर के नजदीक एक देहात में हमारा मुकाम है। इस बार बारिश में भी यात्रा-क्रम चालू रखने का प्रयोग शुरू किया है। गत दो माह में बारिश ने दस दफा खूब भिगोया। दो बार मामूली और बाकी के सब दिन बचा लिया। वर्षाकाल में सारी सृष्टि रमणीय हो जाती है। तब एक मुकाम पर बैठ रहने से तो मन घुट जाता है। दो साल उसका अनुभव किया। इस बार तीर छूटा है। लोग कहते हैं कि बारिश के दिनों में तबीयत कैसे अच्छी रहेगी? इसका उत्तर नीचे के मंत्र में मिलता है।

आ शर्म पर्वतानाम् वृणीमहे
नदीनाम् आ विष्णोः सचाभुवः।

—आओ हम पर्वतों से आश्रय मांगें। और नदियों से आश्रय मांगें। और परमेश्वर के पास आश्रय मांगें जो हमारा सदा का साथी है।

इस बार कांग्रेसवालों ने हिन्दुस्तान भर में भूदान-यज्ञ-सप्ताह मनाने की घोषणा की है। अन्य पक्षवालों ने भी उसका अनुमोदन किया है। आन्दोलन खूब होने से भी मदद होगी। आखिर में भूदान होना ही है। यह तो अटल है क्योंकि ईश्वर बोल चुका है।

विनोबा के आशीर्वाद

११६

गया २-१०-५१

मदालसा

तुम्हारा इस बार का पत्र मुझे बहुत ही अच्छा लगा। तुम कवि तो हो ही लेकिन मराठी में इतनी अच्छी कविता तुम कर सकोगी इसकी कल्पना नहीं थी।

चर्खा चक्कीची घर-घर गाज गोड
होवो निरास मद-आलसाची ओढ।

यह अंतिम पंक्ति मुझे बहुत ही पसंद आई है। इतनी सुन्दरता से अपना नाम कविता में गूंथा गया और इस खूबी से कि लोगों को इसका पता भी नहीं लगता।

जवाहरलालजी का हृदय गहरा व स्नेहमय है इसमें संदेह ही नहीं है।

उस दिन रेडियोवालों को मैंने इंकार नहीं किया इसमें मेरी दृष्टि है। सहज व्याख्यान देते हुए रेडियो का काम मिलना अलग बात है,-और खास तौर से रेडियो को संदेश देना अलग बात है। यह दूसरी बात आज की हालत में मुझे कृत्रिम मालूम होती है, और जो कृत्रिम मालूम देता है वह मुझसे होता नहीं। तुम्हारा उस दिन का आग्रह साफ तौर से गलत था। लेकिन गलती करने का हक—अधिकार ही तो स्वराज्य है।

दूसरा पत्र आज मिला।

विनोबा के आशीर्वाद

११७

पटना १-११-५१

मदालसा

तुम्हारे पत्र का एक विचार मेरी समझ में नहीं आया। "अंग्रेजी नहीं आने की वजह से मैं इनके और बच्चों के लिए भी निरुपयोगी हो गयी हूं।" इसका अर्थ क्या बच्चों को केवल अंग्रेजी सीखना है? स्वतंत्र भारत में अगर अंग्रेजी नहीं आने की वजह से काम में मदद नहीं

"चर्खे और चक्की की प्यारी घरघराहट घर-घर गूंजे, जिससे मदालसा सारी कमी दूर हो।"

हो सकती हो तो भारत स्वतंत्र नहीं हुआ यही समझना चाहिए। यह सब दिल्लीवालों का भ्रम है। देश में क्रांति हो रही है इसका उन्हें कुछ पता ही नहीं है। हमारे देश की कार्रवाई अमरीका और इंग्लैंड के लोग समझ सकते हैं और हमारे अपने लोग नहीं समझ सकते यह दशा इस अंग्रेजी की वजह से हो गई है। पैर के नीचे से जमीन जब खिसकने लगेगी तब सब कुछ समझ में आयेगा।

विनोबा के आशीर्वाद

११८

रानीगंज ९ १२-५१

मदालसा

तेरा श्रीमन् का और जानकीबाई का ये तीनों के पत्र एक साथ मिले। जानकीबाई कूपदान के लिए जमीरथ प्रयत्न कर रही है। इतनी एकाग्रता उन्होंने अबतक किसी भी काम में नहीं दिखलाई होगी। उनको लिखना कि स्वास्थ्य संभालकर काम करें क्योंकि दीर्घकाल तक काम करना है।

विनोबा के आशीर्वाद

११९

पटना १५ १२-५१

मदालसा

तुम्हारे पत्र मिले हैं। एक पत्र मैं वापस भेज रहा हूं इसलिए कि उसमें जो ह्रस्व इकार और दीर्घ ईकार, लोकनागरी के और देवनागरी के संमिश्र किये गए हैं उनको देखकर दुरुस्त कर सको।

(हिन्दी में)

विनोबा

१२०

सीता बखियारा २-१-५४

मदालसा

'हेरलाटी की नई तालीम परिषद' का विवरण तेरे लिए भेज रहा हूं।

सन् १९५३ के चांडिल (बिहार) में हुए सर्वोदय-सम्मेलन में माता जानकीदेवी के प्रयत्नों से और विनोबा के आशीर्वाद से सूतदान का कार्यक्रम शुरू हुआ था। उपरोक्त पत्र में उसीका उल्लेख है। —सं०

तेरा प्रश्न—"प्रयत्न में सातत्य और तत्परता कैसे रखी जाय ?

उत्तर—"महालस्य हा सर्व सोडूनि द्यावा। प्रभाते मनीं राम चिंतीत जावा।" —महालस्य को बिल्कुल छोड़ दिया जाय और प्रातःकाल में मन से राम का चिंतन किया जाय।

तेरे पत्र तुझे वापस चाहिए। तदनुसार वापस भेज रहा हूँ।

विनोबा

१४१

गया २८-९-५४

महालसा

तुम्हारा २१-९ का पत्र। बादशाह खान का पता तूने मुझको सूचित किया यह तेरे हाथ से बड़ी अकल का काम हुआ है, क्योंकि मैं यों भी आलसी हूँ। ठिकाना पास में न हो तो पता-ठिकाना खोजकर पत्र लिखने की मुझे एकदम से इच्छा होती ही नहीं। लेकिन पता पास में पड़ा हो तो कभी सहज ही लिखने का संयोग आ सकता है। यह भी जब हरि की इच्छा होगी तब।

विनोबा के आशीर्वाद

१४२

समस्तीपुर, ११-८-५४

महालसा

दोनों पत्र मिले। चिन्या[1] को पाठशाला में फ्रेंच लेने की सलाह बाबा (पिताजी) ने दी। उसके मुताबिक चिन्या फ्रेंच सीखने लगा। मां ने पहले कुछ नहीं कहा। बाद में चिन्या से बोली "चिन्या तुझे संस्कृत नहीं आनी चाहिए क्या? यह अपने धर्म की भाषा है न?" चिन्या ने कहा—"संस्कृत आनी चाहिए तो आयेगी उसकी चिंता क्या है?"

चिन्या ने फ्रेंच खूब सीखी पर आज चिन्या को फ्रेंच र, ट, फ ही आती है। बहुत-सा तो भूल भी चुका है। आज चिन्या को पंद्रह-बीस भाषाएं आती हैं, लेकिन मराठी को छोड़कर संस्कृत के जितना और किसी भी भाषा का ज्ञान उसे नहीं है।

---

[1] विनोबाजी की माता उन्हें प्यार से 'चिन्या' कहा करती थीं।

१४४

१५-७-५५

महालसा

प्रकृति (स्वास्थ्य) याने स्वाभाविक अवस्था। विकृति स्वाभाविक अवस्था से च्युत होना। संस्कृति याने प्रकृति से ऊपर की प्रगति। संस्कृति के नाम पर हम बहुत बार विकृति में पड़ते हैं इसीसे प्रकृति बिगड़ती है।

प्राकृतिक कही जानेवाली चिकित्सा भी कई बार अप्राकृतिक हो जाती है। चित्त की समता रखकर वासनाओं (वेगों) को रोकना ही सच्ची सांस्कृतिक चिकित्सा है। सांस्कृतिक चिकित्सा के बिना बिगड़ी हुई प्रकृति सुधर नहीं आती। इसलिए मुख्य जोर रामनाम पर दिया जाना चाहिए।

१ पूर्ण निद्रा
२ सौम्य शरीरश्रम
३ आकाश-सेवन
४ संयत आहार

ये चार प्राकृतिक इलाज हैं। सांस्कृतिक इलाजों (उपचारों) के साथ इन चार (बातों) को संभाला जाय तो विकृति नहीं रहेगी।

विनोबा के आशीर्वाद

१४५

२८-१-५९

महालसा

तेरे पत्र मुझे महत्व की जानकारी देते हैं। अखंड चलने दे।

दिल्ली दूर है ऐसा कहा जाता है। लेकिन अब वह नजदीक आने लगी है, ऐसा आभास होता है। वस्तु-स्थिति क्या है हरि ही जाने।[1]

प्यारेलालजी से मिलते रहना अच्छा है। गांधी-ज्ञान के भंडार हैं। अत्यन्त सरल हृदय।

काकासाहब से मेरा प्रणाम निवेदन करोगी। शांति-सेना का कार्य चलाने की जरूरत पर उन्होंने मेरा ध्यान अवश्य खींचा था। पर उस वक्त 'ग्रामदान' में से यह चीज सहज निकलती हुई प्रतीत न हुई। अब प्रतीत हुई,

---

[1] यहां तक मराठी से अनूदित है। आगे हिन्दी में है। —सम्पा

उसके पीछे लगा हूं। उनकी सूचनाएं समय पर मैं उठाता नहीं ऐसी उनकी शिकायत रही है, जो सही है। पर मेरे चित्त की एकाग्रता अन्य वस्तु के प्रवेश के लिए सहसा तैयार नहीं होती। अब दोनों चीजें एकरूप बनती हैं। इसलिए कोई भार नहीं महसूस होता है।

विनोबा

१४६

ऊधमपुर, ५-१-५९

मदालसा

तुम्हारे पत्र मिलते रहते हैं। अभी वर्धा की जानकारी तुम्हारे पत्र से ही मुझे मिली। वहां का कार्यक्रम सबको पसंद आया इससे खुशी हुई। वहां जो भी जाते हैं अक्सर, 'ब्रह्म-विद्या-मंदिर' देखने जाते ही हैं। सबके कुतूहल का एक विषय वह बन गया है। मुझे उसके लिए बहुत आशा है। धीरे-धीरे उसका विकास होता जायगा। बहनों के साथ पत्र-व्यवहार मेरा रहता है।

तुम्हारे पत्रों में कभी किसीसे बातें होती हैं इतना ही उल्लेख रहता है। वह ठीक भी है। पर क्या बात हुई उसका भी सार दे सकती हो।

'सत्यानृते' वाला वाक्य ब्रह्म-सूत्र के आरंभ में शंकराचार्य ने प्रस्तावना के रूप में जो भाष्य लिखा है उसके आरंभ में आता है।

विनोबा का जयजगत्

८ उमा अग्रवाल के नाम

१४७

पालनाडी १।१२।५१

चि. ओम्,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुम्हारे पत्र से तुम्हारे बारे में तो जानकारी चाहिए थी, लेकिन उसके अलावा प्रवास की जो बातें अखबारों आदि में नहीं आतीं, उनकी जानकारी भी चाहिए। जिस हिस्से का दौरा हो उस स्थानों की भौगोलिक जानकारी प्राप्त करने के लिए मिल सके तो नक्शे पर रास्ता देखने की आदत रखनी चाहिए, जिससे कल्पना स्पष्ट आती जायगी।

तुम्हारे पत्र से ऐसा मालूम होता है कि तुम सुबह की प्रार्थना में नहीं रहती हो। उस माता की संगति से प्रार्थना में श्रद्धा निर्माण हो सके तो उत्तम होगा।

विनोबा के आशीर्वाद

१४८

[illegible] ५-५-५२

ओम्,

सर्वोदय-सम्मेलन के निमित्त लिखा तुम्हारा पत्र मुझे ठीक लगा। जैसे तुमने लिखा, जमनालालजी का स्मरण उस सम्मेलन में होने के लिए बहुत कारण थे। स्मरण-रूप से वह सम्मेलन में अवश्य उपस्थित थे। मेरे इस काम के पीछे अव्यक्त रूप से जिनका बल रहा है, उनमें काकाजी का एक प्रमुख नाम है।

मेरे काम से भक्तों को प्राण-वायु मिल रहा है, यह भी मैं मान्य करूंगा। प्राण-वायु सबके लिए प्राण-वायु ही हो सकता है। बाकी काम को

उमा के नाम विनोबाजी का यह पत्र मराठी में है। शेष मूल हिन्दी में है।—सं

जमनालालजी बजाज को परिवार के लोग काकाजी कहा करते थे।—सं

भी जीवन देता है, गाय को भी जीवन देता है। वह सबकी प्यास बुझाता है। सबको ठंडक पहुंचाता है। इस नाम से धनिक और गरीब सब प्राणवान बन सकते हैं। इसीलिए तो इसे 'सर्वोत्तम' का नाम कहते हैं।

'सोपान'[1] नाम सब तरह से मधुर है। जिस स्थान में और जिस समाज में घूमती रहती हो वहांके लिए वह असाधारण है। महाराष्ट्र में उसका चलन स्वाभाविक है। निवृत्ति ज्ञानदेव सोपान मुक्ताबाई, एकनाथ नामदेव तुकाराम रामदास यह संतों की नामावली ईश्वर की नामावली के समान महाराष्ट्र में चलती है। सोपानदेव के नाम पर 'सोपान-पट' नाम का एक खेल भी है। उसे 'मोक्ष-पट' भी कहते हैं। किस दुर्गुण से मनुष्य नरक में गिरता है, किस सद्गुण से स्वर्ग में पहुंचता है, किस साधन से मुक्ति पाता है, इसका उस पट में दिग्दर्शन किया गया है। कहते हैं, वह चित्रपट सोपानदेव ने बनाया है। हो भी सकता है, लेकिन निश्चित नहीं कह सकते क्योंकि वह तमिल प्रांत में भी चलता है। सोपानदेव को अब १५ साल हो गये, इसलिए उनकी बनाई हुई चीज का इतने वर्षों में मद्रास पहुंचना असंभव नहीं है। जो हो, वह खेल बच्चों के लिए बहुत रुचिकर और बोधकर है। शायद तुम जानती होगी। सोपानदेव के अभंग में आया है, 'असो लोकी मेळी इथे वनी'। इस समाज में हम सबसे हिलमिलकर रहें।

अव्यक्त ईश्वर को प्रणाम और व्यक्त शरीरधारी मनुष्य को प्रणाम करने में मुसलमान लोग भेद करते हैं। तुमने देखा कि मुसलमान लोग "पायाबोस आबीबो" नहीं करते हैं। चरणों पर मस्तक झुकाना यह प्रणाम ईश्वर के लिए रिज़र्व रखते हुए, मनुष्यों को खड़े-खड़े प्रणाम करने का रिवाज रहे तो अच्छा होगा। एक जगह तुलसीदासजी ने लिखा है 'सीस ईस ही मैं हो'। लेकिन चूंकि वह सर्वत्र ईश्वर देखते थे, सर्वत्र वह सिर झुका सकते थे। मालिक के सामने, मारने-धमकानेवाले के सामने सिर झुकाने की आदत हम लोगों में पड़ी है। वह नम्रता नहीं, लेकिन हीनता है। 'पाया पोस' में कितना खोखला है, इसका मुझे तो रोज अनुभव आता है।

विनोबा के आशीर्वाद

[1] उमा का लड़का

९ रामकृष्ण बजाज के नाम

१५

पवनार, २२-१०-४

चि. रामकृष्ण

पत्र मिला था। घड़ी मिली है। पुरानी घड़ी का जो भी उपयोग हो सकता है, करो। बीच-बीच में जो भी लिखना उचित समझो लिखा करो। 'लोक-नागरी' पढ़ तो सकोगे ही। लेकिन उसके तत्त्व जान लो।

चि. विमला को आशीर्वाद। कभी संस्कृत पढ़ने का होता है?[1]

विनोबा के आशीर्वाद

१५१

परंधाम (पवनार) २०-२-५

चि. राम

टाइप[2] ऐसा-वैसा नहीं चलेगा। आकार निश्चित और सुंदर ही चाहिए।

किसी आदमी के इसकी धुन लगे बिना अच्छा टाइप नहीं बनेगा यह बात समझ में नहीं आती है। दुनिया इससे बहुत आगे बढ़ गई है। हमें जैसा चाहिए उस तरह का रबर की स्टैंप का टाइप बनाकर भेजा जा सकता है और तदनुसार काम हो जाना चाहिए, ऐसी आशा की जा सकती है।

हमें बीस टाइप-राइटरों की जरूरत है ऐसी बात नहीं है। पर कहते हैं कि कम-से-कम कुछ संख्या बताये बिना वे बनाकर नहीं देते। तब राधाकिसन ने कहा कि इतनों की खपत न हुई और इन्हींमें नया सांचा बैठा देने की सुविधा अगर हुई तो इतने बनवा लेने में हर्ज नहीं है। तो इन्हीं में सांचा बदल लिया जाता है ऐसा तेरे पत्र से प्रतीत होता है। और यही अंदाज राधाकिसन का भी था।

मों बदली तो है परन्तु सुधार नये करने हैं इसलिए उसमें सुंदरता

---

[1] रामकृष्ण बजाज को लिखे विनोबाजी के सब पत्र हिन्दी में हैं।—सं
विनोबा लोकनागरी लिपि में टाइपराइटर बनवाना चाहते थे।—सं

की कमी रह गई तो लोगों के मन को आकर्षण नहीं होगा। इसलिए सुंदरता को कायम रखकर ही काम करना चाहिए।

विनोबा

१५२

पटना ३ १२-५१

रामकृष्ण

'बापू के आशीर्वाद' वाली पुस्तक मिल गई है। फुर्सत से देखूंगा। उसमें तुमको बहुत मेहनत पड़ी है। उसका परिणाम जीवन में दीख पड़ना चाहिए। जमनालालजी ने अपना परिवार देश-व्यापी कर लिया था। मेरा ख्याल है कि बापू को छोड़कर शायद ही कोई दूसरा नेता होगा जिसके इतने व्यक्तिगत मित्र जोड़े हों। यह उनकी विरासत तुम्हें मिलनी चाहिए।

जमनालालजी निरंतर अपना आत्म-परीक्षण करते रहते थे। यह गुण दुनिया भर की दौलत से अधिक मूल्यवान है। उसका भी संग्रह करो।

विनोबा के आशीर्वाद

१५३

१४ ३-५४

रामकृष्ण

९ ३-५४ का व्यक्तिगत पत्र मिला। व्यक्तिगत पत्र सीधे मुझे पहुंच जाते हैं। विचार-परिषद आदि के बारे में तुमने जानकारी दी वह मेरे लिए पर्याप्त है।

बापू और जमनालालजी के बीचवाला पत्र-व्यवहार[1] मैं सरसरी तौर पर बहुत-सा देख गया हूं। साधक का जीवन-विकास सतत प्रयत्न से आहिस्ता-आहिस्ता होता है। उसके लिए बारीक-से-बारीक तफसील में भी जाना पड़ता है। बापू ऐसी बातों में बहुत ध्यान देते थे उसका दर्शन इस पत्र-व्यवहार में होता है। अपने साथियों के लिए उनकी वह स्नेह-दृष्टि थी। ऐसे पत्र-व्यवहार का कुछ संक्षिप्त रूप दूसरों के लिए विशेष उप-

[1] पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद—संपादक काकासाहब कालेलकर। यह अप्राप्य है। इसका संक्षिप्त संस्करण 'बापू के पत्र' के नाम से उपलब्ध है। मूल्य ११)।—सं

योगी होता है। वैसी एक छोटी-सी आवृत्ति भी इसकी निकल सकती है। सारा-का-सारा पत्र-व्यवहार प्रकाशित करने का भी ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व होता है। उस लिहाज से यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

शरीर तो मेरा ठीक काम दे रहा है। एक-एक दिन को आगे बढ़ रहा है—जवानी की तरफ तो नहीं बढ़ रहा है न? और सतत पैदल-यात्रा में हवा पानी अन्न आदि के फर्क यहां रोज सहन करने पड़ते हैं वहां शरीर ऊपर-नीचा हुआ करता है इसमें आश्चर्य की बात नहीं है। आश्चर्य की बात यही है कि ये सब यह सहन कर रहा है और जबतक भगवान उससे काम लेना चाहता हो तबतक सहन करना उसके लिए संभव हो जायगा ऐसा मेरा विश्वास है।

गया के काम में चट्टान जमी है। पत्थर तोड़ना पड़ेगा लेकिन यह अपेक्षा से बाहर नहीं है। कुआ खोदने में जैसे-जैसे गहरे जाओ अधिकाधिक परिश्रम करना ही पड़ता है।

विनोबा के आशीर्वाद

१५४

गया १८-७-५४

राम

पत्र मिला। बाबू की पत्रावली पढ़ी। यह बहुत अच्छा है। इससे पद-यात्रा के साथ-साथ रेल मोटर, जहाज हवाई जहाज आदि सब यात्राएं मुफ्त में हो जायगी।

हां उस काम में शिवाजी का अच्छा उपयोग हो सकता है। जमना

कमलनयनजी विलायत गये थे और वहां से उनके खत बराबर आते थे। उनमें वह वहां का सरल वर्णन लिखते थे। उन्हीकी नकलें विनोबाजी को भेजी थीं, उसीका जिक्र है। —सं

श्री जमनालालजी का अन्य लोगों के साथ पत्र-व्यवहार तो हुआ ही था, साथ ही उन्होंने मातजी को जो पत्र लिखे थे, वे भी बहुत सुन्दर है। उन पत्रों व डायरियों का भी संपादन किया जा रहा है। यह कार्य विनोबाजी के छोटे भाई श्री शिवाजी की मदद और सलाह से करने का सोचा है, इसकी सूचना दी थी, उपरोक्त उल्लेख इस संबंध में है। —सं

काकाजी के पत्र-व्यवहार के अध्ययन से उनकी मैत्री-भावना का स्पर्श अगर हमें हो जाय तो हम बहुत कमायेंगे। कुछ तो स्पर्श हुआ ही इसमें शक नहीं क्योंकि उनको पत्र लेखन में साहित्य की कोई चिंता नहीं थी। सत्य की चिंता थी। आजकल जबसे पत्र-साहित्य साहित्य का एक विभाग बन चुका है तबसे आपसी पत्र-व्यवहार में भी कृत्रिम लेखन की प्रवृत्ति हुई है। जानकी देवी एक दफा विनोद में कहती थी कि जमनालालजी से तो हम बहुत अच्छे वक्ता हो सकते हैं क्योंकि बोलते समय उनके मन में हमेशा ऐसा ख्याल रहता था कि हम जैसा बोलते हैं वैसा आचरण करते हैं कि नहीं। हमारे मन में ऐसी कोई हिचक नहीं रहती है तो बेखटके बोलते जाते हैं। एकनाथ का वचन है—

"वाचा सत्यत्वें सोवळी, थेर कविता बोलकी।"*

विनोबा के आशीर्वाद

१५५

गया ४-९-५४

राम

कमलनयन के दोनों पत्र मिले। पंडितजी को वह काम की बातें लिखता है और मेरे लिए मनोरंजन भी। पर उसका मुझे इतना लंबा पत्र अपने अक्षरों को बचाकर लिखने का शायद यह पहला ही मौका है। वह लिखता है 'रस्सी मेरी इकतरफी है'। उसको लिखो, यह मैंने ही इकतरफी रखी है ताकि बैल को रस्सी की लम्बाई का अंत देखने का मोह न हो। लिखने की आदत हमने उसको डाली नहीं यह भी उसका कहना सच है। वहां दस पंक्तियों से काम करना सिखाया गया वहां तीन पंक्तियां तो उसमें आ ही गया।

उसका स्वास्थ्य अच्छा है, यह जानकर खुशी हुई। पर वजन कितना बढ़ा? यह जबतक मालूम नहीं होता तबतक उसके स्वास्थ्य का भरोसा मुझे नहीं आता।

जमनालालजी की डायरी में असहयोग-आन्दोलन की चर्चा मिलती है इस बारे में तुमने जो लिखा है वह मेरे लिए नई जानकारी थी। पर

---

*वाणी सत्यमय होनी चाहिए और कविता बोधीमय होनी चाहिए।

इसका मुझे आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि यह चीज उनके जीवन में थी और बाद मेरे काम में जहां भी होंगे वहां-वहां से उनका सपोर्ट मुझे मिल रहा है इसमें मुझे कोई शंका नहीं है।

पर इसमें एक फर्क भी है संपत्तिदान-यज्ञ में दाता को ही पैसे का खर्च करना होता है।

शायद तुम जानते हो नारायण देसाई जयप्रकाशजी की सूचनानुसार और संमति से बंबई में काम कर रहा है। उससे कभी मिल लो और बातें कर लो।

माताजी को किसी नये काम पर कोई नियुक्त कर ही नहीं सकता। उनके जिम्मे कूप-दान का काम पड़ा ही है। कम-से-कम हर दस एकड़ जमीन के पीछे एक कुआं बनाना है। माताजी के इस जन्म के लिए यह कार्य पर्याप्त है।

पोता गोवर्धनदास की जो प्रसादी तुमने हासिल की थी उससे मुक्ति मिली या नहीं ?

विनोबा के आशीर्वाद

२६-८-५४

[1]पूज्य श्री विनोबाजी

मैं आजकल पू. पिताजी की डायरियों के संकलन-संशोधन करने में लगा हुआ हूं। डायरियां पढ़ते-पढ़ते एक जगह आपके शुरू किये हुए संपत्तिदान-आन्दोलन की कल्पना के बारे में पिताजी ने १९१५ में सोचा था, इसकी कल्पना आती है। ४।१।१५ की डायरी में पिताजी लिखते हैं—

"भाई युगलकिशोरजी (बिड़ला) से १ परसेंट मुनाफे का फैसला। भाई रामेश्वरजी तक १ हजार मुकररी (एकमुश्त) लिया। बाद में दो हजार महीना जबतक यह व्यापार करें तबतक बाबत में भी। ज्यादा कमाया करें तो यह ज्यादा देवेंगे डालकर हरिजन-कार्य में।"

आपको यह पढ़कर खुशी होगी, इसलिए आपको यह लिखा है। इसका आप कहीं उपयोग करना चाहें तो कर भी सकते हैं।

रामकृष्ण के प्रणाम

१५८

गांधीग्राम (मदुरै) २५-७-५६

रामकृष्ण

पत्र मिला। ठीक है। वे भाई और बहन आ सकते हैं।[1] यात्रा तो हमारी अच्छी चल रही है। रोज के दो पड़ाव होने से बैलेन्स ठीक रहता है। लोगों की पावन-शक्ति सुधरेगी ऐसी उम्मीद कर रहा हूँ।

परदेश जा रहे हो तो वहां से मेरे लायक जानकारी मुझे देते रहो। सेहत तुम अच्छी रखोगे ऐसी उम्मीद रखता हूँ। कुटुम्बी जनों को आशीर्वाद।

विनोबा के आशीर्वाद

१५९

ईरोड (कोइम्बतूर) २७-१०-५६

रामकृष्ण

तुम्हारा १९ अक्तूबर का पत्र मिला। विमलाताई का भी मिला था। मुझे जितनी भी जानकारी भेजोगे उसका स्वागत है। इजरायल के बारे में दूसरों ने भी मुझे कुछ सुनाया है। इजरायल के कुछ भाई मिले भी हैं। फिर भी हरेक का अपना अलग-अलग अनुभव होता है। और उससे हमको लाभ उठाना चाहिए।

नीचे की दो किताबों की जरूरत है। दोनों मिलाकर एक ही किताब है।

१ ऋग्वेद का अंग्रेजी अनुवाद—भाग १—के ग्रीफिथ
२ भाग २

विनोबा के आशीर्वाद

१६

उरूकाई (तंजावर) २९-१-५७

चि रामकृष्ण ने फिर से एक बार जमनालालजी के अपने कुछ संस्मरण मैं लिखूं, ऐसा आग्रह किया। स्थूल स्मरण तो दिन-ब-दिन भूलता ही जा

---

[1] दो इजरायली भाई व एक बहन उनके पास जाकर दो-तीन दिन रह सकते हैं क्या, यह पूछे जाने पर उपरोक्त उत्तर दिया।—सं

१० गौतम बजाज के नाम

१११

कोझीकोडे (केरल)
१९-७-५७

चि गौतम

तुम्हारा वर्णनात्मक पत्र मिला। निसर्ग के दर्शन से चित्त की शुद्धि हो सकती है। उस तरह की दृष्टि होनी चाहिए तब वह अनुभव मिलता है।

सृष्टि के दर्शन के साथ-साथ और क्या क्या सीखने को मिला इसकी नोंध रखते जाना चाहिए। शरीर की सेवा में घिसना होता है तभी वह आत्मज्ञान प्राप्त करने के योग्य बनता है। तुम्हें ऐसा ही सुअवसर मिला है।

आज यहां राधाकिसन वगैरह आनेवाले हैं। यू तो कल ही आनेवाले थे लेकिन उनकी गाड़ी चूक गई। उनकी मुलाकात में हमारे कार्यक्रम की चर्चा होगी। बहुत करके २९ अगस्त को मंगलोर पहुंचने की योजना है।

विनोबा

११२

बंगलोर, २४ १०-५७

चि गौतम

चित्त की एकाग्रता (आत्म-परीक्षण) का विषय है। जहां सामूहिक प्रार्थना की नियमित योजना न चलती हो वहां सोने से पहले और सोकर उठने पर पांच-दस मिनट हम अपने-आप परमेश्वर का चिन्तन करें। यू भी दिन भर में कभी-कभी नामस्मरण की साधना की जा सकती है लेकिन यह विषय जरा सूक्ष्म है। फिलहाल एकाग्रता न हो पाये तब भी चिंता न की जाय। चित्त में अन्य विचार न आवें तो बस है।

कुल मिलाकर तुम्हारे अक्षर अच्छे ही हैं। दूसरे हाथ से लिखने का अभ्यास कर देखो तो सव्यसाचित्व प्राप्त होगा।

विनोबा के आशीर्वाद

१६१

जम्मू-काश्मीर, २२-६-५९

गौतम

१ जून का पत्र मिला। तुम कहते हो कि उसके पहले दो पत्र लिखे थे लेकिन उनमें का एक मिला है।

'मार्ग-भारत' के उद्धरणों की जल्दी नहीं है। हृदयंगम होनेवाले उद्धरणों का चुनाव करना चाहिए। और किसीके लिए नहीं बल्कि अपने खुदके ही उपयोग के लिए।

कमर का स्नायु दुर्बल हुआ हो, फिर भी उसे बचाया जाय तो वह कुछ वर्षों के बाद दुरुस्त हो सकता है। शरीर को चलता-फिरता रखनेवाला और किसी भी प्रकार का अतिरेक न करनेवाला अपना आरोग्य संभाल सकता है।

समय बरबाद न होने का और समय के सार्थक होने का मतलब क्या है इसकी एक कसौटी है। जिस समय चित्त में कोई भी विकार नहीं है वह समय सार्थक हुआ। भले ही बाह्य रूप में उसमें से कोई निष्पत्ति हुई हो चाहे न हुई हो। इसके विपरीत हाथों से भरपूर काम होते हुए भी अगर चित्त में विकार की तरंगें उठती होंगी तो वह सारा समय दुनिया की निगाहों में भले ही अच्छा बीता हुआ-सा प्रतीत होता हो फिर भी वह व्यर्थ ही गया है। बल्कि वृद्धावस्था में समय की कीमत और भी एक कसौटी पर आँकी जा सकती है। सज्जनों की संगति में से जो ज्ञानप्राप्ति की आशा रखता है वह एक तरह से सज्जनों को पुस्तकों की कोटि में ही डाल देता है। अर्थात् सत्संगति को वह अपने मतलब का साधन मानता है भले ही वह मतलब कितना ही ऊँचा क्यों न हो। "केवल सत्संगति के प्रेम के कारण ही सत्संगति"—यह एक आध्यात्मिक कसौटी है। मां का बालक पर प्रेम होता है। उसके बिना उसका मन नहीं लगता। उसकी सेवा में वह मशगूल रहती है। वैसा सन्तों पर और सद्गुरु पर अपना प्रेम है क्या? उनकी सेवा करना ही मधुर प्रतीत होता है क्या? जब ऐसी स्थिति महसूस होने लगेगी तब काल की सार्थकता का एक न्यारा ही अनुभव प्राप्त होगा।

"मनाचे श्लोक"[1] में एक श्लोक है—

"नव्हे पिंड ज्ञान   इत्यादि। उसे निकालकर देखो।

लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि बाह्य विचार किया ही न जाय। शरीर, मन और वाणी इन सबसे दिनभर हमने समतोल रूप में काम किया या नहीं यह भी देखना लाभप्रद होता है।

काल की सार्थकता के संबंध में एक श्लोक बहुत उपयोगी है उसका लिखकर पूरा करता हूं।

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥[2]

विनोबा

१५४

प्रभात संचार, पवनार १४-२-५१

गौतम

१-२-५१ का पत्र मिला। तुम मेरे पास आने पर मुझसे स्पष्ट बातें करनेवाले हो ऐसा तुमने अपने एक पत्र में लिखा है। स्पष्ट बोलने को ही मैं बोलना मानता हूं। स्पष्ट बोलें या मौन रखें दोनों के बीच की व्यर्थवाणी किसीसे भी न बोलें। मौन को छिपाने के लिए नहीं बल्कि मनन के लिए और संयम के लिए।

शिवाजी का और तुम्हारा जमा नहीं ऐसा लगता है। तुम मिलोगे तब कारण मालूम हो जायगे या उसके पहले भी मालूम हो जायगे। लेकिन मैंने

---

[1] समर्थ रामदास स्वामी-कृत 'मनाचे श्लोक',—मन को संबोधित करके लिखे श्लोक। पूरा श्लोक इस प्रकार है—

नव्हे पिंडज्ञानें नव्हे तत्त्वज्ञानें। समाधान कांहीं नव्हे तानमानें।
नव्हे योगयागें नव्हे भोगत्यागें। समाधान तें सज्जनाचेनि योगें ॥१५९॥

[2] ज्ञानी मनुष्य को चाहिए कि मैं अजरामर हूं यह समझते हुए वह विद्या का और अर्थ-प्राप्ति का चिंतन करे किंतु धर्म का आचरण करते समय वह समझे कि मृत्यु ने मेरे केशों को अपनी मुट्ठी में पकड़ रखा है।

एक पत्र में तुम्हें जैसा सुझाया था वैसी सेवा तुम्हें अभी मिला ? हम ज्ञान पाने के लिए जैसे पुस्तकों का इस्तेमाल करते हैं वैसे ही व्यक्तियों को इस्तेमाल करना चाहते हैं। लेकिन व्यक्ति पुस्तकों की कोटि में नहीं आते। व्यक्तियों पर प्रेम करना होता है उनकी सेवा करनी होती है। लेकिन इस विषय को मैं यहीं छोड़ता हूँ।

जिसकी कमर कमजोर हो गई, वह जीवन-दृष्टि से करीब-करीब निरुपयोगी ही हो गया। कमर को सीधे रखकर चलने में कम-से-कम तकलीफ होती है या सरल-सीधा सोने में। बीच की स्थिति में कमर पर ही भार आता है। अंगुलियों की जो पिछली बाजू होती है जिन्हें पोरवे कहते हैं, उनसे कमर के हिस्से को मलते रहो—दो-दो घंटे बाद एक-दो मिनट तक। चलने के लिए लाठी लेने में भी हर्ज नहीं है। बैठना जितना कम होगा उतना अच्छा है।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा ही रहता है। सतत पैदल चलनेवाले का स्वास्थ्य बिगड़ना एक चमत्कार ही है। कभी-कभी यह भी होता है। कारण योग पूरी तरह से सध नहीं पाता। योग के बिना जीवन ही नहीं है। योग ही जीवन है।

विनोबा का आशीर्वाद

११ भरत अग्रवाल और रजत अग्रवाल के नाम

१९५

गया ११-७-५१

भरत

तुम्हारा पत्र मिला। अक्षर तुम्हारे बहुत खराब तो नहीं हैं लेकिन काफी सुधर सकते हैं। अच्छे अक्षर का नमूना सामने रखकर एक-एक अक्षर की तुलना उसके साथ करो। तुम्हारा "स" बहुत टेढ़ा है। "ब" भी ठीक नहीं है। "प" का पाव बहुत छोटा है। अगला पत्र लिखोगे उसमें ये सब सुधार कर लो।

विनोबा के आशीर्वाद

१९६

गया ११-७-५१

चि भरत

तुम्हारा पत्र मिला है। विद्यालय में भरती हो गये हो, यह अच्छा है। तुम तो गौ-माता के पुत्र हो। जानते हो न ? गोपालकृष्ण के समान अच्छे सेवक बनने की उम्मीद रखो। मैं यह पत्र दिन में लिखता रहा हूं इसलिए तुम्हारा नाम भरत ही लिख दिया है। हमारा पता क्या पूछते हो ? वह तो रोज बदलता है।

विनोबा के आशीर्वाद

१९७

गया २१-९-५१

चि भरत

तुम्हारा पत्र मिला। इस बार तुम्हारे अक्षर पहले से कुछ अच्छे हैं।

रजत और भरत के पत्र मूल हिन्दी में हैं।

बालक का नाम रजत है। विनोबाजी ने प्यार से उसके दो नाम रख दिये। दिन में भरत और रात में रजत।

फिर भी सुधार की बहुत गुंजाइश है। नमूने के बड़े-बड़े अक्षर सामने रखा करो और एक-एक अक्षर को एक-एक चित्र समझकर उसके अनुसार लिखने की कोशिश करो।

गणित तो एक आसान और मनोरंजक विषय है। दिया हुआ सवाल पहले पूरी तरह से समझ लेना चाहिए। बहुत-से लड़के सवाल को समझते ही नहीं हैं और हिसाब करना शुरू कर देते हैं। इससे वह गलत हो जाता है।

आगे जब पत्र लिखो तो उठते कब हो, सोते कब हो, आदि सारा दिन-क्रम लिखो। खेलने के समय खेलना चाहिए। काम के समय काम करना चाहिए। अभ्यास के समय अभ्यास करना चाहिए। आराम के समय आराम करना चाहिए। पर आलस्य में जरा भी समय नहीं जाना चाहिए।

तुम्हारे पत्र पर पूरा पता नहीं था। इसलिए यह पत्र मदालसा के पते पर दे रहा हूं।

मेरा यह पत्र 'लोक-नागरी' में है। इसमें और चालू नागरी में क्या-क्या फरक देखते हो?

विनोबा के आशीर्वाद

१९८

पन्ना २-१०-५१

रजत

तुम्हारा पत्र मिला। संगीत में जो भजन सिखाये जाते हैं उनका अर्थ समझ लो तो मन लगेगा। अर्थ समझे बिना तोते के माफिक गाओगे तो कैसे मन लगेगा?

विनोबा के आशीर्वाद

१९९

डेरी फार्म कैंप ५-५-५४

चि. भरत

तेरा ता. २५-४-५४ का 'लोकनागरी' लिपि और मराठी भाषा में लिखा हुआ पत्र मिला। पढ़कर बहुत आनंद हुआ। बम्बई में तुम बालगोपाल

दूसरा खण्ड

डायरी के अंश

जमनालाल बजाज की डायरी के कुछ विनोबा-संबंधी अंश

२ ११ १२, वर्धा

श्री वृद्धिचंदजी पोद्दार आये। उनसे मारवाड़ी-जाति के सुधार के बारे में बातें हुई। उन्होंने कहा कि मुनाफ़े पर सैकड़ा १ टका तुम्हारी (जमनालालजी की) मरजी से सार्वजनिक कार्य के लिए खर्च किये जायंगे।

१२-८ २१ सेजपुर-आश्रम

जबतक स्वराज्य नहीं प्राप्त हो वहांतक स्वराज्य के सिवाय दूसरी बातों का स्वप्न भी हमें नहीं आना चाहिए। इतना मन उसमें लगा दो। सत्याग्रह-आश्रम में हमेशा आया करती होगी ? वहां जाने से मन को अवश्य शांति मिल सकेगी। पूज्य विनोबाजी का तुमपर विश्वास हो जायगा तो आध्यात्मिक ताकत बढ़ाने का मार्ग भी वह अपनी बुद्धि के अनुसार बताया करेंगे।

उनके सत्संग से रोज़ की दिनचर्या अवश्य सुधर जायगी। सब बच्चों तथा कुटुम्बियों के साथ खूब प्रेम का बर्ताव रखना। अतिथियों का पूरा ध्यान रखना।

(जानकीदेवी को लिखे पत्र से)

५-२ २४ वर्धा

आश्रम के भविष्य के कार्य के सम्बन्ध में विनोबा से बहुत-सी बातें हुई।

वर्धा, ९ २-२४

श्री केदार वकील न १) वर्धा तालुका में विनोबा के मार्फत जनपद-सेवा-कार्य के लिए देना स्वीकार किया। अपना समय देने की भी इच्छा व्यक्त की।

११-७-२४ वर्धा

आश्रम गये। विनोबा ने गांधी-सेवा-संघ के नीचे लिखे मुताबिक सदस्य बनाये—

गोपालराव काले	५)	रघुनाथराव धोत्रे	४)
मोघे	५)	शंकरराव देवे	४)
द्वारकानाथजी	५)	नर्मदाप्रसादजी	५)
	१५)		१३)

शंकरराव नागरे	७५)
बाबाराव परांजपे	२५)
	१)

१२-७-२४ वर्धा

आश्रम के बोर्डिंग में गये। बापूजी व विनोबा से रात के ९ बजे तक बातचीत। भविष्य के कार्य का प्रबंध।

१५-७-२४ वर्धा

आज विनोबा ने आश्रम में राष्ट्रीय शिक्षण-संस्था पर सुन्दर विचार व कार्यक्रम प्रकट किया। सुनकर खुश हुआ।

१७-७-२४ वर्धा

चि. कमलनयन को सत्याग्रहाश्रम वर्धा में रखने के लिए बग्घी तैयार करके सुबह ६॥ बजे भेजा।

२३-७-२४ वर्धा

तिलक हाल में लोकमान्य तिलक की जयंती के निमित्त सभा। श्री विनोबाजी भावे का बहुत ही सुन्दर व प्रभावशाली प्रवचन हुआ।

१६-८ २४ वर्धा

पूज्य विनोबा व बापूजी से प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी तथा वर्तमान स्थिति में अपने कर्तव्य पर विचार होता रहा।

२७-१-२५, वर्धा

पुणताँबेकर, पड़बीतरी काका सा कालेलकर, विनोबा अप्पासाहब पटवर्धन आदि से राष्ट्रीय कॉलेज शिक्षण आदि के संबंध में वार्ता व चर्चा।

२-३-२५, बड़ौदा

सुबह काठियावाड़ एक्सप्रेस से उतरकर बड़ौदा में विनोबा के पिताजी पूज्य नरहर शंभुराव भावे से मिलने गया। उनसे मिलकर बहुत खुशी हुई। दूध लिया। उनका आग्रह देखकर वहीं पर भोजन करने का निश्चय किया। वहांसे जुमादादा व्यायामशाला गये और प्रो. माणिकराव से मिले। व्यायामशाला देखी। स्नान किया। वहांसे अब्बास तैयबजी के यहां गये। उनसे मिलकर आनंद हुआ। उनकी स्त्री व छोटी पुत्री से मिले। बाद में विनोबा के घर आकरके दूध दही का भोजन। विनोबा की बहन से परिचय। नरहर भावेजी से एस के बारे में तथा जून १५ के बाद वर्धा आने के बारे में विचार। रात १॥। की गाड़ी से अहमदाबाद रवाना।

५-५ २५, वर्धा

आश्रम गये। वहां सेवा संघ की सभा का कार्य ४ बजे से रात के ९ बज तक होता रहा। वहींपर भोजन व प्रार्थना। आज पू विनोबा का व्यवहार महाराष्ट्र-धर्म तथा विद्यालय के बारे में संतोषजनक नहीं मालूम हुआ।

८-७-२५, नालवाड़ी

सुबह विनोबा और द्वारकानाथजी के साथ दहेगांव स्टेशन से नालवाड़ी देखने गये। करीब ६ मील चले। रास्तेभर थोड़ी-थोड़ी वर्षा होती रही।

वहां की परिस्थिति देखी। लोगों का उत्साह आश्रम के लिए नहीं

दिखाई दिया। बच्चेराव का आग्रह बहुत था। नर्मदाप्रसादजी वकील आदि आ गये। शाम को अलग होकर वर्धा वापस।

१२-७-२५, वर्धा

आश्रम से मारवाड़ी विद्यालय की सभा में गये। पू. विनोबाजी के विद्यार्थी-गृह-संबंधी विचार अच्छे मालूम हुए। उन्होंने जवाबदारी लेना स्वीकार नहीं किया।

२५-१०-२६, बंबई

पूज्य विनोबा और मामा कुलकर्णी का पूर्ण विश्वास प्राप्त करने में ही तुम्हारी बहादुरी और कल्याण है।

(कमलनयन को लिखे पत्र से)

२१-२-२७, बंबई

आश्रम के वातावरण के बारे में लिखा सो समझा। इस तरह घबराना नहीं चाहिए। तुम तो बहादुर हो।

पू. विनोबा व कुलकर्णीजी वहां हैं। तुम्हें विशेष चिन्ता रखने की आवश्यकता नहीं।

सामाजिकता के रहते हुए भी सच्चे-झूठे दोषारोपण होना संभव है और उसे बहुत समय तक सहन भी करना पड़ता है। पर आखिर में सच्चाई कायम ही रहती है।

(कमलनयन को लिखे पत्र से)

१२-७-२७, पूना

मुझे आशा है कि तुम अपने नियमित पठन-पाठन उत्साह और सेवा भाव से पू. विनोबा तथा अन्य गुरुजनों का प्रेम संपादन करने में सफलता प्राप्त करोगे। अगर चाहोगे तो यह बात तुम्हारे हाथ में है। तुम कर सकते हो। विश्वास और श्रद्धा रखनी चाहिए।

(कमलनयन को लिखे पत्र से)

२१ १२-२८, नागपुर, वर्धा

राष्ट्रीय शिक्षण परिषद का स्वागत-सभापति बनना पड़ा। पू. गंगाधर रावजी देशपांडे सभापति थे। पू. विनोबाजी का राष्ट्रीय शिक्षण पर उत्तम भाषण हुआ।

१०-७-२९, वर्धा, बडनेरा अमरावती

एलिचपुर दत्तमंदिर (दत्त दरबार) सुल्तानपुर में है। उसे खोलने जाने की तैयारी। पूज्य विनोबा व वास्तानेजी को तैयार किया। श्री पिमरकर व चिरंजीलाल के तार वहां जाने के बारे में आये।

११-७-२९, अमरावती एलिचपुर

पूर्णा नदी पर स्नान। श्री विनोबा से 'परमात्मा की भावना क्यों करे?' इस विषय पर काफी विचार-विनिमय।

तीन बजे मिरजगुड (गुरुष) बाबा बनीरा के साथ निकला। सुल्तानपुरा पैदल। बड़ी सभा। मंदिर देखा। बाद में ट्रस्टी व स्वामी विमलानन्दजी आदि की आज्ञा से श्री दत्तमंदिर का उद्घाटन किया।

१-८-२९, अमरावती आर्वी कारंजा

राष्ट्रीय झंडे का उद्घाटन। मेरे हाथ से ९ बजे झंडा फहराया गया। श्री विनोबा व बाबासाहब पहुंच गये थे। भाषण आदि हुए। आर्वी में शाम को सार्वजनिक सभा। विनोबा का असरकारी भाषण हुआ। सभा भी अच्छी हुई।

५-८-२९, वर्धा

पूज्य विनोबा की सलाह से तय हुआ कि बापूजी ही महाराष्ट्र का खादी-कार्य करें और वास्तानेजी को काम के लिए एजेंट रखने दें।

१-११-२९, वर्धा

आज अस्पृश्यों को मंदिर-प्रवेश कराने के बारे में प्रमुख लोगों की सभा

हुई। दुकान पर खूब विचार-विनिमय हुआ।

८।११।२९ वर्धा

आश्रम में विनोबा का गीता-वर्ग ५। से ६ तक।

९ ११-२९, वर्धा

विनोबा के गीता-वर्ग में।

११ ११ २९, वर्धा

विनोबा के गीता-प्रवचन में गये।

१२ ११ २९, वर्धा

सुबह विनोबा के गीता-क्लास में।

१३-११-२९, बामगांव

सुबह ४ बजे के करीब पूज्य विनोबा व मनोहरजी के साथ कलम्ब होते हुए बामगांव पहुंचे। स्टेशन पर कोई नहीं था। तांगा करके राष्ट्रीय विद्यालय रवाना हुए। घोड़ा खराब था। रास्ते में घोड़ा पीछे हटा और तांग को गड्ढे में गिरा दिया। सद्भाग्य से किसीको कोई चोट नहीं आई। विद्यालय में हेडमास्टर श्री पुरवार ने २॥ घंटे तक रिपोर्ट सुनाई।

निवृत्त हुए, स्नान किया। कपड़े हाथ से धोये। डा पारसनीस अंबुलकर, नामजी भाई आदि आये। विद्यालय के संबंध में चर्चा सुनी।

विद्यार्थी व श्री अंबुलकर ने शिस्त (डिसिप्लिन) का भंग किया और बार्डन ने अव्यावहारिकता बरती।

शाम को सार्वजनिक सभा हुई। अध्यक्ष विनोबा ने अस्पृश्यता व मंदिर-प्रवेश पर अच्छा कहा।

२१ ११ २९, वर्धा

विनोबा के गीता-वर्ग में।

२७-११-२८, वर्धा

पूज्य विनोबा से अस्पृश्यता-निवारण के संबंध में चर्चा।

२२-१२-२८, वर्धा

श्री विनोबा से बातचीत, वास्ताने व कन्या-पाठशाला के संबंध में विचार।

१०-१ १ वर्धा

पूज्य विनोबाजी से कांग्रेस के प्रान्तिक संगठन के विषय में बातचीत हुई।

८-१-३२, वर्धा

पू. विनोबा, गोपालराव, द्वारकानाथ आदि के जलगाँव में गिरफ्तार होने की खबर सुनी।

२५-१-३२, धुलिया-जेल

जलगाँव से धुलिया पहुँचे। रास्ते में अखबार पढ़ा। धुलिया स्टेशन पर मित्र लोग मिले। मुँह-हाथ धोया, नाश्ता किया। बाजार की राह छाछ व मुसम्मी का पानी।

पैदल ही जेल गये। मित्र लोग भी साथ थे। मोटर में बैठने को कहा, इन्कार किया। जेल पहुँचने पर पू. विनोबा, वास्ताने, पुरुषोत्तमजी आदि कई मित्र मिले। मिलकर सुख व आनन्द मिला।

२६-१-३२, धुलिया-जेल

शाम को रामायण-वर्ग में।

विनोबा का गीता-प्रवचन तथा अभ्यास बहुत ही भावपूर्ण हुआ। मन को संतोष मिला।

२८। १२, भुलिया-जेल

शाम को विनोबा से चर्चा हुई। विनोबा के साथ शाम की प्रार्थना बराबर चालू है।

१०-१-१२, धुलिया-जेल

सुबह ४ बजे विनोबा के साथ प्रार्थना चर्चा तकली सुकाभाऊ के काम का परिचय।

स्त्रियों के लिए भी सप्ताह में एक रोज विनोबा का प्रवचन निश्चय हुआ।

विनोबा ने तुलसी-रामायण शुरू की। विनोबा के साथ प्रार्थना।

२-४।१२ धुलिया-जेल

सुबह ३।।। बजे और शाम को ८ बजे विनोबा के साथ प्रार्थना। 'विनय-पत्रिका' में से ९१वां भजन समझाया।

१०-४।१२, धुलिया-जेल

विनोबा द्वारा गीता के आठवें अध्याय में 'मृत्यु' पर सुन्दर विवेचन हुआ।

११।४।१२, धुलिया-जेल

दोपहर को विनोबा का वर्ग। विनोबा का गला बहुत खराब हो गया। रात में विनोबा को निद्रा नहीं आई। मुझे भी उत्तर रात्रि को निद्रा नहीं आई। देश की हालत व अत्याचार पर विचार चलता रहा।

१५।४।१२ धुलिया-जेल

मेरा मन और स्वास्थ्य बहुत ही ठीक रहता है। पूज्य विनोबा की संगत में व खेलने कूदने और कातने में खूब आनन्द से समय बीतता है।

मन का असर शरीर पर अवश्य पड़ता है। मैं सुबह ४ बजे व रात्रि को ८ बजे विनोबा के साथ बराबर नियम से प्रार्थना करता हूं। नासिक

से भी बड़ी कोठरी मुझे व विनोबा को अलग-अलग स्वतंत्र रूप से दी गई है।

(जानकीदेवी को लिखे पत्र से)

१७-४-३२ धुलिया-जेल

विनोबा का प्रवचन बहुत ही मनन योग्य हुआ। मन पर उसका अच्छा असर हुआ।

१९-४-३२ धुलिया-जेल

विनोबा से तुकाराम का जीवन-चरित्र और अभंग सुने। उनके जीवन के सम्बन्ध में चर्चा की।

२०-४-३२ धुलिया-जेल

सुबह ४ व शाम को ८ बजे प्रार्थना। 'मनाचे श्लोक' का पाठ। विनोबा ने ज्ञानेश्वरी के प्रकरण पढ़कर बतलाये। ठीक लगे। अहिंसा के सम्बन्ध में चर्चा हुई। आज १॥ बजे से ४॥ बजे तक तुकाराम के अभंग पढ़े व कुछ लिखे।

२१-४-३२ धुलिया-जेल

विनोबा से मन की स्थिति के बारे में बातचीत। आज 'सी' वर्ग में रहने की मंजूरी आ गई।

२२-४-३२, धुलिया-जेल

तुकाराम के अभंग पढ़े व लिखे।
विनोबा से ठीक तौर से मन की स्थिति-संबंधी बात हुई।

२३-४-३२, धुलिया-जेल

कल और आज भोजन के समय विनोबा के लिए खरबूजा लाया जाता है। उसकी एक फांक उनके कहने से ली परन्तु मन में सन्तोष नहीं रहा।

२५ ४ ५२ धुलिया-जेल

सुबह ४-५ व शाम को ८ बजे प्रार्थना। मनाचे श्लोक का पाठ। विनोबा के जीवन-चरित्र लिख देने पर उनसे चर्चा व विचार।

चर्खा काता। गोपालराव से विनोबा के बचपन का परिचय मिला।

२७-४ ३२ धुलिया-जेल

विनोबा व सुपरिटेंडेंट की बहुत देर तक बातचीत हुई। स्वभाव परिवर्तन के बारे में।

२८ ४ ३२-धुलिया-जेल

पू. बापू का दूसरा पत्र आया। उसपर विनोबा से खूब चर्चा हुई। दूध लेने के सम्बन्ध में विनोबा का संतोषजनक उत्तर। विनोबा से स्वादरोध के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।

२९ ४ ३२, धुलिया-जेल

विनोबा से बालाजी की सेवा के सम्बन्ध में चर्चा। खानदेश के काम व कार्यकर्ताओं के सम्बन्ध में भी विचार-विनिमय।

१-५ ३२ धुलिया जेल

विनोबा का बहनों में प्रवचन परिचय आदि। छठोत्र हुआ। विनोबा का (गीता के) ग्यारहवें अध्याय पर प्रवचन। बालाजी आदि के साथ शाम की प्रार्थना।

२-५ ३२ धुलिया-जेल

विनोबा के जरिये चर्चा, घर और आश्रम की खबर मिली।

कमला के काम सिखाने के सबंध में विचार-विनिमय। उसकी इच्छा पर ही छोड़ने का निश्चय हुआ।

१-५ ३२, धुलिया-जेल

आज विनोबा से नक्षत्रों के नाम और प्राचीन काल में स्त्रियों के दर्जे के विषय में काफी चर्चा हुई।

७-५ ३२, धुलिया-जेल

सुबह ४ बजे और शाम को ८ बजे प्रार्थना। 'मनाचे श्लोक' का पाठ। उर्दू कविता विनोबाजी के साथ पढ़ी।

८-५ ३२, धुलिया-जेल

विनोबा द्वारा १२वें अध्याय में से सगुण भक्ति व निर्गुण भक्ति पर सुन्दर विवेचन। भरत व लक्ष्मण उद्धव व अर्जुन के सुन्दर दृष्टांत दिये।

तुकाराम पढ़ा। रात्रि को रामायण पढ़ी।

बापू के प्रति मीराबहन की सगुण भक्ति व विनोबा की निर्गुण भक्ति है ऐसा मैंने विनोबा से कहा। उन्होंने स्वीकार किया।

९-५ ३२, धुलिया-जेल

सुबह ४ बजे व शाम को ८ बजे प्रार्थना। कविता-कौमुदी और उर्दू पढ़ी। विनोबा के साथ 'मनाचे श्लोक' का पाठ। विनोबा से सगुण भक्ति व निर्गुण भक्ति पर विचार-विनिमय हुआ।

तुकाराम के अभंग पढ़े व लिखे।

१४-५ ३२, धुलिया-जेल

आज मेरी दूसरी सजा के दो महीने पूरे हुए। 'सी' वर्ग का अनुभव। विनोबा व गोपालराव की सजा के आज चार महीने पूरे हुए। आज से इन दोनों को जुर्माने के बदले में सजा चालू हुई।

टॉलस्टाय की तीसरी कहानी पूरी हुई। गोपालराव से विनोबा के जीवन-काल की चर्चा। उन्हें जितना मालूम है वह नोट करके देना उन्होंने मंजूर किया।

१५ ५ १२, धुलिया-जेल
आज गीता के ११वें अध्याय पर विनोबा का सुन्दर प्रवचन हुआ।

१६-५ १२ धुलिया-जेल
सुबह ४ बजे व शाम को ८ बजे प्रार्थना। 'मनाचे श्लोक' का पाठ किया। विनोबा से रामायण के सम्बन्ध में चर्चा। तुलसी-रामायण रस के साथ पढ़ी।

१८-५ १२ धुलिया-जेल
विनोबा के साथ बरसात में स्नान किया। ठंडक हुई।

२१-५ १२ धुलिया-जेल
आज सुबह प्रार्थना के समय विनोबा को पढ़ाना पड़ा।

२२-५ १२ धुलिया-जेल
१४वें अध्याय पर विनोबा का प्रवचन बहुत ही उत्तम हुआ।

२४-५ १२, धुलिया-जेल
विनोबा से बातें। आज से विनोबा से रोजनिशी (डायरी) लिखाना शुरू किया।

२९-५ १२ धुलिया-जेल
अस्पताल में मणिभाई की बातचीत व व्यवहार से दुःख हुआ। खूब विचार किया।

विनोबा के साथ भी अच्छी तरह विचार किया। ईश्वर की प्रार्थना की।

विनोबा का १५वें अध्याय का प्रवचन अच्छा था पर आज मन पूरा नहीं लगा।

१०-६ ३२, धुलिया-जेल

राम-भक्ति किस प्रकार हो सकती है, इसपर विनोबा से विचार।

११-६ ३२, धुलिया-जेल

विनोबा की गीता के पहले व दूसरे अध्याय का थोड़ा भाग रामदास की नोट बुक में से पढ़ा, आनन्द आया।

स्वभाव के सम्बन्ध में व जानकर आलस्य कैसे कम हो और राम की सच्ची भक्ति किस प्रकार से हो, इसपर विनोबा से विचार।

१ ६ ३२, धुलिया-जेल

मुझे आशा है कि मैं बाहर जाने पर पहले से ज्यादा शारीरिक परिश्रम कर सकूँगा। विनोबा की संगत व प्रवचन से तो खूब ही ज्ञान व सुख-शान्ति मिल रही है, जो जन्मभर काम आवेंगे। आशा है, तुम भी सब प्रकार से मजबूत होकर जेल से बाहर आओगी।

(जानकीदेवी को लिखे पत्र से)

१ ६ ३२, धुलिया-जेल

मेरे बहुत आग्रह करने पर गोपालराव ने विनोबा का 'जीवन चरित्र' लिखना शुरू किया। जितना उन्होंने लिखा उसे देखा।

१ ६ ३२, धुलिया-जेल

विनोबा से उनकी जीवनी के सम्बन्ध में बातें हुईं।

५ ६ ३२, धुलिया-जेल

काफी देर तक व सामाजिक विषयों पर चर्चा हुई। बाद में १५वें अध्याय पर विनोबा का बहुत ही व्यावहारिक व सुन्दर प्रवचन हुआ।

९ ६-३२, धुलिया-जेल

सेकर आये विनोबा का वजन कम हो रहा है। इस सम्बन्ध में चर्चा

व विचार। विनोबा से बातें।

१०-६-३२, धुलिया-जेल

भक्ति व श्रद्धा बढ़ाने के बारे में आज विनोबा से करीब एक घंटा बातचीत हुई।

१२-६-३२, धुलिया-जेल

'गीताई' छपकर आई। आफिस से लाकर कापी पढ़ी। मित्रों में बांटी गई। विनोबा का १७वें अध्याय पर भावपूर्ण प्रवचन हुआ।

१८-६-३२, धुलिया-जेल

आज विनोबा को चक्कर आ गया।

भोजन के बाद आराम किया। उसके बाद विनोबा के साथ 'गीताई' के दो अध्याय पढ़े।

शाम को खेल-कूद। विनोबा के पास रहा।

१९-६-३२, धुलिया-जेल

गीता के १८वें अध्याय का विनोबा ने सुन्दर व उत्साहमय विवेचन किया। गीता-प्रवचन समाप्त हुआ।

२०-६-३२, धुलिया-जेल

मेरी नाक-कान पकड़ने की आदत पर विनोबा से बातचीत। उन्होंने इसमें कोई आपत्ति नहीं बताई।

२४-६-३२, धुलिया-जेल

चर्खा काता। प्यारेलाल से बातचीत हुई। विनोबा के सम्बन्ध में मैंने अपना अनुभव कहा।

२६-६-३२, धुलिया-जेल

आज ९ बजे भोजन किया फिर आराम करने के बाद चर्खा काता।

कड़ी बैठक। बीमारों से मिले। विनोबा के साथ विचार-विनिमय हुआ। प्रश्न-उत्तर ठीक हुए।

शाम हमें ६ बजे बंद किया गया। बाद में अच्छी चर्चा हुई। विनोबा से कार्यकर्ताओं के बारे में चर्चा व विचार ठीक-ठीक हुआ।

२७-६-३२, धुलिया-जेल

भोजन के बाद आराम किया। सुपरिंटेंडेंट ने सीताराम भाऊ के बारे में बुलाया। उनसे साफ-साफ बातें हुईं। उनके व्यवहार के बारे में मित्रों से—खासकर विनोबा, पुरुषोत्तमभाई, प्यारेलाल आदि से—बातचीत।

२८-६-३२, धुलिया-जेल

जेल-कमेटी के मेम्बर तथा मि. भिड़े कलेक्टर आदि आये। तबीयत के बारे में पूछा। बाद में कैदियों को दिये जानेवाले नमक, गुड़, गुवार की दाल आदि की चर्चा की। सुपरिंटेंडेंट को गाली देने, हाथ पटकने मारने आदि का हक है या नहीं? मि. भिड़े व कमेटी व मेम्बरों से ठीक-ठीक चर्चा हुई। एक घंटे से भी ज्यादा समय लगा।

प्यारेलाल, पुरुषोत्तमभाई, विनोबा, गोपालरावभाई का शाम को मणिभाई से विचार-विनिमय।

३०-६-३२, धुलिया-जेल

चर्चा चलाते विनोबा से बातचीत हुई। उन्हें मणिभाई की बातचीत का मतलब कहा। प्यारेलाल से थोड़ी बातें हुईं।

शाम को खेल के बाद थोड़ी देर विनोबा से बातचीत हुई।

१-७-३२ धुलिया-जेल

विनोबा को अस्पताल में देर लगी। मणिभाई से उन्हें भी कड़ी भाषा में साफ तौर से बातें करनी ही पड़ीं। मणिभाई विनोबा के पास आये थे। मैं बोला नहीं। इसका मेरे मन में दुःख हुआ। परन्तु दूसरा उपाय नहीं मालूम दिया।

३-७-३२ यूलिया-जेल

विनोबा से काफी विचार-विनिमय हुआ। आत्म-शुद्धि, नियम पालन, ईश्वर-प्राप्ति आदि के सम्बन्ध में।

४-७-३२, धूलिया-जेल

सुपरिटेंडेंट इन्स्पेक्शन के लिए आये। वजन कम हुआ। इस कारण एक रतल दूध व गेहूं लेने को कहा। दूध लेने की इच्छा कम थी। परन्तु उन्होंने कहा कि कुछ रोज लेकर देखना जरूरी है। विनोबा की भी राय थी कि मुझे यह स्वीकार कर लेना चाहिए।

कल से एक रतल दूध व गेहूं की रोटी मिलेगी।

५-७-३२ धूलिया-जेल

विनोबा से गीता के श्लोकों का चुनाव करवाया। १८ अध्याय में से १८ श्लोक चुने।

६-७-३२ धूलिया-जेल

विनोबा से 'उपनिषद' का पाठ व 'कठोपनिषद' का भावार्थ सुना। अच्छा लगा।

भोजन व आराम के बाद विनोबा से गीता के श्लोकों के अर्थ के सम्बन्ध में—खासकर १८वें अध्याय के ६६वें श्लोक पर—अधिक विचार किया।

विनोबा से बातें।

७-७-३२, धूलिया-जेल

विनोबा से अर्थ सहित 'मुंडकोपनिषद' सुना। चर्खा काता। विनोबा से बातें।

८-७-३२, धूलिया-जेल

पुरुषोत्तमभाई अस्पताल जाकर आये। उन्होंने बताया कि कल जिस लड़के को मारा था उसके संबंध में संतोषजनक फैसला हो गया है।

विनोबा को, कैसे का जो हाल सुना था बताया। भोजन बातें विनोद।

विनोबा ने धुलिया व जलगांव की गिरफ्तारियों का हाल बताया।

९-७-३२, धुलिया-जेल

पुरुषोत्तमलाल आये। उन्होंने अपना दुःख कहा। आज रामकृष्ण व एरंडोलवाले मगनलाल छूटे। उनके साथ गीता-प्रवचन ठीक तौर से लिखकर व नकल करके रखने को कहा गया।

विनोबा व प्यारेलाल से लेकर के व्यवहार की चर्चा व विचार। विनोबा से अन्य बातचीत।

१०-७-३२, धुलिया-जेल

विनोबा के कभी बैरक में जाने से जो लाभ हुए, वे भी बारे ने कहे। विनोबा ने जानदेव के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की। अंत में भी बारे ने 'प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी' भजन भावपूर्वक गाया।

भोजन जल्दी किया। थोड़ी देर सोये। विनोबा से बातें, नियम-पालन व निन्दा-स्तुति करने के बारे में।

११-७-३२, धुलिया-जेल

विनोबा से सुबह समाज-सुधार के बारे में चर्चा विशेषकर स्त्रियों का दरजा ऊंचा है या पुरुष का इस विषय में।

१२-७-३२, धुलिया-जेल

विनोबा के साथ प्रार्थना सुबह ४। बजे। बाद में निवृत्त होकर 'मनाचे श्लोक' तुकाराम के अभंग व 'गीताई' का कुछ अभ्यास पढ़े।

वजन किया। मेरा १७१ पौण्ड हुआ। विनोबा का ९४ रहा ९२ है। गोपालराव का ८९ रहा ९१ है।

विनोबा व गोपालराव से बातें विनोबा को छूटने पर धुलिया में ही गिरफ्तार कर लेंगे इस अफवाह के बारे में।

१४-७-१२ सुकिया-बेड

आज विनोबा व मोघाकराव छूटे। १ बजे तक उनके साथ रहा। उनके जाने पर दिल भर आया। तुलसीदासजी की चौपाई—'बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं।' बार-बार याद आती रही। विनोबा की संगत व समागम से काफी लाभ व सुख मिला।

तुम्हारे शिक्षण के बारे में पू विनोबा से ठीक से बात हुई है। तुम भी बालकोबा के पास से शिक्षण लो, यह मुझे पसंद है। हिंदी का अभ्यास थोड़ा चलता रहे, यह जरूरी मालूम होता है तथापि तुम्हें व पूज्य विनोबा को जिस प्रकार संतोष हो वैसी व्यवस्था कर लेना। चि रामकृष्ण के बारे में मेरी इच्छा तो है कि वह भी नाना (कुलकर्णी) के पास ही रहकर शिक्षण ले व हो सके तो नाना के घर पर ही रहे अगर उनकी पत्नी का स्वास्थ्य ठीक रहता हो तो। मुझे तो इससे बहुत संतोष मिलेगा। तुम अपनी माँ को समझा सको तो पूज्य विनोबा की मदद लेकर बराबर समझाना जिससे मेरी हमेशा की चिंता कम हो जाय। चि कमलनयन आने पर विनोबा के पास व साथ रह सकेगा तो मुझे बहुत सुख व संतोष मिलेगा। विनोबा ने उसे बहुत जल्दी और अच्छी तरह अंग्रेजी भी पढ़ा देने का स्वीकार किया है। इसके बारे में विनोबा से अच्छी तरह से बात हो गई है।

(मदालसा को लिखे पत्र से)

विनोबा की जबानी तुम्हें यहाँ के सब समाचार मिलेंगे। इस मास के आखिर तक तुम छूट जाओगी। चि कमल भी छूट जायगा। बाद में मुझसे एक बार मिलने यहाँ आ जाना। पू विनोबा की संगत से बहुत सुख शांति व लाभ मिला है। चि कमल मदालसा रामकृष्ण आदि की पढ़ाई व रहन-सहन की विनोबा से अच्छी तरह चर्चा हो गई है। हम दोनों एकमत हो गये हैं। आशा है, तुम भी स्वीकार करोगी। विनोबा ने कमल को साथ रखने व उसे उत्तम अंग्रेजी पढ़ाने की जिम्मेवारी लेना स्वीकार कर लिया है। चि रामकृष्ण को नाना कुलकर्णी के पास न रखने से उसको बहुत

हानि पहुँचना संभव मालूम देती है। चि. मदालसा की इच्छा वाक्सोवा के पास पढ़ने की है तो यह भी व्यवस्था विनोबा अच्छी तरह से कर देंगे। अगर विनोबा का बाहर रहना हुआ तो तुम उनके साथ ठीक से चर्चा करके तुम्हारा संतोष हो उस प्रकार अपना समाधान कर लेना।

(जानकीदेवी को लिखे पत्र से)

२७-७-३२, धुलिया-जेल

जेलर ने विनोबा को पत्र व फोटो भेजे। उस सम्बन्ध में चर्चा। जेलर से बातें। उसकी तैयारी देखकर सुख मिला।

१-८-३२, धुलिया-जेल

जेलर के पास विनोबा का पत्र आया। उससे उन्हें बहुत सुख मिला ऐसा मालूम हुआ।

२४-८-३२, धुलिया-जेल

जेलर ने विनोबा को पत्र लिखा।

२६-८-३२, धुलिया-जेल

मेरे व जेलर के नाम, मेरी तबीयत के बारे में विनोबा का पत्र आया। मैंने जवाब दिया।

१०-९-३२, धुलिया-जेल

मणिभाई और जेलर की बातों से समझौता पार पड़ने की आशा कम मालूम हुई।

विनोबाजी की कोठरी में पुरुषोत्तमदास (नेना) के साथ फलाहार व बातें हो रही थीं। उस समय मि. मिड़े (डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट) जेलर के साथ आये। उनके बहुत आग्रह पर जो सुपरिंटेंडेंट को मैंने पत्र भेजा था उसकी नकल बतानी पड़ी। जेल के बारे में अधिक बातें नहीं कीं।

सुपरिंटेंडेंट बहुत गरम हो गये और बुलाकर एकांतवास व तीन

महीने प्रिविलेज (सुविधाएं) बंद करने की सजा दी। चर्चा भी ले लिया।
जीवन में नया अनुभव मिलना शुरू हुआ।
शाम की प्रार्थना अकेले की।

११-९-१२, धुलिया-जेल

मेरे पास केवल तुलसी रामायण 'गीताई' 'आश्रम-भजनावली' रखी। चर्खे के बिना सुनसान मालूम देने लगा। भजन घूमना जाना व सोने में विशेष समय बिताया। मन को शान्ति भी ठीक मिली। सन्तोषजनक अनुभव मिल रहा था। परमात्मा की प्रार्थना व स्मरण ठीक होता जा रहा था। पेड़ों व पक्षियों की तरफ भी देखा करता था।
शाम को भी प्रार्थना भजन बाहर बैठकर किये।
खूब शान्ति मालूम हुई। रात सन्तोष व शान्ति से गई।

१२-९-१२, धुलिया-जेल

सुपरिटेंडेंट इन्स्पेक्शन को आये। उनकी इच्छा समझौते की मालूम हुई। ठीक साढ़े तीन घंटे बातचीत हुई। कुछ गरमागरमी बाद में संतोष जनक समझौता हुआ।
वापस अपनी कोठरी में आना पड़ा। एकांतवास का ज्यादा दिन अनुभव नहीं मिला।

३-१०-१२, धुलिया-जेल

जेलर आये। विनोबा का पत्र। तीन नियमों की चर्चा। प्रतिज्ञा लेने को कहा।

५-१०-१२, धुलिया-जेल

जेलर व उनके भाई ने तीन प्रतिज्ञाएं कीं—
१ मन में भी क्रोध नहीं रखना।
२ किसीसे वैर रखने की वृत्ति नहीं रखना।
३ जल्दी सोना (दस बजे तक) व जल्दी उठना।

यरवडा-जेल

बापूजी से २९-११-३२ से १५-१२-३२ तक यरवडा-जेल में चार मुलाकातें हुईं।

धुलिया-जेल में २५ मार्च से लगाकर १४ जुलाई तक, यानी तीन मास उन्नीस दिन तक, पूज्य विनोबा के सत्संग का सुन्दर लाभ मिला।*

७-१-३३ यरवडा-मन्दिर

वर्धा-आश्रम की इमारत में ता. २५-१२-३२ को बालकोबाजी वगैरह गये। विनोबा उसी रोज नालवाड़ी गये।

बापू के नाम विनोबा ने नालवाड़ी से ता. ३०-१२-३२ को पत्र भेजा। वह तथा छोटेलालजी का पत्र भी पढ़ा। विनोबा का पत्र पढ़कर प्रेम व सुख का अनुभव हुआ।

१२-१-३३ यरवडा-मन्दिर

तुम्हें इस ११ ता. यानी माघ वदी पंचमी सोमवार को बाईस वर्ष पूरे होकर तेईसवां वर्ष चालू होता है। उस रोज मैं भी परमात्मा से प्रार्थना करूंगा कि तुम्हें सद्बुद्धि प्रदान करे व तुम्हारा स्वास्थ्य उत्तम रखते हुए तुम्हारे शरीर व मन से सेवा-कार्य—खासकर बापूजी ने तुम्हें पहले लिखा उसके मुताबिक हरिजन-कार्य—करने की उस प्रकार से योग्यता प्रदान करे। तुम्हारे जन्म-दिन के निमित्त मेरा प्रेमसहित आशीर्वाद स्वीकार करना। तुम भी परमात्मा से सद्बुद्धि प्रदान करने की खूब प्रार्थना करना। उस रोज पू. विनोबा की संगत में नालवाड़ी में रहना।

चि. कमल को ता. १ फरवरी यानी माघ शुक्ला ७ बुधवार को, १८ वर्ष होकर उन्नीसवां वर्ष लगेगा। उसको भी परमात्मा सद्बुद्धि प्रदान करे। वह अपना जीवन पवित्रता के साथ सेवा-कार्य में लगा सके व उसे सफल बना सके और चिरंजीवी हो, ऐसी मैं तो प्रार्थना करूंगा ही। मेरी ओर से भी तुम उसे आशीर्वाद प्रदान करना। वह भी जन्म-दिन के रोज अपने

---

*उपरोक्त अंश १९३२ की डायरी के अंत में यादगार के तौर पर लिखा हुआ है।

भावी जीवन का विचार कर कुछ निश्चय करना चाहे तो पू विनोबा व तुम्हारी राय से कर सकता है।

(जानकीदेवी को लिखे पत्र से)

१२ १ ३३ यरवडा-मंदिर

पूज्य विनोबा तो नालवाड़ी चले गए। मैंने उनका पत्र बापू के नाम पढ़ा था। उन्हें कह देना कि धुलिया-जेल में जो विचार, खासकर जानदेव के बारे में लिखे थे उनकी तथा अन्य जिम्मेदारी से वह मुक्त नहीं हो सकते। हरिजनों के बीच नालवाड़ी का बसना तो मुझे एक प्रकार से पसन्द है परन्तु इसके पहले के निश्चय के मुताबिक तालुकाभर, जरूरत पड़े तो प्रान्तभर और उससे भी ज्यादा जरूरी हो तो महाराष्ट्रभर में घूमने की उन्हें तैयारी रखनी ही होगी। मैंने बापू से भी कह दिया है। छोटेलालजी को कह देना कि 'आश्रम-वृत्त' की अबतक की एक-एक नकल बापू को भेज देवें। आगे भी भेजते रहें। विनोबा को वहां किसी प्रकार का कष्ट वगैरह न हो, इसकी व्यवस्था भी पू बापूजी की सलाह से कर देना। भूल नहीं करना। कुआं वगैरह बनवाना पड़े तो बनवा देना। और जो जरूरी हो सो देख लेना।

(जानकीदेवी को लिखे पत्र से)

२९ १ ३३ यरवडा-मंदिर

'हरिजन' की कापियां आईं, देखीं। 'गीताई' पर काका सा की सम्मति आई। विनोबा का सुन्दर प्रवचन हुआ। शरीर को वह विशेष कष्ट दे रहे हैं। बापू से इस बारे में बातें करता हूं।

विनोबा के व मेरे आस-पास के बारे में बापू ने जेल के मेजर भंडारी आदि से चर्चा की।

१९-२ ३३, यरवडा-मंदिर

बापू ने कहा कि विनोबा तीन वर्ष के अंदर ब्रह्म की प्राप्ति कर लेने-वाले हैं।

२१-३-११ मगनवाडी

विनोबा के कुछ सुन्दर वचनों का हिन्दी-अनुवाद किया।

१-४-११ बम्बई, आर्थर-रोड

विनोबा के सुन्दर वचनों का हिन्दी-अनुवाद शुरू किया।

४-४-११ बंबई, आर्थर-रोड

विनोबा के सुन्दर वचनों का हिन्दी-अनुवाद १२ बजे तक—करीब तीन घंटे किया।

५-४-११ बम्बई, आर्थर-रोड के बाहर

विनोबा के सुन्दर वचनों का हिन्दी-अनुवाद।

११-४-११ वर्धा

भोजन के बाद आराम किया। पत्रों के जवाब लिखे। विनोबा बापू जी से मिले। शाम में भोजन किया। बहुत सुख अनुभव किया।

१६-४-११ वर्धा

वर्धा तालुका के कार्यकर्ताओं का परिचय।

विनोबा का छोटा-सा सुन्दर भाषण हुआ।

विनोबा ने घर पर दूध, खजूर, मुसम्मी, संतरा लिया। विनोबा की राय मेरे पहाड़ पर जाकर रहने की रही। मन में चिंता रखने का कारण नहीं मैंने कहा।

२१-४-११ वर्धा

प्रार्थना। विनोबा की राय से अल्मोड़ा जाने का निश्चय।

२७-४-११ पीक-आश्रम (अल्मोड़ा)

आज मगनबाई वाली की पुण्य-तिथि थी। विशेष कार्यक्रम। ६ बजे प्रार्थना। ८ बजे मगनबाई के जीवन के संबंध में पूज्य बापूजी विनोबा

काकासाहब महादेवभाई के लेख व प्रभुदास के साथ का पत्र-व्यवहार पढ़ा ।

१०-६-३३ वर्धा

वत्सला नालवाड़ी विनोबा के पास ११ बजे जाती थी । रास्ते में गाय चरानेवाले लोगों ने उसे हैरान किया । मदालसा ने यह घटना कही । उसे सान्त्वना दी ।

४-७-३३ वर्धा

डोंगरे को अस्पताल में देखा आश्रम में स्टेटमेंट पूना भेजने के बारे में विनोबा से बातें कीं ।

१३-७-३३ वर्धा

आश्रम में प्रार्थना । कु तारा के साथ बातें । विनोबा से बातें ।

नागपुर-केस के कागजात देखे । वत्सला आई । रोने लगी । उसे सान्त्वना दी और कहा कि विनोबा को गुरु मानने से ही भविष्य में जीवन का उद्धार होगा ।

१४-७-३३ वर्धा

मदालसा व वत्सला से बातें ।

१७-७-३३ वर्धा

चि तारा व श्री बालूताई के साथ बातें कीं । विनोबा भी उपस्थित थे । उनका समाधान करने का प्रयत्न किया । उन्हें संतोष मिला ।

१८-७-३३ वर्धा

बापूजी के पत्र व तार आश्रम में आये । विनोबा से विचार-विनिमय ।

१९-७-११, वर्धा

आश्रम में विनोबा ने आज तीन वर्ष पहले की घटना का दुःखकारक वर्णन किया।

२४-७-११ वर्धा

घर आकर सो गया। ९ बजे के करीब स्नान, भोजन बाद में आराम। बापूजी के पत्र का जवाब लिखवाया। विनोबा से बातें—भविष्य के कार्यक्रम के संबंध में।

२५-७-११, वर्धा

विनोबा घर आये। कार्य-पद्धति जिम्मेवारी बालकों की व्यवस्था मदालसा वगैरह के संबंध में विचार-विनिमय।

२७-७-११ वर्धा

सत्याग्रह-आश्रम की आपसी सभा में विनोबा का सुन्दर प्रवचन हुआ। ४। से ५॥ तक घूमना व भविष्य के कार्य की चर्चा।

१२-८-११ वर्धा

प्रार्थना। आश्रम में विनोबा, बालूभाई, जानकीबाई, द्वारकानाथजी, गोपालराव, राधाकृष्ण आदि से विचार-विनिमय करके निश्चय हुआ कि—

(१) 'राष्ट्रीय कन्याशाला' का नाम 'कन्या-आश्रम' वर्धा रखा जाय और उसकी व्यवस्था जानकीदेवी करे व द्वारकानाथजी के सुपुर्द की जाय।

(२) स्वास्थ्य की दृष्टि से १२ नवंबर तक मैं सत्याग्रह में भाग न लूं। बापूजी, नानासाहब, गंगाधरराव देशपांडे, राजाजी आदि की आग्रहपूर्वक राय के कारण विनोबा की सलाह से यह निश्चय करना पड़ा। भविष्य में स्वास्थ्य की हालत देखकर विचार करना होगा।

२०-८ ३३ वर्धा

आज सुबह विनोबाजी से पूज्य बापू के उपवास के संबंध में विचार विनिमय हुआ।

९ ११ ३३ वर्धा

'कन्या-आश्रम' की सभा हुई। विनोबा प्रमुख, जमनालाल उपप्रमुख, द्वारकानाथ मंत्री, बाकी सत्यदेवजी, लक्ष्मीबाई, चन्द्रकान्ता सदस्य। इमारतों के लिए जमीन देखी।

१०-११ ३३, वर्धा

तीन बजे से चार बजे तक पू. विनोबा के साथ श्री गंगाधररावजी स्वामी आनन्द की गीता पर सुन्दर चर्चा हुई।

१५ ११ ३३ वर्धा

विनोबा की उपस्थिति में आज नालवाड़ी में महत्त्वपूर्ण विचार व निर्णय कार्यकर्ताओं के सामने हुआ। बापूजी व जानकीदेवी भी हाजिर थे। नई जिम्मेवारी मालूम हुई।

२९ ११ ३३ चिकल्दा

जाते समय चि. वत्सला से थोड़ी बातें—मदालसा के बारे में व विनोबा अमतसाहब बास्ताई के समाधान के बारे में। बाद में किला मसजिद तोप तालाब वगैरह देखे।

९ १ ३४ वर्धा

विनोबा के हाथ से आज 'नवजीवन मंदिर' का उद्घाटन सुबह ९ बजे हुआ। विनोबा का व्याख्यान बहुत सुन्दर हुआ।

१७-१ ३४ मुरगांव बगनार, सिटी

सुबह सेलू होकर मुरगांव गये। साथ में सीताराम शास्त्री धर्माधिकारी

मनोहरजी कु० तारावहन थे। पुरगांव में सभा हुई। मंदिर सुन्दर था। विनोबा ने हरिजनों के लिए खोला था। गणपती महाराज का ठीक प्रभाव था। कुटुंब यहीं रहता है। उसकी रिपोर्ट सुन्दर थी।

नालवाड़ी ग्राम-सफाई पर विनोबा का भाषण। डिप्टी कमिश्नर श्री छोटेलाल वर्मा भी आये।

१०-१-३४ वर्धा

श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर का वार्षिक उत्सव ४ से ५ तक हुआ। विनोबा का सुंदर प्रवचन।

बापूजी विनोबा कृष्णदास आदि से बातें।

२९-१-३४ वर्धा

विनोबा से बिहार व बायकॉट के बारे में बातचीत की।

९-२-३४ वर्धा

बुखार नहीं मालूम दिया। सुबह कमजोरी ज्यादा मालूम हुई। कुछ चक्कर आते थे।

आराम किया। दवा नहीं ली। टमाटर का सूप मोसम्बी व थोड़ा दलिया लिया।

जानकीदेवी को मेरे स्वास्थ्य की चिन्ता व दुःख बहुत था। समझाने का प्रयत्न किया।

बापूजी व विनोबा आये।

१९-२-३४ वर्धा

कार्यकर्ताओं से बातचीत—थकावट आ गई।

दोपहर को फिर ४॥ बजे तक कार्यकर्ताओं से बातचीत की। विनोबा व टिकेकरजी आये।

गांधी-चौक में बिहार के भूकम्प में बलि हुए लोगों के लिए प्रार्थना हुई। उसमें शामिल हुआ।

१८-२-३४ वर्धा

श्री रमाबाई जोशी व चि. पमा ने आकर कन्या-आश्रम के बारे में के व्यवहार की चर्चा की। दुःख हुआ। कन्या-आश्रम जाकर जांच की। विनोबा द्वारकानाथजी व अनुसूया से बातचीत। पूज्य बापूजी मिले नहीं। रात को चिन्ता रही।

२५-२-३४ वर्धा

सुबह प्यारेलाल से बातें करते हुए कन्याश्रम गये।
पू. विनोबा का सुंदर प्रवचन सुना। संतोष व सुख मिला।

१-४-३४ वर्धा

विनोबा से भावी कार्य के बारे में बातचीत।

११-४-३४ वर्धा

विनोबा व बापूजी से बालघाट व शहर के संबंध में चर्चा व विचार-विनिमय।

१६-४-३४ वर्धा

विनोबा ने खादी-यात्रा पर सुन्दर प्रवचन किया। कई उपयोगी दलीलें दीं। २॥ से ५ तक कता का काम हुआ।

७-६-३४ वर्धा

भोजन के बाद नालवाड़ी गया। श्री सुशेना अनसूया कृष्णदास साथ थे। विनोबा ने गत रोज का पश्चाताप किया। दुःख व चिन्ता थी। सुशेना ने उन्हें भजन सुनाये। प्रार्थना।

१०-६-३४ वर्धा

बापू नालवाड़ी गये और विनोबा को कन्या-आश्रम ले आये।

१४-६-३४ वर्धा

शाम को आश्रम गया। विनोबा व कन्या-आश्रम की व्यवस्था की।

१५-६-३४ वर्धा

विनोबा का मौन। सुबह ८ से ९ व शाम को ६ से ७ तक कता।
विनोबा के पास कन्याश्रम की सभा हुई—६ बजे से ७ बजे तक।

२१-६-३४ वर्धा

शाम को चन्द्रकान्ता रोहतगी शान्ता रानडे के साथ आश्रम गये। वहां विनोबा से बातचीत। प्रार्थना तक ठहरा।

१२-८-३४ बंबई

बापू को डाक्टरों की रिपोर्ट भेजी। डा. जीवराज का व डा. रजबअली का पत्र जानकी के नाम भेजा। मैंने भी आपरेशन की इजाजत मांगी।

२०-८-३४ बंबई, (पोद्दार निवास)

विनोबा वर्धा से आये। शाम में दत्तु दास्ताने आया।
विनोबा से थोड़ी बातें। कमल ने घबराकर उन्हें भेज दिया।[1]

२१-८-३४ बंबई

शाम विनोबा ने प्रार्थना की व भजन गाये।

२२-८-३४ बंबई

विनोबा से थोड़ी बातें। कुछ देर आराम किया। उसके बाद विनोबा से आश्रम-संबंधी बातें।
विनोबा वर्धा गये। दत्तु ने प्रार्थना की व भजन गाये।

---

[1] जमनालालजी का उस समय बंबई में कान का बड़ा आपरेशन हुआ था।

१५-१०-३४ वर्धा

विनोबा से कन्या-आश्रम की बातें लिखकर देने के लिए कहा।

१६-१०-३४ वर्धा

बापू व विनोबा से कन्या-आश्रम व महिला-आश्रम की थोड़ी बातें हुई।

१७-१०-३४ वर्धा

सुबह बापू व विनोबा से बातें।

पू. विनोबा बापू, जानकी से अनसूया के बारे में संतोषजनक बातचीत।

२१-१०-३४ वर्धा

दामोदर मूंदड़ा से बातें। विनोबा पोपेजी से कमलाठनी की बातें सुनकर आश्चर्य व विनोद हुआ। उसे बनारस जाने को समझाया और वह मान गई।

—

२८-११-३४ वर्धा

गांधी सेवा संघ की बैठक में बापू ने गांधी-सेवा-संघ के सभापति के लिए नाम लिखकर मांगे। ११ जनों के नाम आये। विनोबा, राजा साहब किशोरलालभाई के नाम आये। बापू और मैंने किशोरलालभाई का निश्चय किया।

— — —

३-११-३४ वर्धा

दोपहर को विनोबा ने ग्राम-सेवा के बारे में कहा।

१९-१२-३४ वर्धा

रामायण-पाठ बाद में बापू से जानकी, विनोबा, कुमारप्पा के सामने बातें। आखिर जन्म-स्मारक के लिए वर्धा का अपना बगीचा तय हुआ। मन को सन्तोष हुआ। बगीचे व खेत देखने गये। फिर बापू से बातें।

२८-२-३५, वर्धा

आश्रम में विनोबा ने जगन्नपुर के अनुभव कहे।

४-३-३५, कलकत्ता

भाई जुगलकिशोरजी (बिड़ला) से आज दस प्रतिशत मुनाफे का फैसला। पिछली दिवाली तक दस हजार मुनाफे (एकमुश्त) लेना। बाद में दो हजार रुपया महीना जबतक वह व्यापार करें तबतक घाटे में भी। नफा ज्यादा करें तो वह ज्यादा देवें—खासकर हरिजन-कार्य में।[1]

२४-३-३५, वर्धा

नालवाड़ी में विनोबा से बातें। धर्माधिकारी अनसूया मदालसा, कमलनयन आदि के बारे में चर्चा।

२५-३-३५, वर्धा

राधाकृष्ण विनोबा, पारनेरकर, भोले आदि से बातें। हरिजन-कार्य की व्यवस्था के बारे में।

७-५-३५, भवाली

कमलाबहन (नेहरू) के पास गया। स्वरूपरानीजी भी वहां आई हुई थीं। स्वामी रामतीर्थ का जीवन तथा बापू व विनोबा के बारे में विचार विनिमय।

३१-७-३५, वर्धा

विनोबा व बापू से खादी के नये परिवर्तन के संबंध में चर्चा हुई।

२१-७-३५, वर्धा

विनोबा से देर तक बातचीत। सूत-कताई की दर तीन आने या चार

[1]विनोबाजी की संपत्तिदान की कल्पना जमनालालजी के दिमाग में भी काम कर रही थी। इसका संदर्भ सन् १९३२ की डायरी में भी आया है। देखें पृष्ठ १४९। —सं

जाने करने के बारे में चर्चा। गंगादेवी व रामेश्वरजी के बारे में अनुसूया महालसा आदि के बारे में चर्चा। बाद में उनकी विचारधारा चली। देह कबतक रहेगा क्या कार्य करने की इच्छा   चर्खा लेकर घूम-घूमकर प्रचार करने का विशेष उत्साह बताया। यदि कन्या-आश्रम चलेगा तो वहीं रहने की तैयारी बताई।

५ १०-३५, वर्धा

आश्रम में 'कन्या-आश्रम' का फैसला। ५॥ से ६॥ तक विनोबा व शिक्षकों से चर्चा।

९ ११ ३५, वर्धा

विनोबा से करीब डेढ़ घंटे तक विचार-विनिमय। टेकरी देखने के बाद विनोबा ने कहा—

(१) देहात में प्राकृतिक रूप से श्रमजीवी जीवन व्यतीत करनेवाले लोगों में श्रम-जीवन के सिद्धान्तों के लिए सच्चा प्रेम जाग्रत हो और उनकी सेवा-परायणता से देहातों की सेवा करनेवाले निष्ठावान् और व्यवहार-कुशल कार्यकर्ताओं का निर्माण हो ऐसी योजना।

(२) शिक्षित समाज के जिन कार्यकर्ताओं के मन में देहात की सेवा की लगन लगी है वे स्वतंत्र रूप से देहात में अपने पैरों पर खड़े रह सकें ऐसी औद्योगिक शिक्षण की सहकारिता की और दिशा-दर्शन करानेवाली योजना और

(३) अहिंसात्मक आंदोलन के मूल तत्वों के विषय में विश्वास और समस्त निकट के कार्यकर्ताओं में भी कम दिखाई देती है। ऐसी स्थिति में उन मूल तत्वों का महत्व और तदनुसार जीवन-परिवर्तन करने की आवश्यकता—स्वयं अपने और आसपास के लोगों के मन पर जम जाय ऐसी आचार-योजना बनाना।

बापू से विनोबा की बातचीत पर विचार।

१०-११-३८, वर्धा

विनोबा से ८ से ९॥ तक विचार-विनिमय। पूज्य बापूजी से मिलकर तारा के साथ नालवाड़ी जाते हुए रास्ते में बातें। उसकी मनःस्थिति समझी।

११-११-३८, वर्धा

विनोबा से ८ से ९॥ बजे तक विवाह-प्रकरण के संबंध में सुन्दर चर्चा। बाद में मदालसा, महालक्ष्मी, कमल, नर्मदा, कृष्णदास आदि के संबंधों के बारे में विचार-विनिमय आपसी तौर से हुआ। विनोबा ने कहा—

(१) विवाह-सम्बन्ध अधिक दूर या अधिक नजदीकवालों में नहीं करना चाहिए। जैसे शरीर से व विचार से स्वदेश व परदेश में जिनकी संस्कृतिवाले संबंध दूर के समझना। भाई, बहन या एक ही कुटुम्ब के संबंध नजदीक के समझना। एक ही गुरु के साथ में शिक्षण प्राप्त किये हुए विद्यार्थी व विद्यार्थिनी के संबंध नजदीक के समझना।

(२) विवाह-संबंध में ऊँच-नीच की भावना को स्थान न देना।

(३) विवाह-मर्यादा कम-से-कम लड़के की २ और लड़की की १६ होनी चाहिए।

(४) विवाह-संबंध में परस्पर के गुण से संतान पर होनेवाले संस्कार का विचार रहना जरूरी है।

वि तारा से नालवाड़ी जाते समय बातें। उसका विचार जाना। नालवाड़ी में चंदूभाई ने अपनी स्थिति कही।

१२-११-३८, वर्धा

विनोबा से ७॥ से ८॥ तक लक्ष्मीनारायण-मंदिर-प्रवेश उत्सव व हरिजन-यात्रा, हिन्दी आदि पर विचार।

१३-११ १५, वर्धा

विनोबा से ८ से ९॥ तक बातें। विषय थे कार्यकर्ताओं की कमी, मगनवाड़ी की व्यवस्था, बापू का मोह, केमरी, जामिया आदि।

१४ ११ १५, वर्धा

विनोबा से ८ से ९ तक मनुष्य-कर्तव्य पर सुन्दर विवेचन। शंका-समाधान हुआ।

साधु पुरुष बनने का प्रयत्न सरल है। हरेक को सच्चाई के साथ अमल करना जरूरी है।

श्री प्यारेलाल व सुशीला के साथ बात करते हुए मगनवाड़ी गया और आया। प्यारेलाल के रहन-सहन व विचारों के बारे में बातें।

---

१६ ११ ३५, वर्धा बरोडा पीपलखूंटा पवनार

बाद पवनार में विनोबा का मुकाम था। थोड़ी बातें। भोजन के बाद लड़कों से बातें। मानोरामजी के लड़के को देखा। बीमार था। देवी के पास-वाला आश्रम का स्थान देखा। विनोबा से खेती-कम्पनी के संबंध में चर्चा व विचार-विनिमय। बाबा साहब और शान्ताबाई भी साथ थे।

२७-११ ३५, वर्धा

श्री रामेश्वरी नेहरू को शाम को मगनवाड़ी दिखाई। विनोबा से साम्यवाद के बारे में विचार-विनिमय।

७-१२ ३५, वर्धा

पवनार इंजिन-कार तक गये। वापस लौटने पर पैदल। करीब ५॥-६ मील पैदल चलना हुआ। चि शांता व सीता साथ थी। सीता से बातें। पवनार नदी का दृश्य दिखे ऐसी ऊंची जगह पर एक छोटी सी झोंपड़ी बनाने का विचार।

२१-१२-३५, वर्धा

५ बजे उठे। मदालसा के साथ मगनवाड़ी गया। रास्ते में विनोबा से बातें हुईं।

२४-१२-३५, वर्धा

विनोबा से मदालसा के बारे में चर्चा।

२-२-३६, वर्धा

आज पवनार जाकर जमीन देखकर आये। रास्ते में मगनवाड़ी में कृष्णदास के घर की व्यवस्था देखी।

वहां एक वैरागी की १॥ एकड़ जमीन चार सौ रुपये में और १॥ एकड़ साढ़े छः सौ रुपये में लेने को कहा। टेकरी का स्थान ऐतिहासिक मालूम हुआ। उसमें से विष्णु भगवान की एक बहुत ही सुन्दर मूर्ति निकली हुई देखी। वहां स्नान व जलपान किया।

१२-२-३६ आश्रम-साबरमती

विवाह के बारे में मैं तुमसे विशेष आग्रह नहीं करता और एक प्रकार से तुमको स्वतन्त्रता देने के लिए भी मैं तैयार हो जाता।

बाकी मेरा तो प्रश्न अभी रहने दो। यदि पू. बापू एवं विनोबा को तुम सन्तुष्ट कर सकोगे तो मेरे लिए अधिक कुछ कहना नहीं रहेगा।

(कमलनयन को लिखे पत्र से)

१-३-३६

विनोबा से देर तक बातचीत—मदालसा, कमला के संबंध में। १२॥ से १ तक मौन रखा।

४-३-३६, सावली

आज सुबह गांधी-सेवा-संघ की कांफ्रेंस हुई। विनोबा का भाषण सुन्दर व महत्त्व से भरा हुआ लगा।

५ १ ३६, सावली

चि. मदालसा की मानसिक स्थिति तथा अन्य विचार आने चिन्ता हुई; विनोबा से बातें।

६ १ ३६ सावली थाना वर्धा

आज की गांधी-सेवा-संघ की सभा में विनोबा का सुन्दर भाषण तकली तथा चरखे के बारे में हुआ। राजेन्द्रबाबू बापूजी मेरा व किशोरलालभाई का भाषण भी ठीक हुआ।

१-५ ३६ पवनार

खादी-यात्रा का कार्यक्रम। प्रथम गायन के बाद विनोबा का सुन्दर व प्रभावशाली प्रवचन। बाद में पू. बापू का प्रवचन।

तीन बजे से कार्यकर्ताओं का परिचय।

५॥ बजे विनोबा का आखिरी भाषण। फिर मेरा भाषण हुआ।

८-५ ३६, वर्धा

विनोबा आये। बहुत देर तक चि. मदालसा के भावी कार्यक्रम के बारे में विचार।

९-५ ३६, वर्धा

श्रीमन्नारायण का बाबा धर्माधिकारी विनोबा बापूजी से भी परिचय कराया।

२२ १ ३६ वर्धा

सुबह नालवाड़ी गया। जानकीदेवी साथ थी। पू. विनोबा से बातचीत। वहां थोड़े पत्थर* ढोये। पसीना आ गया। श्री काशीबहन कृष्णदास गांधी और विनोबा से बातचीत।

---

* आश्रमवासी अपने हाथों कुआं खोद रहे थे। उसके पत्थर ढोने से मतलब है।

१-७-३६, वर्धा

नालवाड़ी में विनोबा के साथ गया। कमलनयन, नर्मदा साथ थे। विनोबा से कमलनयन के योरप जाने के बारे में, सावित्री से सगाई होने के बारे में सब स्थिति कही। मदालसा, उमा व नर्मदा का हाल कहा।

२१-९-३६, वर्धा

सुबह घनश्यामदास बिड़ला, वल्लभभाई, मणि आदि पवनार नदी पर घूमकर, व मन्दिर, हरिजन-बोर्डिंग देखकर घर आये। घनश्यामदासजी को पवनार का स्थान पसन्द आया। मूर्ति जो मंदिर में है, वह भी पसंद आई।

१९-११-३६, बम्बई (जुहू)

फैजपुर—विनोबा से मिलना और बातचीत। कांग्रेस के काम का दर्शन समझा। देश-सेविकाओं से बातचीत। विनोबा, दास्ताने के साथ फैजपुर से कारों में रवाना हुए।

२४-१२-३६, फैजपुर

'गीताई' की प्रार्थना पढ़ी। 'मधुकर' में से 'म्हातारा सर्व' व 'व्यापार सर्व' प्रकरण पढ़े।

२८-१२-३६, फैजपुर

'मधुकर' से 'मुर्दे निभृत जातीय' लेख पढ़ा। खादी-प्रदर्शनी विनोबा के साथ देखी।

हिन्दी-प्रचार-सभा का कार्य कांग्रेस-स्थान में राजेन्द्रबाबू के सभापतित्व में हुआ।

कांग्रेस का अधिवेशन ४॥ बजे से हुआ।

विनोबाजी के मराठी लेखों का संग्रह।

१७-२-१७ वर्धा-सेगांव

सेगांव—बापू से नालवाड़ी तक मोटर में बातचीत की। कार्यकर्ता-योजना बापूजी साहित्य सम्मेलन-सभापति के संबंध में चर्चा। नालवाड़ी-चर्मालय खेत आदि देखा।

विनोबा से बहुत देर तक बातचीत हुई, मदालसा की सगाई, कार्यकर्ता-योजना मानसिक स्थिति कही।

१८-२-१७ वर्धा

नालवाड़ी में पू. विनोबा से चि. मदालसा की सगाई-संबंध व मानसिक स्थिति कमजोरी आदि पर विचार-विनिमय हुआ।

२ १ १७ वर्धा

टेनरी—नालवाड़ी का समारम्भ। बालूकर की रिपोर्ट मननीय थी। बापूजी ने भी कहा कि गौ-रक्षा व हरिजन-सेवा का टैनरी से संबंध है।

९ ६-१७ वर्धा

नालवाड़ी में कृष्णदास गांधी के साथ विनोबा से थोड़ी बातें हुई। विनोबा के यहां भोजन व बातें।

११-५-१७ वर्धा

मदालसा के विवाह की तैयारी। ६। बजे दुकान पर (गांधी चौक) पहुंचे। ७ बजे से विधि शुरू हुई। पू. बापूजी विनोबा की हाजिरी में विवाह सम्पन्न हुआ। समुदाय ठीक था।

२१-७-१७ बुधवार, वर्धा

विनोबा के पत्र के जवाब में उन्हें पत्र लिखा। पंचायतें के बारे में ज्यादा गहरे में जाने की मेरी इच्छा व उत्साह नहीं। उनका पत्र विनोबा के साथ आया कि मुझे जाना ही होगा। मौलाना और मैं बैलगाड़ी से सेगांव गये। बरसात बहुत जोर की हो चुकी थी और थोड़ी-थोड़ी हो थी

रही थी। राह में गाड़ी का पहिया निकल गया। पहुंचने में देर हुई। वहां बापू से मेरी व मौलाना की थोड़ी बातचीत हुई। बापू भी थके हुए मालूम दिये। बापू से किशोरलालभाई व पंडितजी के पत्रों पर विचार।

२२-७-३७ वर्धा

नालवाड़ी में विनोबा से पंजाबियों की हालत के संबंध में देर तक विचार-विनिमय हुआ। मेरी योजना उन्होंने पसन्द की। विनोबा के बारे में बापू का पत्र भी उन्होंने पसन्द किया।

बंगालियों को सेगांव बापू के पास भेजा।

५-८-३७ नागपुर, वर्धा

बापूजी से सुबह व शाम को बातचीत हुई। विषय—अशान्ति, कमला की लड़ाई, डा. खरे व उनकी पत्नी, सेगांव में दो छोटे घर, विनोबा ठीकर का सेगांव, हरिपुरा ग्राम, पारनेरकर, सावित्री व विरोधी पक्ष, कार्यकर्ताओं का अभाव, आश्रम के नियमों का परिणाम, मनुष्य की कमजोरी, बापू का भावी कार्यक्रम आदि-आदि।

७-८-३७ वर्धा

पू. विनोबा से देर तक विचार-विनिमय।

बापूजी का व विनोबा का पत्र पारनेरकर-रामेश्वरदास के बारे में। बाद में बापू के नाम का पत्र लिखकर सेगांव भेजने को दिया।

१०-८-३७ वर्धा

नालवाड़ी में विनोबा से उनके स्वास्थ्य के बारे में बातचीत। स्वास्थ्य ठीक नहीं मालूम हुआ। राधाकृष्ण बजाज व पीटर का परिचय करवाया।

१०-९-३७, वर्धा

श्री कोठीवाली से पत्रकार व विज्ञान के बारे में बातचीत।

पू. विनोबा के पास चि. श्रीकृष्ण नेवटिया व जाजी में देर तक बातचीत।

२-१०-३७ वर्धा

विनोबा का नवभारत-विद्यालय में बापू के जन्म-दिवस के निमित्त भाषण हुआ। लगभग एक घंटा सुना।

२९-१२-३७ वर्धा

नालवाड़ी तक घूमने गया। विनोबा से बातचीत विषय महादेवी अम्मा सहदेव आदि के बारे में चर्चा।

१३-१-३८, वर्धा

सेवाग्राम जिला-किसान-सभा में प्रमुख होकर गये। साथ में विनोबा व काका साहब थे। जिला-कांग्रेस एक प्रकार से सफल हुई कही जा सकती है। १॥ बजे से रात को ८॥। बजे तक एक बैठक में काम करना पड़ा। लोगों से परिचय हुआ।

२०-१-३८, वर्धा

लार्ड लोथियन ने आज सुबह हरिजन-बोर्डिंग हिंदी-प्रचार-विद्यालय नालवाड़ी-सेनरी व कार्यालय का ठीक तौर से निरीक्षण किया। उन्होंने करीब २०-२५ मिनट विनोबा के साथ आध्यात्मिक विचार-विनिमय भी किया।

२९-१-३८ वर्धा

घूमते हुए नालवाड़ी मैरक गया व आया। चि. दामोदर साथ में थी। विनोबा से सेगांव के बारे में विचार-विनिमय। विनोबा का स्वास्थ्य आज कुछ ठीक मालूम हुआ। चि. दामोदर महिला-सेवा-मण्डल में तथा आश्रम विश्राम आदि के बारे में विचार-विनिमय।

२-३-३८, वर्धा

नालवाड़ी—विनोबा से देर तक बातचीत। गुरु जाने के बारे में बापूजी का तार आया। उन्होंने विचार करके जवाब देने को कहा।

३-३-३८, वर्धा

सेगांव—बापू के पास विनोबा, महादेवभाई। बापू से मदनमोहन के हाल कहे। नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस-कमेटी से त्याग-पत्र देने के बारे में विचार-विनिमय देर तक हुआ। बापू ने अपनी नीति कही। सब जिम्मेदार कार्यकर्ताओं को कांग्रेस में सम्मिलित होना चाहिए। विनोबा व शिक्षा-बोर्ड आदि के बारे में चर्चा।

१५-४-३८, वर्धा

सोनेगांव—खादी-यात्रा। विनोबा का मार्मिक भाषण हुआ। खादी के भाव बढ़ाने के बारे में भी बजाज का भाषण भी ठीक हुआ। चर्खा-मठ में एक घंटा काता।

१६-४-३८, वर्धा

विनोबा से देर तक विचार-विनिमय—आध्यात्मिक अशान्ति तथा रमण महर्षि आदि के बारे में।

सेगांव—बापूजी से कि राधाकृष्ण की नालवाड़ी का काम बढ़ाने की योजना पर विचार-विनिमय। बापूजी ने उसकी जिम्मेदारी लेना उचित समझा—अन्दाजन चालीस हजार रुपये की। मैंने कहा विनोबा व बापूजी की लिखित स्वीकृति होना जरूरी है। बापूजी मुझसे सलाह व मदद की आशा रखते हैं।

२१-४-३८, वर्धा

बालकोबा के पास थोड़ी देर बातचीत। मन को शान्ति मालूम हुई।

दफ्तर में विनोबा से रमण महर्षि व श्री अरविन्द के बारे में देर तक

बातचीत फिर प्रार्थना। ९ बजे के करीब सोया।

२४-८-३८, पवनार, वर्धा

सुबह पांच बजे उठा। निवृत्त होकर विनोबा के साथ बातचीत। ११॥ मील तक पैदल घूमते-घूमते वर्धा आया। वर्धा से साप्ताहिक पत्र निकालने के संबंध में विचार-विनिमय। दादा धर्माधिकारी व मोसाफराव उसके सम्पादक हों यह विचार हुआ।

१८-१०-३८, वर्धा

घूमते हुए पवनार गये। पूज्य विनोबा का स्वास्थ्य ठीक देखकर आनंद हुआ। वजन किया। १२ पौंड होने की उन्हें आशा है।

२९-१०-३८, वर्धा

घोत्रे और किशोरीलालभाई से बातचीत। बापू का पत्र—गांधी-सेवा-संघ से मेरे त्याग-पत्र देने के बारे में किशोरीलालभाई के पत्र से थोड़ी गलतफहमी हुई। महिला-आश्रम के काम में घोत्रे मदद करें, यह निश्चय हुआ।

३०-१०-३८, वर्धा

विनोबा से मेरे त्याग-पत्र आदि के बारे में विचार।

१-११-३८ वर्धा

डा. मार्डीकर दादा मीठूलाल आये जाजूजी व बाबासाहब करन्दीकर भी थे। श्री हरकरे 'रिवीजन' करना चाहते हैं। देर तक विचार। विनोबा जाजूजी किशोरीलालभाई जो निर्णय कर देंगे वह मानने को वह तैयार हैं।

४-११-३८, पवनार-वर्धा

सुबह प्रार्थना विनोबा के साथ। मनुष्य अगर अपनी कमजोरी न

निकाल सके तो आत्म-हत्या में क्या दोष—इस समस्या पर बड़ी प्रखर विचार-विनिमय। अप्पा पटवर्धन आदि भी थे। विनोबा के साथ घूमा। अप्पा पटवर्धन साथ थे। सेनापति साने गुरुजी आदि के सत्याग्रह पर विचार सुने।

बालूभाई मेहता आये। 'सेवक' के मासिक खर्चे के बारे में विचार विनिमय हुआ। एक आदमी को ज्यादा-से-ज्यादा बीस रुपये काफी हो सकते हैं। विनोबा ने प्रमाण देकर समझाया।

बापा और राधाकिसन आये। वसूराम हरकरे के बारे में बापा ने विनोबा के साथ बातें कीं। मैंने भी मंजूर की—अगर सचमुच में हृदय-परिवर्तन हुआ, यह विश्वास हो जाय तो।

पू. बापू, सरदार, जानकीदेवी व कमल को महत्व के हृदय के उद्गारों के तथा दुःख व जो मंथन चल रहा है, उसके पत्र लिखे। कुछ पत्र विनोबा ने देखे। राधाकृष्ण ने नकलें कीं।

५-१२-३८, वर्धा

विनोबा से नागपुर म्युनिसिपल कमेटी के बारे में विचार-विनिमय।

२०-१-३९, वर्धा

विनोबाजी से चर्चा। राधाकृष्ण को जयपुर-सत्याग्रह में मदद देने के लिए भेजने का निश्चय किया। विनोबा का उत्साह खूब था।

२१-२-३९, मोरांसागर (जयपुर-जेल)

तुम 'सर्वोदय' मासिक नहीं पढ़ती हो तो जरूर पढ़ना शुरू कर देना। तीसरे अंक में पृष्ठ १८ पर विनोबा का प्रवचन 'निर्गुण राम और योग्य कक्षा का प्रतीक खादी' और बापू के पत्र पढ़ने योग्य हैं।

(जानकीदेवीजी को लिखे पत्र से)

२८-२-१९, मोरासागर

मुझे विनोबा के संसर्ग में अधिक रहना चाहिए। उसीसे मेरा मार्ग साफ निष्कलंक हो सकेगा। जीवन में असली उत्साह प्राप्त हो सकेगा।

बापू के प्रेम व उदारता का खयाल करता हूं तो अपनेको बहुत नीचा और नालायक (छोटा और अयोग्य) समझने (महसूस करने) लगता हूं। बापू को समय बहुत कम मिलता है। इसलिए कई बार न्याय के मामले में गलतियां होती दिखाई देती हैं। परन्तु उनके मन में द्वेष ईर्ष्या या किसीका बिगाड़ हो यह वृत्ति न होने से उसका परिणाम ज्यादातर ठीक ही होता है।

आज से 'मधुकर' पढ़ना शुरू किया।

१९-४-१९, मोरासागर

मधुकर' आज पूरा किया। बहुत ही उपयोगी है। इसका सुन्दर हिंदी में अनुवाद अवश्य करवाना चाहिए। बाबा से कहना होगा। मेरे लिए इसके कई प्रकरण विचारणीय व लाभदायक हैं।

२६-४-१९, मोरासागर

तुम कोई जिम्मेदारी का काम करोगी तो मुझे खूब खुशी व सुख मिलेगा। मुझे तो आशा है कि तुम अवश्य कर सकोगी।

ग्राम्य जीवन का काम करना हो तो आशाबहन या प्रेमाबहन कंटक या विनोबा के पास रहकर कार्य करना व सीखना होगा।

(उमा बजाज को लिखे पत्र से)

२४-५-१९, मर्मांवतों का बाप जयपुर-जेल

जानकी अकेले ही वर्धा से आई। विनोबा ने यहां आने की सलाह दी और वह दूसरे रोज ही रवाना होकर आ गई।

थी फिर भी उपस्थिति ठीक थी। मण्डप ठीक बना था। पूज्य बापूजी और बा का आशीर्वाद उमा-राजनारायण के लिए प्राप्त होना बड़े भाग्य व सुख की बात थी।

बरातियों के साथ बस में पवनार गया। नदी में बाढ़ होने के कारण पू. विनोबा से नहीं मिल सके।

२२-८-४ वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥ तक हुई। आखिर मुख्य प्रस्ताव मंजूर हुआ। वर्तमान स्थितिवाले प्रस्ताव पर काफी विचार-विनिमय हुआ।

शाम को २। से ६। बापू वर्किंग कमेटी में रहे। आज बातचीत के सिलसिले में उन्होंने सकोच व दुःखित हृदय से अपनी मनोदशा विचार व भावी कार्यक्रम बताया। उसे सुनकर सबके-सब चकित व किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये। मन में चिन्ता और विचार शुरू हुआ।

गुलशीर बहन से मिलकर सेवाग्राम में बापू से मिला। महादेवभाई से बापू की भयंकर योजना समझी। सरदार, राजेन्द्रबाबू से बातचीत। चिन्तित अवस्था में सोया।

२३-८-४ वर्धा

सेवाग्राम—मौलाना, सरदार, जवाहर गये। बापू से बातचीत हुई। थोड़ा समाधान हुआ।

पवनार—विनोबा से मिलकर सारी स्थिति उन्हें बताई। शाम को उनके आने का निश्चय। उनकी मदद मिलेगी। बापू किशोरलालभाई के घर आये। विनोबा, किशोरलालभाई, काकूजी, काकासाहब से अपनी भावी योजना के (उपवास के) बारे में विचार विनिमय किया। विनोबा की राय ठीक रही। वर्किंग कमेटी की स्वीकृति न हो इस समय बापू यह विकट शर्त स्वीकार कर सकते हैं यह तय हुआ। बापू ने वर्किंग कमेटी के आगे विचार रखे। वर्किंग कमेटी की सर्वानुमति से प्रेसीडेंट मौलाना ने बापू को पत्र लिखकर दिया। उसमें प्रार्थना की गई है कि वह शर्त स्वीकार न करें। बापू ने मंजूर किया।

२७-७-१९, कर्मीमठों का साथ

मई और जुलाई का 'सर्वोदय' पढ़ा। यहाँ काला अखबार देखे।

'जो धनिक अपने आसपास लोगों की परवा न करता हुआ धन इकट्ठा करता है, वह धन प्राप्त करने के बदले अपना धन प्राप्त करता है' —विनोबा

२२-८-१९, वर्धा

पवनार में विनोबा से बातचीत। प्रार्थना में सम्मिलित।

२४-८-१९, वर्धा

पवनार—विनोबा से बातचीत। उनसे श्री रामनारायण का परिचय करवाया।

२५-८-१९, वर्धा

श्री रामनारायण आसपासवाले विनोबा के पास कमल के साथ गये। श्री रामनारायण व उमा की आज बातचीत हुई। उमा ने कहा उसे पूरा सन्तोष हो गया है। बाद में पू. विनोबा व बापूजी की राय जानी। उन्हें भी पसन्द आ गया। विनोबा व बापूजी के समक्ष सम्बन्ध निश्चित हो गया। उन्होंने आशीर्वाद दिया। बाद में रात को कुटुम्ब के लोगों ने देख किया। गुड़ धनिया बांट दिया गया।

२१-२-४ वर्धा

विनोबा से पवनार जाकर मिल आया। मदू कमली कान्ता भी साथ थी। जयपुर की स्थिति व छूटने के बाद आदि के बारे में बातचीत। जयपुर में अपनी ओर से सत्याग्रह न करते हुए रचनात्मक काम पर जोर देने की विनोबा की भी राय रही। स्टेट अनुचित तौर से रुकावट डाले तो अवश्य मुकाबला करना चाहिए, इत्यादि।

११-७-४ वर्धा

चि. उमा के विवाह का कार्य सुबह ७॥ बजे शुरू हुआ। वर्षा हो रही

बापू से विनोबा के कार्यक्रम आदि की चर्चा हुई। विनोबा का भाषण महादेव-भाई ने जो लिखा था उसे पूरा पढ़ा।

पवनार—बापू के साथ हुई बातें विनोबा से कहीं। विचार-विनिमय होता रहा। छत पर प्रार्थना। बाद में वहीं सोया।

१८ १०-४ पवनार सुरगांव

सुबह जल्दी उठा। प्रार्थना की। कुंवर, विनोबा व मनोहरजी के भाई के साथ पैदल सुरगांव गया। बरसात के कारण रास्ता खराब था। जाते आते ६॥ मील पैदल चलना हुआ। कुंवर से ठीक परिचय हुआ। सुरगांव मंदिर में विनोबा का भाषण ९ बजे शुरू हुआ। करीब ७ मिनट बोले। भाषण अच्छा था। साफ सुनाई दिया। सुरगांव ठहरे वहीं स्नान किया। पंजाबराव पटेल के घर चून-भाकरी का भोजन बहुत स्वाद लगा। आराम चर्चा स्त्रियों की प्रार्थना। भजन। नारायणशंकर ने भी भजन ठीक गाये। कोई सौ बरस के बूढ़े श्रीवराजी माली से मिलना हुआ परशराम पटेल से भी। करीब ४ बजे रास्ते के खेत देखते-देखते वापस लौटे। श्री आशाबहन पवनार तक साथ थी। महिला-आश्रम से शान्ताबहन और कमलाताई आये। देर तक बातचीत। विनोबा से महिलाश्रम तथा व्याख्यान वगैरह पर चर्चा हुई। शाम की प्रार्थना ऊपर छत पर हुई।

१९ १०-४ सेलू-वर्धा-पवनार

सुबह प्रार्थना। विनोबा के साथ बातचीत। आशाबहन वगैरह के साथ सेलू गया। करीब दो मील पैदल यात्रा हुई।

सेलू में विनोबा का भाषण ९ से १०-१ तक हुआ। रचनात्मक कार्य व सफाई पर भी बोले। मैला भी भगवान का रूप है इसका सुन्दर खुलासा किया। जानकीदेवी के पास फलाहार करके पवनार जाते हुए रास्ते में बालवाड़ी में मां से मिला। वहां से राधाकिसन को साथ लेकर पवनार गया। पवनार में विनोबा से विचार-विनिमय। भाषण की समालोचना।

११ १०-४ वर्धा

वर्किंग-कमेटी २ बजे से शुरू हुई। पू० बापू आये। ११ मेम्बर हाजिर थे। केवल राजेन्द्रबाबू व डा० सैयद महमूद गैर-हाजिर थे। बापू ने वाइसराय से हुई बातचीत कही। वर्तमान में अपनी व्यक्तिगत सत्याग्रह की योजना विनोबा को प्रथम सत्याग्रही बनाने की कल्पना आदि बातें कहीं।

१२-१०-४ वर्धा

वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह ८॥ से १ ॥ बजे तक और शाम को २ बजे से ५॥ बजे तक हुई। बापू ने शंकाओं का समाधान जितना उनसे हो सका किया। मौलाना व जवाहरलालजी का पूरा समाधान नहीं हुआ। डिसिप्लिन का पालन करने का निश्चय।

पू० बापू के साथ पवनार। विनोबा से बातचीत। प्रथम सत्याग्रही के बारे विचार-विनिमय। विनोबा अपना बयान तैयार करेंगे। बापू स्टेटमेंट बनावेंगे। विनोबा बापू से ता० १५ मंगलवार को २ बजे मिलेंगे। उसके बाद कार्यक्रम निश्चित होगा। बहुत करके पवनार से बुधवार या गुरुवार को विनोबा सत्याग्रह शुरू करेंगे।

१४ १ ४ वर्धा

सरदार वल्लभभाई, मणिबेन को विनोबा से पवनार में देर तक बातें। कांग्रेस वर्किंग कमेटी की विचार धारा के ऊपर विचार-विनिमय।

१७-१ ४ बम्बई से वर्धा

जानकीदेवी से मिला। पू० बापू से इजाजत लेकर मोटर से पवनार गया।

पवनार—विनोबा के सत्याग्रह का प्रथम भाषण हो रहा था और बरसात भी हो रही थी। करीब १ १५ मिनिट भाषण हुआ। उसके बाद विनोबा के साथ जमना-कुटीर में देर तक बातचीत और विचार विनिमय।

कृपलानी सुचेता किशोरलालभाई, गोपालराव के साथ सेवाग्राम गया।

२०-१०-४ पवनार, देवली वर्धा

सुबह विनोबा के साथ प्रार्थना। राधाकिसन से बातें कीं। पवनार से वर्धा। विनोबा मन्दिर गये व जानकीदेवी से बातचीत करते रहे। मैंने स्नान किया।

वर्धा से देवली—पुलगांव स्टेशन उतरकर मोटरलारी से देवली गये। विनोबा का भाषण ९-१ से १०-२ तक हुआ। आश्रम देखकर प्रेस में गये। वहींपर भोजन हुआ। कोई बीस आदमियों ने भोजन किया। १॥ बजे की एक्सप्रेस से वर्धा आये—महादेवभाई, नर्मदा वगैरह के साथ।

२१-१०-४ वर्धा

सुबह ५॥ के करीब गोपालराव काले आये। उन्होंने कहा कि विनोबा को रात के १॥ बजे 'डिफेन्स आफ इंडिया एक्ट' में गिरफ्तार करके मोटर से वर्धा ले गये हैं। सेवाग्राम नागपुर वगैरह फोन किया। विनोबा वर्धा-जेल में पहुंच गये। वर्धा में हड़ताल रखने की योजना व व्यवस्था की। अन्य खबरें मिलीं।

जेल में विनोबा से मिलकर बापू से सेवाग्राम में सारी हकीकत कही। बापू ने स्टेटमेंट का मसविदा बनाया। बापू का मौन था। अन्य सूचनाएं लिखकर दीं। बापू से और बातें भी हुईं। दुर्गाबहन के यहां भोजन। महादेवभाई व राजकुमारी के साथ जेल में विनोबा से मिले। उन्होंने जो स्टेटमेंट तैयार किया था उसमें कुछ सुधार करके सुनाया।

विनोबा का मुकदमा हुआ। श्री कुण्टे मजिस्ट्रेट ने तीन अपराधों पर तीन-तीन महीने की सादी सजा दी। तीनों सजाएं साथ-साथ चलेंगी।

१७-१२-४ वर्धा

मगनवाड़ी में बापूजी, काकासाहब, मशरूवाला, राधाकिसन आदि से विचार-विनिमय। सब संस्थाओं का एक ही ट्रस्ट बने, इस विषय पर मैंने अपने विचार कहे।

आवश्यकता। रचनात्मक कार्य का महत्व।

शाम को विनोबा की प्रार्थना में गया।

प्रार्थना के बाद विनोबा ने रामायण की चौपाई का अर्थ समझाया।

१ १ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा का प्रवचन—तेरह रचनात्मक कार्य सत्याग्रह की व्याख्या। शाम की प्रार्थना में विनोबा ने तुलसी-रामायण की चौपाई में लक्ष्मण की भक्ति की प्रशंसा की। डोरे के डंडे की उपमा सुन्दर थी।

४ १ ४१ नागपुर-जेल

मुलाकात में चि[illegible] शान्ता महात्मा श्रीमन्नारायण आये। चालीस मिनट तक राजी-खुशी के समाचार जान लिये। विनोबा के तेरह-सूत्री रचनात्मक-कार्य का नक्शा भिजवा दिया।

५ १ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा से 'ए' और 'बी' वर्ग के खानपान और चर्खा व खादी का वातावरण बनाने के सम्बन्ध में बातचीत तथा विचार विनिमय हुआ।

जेल-अधिकारी अगर इस तौर से बाहर का सामान लेने या 'ए' वर्ग वालों के लिए लाया हुआ सामान लेने की इजाजत देते हैं तो नैतिक दृष्टि से लेने व खाने में हर्ज नहीं। जहांतक हो सके और स्वास्थ्य के लिए जरूरी न हो तो 'ए' वर्ग को भी खानपान का सामान बाहर से ज्यादा न मंगाने का खयाल रखना ठीक रहेगा।

विनोबा का प्रवचन—उत्पादक कार्य (मजूरी) का महत्व व आवश्यकता पर।

६ १ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा का प्रवचन बहुत ही भावनापूर्ण व अन्तर में प्रवेश करनेवाला हुआ। तरुणी-धर्म शाम की प्रार्थना, रामायण-धर्म।

विनोबा के साथ घूमना हुआ। सुबह पीसाई वर्ग में गया।

२९-१२-४ नागपुर-जेल

सुबह विनोबा के साथ घूमे। बाद में थोड़ी देर पीसाई-वर्ग में बैठा।

२९ १२-४ नागपुर-जेल

मौलवी प्यारेलाल को कुरान के उच्चारण बतलाने आये।

विनोबा भी हाज़िर थे। शाम को श्री छोटेलालजी काशीप्रसादजी पाण्डे वगैरह के आग्रह से कल से विनोबा के प्रवचन २॥ से ३॥ तक रखने का विनोबा के साथ निश्चय किया।

१०-१२-४ नागपुर-जेल

चर्खा कातते समय प्यारेलाल से अच्छी बातचीत हुई। विनोबा के तकली-वर्ग में चर्खा काता। सुपरिंटेंडेंट आये विनोबा वगैरह से बातचीत।

आज से विनोबा का भाषण शुरू हुआ। विनोबा ने बापू की ट्रस्टीशिप की कल्पना की सुन्दर व्याख्या की। कबीर का एक दोहा कहा।

३१ १२ ४ नागपुर-जेल

विनोबा का प्रवचन—'अंगूर चोर का माल' कथा के इस विषय को आगे बढ़ाया और हृदय-परिवर्तन के सिद्धान्त को ठीक समझाया।

तकली कातो—बहुत ही धीमी गति है। सुपरिंटेंडेंट व जेलर सुबह आये। जेलर शाम को भी आया। आज यह डायरी पूरी हुई। वन्देमातरम्।

१ १ ४९, नागपुर-जेल

विनोबा का प्रवचन। हृदय-परिवर्तन के दृष्टान्त में खुद अपना हृदय पलटने का प्रयत्न करने की आवश्यकता बताई।

२ १ ४९, नागपुर-जेल

विनोबा का प्रवचन। सात लाख गांवों में एक लाख कार्यकर्ता की

आवश्यकता। रचनात्मक कार्य का महत्व।

शाम को विनोबा की प्रार्थना में गया।

प्रार्थना के बाद विनोबा ने रामायण की चौपाई का अर्थ समझाया।

३ १ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा का प्रवचन—तेरह रचनात्मक कार्य सत्याग्रह की व्याख्या। शाम की प्रार्थना में विनोबा ने तुलसी-रामायण की चौपाई में लक्ष्मण की भक्ति की प्रशंसा की। अंडे के डंडे की उपमा सुन्दर थी।

४ १ ४१ नागपुर जेल

मुलाकात में चि. शान्ता, मदालसा, श्रीमन्नारायण आये। चालीस मिनट तक गली-गली के समाचार जान लिये। विनोबा के तेरह-सूत्री रचनात्मक-कार्य का नक्शा भिजवा दिया।

५ १ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा से 'ए' और 'बी' वर्ग के खानपान और कपड़ों व खादी का वातावरण बनाने के सम्बन्ध में बातचीत तथा विचार विनिमय हुआ।

जेल-अधिकारी अगर खुले तौर से बाहर का सामान लेने का 'ए' वर्ग वालों के लिए आया हुआ सामान लेने की इजाजत देते हैं तो नैतिक दृष्टि से लेने व खाने में हर्ज नहीं। यहांतक हो सके और स्वास्थ्य के लिए जरूरी न हो तो 'ए' वर्ग को भी खानपान का सामान बाहर से ज्यादा न मंगाने का ख्याल रखना ठीक रहेगा।

विनोबा का प्रवचन—उत्पादक कार्य (मजूरी) का महत्व व आवश्यकता पर।

६ १ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा का प्रवचन बहुत ही भावनापूर्ण व अन्तर में प्रवेश करनेवाला हुआ। लक्ष्मी-अर्थ शाम की प्रार्थना, रामायण-अर्थ।

७-१-४१ नागपुर-जेल

विनोबा का वर्ग ९॥ से ११ तक। कुछ व्यापारी नीति का खुलासा किया। शाम को रामायण व प्रार्थना के बाद रामनाम-जप का महत्व समझाया। अंगूठे में शूल आने की वजह से तकली-वर्ग में आज बैठना नहीं हुआ।

८-१-४१ नागपुर-जेल

सुबह सीने में दर्द मालूम किया। देर तक लेटा रहा, सेंक किया।

धीरे धीरे चलकर पूनमचन्दजी के साथ विनोबा के पास गया। विनोबा से राष्ट्रीय-स्वयंसेवक संघ आदि के बारे में विचार। नवयुवकों के प्रति हम लोगों का उदासीन रहना ठीक नहीं। हमें उनके स्वभाव और प्रकृति के अनुकूल कार्यक्रम उन्हें देना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह बात तो ठीक है।

आज विनोबा के प्रवचन में नहीं जा सका। कुछ मालूम किया। शरीर छूटने का विचार आते रहे, क्योंकि बहुत देर तक अकेला रहना पड़ा।

शाम को विनोबा आये। प्यारेलाल भी साथ थे। मैंने विनोद में कह दिया अगर मृत्यु आवे तो स्वाभाविक तौर से तो जहां मृत्यु हो वहीं जला देना अच्छा है, परन्तु मेरी इच्छा नागपुर के बदले पवनार या सेवाग्राम की टेकरी पर जलाये जाने की है, आदि।

११-१-४१ नागपुर-जेल

चर्खा। विनोबा के प्रवचन में गया।

सुपरिंटेंडेंट पहले राउंड पर आ गये। स्वास्थ्य आदि के समाचार पूछ गये। बाद में दुबारा फिर आये। सुपरिंटेंडेंट की माताजी की मृत्यु हो गई, समवेदना प्रकट की। उनको बापू ने कमलनयन के मिलने पर मेरे बारे में महादेवभाई के जरिये पत्र लिखवाया कि मुझे यहां जब कि मैं ज्यादा दूध-फल ले रहा था, वह चालू रखूं। वह पत्र मुझे पढ़वाया। मेरे साथ देर तक चर्चा की। मुझे अपने खर्च से दूध-फल लेना चाहिए आदि समझाने लगे। इसमें पहले जो बात हुई थी वह मैंने दोहराई। शिवराज प्यारेलाल मौजूद थे। शाम को विनोबा से भी इस सम्बन्ध में विचार-विनिमय

हुआ। उन्होंने भी कहा कि दूध-फल लेना शुरू कर देना ठीक रहेगा आदि।

१४ १ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा १॥। से २॥ बजे तक आये। बातचीत। बापू को अपनी शारीरिक व मानसिक स्थिति का समाचार भेज दिया।

विनोबा कल जेल से जानेवाले हैं इसके कारण कई मित्रों ने चर्खा-संघ के सूत-सदस्य होने का निश्चय किया।

१५ १ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा आज छूटनेवाले थे इसलिए जल्दी ही उनके पास गया। करीब ८॥। बजे वह अन्दर के फाटक के बाहर चले गये। उनके साथ थोड़ा घूमा। साधारण बातचीत हुई। उन्हें दो अनार बाहर नाश्ते के लिए दिये। विनोबा का वियोग जो कि थोड़े ही समय के लिए मालूम देता है, बुरा मालूम हुआ।

विनोबा के प्रति दिनोदिन श्रद्धा बढ़ती ही जाती है। परमात्मा अगर मुझे इस देह से इस श्रद्धा के योग्य बना सकेगा तो वह दिन (समय) मेरे लिए धन्य होगा। मुझे दुनिया में बापू पिता व विनोबा गुरु का प्रेम दे सकते हैं—अगर मैं अपनेको उनके योग्य बना सकूँ तो।

१७-१ ४१ नागपुर-जेल

गोपालराव की मुलाकात व नागपुर-टाइम्स अखबार से मालूम हुआ कि विनोबा को सेवाग्राम के युद्ध-विरोधी भाषण पर गिरफ्तार नहीं किया। शाम को गांधी चौक (वर्धा) में उनका भाषण ६॥ बजे होगा। नागपुर से लाउड स्पीकर भेजे गए हैं।

१८ १ ४१ नागपुर-जेल

मुलाकात का दिन। चि० उमा, द्रोपदी कृपालानी डा० दास मिलने आये। जानकीदेवी के १६ उपवास ठीक तौर से पार पड़े। तीन संतरे

७-१-४१ नागपुर-जेल

विनोबा का वर्ग २॥ से ३॥ तक। पूज्य ब्यापारी नीति का खुलासा किया। शाम को रामायण व प्रार्थना के बाद रामनाम-जप का महत्व समझाया। बंगले में घूम आने की वजह से कताई-वर्ग में आज बैठना नहीं हुआ।

८-१-४१ नागपुर-जेल

सुबह घोड़े में दर्द मालूम किया। देर तक लेटा रहा। सेंक किया।

धीरे धीरे चलकर पूनमचन्दजी के साथ विनोबा के पास गया। विनोबा से राष्ट्रीय-स्वयंसेवक संघ आदि के बारे में विचार। नवयुवकों के प्रति हम लोगों का उदासीन रहना ठीक नहीं। हमें उनके स्वभाव और प्रकृति के अनुकूल कार्यक्रम उन्हें देना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह बात तो ठीक है।

आज विनोबा के प्रवचन में नहीं जा सका। दुःख मालूम किया। शरीर टूटता या विचार आते रहे, क्योंकि बहुत देर तक अकेला रहना पड़ा।

शाम को विनोबा आये। प्यारेलाल भी साथ थे। मैंने विनोद में कह दिया अगर मृत्यु आवे तो स्वाभाविक तौर से तो जहां मृत्यु हो वहीं जला देना अच्छा है, परन्तु मेरी इच्छा नागपुर के बदले पवनार या सेवाग्राम की टेकरी पर जलाये जाने की है, आदि।

११-१-४१ नागपुर-जेल

चर्चा। विनोबा के प्रवचन में गया।

सुपरिटेंडेंट पहले राउंड पर आ गये। स्वास्थ्य आदि के समाचार पूछ गये। बाद में दुबारा फिर आये। सुपरिटेंडेंट की माताजी की मृत्यु हो गई, समवेदना प्रकट की। उनको बापू ने कमलनयन के मिलने पर मेरे बारे में महादेवभाई के जरिये पत्र लिखवाया कि मुझे यहां काम कि मैं ज्यादा दूध-फल ले रहा था वह चालू रखूं। यह पत्र मुझे पढ़ाया। मेरे साथ देर तक चर्चा की। मुझे अपने खर्च से दूध-फल लेना चाहिए आदि समझाने लगे। उनसे पहले जो बात हुई थी वह मैंने दोहराई, ब्रिजलाल प्यारेलाल मौजूद थे। शाम को विनोबा से भी इस सम्बन्ध में विचार-विनिमय

हुआ। उन्होंने भी कहा कि सूत-यज्ञ लेना शुरू कर देना ठीक रहेगा आदि।

१४-१ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा १॥। से २॥ बजे तक आये। बातचीत। बापू को अपनी शारीरिक व मानसिक स्थिति का समाचार भेज दिया।

विनोबा कल जेल से जानेवाले हैं इसके कारण कई मित्रों ने चर्खा-संघ के सूत-सदस्य होने का निश्चय किया।

१५ १ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा आज छूटनेवाले थे इसलिए जल्दी ही उनके पास गया। करीब ८॥। बजे वह अन्दर के फाटक के बाहर चले गये। उनके साथ थोड़ा घूमा। साधारण बातचीत हुई। उन्हें दो अनार बाहर रास्ते के लिए दिये। विनोबा का वियोग जो कि थोड़े ही समय के लिए मालूम देता है, बुरा मालूम हुआ।

विनोबा के प्रति दिनोदिन श्रद्धा बढ़ती ही जाती है। परमात्मा अगर मुझे इस देह से इस श्रद्धा के योग्य बना सकेगा तो वह दिन (समय) मेरे लिए धन्य होगा। मुझे दुनिया में बापू पिता व विनोबा गुरु का प्रेम दे सकते हैं—अगर मैं अपनेको उनके योग्य बना सकूं तो।

१७-१ ४१ नागपुर-जेल

भोसाकराव की मुलाकात व नागपुर-टाइम्स अखबार से मालूम हुआ कि विनोबा को सेवाग्राम के युद्ध-विरोधी भाषण पर गिरफ्तार नहीं किया। शाम को गांधी चौक (वर्धा) में उनका भाषण ६॥ बजे होगा। नागपुर से लाउड स्पीकर भेजे गए हैं।

१८-१ ४१ नागपुर-जेल

मुलाकात का दिन। चि० कमा श्रीमती कृपालानी 'बा' साथ मिलने आये। जानकीदेवी के १६ उपवास ठीक तौर से पार पड़े। तीन संतरे

'नागपुर टाइम्स' देखा । विनोबा को ६ महीने सादी सजा हुई । वह ७ बजे के करीब नागपुर-जेल में आ गये ऐसा सुना ।

२५ १ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा से मिलना हुआ । बापू, जानकी आदि के समाचार जाने । दोपहर को व शाम को विनोबा मिलने आये । शाम को विनोबा की प्रार्थना में गया ।

२६ १ ४१ नागपुर-जेल

चार बजे उठा । प्रार्थना । विनोबा के स्वतंत्रता-दिवस के निमित्त दिये गए भाषण को आज दुबारा पढ़ डाला । स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा का अर्थ समझा । शाम को प्रार्थना में विनोबा ने तुलसी-रामायण पढ़ना शुरू किया । तुलसीदासजी का जीवन जैसा कि उन्होंने बताया है, पापमय होना सम्भव था परन्तु सच्चाई से स्वीकार कर लेने व भक्ति के कारण उन्होंने अपना मार्ग ठीक कर लिया ।

आज से जेल में नई जीवन शुरू हुआ । विनोबा यहाँ आये थे ।

'जन्म-भूमि' में स्वतंत्रता-दिवस की घोषणा सुन्दर ढंग से छपी है ।

२७-१ ४१ नागपुर-जेल

शतरंज एक बाजी कन्हैयालालजी बालाघाटवालों से खेली । वह हारे । विनोबा ने भी थोड़ा रस लिया ।

शाम की प्रार्थना में विनोबा ने अपने हिसाब से तुलसी रामायण के जो भाग व चयन किये हैं, उन्हें समझाया ।

२९ १ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा व गोपालराव से बातचीत । छोटेलाल का स्मारक बनाने पर विचार करने के लिए उन्हें कहा । सुबह थोड़ा घूमा ।

दूर किये हैं। प्रकृति ठीक है। विनोबा का आज नालवाड़ी में व्याख्यान है। कल वर्धा में ठीक हो गया।

११ १ ४१ नागपुर-जेल

'जन्म-भूमि' पढ़ी। आज विनोबा की खास कोई खबर नहीं मिली।

२१ १ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा वर्धा तहसील में युद्ध-विरोधी भाषण जोर-जोर से दे रहे हैं। सेवाग्राम वर्धा, नालवाड़ी सुरगांव घोनेगांव वगैरा में।

२२ १ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा को वर्धा से १ मील दूर कोली गांव में गिरफ्तार करके वर्धा लाये। कल मुकदमा चलेगा।

'विनोबा के विचार' पुस्तक पढ़ता रहा।

२३-१ ४१ नागपुर-जेल

रात को नींद प्रायः नहीं आई। अच्छे-बुरे विचार आते रहे। सब सो ही नहीं सके। करीब दो घंटे नींद आई होगी। विनोबा की गिरफ्तारी, आबिदअली का विवाह आदि प्रश्नों पर विचार चलते रहे।

'नवभारत' 'जन्मभूमि' 'नागपुर टाइम्स' पढ़ा। विनोबा के मुकदमे का फैसला कल ता २४ को ११ बजे होगा।

विनोबा को मेरे साथ रखने को पहले भी व आज भी जेल-अधिकारियों से कहा। उन्होंने मंजूर नहीं किया।

२४-१ ४१ नागपुर-जेल

सुपरिटेंडेंट आये। विनोबा को उनके पुराने स्थान पर ही रखना होगा। उनका नैतिक असर ठीक पड़ता है इत्यादि कहा।

'विनोबा के विचार' पढ़ा।

रामायण पर विनोबा का सुन्दर प्रवचन हुआ ।

८ २ ४१ नागपुर-जेल

रोज के मुताबिक प्रार्थना 'गीताई' 'एकनाथ' 'विनोबा के विचार' पढ़ने के बाद चर्खा काता । एक गुंडी १४ तार काते । आज एकादशी थी।

विनोबा से घूमते समय बातचीत ।

शाम की प्रार्थना के बाद विनोबा ने बापू का सन्देश सुनाया ।

९ २ ४१ नागपुर-जेल

कल विनोबा ने जेल में जितने राजनैतिक सत्याग्रही है, उनको बापू के विचार सुनाये । उसपर से आज विचार-विनिमय टीका-टिप्पणी व विनोद होता रहा । सुना ।

विनोबा को 'सी' वर्ग के राजनैतिक कैदियों से मिलने देने व उपदेश चर्चा आदि का वातावरण निर्माण करने के बारे में जेलर व सुपरिंटेंडेंट से बातचीत हुई थी । उसके सन्तोषजनक परिणाम की आशा हो गई थी । परन्तु आई जी पी बारीवाल ने यह स्वीकार नहीं की ।

---

१ २ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा गोपालराव आये । विनोबा के साथ फिरते हुए बातचीत— जेल व भावी कार्यक्रम-सम्बन्धी ।

११ २ ४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' पुस्तक आज पूरी की—इस प्रार्थना के साथ कि "हे प्रभो तू मुझे असत्य में से सत्य में ले जा । अंधकार म से प्रकाश में ले जा । मृत्यु में से अमृत में ले जा ।

विनोबा व गोपालराव से शाम को घूमते हुए बातें ।

१२ २-४१ नागपुर-जेल

एकनाथ के भजन और'विनोबा के विचार'दूसरी बार पढ़ना शुरू किया।

११-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा, गोपालराव शिवराजजी पूनमचन्द बांठिया। कुछ पढ़ना और जेल-समाचार भी।

२-२-४१ नागपुर-जेल

सुबह नरूभा[1] के साथ शतरंज की एक बाजी खेली। वह हार गये। शाम को तिवारी के साथ खेली वह भी हारे। बाद में विनोबा मिलकर खेले मैं हारा।

३-२-४१ नागपुर-जेल

आज से तीन पाव गाय का दूध मेरे खर्च से आना शुरू हुआ। आज प्रथम बार चार छटाक दूध विनोबा के पास से वापस लाकर, जमाया है। शाम को शाक नहीं ली।

५-२-४१ नागपुर-जेल

खास मुलाकात—चि. राधाकृष्ण व मेहता चीफ इंजीनियर (इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट) लक्ष्मीनारायण-मंदिर के नक्शे वगैरह लेकर आये थे। मैंने उन्हें सूचना दी है कि भी बुद्ध भगवान व भरत की मूर्तियाँ दोनों कोठरियों में या बाजू में रखी जा सकती हों तो जरूर विचार करें। इसमें दस-पन्द्रह हजार खर्च हो जाते दीखते हैं।

विनोबा से भी राधाकृष्ण व बालुंजकर मिले। विनोबा को बुद्ध भगवान व भरत की मूर्ति की कल्पना ठीक मालूम हुई।

६-२-४१ नागपुर-जेल

वर्तमान युद्ध-वार्ताओं से हमारे मन पर जो असर होता है, उसपर विनोबा से घूमते समय चर्चा व विचार।

७-२-४१, नागपुर-जेल

शाम की प्रार्थना में विनोबा के पास बैठा। प्रार्थना के बाद तुलसी

[1] नागपुर के नागरिक नेता।

जाना और तटस्थ होकर देखना चाहिए ‘फिर उसीमें से उत्साह मिलता है, मार्ग-दर्शन होता है, बुद्धि की शुद्धि होती है ।

शाम तकली-वर्ग में नहीं जा सका । शाम की प्रार्थना में गया था । विनोबा ने मद्रास-समझौता का ठीक-ठीक खुलासा किया।

१६-२-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'दरिद्रों से तन्मयता' अध्याय पढ़ा ।

"जैसे नदियाँ समुद्र की ओर बहती हैं, उसी प्रकार हमारी वृत्ति और शक्ति गरीबों की ओर बहती रहे, इसीमें कल्याण है ।

तकली-वर्ग में गया । विनोबा की शाम की प्रार्थना में व राष्ट्रीय प्रार्थना में भी गया ।

श्री छेदीलाल बिलासपुरवालों से बातचीत । उन्होंने बातचीत के सिलसिले में कहा कि मैंने तो अपने भावी जीवन के लिए विनोबाजी को गुरु मान लिया है । आपको अब कोई शिकायत नहीं रहेगी इत्यादि ।

१७-२-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'भिक्षा' का प्रकरण पढ़ा ।

"चोरी अर्थात समाज की कम-से-कम सेवा करके या सेवा करने का नाटक करके या बिल्कुल सेवा किये बिना और कभी-कभी तो प्रत्यक्ष नुकसान करके भी समाज से ज्यादा-से-ज्यादा भोग लेना ।

तकली-वर्ग राष्ट्रीय प्रार्थना व विनोबा की प्रार्थना में गया ।

१८-२-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'तरणोपाय कौन-सा' पढ़ा ।

"जिन शस्त्रों ने पिछले महायुद्ध में फ्रान्स को विजय प्राप्त करा दी शरण-चिट्ठी लिख देने के लिए भी उसे उनके सिवा दूसरे उपलब्ध नहीं हुए। असंगठित हिंसा और सुसंगठित हिंसा नहीं-नहीं अति सुसंगठित हिंसा बेकार सिद्ध हो चुकी है ।'

तकली-वर्ग । शाम को विनोबा की प्रार्थना में गया ।

आजादी की लड़ाई की विधायक तैयारी। वर्धा तहसील के कांग्रेस-सदस्यों में कताई का संगठन करने का विचार ठीक मालूम दिया।

विनोबा के तलेगांव-वर्धा में जाने की इच्छा होते हुए भी समय व स्वास्थ्य आदि की स्थिति के कारण जाने का निश्चय नहीं कर सका। मन में विचार तो बना ही रहता है।

आज से प्रतिदिन स्वाध्याय के रूप में भी एकनाथ के भजन पढ़ना शुरू किया।[1]

११-२-४१ नागपुर-जेल

एकनाथ के भजन 'करितां कीर्तन श्रवण। अंतर्बाह्य होतें पावन।' का मनन करता रहा। 'विनोबा के विचार' में 'बूढ़ा तर्क' पढ़ा।

"जो बात अब तक नहीं हुई ऐसी अद्भुत-सी बातें आज होनेवाली हैं, अबतक मैं मरा नहीं इसीलिए आगे मरता हूँ मेरे सखीराम! आज तक मैं मरा नहीं इसलिए आगे नहीं मरता हूँ, ऐसे बूढ़े तर्क का आसरा मत लो, नहीं तो धोखा।

१४-२-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'सर्व-धर्म-समभाव' पढ़ा।

"जिस चीज को हम अपने स्वदेश पुरुषों के मुंह से सुनते हैं, उसका अधिक असर होता है।" तलेगांव-वर्धा में गया। सदा स्वप्न सब आता है। विनोबा से बातचीत। एकनाथ भजन उर्दू वगैरह पढ़ा। विनोबा का जन्म सन् १८९५ ता० १२ सितम्बर का है मिति भाद्रपद शुक्ल ९।

१५-२-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'स्वाध्याय की आवश्यकता' अध्याय पढ़ा।

ज्ञान और उत्साह का स्थान बाहर नहीं है। आत्मा का पोषण-रक्षण आजकल शहरों में नहीं होता। अपनेको और अपने धर्म को बिलकुल भूल

---

[1] यह सिलसिला ८ मार्च तक नियमित चला। हर रोज की भजन (अभंग) पसंद आये उन्हें खुद ही डायरी में सुंदर व स्वच्छ अक्षरों में लिख लिया है।

है कौनसे मोचने के जैसा है। त्याग पीने की दवा है दान सिर पर लगाने की सोंठ है। त्याग में अन्याय के प्रति चिढ़ है दान में नामवरी का लालच है। त्याग से पाप का मूल-धन चुकता है दान से पाप का ब्याज। त्याग का स्वभाव दयापूर्ण है दान का ममतापूर्ण। धर्म दोनों ही है। त्याग का निवास धर्म के शिखर पर है दान का उसकी तलहटी में।

घुटने में दर्द के कारण घूमने व तकली-वर्ग में जाना नहीं हो सका। विनोबा से विनोद दिमागी व्यायाम बातचीत।

२२ २ ४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'श्रम-जीविका (ब्रेड लेबर) पढ़ा।

"दुनिया में सबसे अधिक श्रीमान कौन है? वह जिसकी पचनेन्द्रिय अच्छी है। भूख भगवान का सन्देश है। जिसको दिनभर में तीन दफा अच्छी भूख लगती है उसे अधिक धार्मिक समझना चाहिए। भूख कमाना जिन्दा मनुष्य का धर्म है।

२३-२ ४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'ब्रह्मचर्य की कल्पना' पढ़ा।

"जनता की सेवा यह उसका ब्रह्म हो गया। उसके लिए जो आचार वह करेगा वही ब्रह्मचर्य है। विशाल ध्येयवाद और उसके लिए संयमी जीवन का आचरण इसको मैं ब्रह्मचर्य कहता हूं।

२४-२-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा का अर्थ' पढ़ा।

"व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये इस वेद-वचन में स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा व्यक्त की गई है।

२५ २ ४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'सिर्फ शिक्षण' पढ़ा।

मनुष्य को पवित्र जीवन बिताने की फिक्र करनी चाहिए। शिक्षण की

१९-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'पाँवों का काम' पढ़ा।

"इतने वर्षों के कड़े अनुभव के बाद हमें सूझा कि तेरा साईं तेरे पास तू क्यों भटके संसार में ? लेकिन लोगों से खूब जान-पहचान होनी चाहिए। हमारे शरीर में कोई ऐसा पारस पत्थर नहीं चिपका हुआ है कि किसीका किसी तरह भी हमसे संबंध जुड़ा नहीं कि वह सोना हुआ नहीं।

तकली-वर्ग में गया। आज वर्षा हुई थी इस कारण शाम को प्रार्थना में नहीं गया। विनोबा से देर तक चर्खा की सारी संस्थाएं एक ट्रस्ट के अंतर्गत रहें इस बारे में विचार-विनिमय हुआ। उन्हें मेरे विचार ठीक मालूम हुए।

२०-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'व्यवहार में जीवन-वेतन' पढ़ा।

"औसत आयु हिंदुस्तान की इक्कीस साल, इंग्लैण्ड की चवालीस साल। बचपन के पहले चौदह साल छोड़ देने से हिंदुस्तानी सात वर्ष व इंग्लैंडवाले अट्ठाइस साल यानी चौगुना जीते हैं।

समाजवाद का मत जो धनिक अपने आस-पास के लोगों की परवा न करता हुआ धन इकट्ठा करता है, वह धन प्राप्त करने के बदले अपना वध प्राप्त करता है।

'सायणाचार्य ने इस मत का भाष्य करते हुए 'वध' और 'मृत्यु' के भेद की तरफ ध्यान दिलाया है।

२१-२-४१, नागपुर-जेल

विनोबा के विचार' में 'त्याग और दान' पढ़ा।

मन-ही-मन यह सोचने लगा, 'मेरी तिजोरी में भी ऐसा ही एक दीमक है, उस अनुमान से किसी और जगह कोई गड्ढा तो न पड़ गया होगा ?

'मां मेरा पाप धो डाल !' कहकर उसने वह सारी कमाई गंगा-माता के आंचल में डाल दी।

'त्याग तो बिल्कुल 'मूले कुठार:' करनेवाला है। दान ऊपर-ही-ऊपर

१ १-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'गंगादेव की उपासना' पढ़ा।

"हिमालय से निकलनेवाली गंगा गंगोत्री के पास छोटी और शुद्ध है। प्रयाग की गंगा में नदियां नाले और गटर मिलकर वह वैभवशाली बन गई है। द्वारकाधीश होने के बाद भी श्रीकृष्ण ग्वालों के साथ रहने आया करते थे गायें चराते थे गोबर उठाते थे।

"कराग्रे वसते लक्ष्मी—अंगुलियों के अग्र भाग में लक्ष्मी है। तीन साल पहले मेरे प्राण पखेरू उड़ गये थे सो कताई के साथ बढ़ते ही फिर इस शरीर में लौट आये।"

२ १ ४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'राष्ट्रीय अर्थशास्त्र' पढ़ा।

"कातने की गति कायम रखे। मैं श्रद्धापूर्वक ध्यानपूर्वक कातता हूं। आठ घंटे इस तरह काम करने पर भी मेरी मजदूरी सवा दो आने पड़ती थी। पीठ में दर्द होने लगता था। लगातार आठ घंटे काम करता था। मौनपूर्वक कातता था एक बार पालथी जमाई कि चार घंटे उसी आसन में कातता था। तो भी सवा दो आने ही कमा सका। सच्चे अर्थशास्त्र में प्रामाणिक मनुष्यों के लिए पूरी सुविधा होनी चाहिए। आलसी या अप्रामाणिक लोगों के पोषण का भार राष्ट्र के ऊपर नहीं हो सकता।

३ १-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'वृक्ष-छाया-न्याय' पढ़ा।

"मालिक और किसान कमाएं। 'जिमि बालक करि तोतरि बाता, सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता।' "

४ १ ४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'राजनीति या स्वराज्य नीति (एक सिपाही का स्वप्न)' पढ़ा।

हिन्दुस्तान की जनता अहिंसक, अहिंसक और अहिंसक ही है।

'अर्थात् कामय राज्यम्' । स्वराज्य-साधना और राज्य-कामना यानी हम स्वराज्य-साधक हैं। हमें राज्य-कामना का स्पर्श न हो ।"

५.१.४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'सेवा व्यक्ति की भक्ति समाज की' पढ़ा।

"व्यक्ति की भक्ति में आसक्ति बढ़ती है। इसलिए भक्ति समाज की। सेवा समाज की करना चाहें तो कुछ भी नहीं कर सकते। समाज तो एक कल्पना मात्र है। कल्पना की हम सेवा नहीं कर सकते। माता की सेवा करनेवाला लड़का दुनियाभर की सेवा करता है, यह मेरी कल्पना है।"

६.१.४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'ग्राम-सेवा और ग्राम-धर्म' पढ़ा।

'मेरी इच्छा तो यह है कि हमें देहात में जाकर व्यक्तियों की सेवा करने की तरफ अपना ध्यान रखना चाहिए न कि सारे समाज की तरफ।

"बापूजी के लेख मुझे कम ही याद आते हैं, लेकिन उनके हाथ का परोसा हुआ भोजन मुझे हमेशा याद आता है। और मैं मानता हूं कि उससे मेरे जीवन में बहुत परिवर्तन हुआ है।

मैं उसे एक काव्य का चर्खा कहता हूं। लेकिन मेरे पास तो एक सवा लाख का चर्खा है और वह है तकली।

७-१.४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'साहित्य की विशा-भूल' पढ़ा।

"*विरोधी विचार का खंड दूसरों का भी बकवाना खरी-खोटी या ऐसी बातें* कहना मजाक (उपहास) व्यंग (व्यंग) मर्म-भेद (मर्म-स्पर्श) आड़ी-टेढ़ी बातें सुनाना (वक्रोक्ति) कठोरता पेचीदगी अविश्वास प्रतारणा (कपट) ये ज्ञानदेव ने वाणी के अवगुण बतलाये हैं।

हे प्रभो अभी तक मुझे पूर्ण अनुभव नहीं होता है तो क्या मेरे देह में केवल कवि ही बनकर रहूं ? —तुकाराम ने कहा।

विनोबा व डाक्टर का कहना है कि पूरा आराम लेना जरूरी है।

८-१-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' से 'लोकमान्य के चरणों में' पढ़ा।

"साधु-संतों का नाम लेते ही मेरी ऐसी स्थिति हो जाती है कि मानो गद्गद् हो उठता हूं। वही स्थिति तिलक के नाम से भी होती है। जैसे—

'सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ।
नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ।'

'हमें महापुरुषों के चारित्र्य का अनुसरण करना चाहिए, न कि उनके चरित्र का। चरित्र उपयोगी नहीं। चारित्र्य उपयोगी है। गहराई से देखें तो आज भी 'राम का अवतार' हो चुका है। यह जो रामलीला हो रही है इसमें कौन-सा हिस्सा मैं किस पात्र का अभिनय करूं यही मैं सोचने लगता हूं।

९-१-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'निर्भयता के प्रकार' पढ़ा।

'वीर' निर्भयता वह है जो खतरों से परिचय प्राप्त करके उनके इलाज जान लेती है। 'ईश्वर-निष्ठ निर्भयता' मनुष्य को पूर्ण निर्भय बनाती है। 'विवेकी निर्भयता' मनुष्य को अनावश्यक और अटपटा साहस नहीं करने देती।

बापू का दृष्टांत निर्भय सेवक का कर्तव्य—हमें सुकरात की तरह जीना और मरना सीखना चाहिए।

सुबह विनोबा के स्थान तक घूमने गया। बाद में शतरंज एक बाजी खेली। शाम को थोड़ी देर विनोबा भी शामिल हुए।

१०-१-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'तुलसी रामायण' का लेख पढ़ा।

"भरत तुलसीदास की ध्यान-मूर्ति थे। भरत की भावना—

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
जनम-जनम रति राम-पद यह बरदान न आन।

सिय-राम-प्रेम-पियूष-पूरन होत जनमु न भरत को ।
मुनि-मन-अगम-जम-नियम-सम-दम बिषम ब्रत आचरत को ।
दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस-मिस अपहरत को ।
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को ।

विनोबा का स्वास्थ्य भी कल से ठीक नहीं है । थोड़ा ज्वर हो गया है । आज उन्हें कोशिश करके मोसंबी का रस पिलाया । मन को समाधान मिला ।

११-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'कवि के गुण' पढ़ा ।

"ईशोपनिषद् में—कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः । याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः ।

अर्थ—कवि (१) मन का स्वामी (२) विश्व-प्रेम से भरा हुआ (३) आत्मनिष्ठ (४) यथार्थ भाषी और (५) शाश्वत काल पर दृष्टि रखने वाला होता है ।

मनन करने के लिए नीचे लिखे अर्थ सूचित करता हूं ।

(१) मन का स्वामित्व—ब्रह्मचर्य
(२) विश्व-प्रेम—अहिंसा
(३) आत्मनिष्ठा—अस्तेय
(४) यथार्थ भाषित्व—सत्य ।
(५) शाश्वत काल पर दृष्टि—अपरिग्रह ।"

१२-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'फायदा क्या है ?' पढ़ा ।

"फायदा दूसरे की गला-मूंड काटने से फायदा, स्वराज्य हासिल करने से फायदा आदि ।

'सम्पूर्ण सृष्टि मनुष्य के फायदे के लिए ही है' इस बेकार की मान्यता में हम न रह जाय यही ध्यान रखना जरूरी है । घनश्यामदासजी बिड़ला की डायरी के कुछ पन्ने' किताब पूरी की । १९ प्रकरण, ११४ पृष्ठ । डायरी लिखी

तो बहुत ही अच्छे ढंग से है। पर कई लोग जीवित हैं व बहुत-सी बातें जानमी है। उसे उनके जीवित रहते प्रसिद्ध करना कहाँतक उचित है? मुझे तो सन्देह है ही विनोबा को भी है।

१३ १ ४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से आत्म-शक्ति का भान पढ़ा।

"बापूजी का जन्म-दिन है। आइये हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारे देश में सत्पुरुषों का ऐसा ही अखंड प्रवाह बहता रहे।

"निश्चय छोटा-सा ही क्यों न हो मगर उसका पालन पूरा-पूरा होना चाहिए।

विनोबा की प्रार्थना में शामिल हुआ। विनोबा ने सुन्दर भजन गाया।

१४ १ ४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'कौटुम्बिक शाला' पढ़ा।

"जीवन-क्रम के सम्बन्ध में चौदह सूचनाएं इस लेख में दी हैं वह सब मनन करने योग्य है।

१५ १ ४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'पुराना रोग' पढ़ा।

"हमारे जो अच्छे काम हैं उनका अनुकरण करो बुरे कामों का नहीं।

१६ १ ४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'सेवा का आचार-धर्म' पढ़ा।

"देहाती लोग आलसी हो गये? पर असल आलसी तो हम हैं।

"स्त्रियों की सेवा करो। माँ की साड़ी धोने में भी हमें शर्म आती है तो पत्नी की साड़ी धोने की तो बात ही कौन कह सकता है।

गोपालराव विनोबा और कन्हैयालालजी खाकावाटवालों के साथ कतरंज खेली।

विनोबा की शाम की प्रार्थना में शामिल हुआ। श्री शंकर भगवान

सिय-राम-प्रेम-पियूष-पूरन होत जनमु न भरत को ।
मुनि-मन-अगम जम-नियम-सम-दम बिषम ब्रत आचरत को ।
दुख, दाह, दारिद, दंभ, दूषन सुजस-मिस अपहरत को ।
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को ।

विनोबा का स्वास्थ्य भी कल से ठीक नहीं है। थोड़ा ज्वर हो गया है। आज उन्हें कोशिश करके मठरे का रस पिलाया। मन को समाधान मिला।

११-१-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'कवि के गुण' पढ़ा।

"ईशोपनिषद् है—कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः। याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः।

अर्थ—कवि (१) मन का स्वामी (२) विश्व-प्रेम से भरा हुआ (३) आत्मनिष्ठ (४) यथार्थ भावी और (५) शाश्वत काल पर दृष्टि रखने वाला होता है।

मनन करने के लिए नीचे लिखे अर्थ सूचित करता हूं।

(१) मन का स्वामित्व—ब्रह्मचर्य
(२) विश्व-प्रेम—अहिंसा
(३) आत्मनिष्ठता—अस्तेय
(४) यथार्थ भावित्व—सत्य।
(५) शाश्वत काल पर दृष्टि—अपरिग्रह।

१९-१-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'फायदा क्या है?' पढ़ा।

फायदा दूसरे की लूट-खूट मारने से फायदा स्वराज्य हासिल कर जायदा आदि।

"सभी सृष्टि मनुष्य के फायदे के लिए ही है' इस विचार की जड़ में हम न रह जाय यही हमारा फायदा है।" जमनालालजी जि—
कानूनी व गृह सभी विचार पूरी की। १९ प्रकरण ११४ पृष्ठ।

जानी चाहिए । ये भाई शायद नागपुर जिले के हों । छोटा भाई कबूल करता था कि उसने खून किया है। बड़ा भाई निर्दोष है । बड़ा भाई भी कहता था कि मैं निर्दोष हूं। छोटा तो राम का नाम भी जोरों से लेता था। बड़ा कहता था कि राम है ही कहां ? अगर राम होता तो मुझ निरपराधी को क्यों फांसी दी जाती। यह सब सुनकर तो ऐसा मालूम देता है कि बड़ा भाई सचमुच निर्दोष हो ।

विनोबा गोपालराव गुप्तजी से आज की फांसी पर देर तक विचार विनिमय होता रहा ।

२१ । १ । ४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'भजन और कीर्तन' पढ़ा ।

'वही भक्त-वत्सल प्रभु वही पतितपावन नाम ।

विनोबा गोपालराव घनश्यामसिंहजी गुप्त पूनमचन्द रांका व महोदय के साथ 'मृत्यु' आदि पर विचार-विनिमय होता रहा । मैंने जल्दी में भी घनश्यामसिंहजी के विचार पर थोड़ी समालोचना कर दी वह ठीक नहीं थी। इसपर बाद में विचार चलता रहा । श्री गुप्तजी ने तो उसे ठीक ही तौर से उदारतापूर्वक लिया ।

२२ । १ । ४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'जीवन और शिक्षण' पढ़ा ।

"तत् किं ? तत् किं ? तत् किं ? यह शंकराचार्यजी का पूछा हुआ सनातन सवाल अब दिमाग में चक्कर चक्कर लगाने लगा था। पर खास जवाब था नहीं।

"सामने खंभा है। यह ज्ञान अन्धे को उस खम्भे का छाती में प्रत्यक्ष धक्का लगने के बाद मालूम होती है। आंखवाले को वह खंभा पहले दिखाई देता है।

२३ । १ । ४१ नागपुर जेल

'विनोबा के विचार' में 'रोज की प्रार्थना' पढ़ा ।

का निश्चय—उसी पार्वती के कपट पर जो किया वह मननीय था।

१७-१-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'साक्षर या सार्थक' पढ़ा।

"बातों की कढ़ी और बातों का ही भात खाकर पेट भरा है" विनोबा का यह सवाल मार्मिक है। कवि के कथनानुसार पोथी का कुआँ सूखता भी नहीं है, और पोथी की गैया तारती भी नहीं है।

१८-१-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'दो शब्द' पढ़ा।

"हमें उनसे इतना ही कहना चाहिए कि 'जग का ज्ञान' या 'अपने का ज्ञान' यह हमारे सामने पहला सवाल है।

१९-१-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'कृष्ण-भक्ति का रोग' पढ़ा।

'निन्दा स्तुति सम की वार्ता बहु-जन की।' भगवान ईसा ने कहा, 'जिसका मन बिल्कुल साफ हो, वह पहला ढेला मारे।'

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना मुझ-सा बुरा न कोय।

विनोबा से मनस्थिति के बारे में बातें।

२०-१-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में गीता-जयन्ती लेख पढ़ा।

"गीता-मैया के यहाँ छोटे-बड़े का भेद नहीं है। बल्कि खरे-खोटे का भेद है। गीता के प्रचार का मतलब है भक्ति का प्रचार, त्याग का प्रचार। समझकर चर्चा की अपेक्षा समझकर आचरण श्रेष्ठ है। कुरुक्षेत्र का मतलब है कर्म की भूमि।

आज सुबह इस जेल में दो सगे भाइयों को एक साथ फाँसी दी गई। परमात्मा इनको सद्गति प्रदान करे। यह सजा तो जल्दी-से-जल्दी बन्द हो

जानी चाहिए। ये भाई शायद नागपुर जिले के हों। छोटा भाई कबूल करता था कि उसने खून किया है। बड़ा भाई निर्दोष है। बड़ा भाई भी कहता था कि मैं निर्दोष हूं। छोटा तो राम का नाम भी जोरों से लेता था। बड़ा कहता था कि राम है ही कहां? अगर राम होता तो मुझ निरपराधी को क्यों फांसी दी जाती। यह सब सुनकर तो ऐसा मालूम देता है कि बड़ा भाई सचमुच निर्दोष हो।

विनोबा गोपालराव गुप्तजी से आज की फांसी पर देर तक विचार विनिमय होता रहा।

२१-१-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'भजन और कीर्तन' पढ़ा।

"वही भक्त-वत्सल प्रभु वही पतितपावन नाम।

विनोबा गोपालराव घनश्यामसिंहजी गुप्त पूनमचन्द रांका व महोदय के साथ 'मृत्यु' आदि पर विचार-विनिमय होता रहा। मैंने जल्दी में श्री घनश्यामसिंहजी के विचार पर थोड़ी समालोचना कर दी यह ठीक नहीं थी। इसपर बाद में विचार चलता रहा। श्री गुप्तजी ने तो उसे ठीक ही तौर से उदारतापूर्वक लिया।

२२-१-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'जीवन और शिक्षण' पढ़ा।

'तत् किं? तत् किं? तत् किं?' यह शंकराचार्यजी का पूछा हुआ सनातन सवाल अब दिमाग में चमककर चक्कर लगाने लगा था। पर पास जवाब था नहीं।

"साधन लंबा है। यह बात अन्धे को, उस चलने या धरती में प्रत्यक्ष ठोकर लगने के बाद मालूम होती है। आंखवाले को यह लंबा पहले दिखाई देता है।

२३-१-४१ नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में 'रोज की प्रार्थना' पढ़ा।

"हे प्रभो मुझे असत्य में से सत्य में ले जा। अन्धकार में से प्रकाश में ले जा। मृत्यु में से अमृत में ले जा।

२५-१-४१, नागपुर-जेल

"वर्षीं एकच पक्षी भिरभिरती। म्हणुं नको, हवाल, चाल चालवली।" बोरकर जी की इस रचना को विनोबा ने भली प्रकार गाकर बतलाया। अर्थ भी समझाया। आज की चर्चा का विषय था अगर मेरे सरीखा मनुष्य मलीन होकर मरना चाहे तो व्यवहार में यह किस प्रकार हो सकता है? चर्चा पूरी नहीं हो पाई। मेरी इच्छा है कि "मलीन व पवित्र" होकर मृत्यु को प्राप्त होऊं तो शांति से शरीर छूटेगा। वैसे भी मृत्यु का स्वागत करने की तो हमेशा ही तैयारी है। परन्तु इसमें कमजोरी का कारण विशेष है।

प्रार्थना में विनोबा ने जेल में डाक्टरों आदि का विरोध किया। 'ळ' 'ष' वर्ण की स्थिति समझाई।

२८-१-४१, नागपुर-जेल

पूनमचन्दजी से बातचीत। नागपुर में केसरबाई जैन (विधवा) ने, उम्र ४५, ४१ वर्ष चार-छः वर्ष पहले आमरण उपवास (संथारा) करके पैंतालीस दिन में शरीर छोड़ दिया। केवल गरम पानी लेती थी। केसरबाई के सन्तान वगैरह कोई नहीं थी।

उपवास के जरिये शरीर छोड़ने की प्रथा के बारे में विनोबा से अच्छी तरह विचार-विनिमय हुआ। इन्हें यह प्रथा पसन्द नहीं है। यह इतना अवश्य मानते हैं कि शरीर छोड़ने की इच्छा ही हो तो यह तरीका सबसे अच्छा समझा जा सकता है। त्याग तपश्चर्या के बारे में विनोबा का कहना था कि हम जैसा अभी जो जीवन बिता रहे हैं वह तपश्चर्या का जीवन समझा जा सकता है गीता के १७वें अध्याय के मुताबिक।

३१-१-४१ नागपुर-जेल

विनोबाजी पूनमचन्दजी गोपालराव से धार्मिक विचार-विनिमय। क्षमा के पास दण्ड-स्वामी का जाना व उसकी परीक्षा लेना कहां तक उचित था यह प्रश्न मैंने किया था।

१४४१ नागपुर-जेल
विनोबा से पुनर्जन्म कर्म पाप पुण्य पर विचार-विनिमय हुआ।

२४४१ नागपुर-जेल
शाम को विनोबा के साथ उनकी जीवनी लिखने के बारे में चर्चा होती रही।

४४४१ नागपुर-जेल
विनोबा गोपालराव से बातें। मैंने विनोबा से कहा कि अगर आप मेरी संपूर्ण जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार है तो आपकी देखरेख में मैं काम करने को तैयार हूं। मेरी कमजोरियां योग्यता अयोग्यता आदि देखकर मुझे काम सौंप दिया जाय। उन्होंने कहा "मुझे भी तो बापू ने खूंटे से बांध रखा है, मैं भी छूटना चाहता हूं। याने बन्धन से मुक्त होना चाहता हूं। आदि

६४४१ नागपुर-जेल
पू जाजूजी ने अखिल भारतीय चर्खा संघ की ओर से भाऊवाड़ी या सेवाग्राम में संस्था विद्यालय वगैरह के बारे में मेरी व विनोबा की राय पुछवाई थी। विचार-विनिमय के बाद हम दोनों की यही राय हुई कि जाजूजी की इच्छा पर ही यह सवाल छोड़ दिया जाय। वर्धा तालुका का भी यही विचार कर लें। महाराष्ट्र चर्खा संघ का व म भा चर्खा-संघ का भी।

८४४१ नागपुर-जेल
आज सुबह पूनमचन्द रांका को समझाने की कोशिश की उपवास न करने के बारे में। संतरे का रस भी उनके पास भेजा। उन्होंने नहीं लिया। विनोबा व मुझसे बिना पूछे उपवास शुरू कर दिये।

९४४१ नागपुर-जेल
आज उत्साह मालूम देता था। शाम को थोड़ी देर शतरंज भी खेली।

विनोबा त्रिवलाक गोपालराव महोदय आदि न भी भाग लिया।

१०-४४१ नागपुर-जेल

विनोबा से मित्र-धर्म मित्र-परिचय व उसकी आवश्यकता पर विचार-विनिमय। वही मित्र सच्चा मित्र हो सकता है जो आध्यात्मिक उन्नति मे व कमजोरियाँ निकालने में मदद करता रहता हो।

आज शाम को विनोबा की प्रार्थना में गया। श्री महावीरस्वामी (जैन तीर्थंकर) की आज जन्मतिथि थी। विनोबा ने उसपर सुन्दर प्रवचन किया।

११ ४ ४१, नागपुर-जेल

विनोबा से जेल से पत्र न भेजकर लेख के रूप में पुस्तक लिखकर भेजने के सम्बन्ध में चर्चा की। उन्हें पसन्द तो आई।

१३-४ ४१, नागपुर-जेल

पूनमचन्द रांका ने शाम को राष्ट्रीय सप्ताह का व्रत संतरे के रस से छोड़ा। वहां जाकर आया।

विनोबा से हीप-वर्क की वर्ई आदि पर विचार विनिमय। धूप में दुपहरे वक्त सिर पर कपड़ा रखकर दो बजे बाद घूमना ज्यादा हितकर है, ऐसी विनोबा की राय थी।

१४-४ ४१ नागपुर-जेल

विनोबा से शाहू के गीता-सम्बन्धी विचार पर बातचीत।

१५ ४ ४१ नागपुर-जेल

जेल-अधिकारी व सत्याग्रही मिलाई के या नहीं इस विषय पर बातें हुईं। मुझे तो अभी तक के व्यवहार से कोई खास शिकायत नहीं मालूम दी। विनोबा की राय भी मेरी राय से मिलती हुई है।

आज मेरा मन किससे किस प्रकार का संबंध मानना चाहता है?

पिता—बापूजी (गांधीजी) गुरु—विनोबा।
माता—मा व बा (कस्तूरबा)
भाई—बापूजी किशोरलालभाई
बहन—गुलाब गोमतीबहन
लड़के—राधाकिसन श्रीमन्नारायण राम
लड़कियां—चि. शान्ता (रानीबाला) मदालसा।
मित्र—श्री केशवदेवजी नेवटिया हरिभाऊ उपाध्याय
लड़के के समान—चि॰ चिरंजीलाल बड़जाते दामोदर मूंदड़ा पममाप
महोदय।

१७-४-४१ नागपुर-जेल

विनोबा व गोपालराव आये।

रामकृष्ण को पहली बार १ रुपया जुर्माना करके छोड़ दिया। दूसरी बार उसने फिर नालवाड़ी में सत्याग्रह किया तो गिरफ्तार कर लिया गया। गोपालराव ने बताया।

१८-४-४१ नागपुर-जेल

विनोबा से गो-सेवा-संघ के बारे में सुगनचन्द लुणावत की उपस्थिति में देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

२२-४-४१ नागपुर-जेल

विनोबा के आश्रम तक जाकर आये। आते-जाते समय काफी थकावट मालूम दी। इतनी पहले नहीं मालूम दी थी। विनोबा से 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के लेख व बापू के वक्तव्य पर विचार-विनिमय हुआ।

२३-४-४१ नागपुर-जेल

आज सुबह जल्दी तैयार हुए। एनिमा मालिश स्नान वगैरह से निपटकर सात बजे तैयार हो गये। पचास रोज के प्रयोग के बाद आज से खान-पान में परिवर्तन किया गया।

विनोबा विमलाल गोपालराव महोत्सव आदि में भी भाग लिया।

१०-४-४१, नागपुर-जेल

विनोबा से भिन्न-धर्म भिन्न-परिचय व उसकी आवश्यकता पर विचार-विनिमय। वही मित्र सच्चा मित्र हो सकता है जो आध्यात्मिक उन्नति में व कमजोरियां निकालने में मदद करता रहता हो।

आज शाम को विनोबा की प्रार्थना में गया। श्री महावीरस्वामी (जैन तीर्थंकर) की आज जन्मतिथि थी। विनोबा ने उसपर सुन्दर प्रवचन दिया।

११-४-४१, नागपुर-जेल

विनोबा से जेल से पत्र न भेजकर लेख के रूप में पुस्तक लिखकर भेजने के सम्बन्ध में चर्चा की। उन्हें पसन्द तो आई।

१२-४-४१ नागपुर-जेल

पूनमचन्द रांका ने शाम को राष्ट्रीय सप्ताह का व्रत संतरे के रस से छोड़ा। वहां जाकर आया।

विनोबा से हाथ-पैरों की दर्द आदि पर विचार-विनिमय। धूप में नंगे बदन सिर पर कपड़ा रखकर दो बजे बाद घूमना ज्यादा हितकर है ऐसी विनोबा की राय थी।

१४-४-४१, नागपुर-जेल

विनोबा से बापू के गीता-सम्बन्धी विचार पर बातचीत।

१५-४-४१ नागपुर-जेल

जेल-अधिकारी व सत्याग्रही मिलते हैं या नहीं इस विषय पर बातें हुईं। मुझे तो अभी तक के व्यवहार से कोई खास शिकायत नहीं मालूम दी। विनोबा की राय भी मेरी राय से मिलती हुई है।

आज मेरा मन किससे किस प्रकार का संबंध मानना चाहता है?

पिता—बापूजी (गांधीजी) गुरु—विनोबा।
माता—मा व बा (कस्तूरबा)
भाई—नाथजी किशोरलालभाई
बहन—गुलाब गोमतीबहन
लड़के—राधाकिशन श्रीमन्नारायण राम
लड़कियां—चि शान्ता (रानीबाला) मदालसा।
मित्र—श्री केशवदेवजी नेवटिया हरिभाऊ उपाध्याय
लड़के के समान—चिरंजीलाल बड़जाते दामोदर मूंदड़ा जगन्नाथ महोदय।

१७-४-४१ नागपुर-जेल

विनोबा व गोपालराव आये।

रामकृष्ण को पहली बार १ रुपया जुर्माना करके छोड़ दिया। दूसरी बार उसने फिर नालवाड़ी में सत्याग्रह किया तो गिरफ्तार कर लिया गया। गोपालराव ने बताया।

१८-४-४१ नागपुर-जेल

विनोबा से गो-सेवा-संघ के बारे में सुगनचन्द लुणावत की उपस्थिति में देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

२२-४-४१ नागपुर-जेल

विनोबा के आश्रम तक जाकर आये। आते-जाते समय काफी थकावट मालूम दी। इतनी पहले नहीं मालूम दी थी। विनोबा से 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के लेख व बापू के वक्तव्य पर विचार-विनिमय हुआ।

२३-४-४१ नागपुर-जेल

आज सुबह जल्दी तैयार हुए। एनिमा, मालिश, स्नान वगैरह से निपटकर सात बजे तैयार हो गये। पचास रोज के प्रयोग के बाद आज से खान-पान में परिवर्तन किया गया।

१४-५-४१ नागपुर-जेल

पारी रात प्राय नींद नहीं आई। विचार चालू हो गये। प्रयत्न करने पर भी नींद नहीं आई। वर्धा-जेल में भेज देवें तो मुझे थोड़ी तकलीफ रहेगी परन्तु बा दास बापूजी जानकी आदि की तकलीफ और चिंता कम हो जायगी।

आज दिन में स्वास्थ्य ठीक रहा। बापूजी इतना प्रेम क्यों करते हैं ? विनोबा भी! बापूजी को मेरी इस बीमारी के कारण दो-तीन रोज बहुत बेचैनी रही। बा दास कहते थे कि वह यहां मुझे देखने आने के लिए भी तैयार थे परन्तु मेरे मना करने और बा दास के कहने पर कि जरूरत नहीं है नहीं आये।

रात को बहुत देर तक मेरे मन में यही चलता रहा कि मैं पापी हूं, मैं विश्वासघाती हूं क्या ? मैंने मेरा असली रूप बापू-विनोबा को अभी तक नहीं बताया ? एक मन कहता था बता तो कई बार दिया है। दूसरा फिर कहता था नहीं विलकुल साफ तौर से सामने नहीं रखा है। रखने के विचार से बापू के पास कई बार जाना हुआ परन्तु वहां पूरा मौका न मिलने से अधूरा ही रख पाया। जो पत्र बापू को पवनार से तीन वर्ष पहले भेजा था वह भी पेशावर में उन्हें नहीं मिला ऐसा वह कहते थे। बाद में पत्र की नकल तो उन्हें वर्धा आने पर देदी थी इत्यादि। जब जब मौका लगेगा तब एक बार आत्महत्या के विचार की बात व मन की असली स्थिति खूब स्पष्ट रूप से कहूंगा तभी मानसिक शान्ति मिलेगी अन्यथा हृदय व मन का युद्ध चलता रहेगा। मैंने यह प्राकृतिक चिकित्सा का उपचार भी मुख्यतः मानसिक शांति की दृष्टि में रखकर ही स्वीकार किया है अन्यथा ज्यादा उत्साह इस समय नहीं था। क्योंकि पूना में एक प्रयोग हो चुका था। परमात्मा से प्रार्थना तो की है देखें क्या परिणाम होता है। इस जन्म में सद्बुद्धि प्रदान हो जायगी व स्वच्छ पवित्र और वैराग्य जीवन बिताते हुए देह छूटेगा तो ही समाधान हो सकेगा अन्यथा जैसे कर्म किये हैं, वैसा फल भोगना ही भाग में है। ईश्वर की माया अपरंपार है। विनोबा से तो जल्दी ही यहां बात कर लूंगा। देखें कोई राजमार्ग निकलता है क्या ? कोई शुद्ध अंतःकरणवाला भाई या बहन—बहन हो तो

२१-४-४१, नागपुर-जेल

बापू के तीन दिन के उपवास व अहमदाबाद बम्बई के दंगों के बारे में बापू की व्यथा आदि जानकर चिन्ता होना स्वाभाविक था। ईश्वर सहायक है।

२७-४-४१, नागपुर-जेल

कल बापू ने एमरी के उत्तर में जो वक्तव्य दिया वह विनोबा के साथ सुना। थोड़ी चर्चा की। हम सभीको बहुत पसन्द आया। बापू के हृदय का दुःख प्रकट होता था। बहुत ही स्पष्ट था।

चि. राम से भावी कार्यक्रम पर ठीक विचार-विनिमय देर तक होता रहा। उसकी इच्छा सेवा-कार्य की ओर दिखाई दी। मैंने भी उसी ओर उसका उत्साह बढ़ाया है।

विनोबा की प्रार्थना में श्री कुलकर्णी (कम्युनिस्ट) से इन तीन दिनों में बातचीत व परिचय ठीक हो गया।

२९-४-४१, नागपुर-जेल

श्री भारद्वाज आई. जी. पी. व सुपरिंटेंडेंट गुप्ता आज भी आये।

जेल में राजनैतिक कैदियों को सूत कातने का काम तीनों वर्गों को देने की चर्चा। विनोबा का 'सी' वर्ग के राजनैतिक कैदियों से सम्बन्ध रखने के बारे में मैंने कहा। 'सी' वर्ग की मुलाकात के लिए झोंपड़ी (कुटी) बनाने को भी कहा। मुझे सिवनी जाना हो तो २४ घंटे में जा सकता हूँ। यरवदा (पूना) जाना हो तो दरख्वास्त देनी होगी। शायद सरकार छोड़ दे, वहां न भेजे ऐसा उन्होंने कहा। तब मैंने कहा कि दरख्वास्त मैं नहीं दूंगा। मुझे छूटना नहीं है, इत्यादि।

११-५-४१, नागपुर-जेल

धूप से बुखार आना शुरू हुआ। १०४° तक गया। पेशाब में जलन व रुकावट बहुत ही ज्यादा बढ़ गई। बेचैनी बहुत बढ़ गई। इतनी ज्यादा तकलीफ मेरी याद में पहले कभी नहीं हुई।

२९-५-४१ नागपुर-जेल

नींद साधारण आई। आज विनोबाजी के स्नान तक सुबह जाकर आया। वापस आने के बाद थकावट मालूम दी। बाद में चक्कर भी आया। कमजोरी ज्यादा थी। शायद कल से दस्त नहीं लगा इसलिए या कोई और कारण हो।

१-६-४१, नागपुर-जेल

श्री अग्निभोज महोदय से समझाकर कह दिया कि भूख-हड़ताल वगैरह के बारे में विनोबा के कहने के मुताबिक ही चलना उचित है।

विनोबा की आंख में पानी बहना शुरू है। मुझे से तो अच्छा ही है, आंख के इलाज के लिए थोड़ी चिन्ता है।

२-६-४१ नागपुर-जेल

सुपरिटेंडेंट श्री इनामदार सुबह साढ़े बारह बजे के करीब आये व पचमढ़ी के चीफ-सेक्रेटरी का तार बताया। उसमें मुझे मेडिकल ग्राउण्ड पर रिहा करने की सूचना थी। लिखा है पत्र भेज रहे हैं। बाद में सुपरिटेंडेंट कहने लगे उन लोगों को मेडिकल जानकार की हैसियत से मेरी इच्छा न होते हुए भी अपनी जिम्मेदारी के ख्याल से ऐसी सिफारिश करनी पड़ी। देर तक बातचीत। शाम को भी देर तक बैठे रहे। कल सवेरे ५॥ बजे जाने का निश्चय रहा।

३-६-४१ नागपुर-जेल

पू. विनोबा तथा अन्य मित्र लोग मिलने आये। ५॥ बजे के करीब जेल-फाटक पर मित्रों से मिलकर जेल के कागजों पर सही करके भारी हृदय से जेल के फाटक से बाहर आया। वर्धा से जानकीदेवी, दामोदर, राधाकिसन आये थे। सुपरिटेंडेंट श्री वस्ता के घर, उनकी माता व लड़कियों से मिला। उन्होंने हार वगैरह पहनाये। सुपरिटेंडेंट से जेल की बहनों, विनोबा की आंख, भन्साली, शिवाजी व भावों के बारे में कहकर मोटर से वर्धा रवाना हुआ। वर्धा, बजाजवाड़ी बंगले पर होते हुए सेवाग्राम में बापू को प्रणाम निवेदन किया। जेल के समाचार कहे।

समझा सका। अब मुझे आशा हो गई कि वह मेरी स्थिति पूरी तौर से समझ गये हैं। परमात्मा ने चाहा तो मार्ग निकल आयगा।

१३-७-४१ वर्धा

बापू के पास। विनोबा व काकासाहब के साथ अखाड़े के खेल व लाठी तलवार आदि सिखाने के सम्बन्ध में चर्चा हुई। बम्बई हिन्दी प्रचार के बारे में काकासाहब व नानावटी की भूल पर बापू ने उलाहना दिया।

१४-७-४१ वर्धा

विनोबा का सत्याग्रह मालवाड़ी में ६ बजे शाम को हुआ। पौन घंटा ठीक भाषण हुआ। बाद में विनोबा गिरफ्तार कर लिये गए।

१५-७-४१ वर्धा

वर्धा-जेल में पू. विनोबा से एक घंटे तक ६.१ से ७-१५ तक मुलाकात। खूब बातें हुईं। उनसे अमृत सुना। मदालसा से बातें।

८-८-४१ शिमला

पू. विनोबा से बात हुई। उन्हें तुम्हारे व्यवहार आदि से संतोष था। मैंने सुना वह तुमसे विशेष प्यार करते हैं। पढ़ाने के वास्ते समय भी खूब देते हैं। तुम सचमुच भाग्यवान हो। अन्य नवयुवकों को तुमसे ईर्ष्या होनी चाहिए।

(रामकृष्ण को लिखे पत्र से)

११-८-४१ शिमला

सुबह घूमते समय सरदार उमरावसिंह मजीठिया से बापू की गीता व विनोबा का परिचय कराया।

शाम को ताराहेवी की ओर घूमने गया। मुंशीजी नहीं आ सके। मिस बेरिल साथ आईं। सुबह बापू के परिचय का हाल कहा। बाद में अहिंसा व विनोबा का परिचय कराया। मेरे विचार पर चर्चा होती

२५ १ ४१ वर्धा

सेवाग्राम जाते समय मोटर-रथ में 'विनोबा-जीवनी' के कुछ पन्ने पढ़े। बापू के पास मैं, राजाजी, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी, गोविन्द वल्लभ पंत, गंगाधर राव देशपाण्डे, सरदार, महादेवभाई, किशोरलालभाई गये। राजनैतिक विचार-विनिमय होता रहा।

१ ११ ४१ पवनार

सुबह प्रार्थना। विनोबा की जीवनी पूरी पढ़ डाली। थोड़े में ठीक ही है। ऊपर की कोठरी में रहना व सोना शुरू किया। अच्छा लगा।

३ ११ ४१ पवनार

पवनार नदी पर घूम आने के बाद मालिश करके पू. राजेन्द्रबाबू के साथ धाम-धारा में स्नान किया। राजेन्द्रबाबू के मन में जो थोड़ी चिन्ता है वह शाम को छत पर घूमते हुए सुनी।

४ ११ ४१ पवनार

विनोबा की जीवनी (शिवाजीजी की लिखी) वल्लभस्वामी ने पढ़कर सुनाई। कई लोगों ने सुनी व नोट भी किया।

५ ११ ४१ पवनार

सुबह तीन बजे उठा। प्रार्थना के बाद नामदेव से बैलतक गो-सेवा-संघ के बारे में बातचीत होती रही। महादेवी बहन भी थी। नामदेव के बारे में अच्छा असर हुआ। महादेवी के साथ टेकड़ी तक घूमकर आया। महादेवी में एक प्रकार की वीरता (बहादुरी) तो अवश्य है। भजन भी है। मेरे साथ रहने के बारे में भी वल्लभस्वामी की राय लेकर निश्चय करना ठीक समझा गया, क्योंकि विनोबा तो (जेल में) मुलाकात लेते नहीं है।

६ ११ ४१ पवनार

सुबह प्रार्थना के बाद श्री वल्लभ व महादेवी के साथ छत पर घूमते हुए

म विनोद। इतवार को शाम को ६।। बजे जाहिर सभा राजेन्द्रबाबू सभापति गौ-सेवा-संघ आदि की चर्चा।

७-१२-४१, गोपुरी

विनोबा के साथ बैलगाड़ी में सेवाग्राम गया-आया।

जाते समय गौ-सेवा-संघ की चर्चा हुई। आते समय राजनैतिक परि बापू ने अपना वक्तव्य बताया। प्यारेलाल की पेस की घटना नहीं।

रवीन्द्रनाथ टैगोर, उनकी स्त्री आदि कलकत्ता से आये। गांधी-चौक में सभा हुई। विनोबा सुन्दर बोले। प्रफुल्लबाबू साधारण राजेन्द्रबाबू ने ठीक सुलासा किया।

११-१२-४१ गोपुरी

४ बजे प्रार्थना। विनोबा से गो-सेवा-संघ की योजना के बारे में देर तक चर्चा-विचार हुआ।

श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर के ट्रस्ट की मीटिंग हुई। ट्रस्टी—जमनालाल बाबासाहब बापुजकर, राधाकृष्ण जानकीबाई, पुंडलीक। निमन्त्रित—पू. विनोबा गुलाटीजी चिरंजीलाल बोले बाले गंगाबिसन शिवनारायण गोकुल।

देर तक विचार-विनिमय होता रहा। जिम्मेवारी से काम अभी तक नहीं हुआ इसका दुःख भी हुआ। बाद में विनोबा व गुलाटीजी की राय निजी मंदिर हटाने की नहीं रही मेरी भी।

१५-१२-४१ गोपुरी

४ बजे उठा। प्रार्थना राधाकृष्ण के साथ नालवाड़ी गया। मेरी विचार पद्धति में व विनोबा की पद्धति व राधाकृष्ण की में जो मतभेद है उसपर विनोबा से विचार-विनिमय होता रहा। उसपर विनोबा विचार करके बाद में सूचना करके समझावेंगे।

१६-१२-४१ गोपुरी-नागपुर-मुरगांव

गुरुवार को रवाना बैलगाड़ी से। हरिभाऊजी जोशी, महादेवी साथ में।

देर तक बातें होती रहीं। वल्लभस्वामी की राय रही कि कुछ समय साथ रखकर देखिये।

मामाजी से महाराष्ट्र के बारे में राजेन्द्रबाबू बापूजी के प्रोग्राम की चर्चा हुई। पवनार के बंगले के बारे में नामदेव की वृत्ति वल्लभ ने समझाई।

१०-११-४१, गोपुरी पवनार

सुरगांव व पवनार से पैदल आना-जाना करीब ८ मील। यहां श्री वल्लभस्वामी के साथ बसन्तकुमार बिड़ला, सरला, कमला, शान्ति सोम श्रीनिवास गोरी बिठोबा के साथ गांव का निरीक्षण। बहुत-से घरों में चर्खे नियमित चलते थे। बाद में वहां की स्थिति समझी। दो लड़कों के भजन देर तक हुए। भोजन-पार्टी—बसन्त सरला की सगाई के निमित्त बापकर चमारों को पोळी व चून (बेसन) दिया गया। मस्तक-व्यायाम चर्चा। बहनों के चर्खे कातते-कातते गाये हुए भजन बहुत अच्छे लगे। चमारों के मुहल्ले अच्छे लगे। एक पड़ घरट को देखा। उसकी स्थिति ऊंचे दर्जे की मालूम दी। मामाजी से बातचीत हुई।

५-१२-४१, गोपुरी

नालवाड़ी में विनोबा से मिलना। वल्लभ स्वामी से सुरगांव के बारे में बातचीत।

पू. विनोबा व गोपालराव के साथ बैलगाड़ी में सेवाग्राम गया। विनोबा ने गो-सेवा-संघ के व संचालक-मण्डल के सदस्य होना स्वीकार कर लिया। आते-जाते रास्ते ठीक बातें हो गईं। पू. बापूजी से भी विनोबा व बीरसाहब के प्रोग्राम के बारे में ठीक-ठीक बातें हुईं।

वरोरा में बालकोबा-विनोबा का दो वर्ष बाद आकर्ष मिलन हुआ। बालकोबा ने उनसे संस्कृत के उच्चारण व अर्थ पर ही देर तक पूछताछ की। आदर्श बन्धु व्यवहार!

६-१२-४१ गोपुरी

प्रार्थना। अग्निहोत्र व मोहन से बात। विनोबा के पास नालवाड़ी

पवनार—विनोबा से हरिराम जोशी का परिचय कराया। उनकी स्थिति पर विचार। विनोबा ने वल्लभस्वामी से कहा पैसा यह लबाड़ (दगाबाज) है। मजूरी अनाज में देने का रिवाज चालू करने को कहा। मैंने उसके दोष कहे। बाद में विचार हुआ। मुझे भी यह पसन्द आया। खाने जितना अनाज बाकी के लिए चिट्ठी या पैसे। महादेवी बहन के बारे में मेरी विनोबा की व वल्लभ स्वामी की राय हुई कि वह महिला-आश्रम में सेवा का कार्य करें। वह अभी तैयार नहीं होती है। कहती है कि वह विनोबा के पास या सुरगांव वल्लभस्वामी के पास ही रह सकती है।

पवनार में भोजन-विश्राम। सुरगांव में कताई बहनों के सुन्दर भाव-पूर्ण भजनों से सुख मिला। हरिराम जोशी से ठीक-ठीक बातें हो गईं।

१९.१२.४१ गोपुरी-वर्धा

इन दिनों पू. विनोबा के प्रवचन बहुत ही भावपूर्ण हो रहे हैं। सुरगांव में भी ठीक संगठन जम रहा है। (जानकीदेवी को लिखे पत्र से)

२१.१२.४१, गोपुरी

श्री बालुंजकर व हरिजन-मंदिर प्रवेश की योजना पढ़कर सुनाई। उसपर विनोबा की व मेरी सही होगी। श्री भागवत व देशपांडे ने इस कार्य के लिए आज प्रातः मुहूर्त कर दिया।

२९-१२-४१, गोपुरी

दक्षिण भारत में बापू की दृष्टि लोगों को समझाने के लिए विनोबा की राय में ज्यादा दिन ठहरने की आवश्यकता नहीं। मकर-संक्रांति के दिन १४ जनवरी को गो-सेवा-संघ व गोरक्षण मंडल की ओर से सार्वजनिक सभा में भाषण देना विनोबा ने स्वीकार किया। बाद के भी के संबंध में देर तक विचार-विनिमय होता रहा। राधाकृष्ण शिवनारायण राम नारायणजी से गो-सेवा-संघ के बारे में विचार-विनिमय।

विनोबा हरि से बातचीत व विनोद। शिक्षण-शाला में विनोबा का प्रवचन।

श्री माधवराव देशपांडे से हरिजन-मंदिर व कुएं की रिपोर्ट सुनी।

१-१-४२, पोनुरी

पू. बापू कांग्रेस से अलग हुए, यह सब पढ़ा। थोड़ा दुःख मालूम दिया। परन्तु विचार करने पर लगा कि ठीक ही हुआ।

१-१-४२, पोनुरी

विनोबा से मिला। थोड़ी बातचीत। यहां पाटोजी मिले। जेल से छूट कर आये हैं। उन्होंने जेल में जो उपवास किया वह समझ में नहीं आया।

७-१-४२, पोनुरी

विनोबा से डेयरी-एक्सपर्ट श्री कोठावाला के पत्र पर काफी विचार-विनिमय। राजेन्द्रबाबू का स्टेटमेंट, वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव, बापू का स्टेटमेंट व मैंने जो स्टेटमेंट दिया इन सबपर विचार-विनिमय। यहीं नालवाड़ी में प्रार्थना।

९-१-४२, पोनुरी

पोनुरी में ग्राम-सेवा-मण्डल की साधारण सदस्य की सभा हुई। मैंने भी भाग लिया। गो-सेवा-संघ के बारे में राधाकृष्ण की पूरे समय के लिए मांग की गई। मंजूर नहीं हुई। ओंकार व विट्ठल जीवन-निर्वाह, रुपयों के बदले जीवन-यात्रा का सामान उपेक्षित (टी बी) खादी व रेशम, ग्राम-सेवा मण्डल के सदस्यों का भत्ता आदि पर विचार।

—

२०-१-४२, पोनुरी

सुरगांव—महावीरप्रसादजी पोद्दार और मैं यहां से पवनार तक बैलगाड़ी में गये। पवनार से सुरगांव पैदल जाना-आना ६ मील। सीतारामजी सेकसरिया, मृदुलाबहन, जानकीदेवी, कमला (रेवाड़ीवाली) नर्मदा, अर्जुन साथ में थे। सुरगांव की स्थिति इन लोगों ने समझी। भोजन विश्राम मंदिर में बच्चों के साथ बहनों के सुन्दर भावपूर्ण भजन हुए। महा मन को ठीक

तीसरा खण्ड

संस्मरण

जमनालाल बजाज के परिवार व सदस्यों व विभागों-संबंधी

११ १ ४२, गोपुरी

सेवाग्राम—विनोबा, राधाकृष्ण के साथ गौ-सेवा-संघ की बातें करते हुए बैलगाड़ी में गया-आया। बापू से बातें, गौ-सेवा-संघ-कांफ्रेंस के संबंध में घनश्यामदासजी बिड़ला से सेवाग्राम के आस-पास खेती व कुएं की योजना पर बातें। उन्होंने अपने विचार कहे।

नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की सभा। विनोबा बोले।

१ २ ४२, गोपुरी

बजाजवाड़ी—गो-विशारद (एक्सपर्ट) की सभा में ठीक विचार विनिमय हुआ।

कांफ्रेंस ठीक २ बजे शुरू हुई।

बापू का भाषण भावपूर्ण और दुख से भरा हुआ विस्तार के साथ हुआ। सदस्य बनने पर जोर।

विनोबा का भाषण विद्वत्तापूर्ण। गो-सेवा-संघ के नामकरण का खुलासा व महत्व। सदस्यों की शंकाओं का तथा अन्य बातों का स्पष्टीकरण।

२-२ ४२, गोपुरी

गो-सेवा-संघ कांफ्रेंस २ से ५ तक विनोबाजी के सभापतित्व में हुई। सभा का कार्य समाप्त हुआ। प्रथम सभा के हिसाब से ठीक रही।[1]

●

[1] ११ फरवरी १९४२ को जमनालाल बजाज का देहावसान हो गया।

१

'विनोबा—छोटे भाई जैसे'

जानकीदेवी बजाज

विनोबाजी को पहले-पहल मैंने साबरमती में देखा था। वह तथा उनके भाई बालकोबा दिनभर गड्ढे आदि खोदते रहते थे। हमने सुन रखा था कि वे श्रम करके डेढ़-दो आने में अपना खर्च चलाते थे। कम बोलते थे। गीता का वर्ग लेते थे। उनके इस वर्ग में स्त्रियां भी जाती थीं। विषय को समझाते वह बहुत अच्छा थे। समय के बड़े पाबन्द थे। कोई विद्यार्थी एक मिनट की देरी से आता तो उसे वर्ग से बाहर खड़ा रहना पड़ता था।

पढ़ाते समय वह जोर से बोलते—इतनी जोर से कि पसीना-पसीना हो जाते थे।

इस पहली बार की मुलाकात में ही हमारे परिवार पर, और खास-कर मुझपर, उनका असर पड़ गया—यहांतक कि एक दिन जब हमारे बड़े लड़के कमल की शिक्षा आदि की बात जमनालालजी ने उठाई और मुझसे पूछा कि तुम कमल को कैसा बनाना चाहती हो तो भावुकता में मेरे मुंह से निकल गया—

"मैं तो उसे विनोबा जैसा फकीर बनाना चाहती हूं।

पर जमनालालजी तो बड़े गंभीर विचार के थे। वह योंही भावुकता में बोले जानेवाले थे। मैं जो बोल गई, उसके गंभीर अर्थ को समझाते हुए उन्होंने कहा—

"शब्द तो बड़े-बड़े बोलना सीख गई है, पर उनके अर्थ भी तुम्हें पता है ?

हमारे परिवार में तीन पीढ़ी के बाद लड़का हुआ था। उसपर सबों-का बड़ा लाड़-प्यार होना स्वाभाविक था। यद्यपि मैंने भावुकतावश ही बालक को फकीर बनाने की बात कही थी तथापि मेरे मन में जरूर ऐसा लगता था कि मेरे बच्चे भी भीष्म जैसे ब्रह्मचारी और विद्वान बनें। इसी

१

'विनोबा—छोटे भाई जैसे'

जानकीदेवी बजाज

विनोबाजी को पहले-पहल मैंने साबरमती में देखा था। वह तथा उनके भाई बालकोबा दिनभर बढ़ई आदि बोलते रहते थे। हमने सुन रखा था कि वे श्रम करके दो-दो आने में अपना खर्च चलाते थे। कम बोलते थे। गीता का वर्ग लेते थे। उनके इस वर्ग में स्त्रियां भी जाती थीं। विषय को समझाते वह बहुत अच्छा थे। समय के बड़े पाबंद थे। कोई विद्यार्थी एक मिनट भी देरी से आता तो उसे वर्ग से बाहर खड़ा रहना पड़ता था।

पढ़ाते समय वह जोर से बोलते—इतनी जोर से कि पसीना-पसीना हो जाते थे।

इस पहली बार की मुलाकात में ही हमारे परिवार पर, और खास कर मुझपर, उनका असर पड़ गया—यहांतक कि एक दिन जब हमारे बड़े लड़के कमल की शिक्षा आदि की बात जमनालालजी ने उठाई और मुझसे पूछा कि तुम कमल को कैसा बनाना चाहती हो तो भावुकता में मेरे मुंह से निकल गया—

"मैं तो उसे विनोबा जैसा फकीर बनाना चाहती हूं।

पर जमनालालजी तो बड़े गंभीर विचार के थे। वह थोड़ी भावुकता में थोड़े आनेवाले थे। मैं जो बोल गई उसके गंभीर अर्थ को समझाते हुए उन्होंने कहा—

"शब्द तो बड़े-बड़े बोलना सीख गई है पर उनके अर्थ भी तुम्हें पता है ?

हमारे परिवार में तीन पीढ़ी के बाद लड़का हुआ था। उसपर सबों-का बड़ा लाड़-प्यार होना स्वाभाविक था। यद्यपि मैंने भावुकतावश ही बालक को फकीर बनाने की बात कही थी तथापि मेरे मन में जरूर ऐसा लगता था कि मेरे बच्चे भी भीष्म जैसे ब्रह्मचारी और विद्वान बनें। इसी

कारण जब समय आया तो हमने अपने सब बच्चों—कमलनयन से राम-कृष्ण तक को विनोबा के पास पढ़ने के लिए रख दिया। लड़कों को ही नहीं, पढ़ने-खेलने वाली लड़कियों को भी निःसंकोच विनोबा के हवाले कर दिया। विनोबाजी के कड़े अनुशासन में जहां लड़कों तक का रहना कठिन होता था लड़कियों को रखना आसान नहीं था और विनोबाजी तो लड़के और लड़कियों में कोई भेद रखते भी नहीं थे।

मेरे जीवन पर जिन तीन महापुरुषों की गहरी छाप पड़ी उनमें जमनालालजी और बापूजी तो अब रहे नहीं। विनोबाजी हैं। जमनालालजी और बापूजी के चले जाने के बाद जो रीतापन अनुभव हुआ उससे विनोबाजी के और निकट जाना आवश्यक हो गया। वह तो छोटे भाई के जैसे लगते हैं। उनके पास जाने में मुझे जरा भी संकोच नहीं होता। मैं उनके साथ अनेक स्थानों पर घूमती रही। विनोबा का खान-पान रहन-सहन चलना-फिरना सब मुझे मनभाता लगता है। उनके साथ रहने से मुझे जीवन में सार्थकता महसूस होती है।

एक बार मैंने सपने में देखा कि मेरा छोटा भाई, जिसे गुजरे काफी अरसा हो गया था मुझे हाथ हिला-हिलाकर बुला रहा है। सामने पर मुझे ऐसा लगा कि भाई के रूप में मौत ही मुझे बुला रही है। मेरे मन में यह वहम घर कर गया कि इन बारह महीनों में ही मैं मर जाऊंगी। तब मैंने तय किया कि विनोबाजी के पास ही रहना चाहिए ताकि अगर मौत आई तो विनोबाजी के सामने मरते समय शांति से उसका सामना कर सकूं। और अपने बीमार पोतों और बहू के मना करते-करते मैं विनोबा के पास चली गई। बारह महीने विनोबाजी के साथ बिताये। बारह महीने बीत जाने के बाद मुझे ऐसा लगा मानो मैं मृत्यु से बच गई!

शादी के बाद मेरी छोटी लड़की ओम लाल-पीले कपड़े पहनकर विनोबाजी को नमस्कार करने गई तब वह बोले आओ होलिकाजी।

मैंने कहा, "यह खादी के बाद आई है। आपने इसे होलिका कैसे कहा?"

बोले, "लाल रंग तो होलिका का है न?"

मैंने पूछा, "फिर अच्छा रंग कौन-सा है?"

"हरा रंग अच्छा है, क्योंकि इसमें सृष्टि का स्वाभाविक सौन्दर्य भरा है।" उन्होंने कहा।

मेरी बात बन गई। मैंने अपनी तकली पर कते सूत के ढाई गज लम्बे दुपट्टे बनवाये। कोई चालीस बने। उन्हें मैंने हरा रंगवाया और बापूजी के अस्थी-प्रवाह के दिन यानी १२ फरवरी को एक दुपट्टा विनोबाजी को तथा एक तुकडोजी महाराज को भेंट किया। विनोबाजी ने उस हरे दुपट्टे को दुपहरी की धूप में सिर पर ओढ़ लिया। जब मैंने तुकडोजी से उस दुपट्टे के हरे रंग तथा तकली के सूत का इतिहास बतलाया तो उन्होंने उस दुपट्टे को गले में लपेट लिया। विनोबाजी ने तो अपनी सर्वोदय-यात्रा तथा तेलंगाना की यात्रा में उस दुपट्टे का अच्छी तरह से उपयोग किया। मुझे ऐसा लगता है कि फुरसत में तकली से काते सूत विनोबाजी के सुहाने हरे रंग और मेरे प्रेम से भेंट करने के कारण उस दुपट्टे ने यह स्थान पाया। बाद में तो विनोबाजी की चद्दर आदि सब हरे रंग के हो गये।

एक बार जमनालालजी ने विनोबाजी से कहा कि राम-लक्ष्मण की तो सब पूजा करते हैं, पर तपश्चर्या तो भरत की ही अधिक थी, लेकिन भरत का मंदिर कहीं देखने में आता नहीं। इसके कुछ समय बाद जमनालालजी चल बसे। पवनार में एक दिन विनोबाजी को गड्ढा खोदते-खोदते वहां भरत-भेंट की मूर्ति मिल गई। विनोबा को जमनालालजी की इच्छा का स्मरण हो आया। उन्होंने वहीं एक छोटे-से मकान में उस मूर्ति की स्थापना करवी और स्वयं वहांपर रामायण का पाठ करने लगे। पाठ इतनी तन्मयता से और मधुर आवाज में करते कि पसीने में तर हो जाते। उस अद्भुत दृश्य को देखने के लिए गांव तथा आस-पास गांव के लोग इकट्ठे हो जाते।

'चावल-मुक्ति'-आंदोलन के दौरान एक बंगाली लड़की ने मुझे एक अंगूठी

लाकर दी। मैंने वह अंगूठी विनोबाजी की अंगुली में पहना दी। एक बहन ने मंगल-सूत्र भेजा। जब मैंने उसे भी विनोबाजी के गले में पहनाया तो वह उनकी दाढ़ी में उलझ गया। सब हँसने लगे। लड़कों को तो यह बात अचरज-भरी लगी कि इतने गम्भीर संत से विनोद करने की हिम्मत भी किसी की हो सकती है। जयप्रकाशजी ने कहा कि मैं यह नहीं जानता था कि विनोबाजी से बात इतना मजाक कर लेती है। वहां करीब २८ तोला सोना इकट्ठा हुआ। विनोबाजी से पूछा कि इसका क्या किया जाय? वह बोले, "बहनों के प्रेमपूर्वक दिये हुए दान का उपयोग जीवन की कमी को पूरा करने के लिए किया जाय। इसलिए कुओं का निर्माण जरूरी समझा गया क्योंकि मनुष्य तो जैसे-तैसे पानी प्राप्त कर लेता है, लेकिन पशु बिना पानी के बहुत कष्ट पाते हैं। इसीलिए उनकी सेवा कुओं के द्वारा अधिक होगी और भूमि भी हरी-भरी बनेगी। इस तरह तभी से यह कूपदान का विचार चल पड़ा। विनोबा का सुझाव था कि प्रत्येक वादी में एक कुएँ के बजाय दो कुएँ दान में दिये जायें क्योंकि इस अवसर पर दो कुटुंबों का संबंध जुड़ता है।

उन्हीं दिनों विनोबाजी कांचन-मुक्ति की बात पर बहुत जोर देते थे इस कारण उन्हें पैसों का आकर्षण नहीं था। जब कोई उनको रुपया-पैसा देता तो वह वापस कर देते। बिहार में भूदान-यज्ञ में किसी बहन ने लाकर एक रुपया और दूसरी ने पांच रुपये दिये तो उन्होंने वापस कर दिये। बखरी में जयप्रकाशजी की बहन सौ रुपये का नोट लाईं तो वह भी वापस कर दिया। जिस दिन बहनें जेवर देतीं तब वह मुझे कूपदान के लिए सौंप देते। उनके बहनों का यह सच्चा त्याग है। पर सब बहनें जेवर दें यह संभव नहीं था। तब क्या किया जाय? रांची में एक बहन सात तोला सोना और दूसरी बहन पांचसौ रुपये लाईं। मैंने सोचा कि विनोबाजी रुपये तो लेंगे नहीं फिर क्या करूँ? पर मन में आया कि एक बार देकर तो देखूं। मैं उन बहनों को लेकर गई। विनोबाजी ने रुपये लेकर मेरे हाथ में रख दिये। इस तरह मैं कूपदान में अब रुपये भी लेने लगी। जब कृष्णदासभाई गांधी मिले तो बोले कि आप तो जबर्दस्त निकलीं जो उनको पैसा लेना सिखा दिया। लेकिन मैं सोचती हूं कि मेरा सिखाना-विखाना कुछ नहीं। यह तो परिस्थितियों के अनुसार अपने विचारों को ढालना विनोबाजी की अपनी विशेषता है।

विनोबाजी भक्तों की याद करके हमेशा भावावेश में आ जाते हैं। जमनालालजी को भी वह भक्त ही मानते थे। जमनालालजी की मृत्यु से उनको असह्य दुख हुआ किंतु विनोबा ने दूसरे दिन के ही भाषण में कहा "मुझे खुशी है कि जमनालालजी जैसे थे वैसी ही मृत्यु उन्होंने पाई। ऐसी मृत्यु भक्तों को भी मिलनी कठिन है। वह रहते तो अपने लिए तो अच्छा था पर फिर ऐसी आदर्श मृत्यु मिलती ही इसका क्या पता!

अपने पिछले राजस्थान के दौरे के समय विनोबाजी जमनालालजी के जन्मस्थान काशीकाबास भी गये। हवेली में उनके स्वागत के लिए बजाज परिवार की बहू-बेटियां चारणियों की पोशाक पहने सिर पर घड़े लेकर खड़ी थीं मेरे हाथ में आरती की थाली थी। जैसे ही विनोबाजी द्वार पर आये मैंने कुंकुम की जगह नीचे से बालू उठाकर उससे उनके माथे पर तिलक किया। मैंने कहा कि इसी बालू में जमनालालजी खेले थे। विनोबाजी एकदम गंभीर हो गये। ऊपर के कमरे में जमनालालजी का एक चित्र लगा था— उसे देखते ही वह गद्‌गद्‌ हो गये। केशरभाई, हरिभाऊजी भीमनजी आदि सब वहां उपस्थित थे। हमारी इच्छा थी कि मौन सभा ही हो पर विनोबाजी से न रहा गया। बड़े ही धैर्य के साथ अपनेको सम्हालते हुए वह बोले "जानकीबाई ने कहा कि मैं उनके परिवार का ही आदमी हूं। यह जमनालालजी की ही विशेषता थी कि वह मुझे अपने परिवार का बना सके। राजेन्द्रबाबू के साथ वह ही मुझे सीकर लाये थे और तभी काशी बास भी ले गये थे। यह दूसरी बार यहां आना हुआ है।

एक चारण बहन को जमनालालजी के पिता कनीरामजी ने मुंह बोली बेटी बनाया था। जमनालालजी उसे बहन मानते थे। राधाकृष्णजी विनोबाजी को उस बहन से मिलाने ले गये। विनोबाजी से मिलकर वह बोली जमनालाल आपवाला हो गो ई गांव में जन्म्यो। काशीकाबास रा नाव काम गयो जो ऐसा-ऐसा लोगां का ई गांव में पग पड़ गया।"

लाकर दी। मैंने वह अंगूठी विनोबाजी की अंगुली में पहना दी। एक बहन ने मंगल-सूत्र भेजा। जब मैंने उसे भी विनोबाजी के गले में पहनाया तो वह उनकी दाढ़ी में उलझ गया। सब हँसने लगे। कइयों को तो यह बात अचरज-भरी लगी कि इतने गम्भीर संत से विनोद करने की हिम्मत भी किसीको हो सकती है! जमनालालजी ने कहा कि मैं यह नहीं जानता था कि विनोबाजी से आप इतना मजाक कर लेती हैं। वहाँ करीब २८ तोला सोना इकट्ठा हुआ। विनोबाजी से पूछा कि इसका क्या किया जाय? वह बोले "बहनों के प्रेमपूर्वक दिये हुए दान का उपयोग जीवन की कमी को पूरा करने के लिए किया जाय। इसलिए कुओं का निर्माण जरूरी समझा गया, क्योंकि मनुष्य तो जैसे-तैसे पानी प्राप्त कर लेता है, लेकिन पशु बिना पानी के बहुत कष्ट पाते हैं। इसीलिए उनकी सेवा कुओं के द्वारा अधिक होगी और भूमि भी हरी-भरी बनेगी। इस तरह तभी से यह कूपदान का विचार चल पड़ा। विनोबा का सुझाव था कि प्रत्येक शादी में एक कुएं के बजाय दो कुएं दान में दिये जायं क्योंकि इस अवसर पर दो कुटुम्बों का संबंध जुड़ता है।

उन्हीं दिनों विनोबाजी कांचन-मुक्ति की बात पर बहुत जोर देते थे, इस कारण उन्हें पैसों का आकर्षण नहीं था। जब कोई उनको रुपया-पैसा देता तो वह वापस कर देते। बिहार में भूदान-यज्ञ में किसी बहन ने आकर एक रुपया और दूसरी ने पांच रुपये दिये तो उन्होंने वापस कर दिये। पवनार में [illegible] की बहन सौ रुपये का नोट लाईं तो वह भी वापस कर दिया। लेकिन जब बहनें जेवर देतीं तब वह मुझे कूपदान के लिए सौंप देते। भोले बहनों का यह सच्चा त्याग है। पर सब बहनें जेवर दें यह संभव नहीं था। तब क्या किया जाय? रांची में एक बहन सवा तोला सोना और दूसरी बहन पचास रुपये लाईं। मैंने सोचा कि विनोबाजी रुपये तो लेंगे नहीं फिर क्या करें? पर मन में आया कि एक बार देकर तो देखें। मैं उन बहनों को लेकर गई। विनोबाजी ने रुपये लेकर मेरे हाथ में रख दिये। इस तरह मैं कूपदान में अब रुपये भी लेने लगी। जब कृष्णदासभाई गांधी मिले तो बोले कि आप तो जबर्दस्त निकलीं जो बाबा को पैसा लेना सिखा दिया। लेकिन मैं सोचती हूं कि मेरा सिखाना-विखाना कुछ नहीं। यह तो परिस्थितियों के अनुसार अपने विचारों को ढालना विनोबाजी की अपनी विशेषता है।

विनोबाजी भक्तों की याद करके हमेशा भावावेश में आ जाते हैं। जमनालालजी को भी वह भक्त ही मानते थे। जमनालालजी की मृत्यु से सबको असह्य दुःख हुआ किन्तु विनोबा ने दूसरे दिन के ही भाषण में कहा "मुझे खुशी है कि जमनालालजी जैसे थे वैसी ही मृत्यु उन्होंने पाई। ऐसी मृत्यु भक्तों को भी मिलनी कठिन है। वह रहते तो अपने लिए तो अच्छा था पर फिर ऐसी आदर्श मृत्यु मिलती ही इसका क्या पता!

अपने पिछले राजस्थान के दौरे के समय विनोबाजी जमनालालजी के जन्मस्थान काशीकावास भी गये। हवेली में उनके स्वागत के लिए बजाज परिवार की बहू-बेटियां भागनियों की पोशाक पहने सिर पर घड़ लेकर खड़ी थीं मेरे हाथ में आरती की थाली थी। जैसे ही विनोबाजी द्वार पर आये मैंने कुंकुम की जगह नीचे से धूल उठाकर उससे उनके माथे पर तिलक किया। मैंने कहा कि इसी धूल में जमनालालजी खेले थे। विनोबाजी एकदम गंभीर हो गये। ऊपर के कमरे में जमनालालजी का एक चित्र लगा था— उसे देखते ही वह गद्गद् हो गये। देवरभाई हरिभाऊजी श्रीमन्जी आदि सब वहां उपस्थित थे। हमारी इच्छा थी कि मौन सभा ही हो पर विनोबाजी से न रहा गया। बड़े ही धैर्य के साथ अपनेको सम्हालते हुए वह बोले "जानकीबाई ने कहा कि मैं उनके परिवार का ही आदमी हूं। यह जमनालालजी की ही विशेषता थी कि वह मुझे अपने परिवार का बना सके। राजेन्द्रबाबू के साथ वह ही मुझे खींचकर लाये थे और तभी काशी-कावास भी ले गये थे। यह दूसरी बार यहां आना हुआ है।

एक चारण बहन को जमनालालजी के पिता कनीरामजी ने मुंह बोली बेटी बनाया था। जमनालालजी उसे बहन मानते थे। राधाकृष्णजी विनोबाजी को उस बहन से मिलाने ले गये। विनोबाजी से मिलकर वह बोली जमनालाल भाग्यवान हो गये हैं याद में अम्मो। काशीकावास का काम याद [illegible]

रखता था। दो-तीन महीने बाद एक दिन वर्षा का मौका देखकर विनोबाजी ने कहा "अरे, वर्षा में कहां जाते हो ? यहीं खा लो। उन्होंने कहा तो इन्कार करते नहीं बना और वहां खा लिया। जब खा ही लिया तो घर जाना भी छूट गया और फिर तो आश्रम में पाखाना-सफाई से लेकर रसोई आदि के सब कामों में हिस्सा लेने लगा।

विनोबाजी की खास बात यह थी कि खाना वह सबको अपने हाथों से परोसते थे। किसको किस चीज की कितनी जरूरत है किसकी प्रकृति कैसी है, इसका वह पूरा ध्यान रखते थे। प्रायः देखा जाता है कि भोजन को लेकर हर जगह तनाव खिंचाव राग-द्वेष और मनोमालिन्य हो जाता है। लेकिन विनोबाजी के सान्निध्य में उनके 'मातृहस्तेन भोजनं' से सब तरफ संतोष था।

धुनाई के लिए ताना करने और माड़ी लगाने के काम को पावन कहते हैं। आश्रम में सबसे कठिन काम पावन का ही था। उसमें सबके धीरज और सहनशक्ति की कसौटी हो जाती थी। कातने में जो टूटे तारों को बांधते नहीं थे और ऐसे ही चिपका देते थे। इससे बड़ी परेशानी होती थी। जिस दिन पावन करना होता था उस दिन सब आश्रमवासियों को सूचना कर दी जाती थी। सुबह से लगाकर दोपहर और फिर शाम तक विनोबाजी उसमें लगे रहते थे। एक दिन तो उन्होंने कह दिया कि यह काम पूरा होने पर ही भोजन करेंगे। उस दिन वह लगभग बाहर घंटे उसमें लगे रहे।

विनोबाजी का जीवन दृढ़ता सूक्ष्मता और सहनशीलता का प्रतीक रहा है। जो भी काम उन्होंने किया उसमें वह पूरी तरह जुट गये अंतिम सीमा तक उसे पहुंचाया और एक आदर्श प्रस्तुत किया। एक दिन परंधाम पवनार में उन्होंने कुए पर रहट चलाया। आश्रम के तीन-चार साथी मिलकर चलाते थे। बैल बड़ा कड़ा था। विनोबाजी ने तय किया कि रहट चलाते हुए संपूर्ण गीता का पाठ करेंगे। उस दिन उन्होंने पूरे सातसौ चक्कर लगाये। बिना किसी काम के भी अगर आदमी गोल-गोल घूमता रहे तो सातसौ चक्कर नहीं लगा सकेगा और उसे चक्कर आने लगेंगे। किंतु विनोबाजी ने तो रहट चलाते हुए चक्कर लगाये। स्पष्ट है कि शरीर का भान रखकर ऐसा काम नहीं हो सकता। परमेश्वर की भक्ति का स्रोत जिस हृदय

२

विनोबा मेरे गुरु

रामकृष्ण बजाज

सन् १९२२-२३ की बात होगी। पूज्य काकाजी (जमनालालजी बजाज) मुझे मगनवाड़ी में पूज्य विनोबाजी के पास ले गये। गीता का अध्ययन करने की मेरी बड़ी इच्छा थी। गीता के संबंध में मैं इतना ही जानता था कि यह बहुत अच्छा ग्रंथ है। काकाजी ने कहा कि विनोबाजी गीता बहुत अच्छी तरह सिखा सकेंगे। विनोबाजी ने कहा कि गीता अवश्य पढ़ायेंगे परंतु एक शर्त रखी। रोज आधा घंटा कताई करनी होगी। मेहनत करने से तो मैं नहीं घबराता था, काफी श्रम कर सकता था, किंतु मेरे सम्मान को यह शर्त ठीक न लगी। गीता पढ़ाने और कताई करने में क्या संबंध? पहले तो मुझे यह सब जंचा नहीं, लेकिन गीता तो मुझे सीखनी ही थी और विनोबाजी से अच्छा व्यक्ति मुझे मिलता कहां? आखिर मैंने यह शर्त मान ली। लेकिन मेरी भी एक शर्त थी। मैंने विनोबाजी से कहा कि मैं आपके यहां का पानी नहीं पीऊंगा। उस समय जात-पांत व छुआछूत के संस्कार मेरे अंदर प्रबल थे ही और विनोबाजी के यहां तो ऊंच-नीच का या जाति-पांति का कोई भेद नहीं होता था। मुझे यह ठीक नहीं लगता था। मैं अपना पानी अलग रखना चाहता था। विनोबाजी ने यह शर्त स्वीकार कर ली और मेरा काम शुरू हो गया।

काकाजी की इच्छा मुझे समाज-सेवा के लिए तैयार करने की थी। वह चाहते थे कि मैं विनोबाजी के पास ही रहूं। मेरा मन डगमगाता रहता था। लेकिन एक दिन विनोबाजी ने शाम की प्रार्थना के बाद "यह हमारे [illegible] दुनिया" भजन गाया। जिस तन्मयता और हार्दिकता से उन्होंने यह भजन सुनाया और उसका विश्लेषण किया, उसका मनपर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि मैंने दूसरे ही रोज से आश्रम में रहना तय कर लिया। आश्रम में मैं रह तो गया किंतु भोजन मैं घर जाकर ही करता था। पानी भी अलग ही

रखता था। दो-तीन महीने बाद एक दिन वर्षा का मौका देखकर विनोबाजी ने कहा "अरे, वर्षा में कहां जाते हो ? यहीं खा लो। उन्होंने कहा तो इन्कार करते नहीं बना और वहां खा लिया। जब खा ही लिया तो घर जाना भी छूट गया और फिर तो आश्रम में पाखाना-सफाई से लेकर रसोई आदि के सब कामों में हिस्सा लेने लगा।

विनोबाजी की खास बात यह थी कि खाना वह सबको अपने हाथों से परोसते थे। किसको किस चीज की कितनी जरूरत है, किसकी प्रकृति कैसी है इसका वह पूरा ध्यान रखते थे। प्रायः देखा जाता है कि भोजन को लेकर हर जगह तनाव विवाद राग-द्वेष और मनोमालिन्य हो जाता है। लेकिन विनोबाजी के सान्निध्य में उनके 'मातृहस्तेन भोजन' से सब तरफ संतोष था।

बुनाई के लिए ताना करने और मांड़ी लगाने के काम को पांजन कहते हैं। आश्रम में सबसे कठिन काम पांजन का ही था। उसमें सबके धीरज और सहनशक्ति की कसौटी हो जाती थी। कातने में लोग टूटे तारों को जोड़ते नहीं थे और ऐसे ही चिपका देते थे। इससे बड़ी परेशानी होती थी। जिस दिन पांजन करना होता था उस दिन सब आश्रमवासियों को सूचना कर दी जाती थी। सुबह से लगकर दोपहर और फिर शाम तक विनोबाजी उसमें लगे रहते थे। एक दिन तो उन्होंने कह दिया कि यह काम पूरा होने पर ही भोजन करेंगे। उस दिन वह लगभग बारह घंटे उसमें लगे रहे।

विनोबाजी का जीवन दृढ़ता सूक्ष्मता और सहनशीलता का प्रतीक रहा है। जो भी काम उन्होंने किया उसमें वह पूरी तरह जुट गये और अंतिम सीमा तक उसे पहुंचाया और एक आदर्श प्रस्तुत किया। एक दिन परंधाम पवनार में उन्होंने कुएं पर रहट चलाया। आश्रम के तीन चार साथी मिलकर चलाते थे। रहट बड़ा भारी था। विनोबाजी ने तय किया कि रहट चलाते हुए संपूर्ण गीता का पाठ करेंगे। उस दिन उन्होंने पूरे सातसौ चक्कर लगाये। बिना किसी काम के भी अगर आदमी गोल-गोल घूमता रहे तो सातसौ चक्कर नहीं लगा सकेगा और उसे चक्कर आने लगेंगे। किंतु विनोबाजी ने तो रहट चलाते हुए चक्कर लगाये। स्पष्ट है कि शरीर का भान रखकर ऐसा काम नहीं हो सकता। परमेश्वर की भक्ति का स्रोत जिस हृदय

से अछूता हो और जिसकी आत्मा विश्व के साथ समरस हो, वही शरीर से ऊपर उठकर शरीर को वश कर सकता है। उस दिन विनोबाजी ने स्वयं कहा, "ऐसा लगता था कि चक्कर खाकर गिर पड़ता। लेकिन रामनाम ने संभाला। अब विष्णु सहस्रनाम पूरा करने की इच्छा है।"

सन् १९३४ में मैं जेल से छूटकर आया। उस समय बिहार में भूकंप का संकट था। काकाजी बिहार गये हुए थे। मैंने काकाजी को पत्र लिखा कि मैं जेल से छूटकर आ गया हूँ अब क्या करना है? मैं सोचता था कि काकाजी मुझे बिहार बुला लेंगे। मेरी भी इसके लिए तैयारी थी। इसी समय आश्रम के प्रचारक-मंडल की एक सभा हुई। मेरा उससे प्रत्यक्ष संबंध नहीं था। साथियों के कहने से मैं सहज ही सभा में चला गया। नये अध्यक्ष और मंत्री का चुनाव होना था। अध्यक्ष बाबाजी मोघे बनाये गए। मंत्री के लिए कई नाम आये। विनोबाजी वहाँ बैठे ही थे। काफी चर्चा के बाद उन्होंने एकाएक मुझसे पूछा "तुम क्या करते हो?" मैंने बताया कि अभी तो जेल से छूटकर आया हूँ और आगे क्या करूं, इसके लिए काकाजी से पूछा है। हो सकता है कि वह बिहार बुला लें।

विनोबाजी ने कहा "ठीक है अभी तक तो कोई काम तय नहीं किया है न?" मैंने कहा "जी नहीं।" वह बोले "तो इसीको मंत्री बना दो।" और मैं मंत्री बना दिया गया। बाद में काकाजी का बिहार आने के लिए पत्र आया तो इन्कार लिखना पड़ा। वहाँ तो मैं एक दर्शक मात्र था और यहाँ मुझपर मंडल की जिम्मेदारी आ पड़ी। तबसे अबतक ग्राम-सेवा-मंडल की अनेक प्रवृत्तियाँ शुरू हुईं, उसका विस्तार हुआ, आरोहण-अवरोहण हुए। पच्चीस वर्ष बाद, पिछले वर्ष ही उसकी जिम्मेदारी के पद से मुक्त हो सका हूँ। विनोबाजी की नजर कितनी अचूक होती है, उसका यह एक नमूना है। इस संस्था में जो साथी आये और जुड़े वे भी पक्के ही रहे। संस्था के बाहर के काम में लगने पर भी छूट नहीं सके। ग्राम-सेवा-मंडल में जो-जो प्रवृत्तियाँ शुरू हुईं उनके पीछे कोई योजनाएं नहीं थीं। धीरे-धीरे साथी जुट गये और पूरक बनते गये काम होता गया। व्यक्तियों और उनके गुणों से ही यह संस्था विस्तार कर सकी है।

१९४९ की बात है। गो-सेवा-संघ ने वनस्पति यानी जमाये हुए तेलों के खिलाफ आवाज उठाई थी। कांग्रेस की वर्किंग कमेटी से निवेदन करने पर वर्किंग कमेटी ने उसमें रंग मिलाने की सिफारिश की और यह भी कहा कि नई फैक्टरियों के लिए नये लाइसेंस न दिये जायें। इस सिलसिले में उस समय के कृषि-मंत्री श्री जयरामदास दौलतराम ने भारत सरकार की ओर से वनस्पति के प्रश्न को हल करने के लिए दिल्ली में एक मीटिंग बुलाई। उसमें पांच प्रतिनिधि वनस्पति उद्योगवालों के पांच प्रतिनिधि गो-सेवा-संघ के और सरकार के सारे संबंधित अधिकारी थे। यह मीटिंग श्री जयरामदासजी के सभापतित्व में हुई। गो-सेवा-संघ की ओर से श्री विनोबाजी श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू, श्री सतीशचन्द्र दासगुप्त बाबा हरदेवसहाय और मैं—ये पांच प्रतिनिधि उपस्थित थे। दोनों ओर से अपनी कठिनाइयां और अपना पक्ष रखा गया। पूज्य विनोबाजी ने संक्षेप में गो-सेवा-संघ की दृष्टि रखी। मीटिंग से उठकर हम लोग नीचे आये। आते ही उन्होंने कहा "मेरा यह स्थान नहीं है। मेरा स्थान जनता में है। मैं यहां सेक्रेटेरियेट में पहली बार आया हूं और इसे अंतिम ही मानना चाहिए।

इस घटना के बाद कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने वनस्पति में रंग मिलाने की अनिवार्यता की सिफारिश की। कांग्रेस-महासमिति ने भारी बहुमत से वनस्पति पर रोक लगाने का प्रस्ताव किया। मंत्रिमंडल में चर्चाएं हुईं, लाखों लोगों ने वनस्पति के खिलाफ विरोध पत्र भेजे लेकिन डिब्बों पर "जमाया तेल" शब्द लिखाने के अलावा कुछ भी नहीं हो सका और दिन-दिन वनस्पति का उत्पादन बढ़ता ही जा रहा है। आज जब मैं इस विषय पर सोचता हूं तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि बारह साल पहले की उस की भविष्यवाणी आज भी ज्यों-की-त्यों अपनी जगह पर कायम है।

१९५४ की बात है। श्री गोपाल चोरे महाराज ने मंगलगांव में गो-रक्षा-परिषद का अधिवेशन किया। उसका अध्यक्ष पूज्य बापूजी को बनाया। बापूजी ने उस नाम को उठाया और आश्रम में आकर गो-

रक्षा मंडल की स्थापना की। कहा कि प्रत्येक सदस्य वे ही हों जो केवल गाय के ही दूध घी के इस्तेमाल करने का व्रत लें। इस समय के पदाधिकारियों में से पूज्य विनोबाजी एक हैं। पू. काका-साहब कालेलकर और पू. जानकीदेवी बजाज के पत्र भी इसी समय के लिखे हुए हैं। वर्धा में उस समय गाय का घी-दूध मिलने में काफी कठिनाई होती थी। इसलिए उन्होंने अपने एक भक्त को पन्द्रह-बीस गाएं आश्रम की ओर से खरीद दीं। विनोबाजी सदा से ही प्रयोग-प्रधान रहे हैं। आश्रम में जो दूध आता, उसका मक्खन निकाला करते और उसका कितना प्रतिशत घी निकला इसका हिसाब रखते। उन्होंने देखा कि कभी सेर भर दूध में ४ तोला, ६ तोला और कभी १ तोला मक्खन निकलता और वह भी कभी सफेद तो कभी पीला। ऐसा क्यों होता है इसका कारण ढूंढने के लिए खोज शुरू हुई। श्री रामदासभाई ने एक दिन उसे ग्वाले का भाई को भैंस के दूध में पानी मिलाते पकड़ा और विनोबाजी को बताया कि यह दूध आश्रम को दिया जाता है। विनोबाजी को बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने बाहर का दूध लेना बंद कर दिया। उनकी इस घटना के फलस्वरूप आश्रम में गाएं बढ़ने लगीं और आज बढ़ते-बढ़ते गो-सेवा-संघ एवं गो-सेवा का प्रश्न कोई चर्चा बना। यहां स्थानीय नस्ल-सुधार का प्रयोग और गोरस-भंडार का प्रयोग चल रहा है। बछड़ी-पालन, खाद-निर्माण तथा पशु-चिकित्सा, कृषि-औजार आदि अनेक प्रयोग हुए। इन सबका प्रेरणा-स्रोत पूज्य विनोबाजी का वह गो-प्रेम रहा जो आज भी परमात्मा के अनेक रूपों के बीच अखंड चल रहा है।

दिल्ली में संविधान-सभा का अधिवेशन चल रहा था। भारत का संविधान बनाया जा रहा था। संविधान में गो-रक्षा के मूलभूत अधिकार की धारा स्वीकार करने का प्रश्न था। पूज्य बापूजी शायद से गोवध-बंदी के पक्ष में नहीं थे। उस समय में गोवध-बंदी के प्रश्न पर पूज्य विनोबाजी की राय ली गई। उन्होंने स्पष्ट और निश्चित शब्दों में सलाह दी कि गोवध-बंदी का कानून आवश्यक है। उनकी राय इतनी वजनदार थी कि इधर दिल्ली में किसी तरह का संकोच नहीं रह गया। उनकी प्रेरणा से

सैकड़ों तार दिल्ली पहुँचे और पूज्य दादा धर्माधिकारी जो उस समय संविधान-सभा के सदस्य थे बता रहे थे कि करीब-करीब हरेक के हाथों में यह तार था और उसे गो-सेवा-संघ तथा विनोबाजी का आदेश मानकर हम सब लोगों ने उस धारा के पक्ष में मत दिया और उसे स्वीकार किया। मैंने एक नहीं अनेक प्रसंगों पर देखा है कि गो-वध-बंदी के संबंध में उनके मन में बहुत तीव्रता है। गो-सेवा के प्रति इतनी लगन और गहराई से उसकी आवश्यकता महसूस करनेवाला अन्य व्यक्ति मैंने नहीं देखा। उनके द्वारा ईश्वर-स्मरण की जो नाम-माला बनी है, उसमें भी गो शब्द आया है। सर्वोदय की अर्थ-रचना को भी गो-केंद्रित अर्थ-व्यवस्था कह सकते हैं। मेरे चित्त में गो-सेवा की जो कुछ भावना है, वह उन्हीं की देन है। पूज्य ईश्वरभाई की गो-सेवा के प्रेरणा-स्रोत भी पूज्य विनोबाजी ही हैं। उनका गो-सेवा का चिंतन आज भी सतत चालू है।

●

एक घटना याद आती है। इस घटना ने मेरा जीवन सुखी बना दिया। मैं तब आठ-दस साल की थी। 'गौराई' का पर्व था। हम पाँच सात लड़कियाँ वर्ग में थीं। उस दिन मैंने हरे रंग का छींट का पेटीकोट पहन रखा था। वैसे घर में पू. काकाजी सादे कपड़े ही सिलवाते थे लेकिन मेरी जिद के कारण यह हरा पेटीकोट काकाजी ने मेरे लिए सिलवा दिया था। बड़े चाव से उसे पहनकर मैं वर्ग में गई। बस यह हरा रंग पू. बाबा के लिए अपनी बात कहने का निमित्त बन गया। बोले "हा कोणत्या जंगल चा जनावर आला आहे?"[1] मुझे बड़ा संकोच हुआ। मन खट्टा हो गया। बुरा भी लगा। सबके सामने पू. बाबा से यह सुनने को मैं तैयार नहीं थी। मेरे बाल-मन को ठेस लगी।

फिर बाबा कुंकुम आदि को लेकर बोले "आखिर कुंकुम क्यों लगाते हैं? छोटी उम्र में टीका लगाने के पीछे यह भाव है कि हमने स्नान आदि कर लिया है। इससे तो अच्छा है एक चिट्ठी माथे पर चिपका दी जाय। शादी के बाद टीका इसलिए लगाया जाता है कि उसे सौभाग्य-चिह्न माना गया है। टीका लगाने का अर्थ है कि मेरे पति हैं मैं सौभाग्यवती हूँ। लेकिन पति के माथे पर पत्नीवाला होने का टीका रहता है क्या? पति को यह दरसाने की जरूरत क्यों नहीं? सारा जिम्मा बहनों ने ही लिया है क्या? रंग वे पहनें चूड़ियाँ वे पहनें कुंकुम वे लगावें ये सब तो बंधन हैं। चूड़ियाँ बेड़ियाँ हैं। सौभाग्य यह सब करने में ही है क्या? पुरुष के लिए यह सारे सौभाग्य कहाँ गये? कुंकुम लगाना ही है तो आनंद के लिए लगायें। और फिर ये विदेशी होते हैं कुंकुम कीड़े मारकर बनाया जाता है चूड़ियाँ कारखानों में बनती हैं। दूसरे लोग उन्हें बनाते हैं। पराये हाथों पर अपना सौभाग्य निर्भर हो—कैसी अजीब बात है! अपना सौभाग्य तो अपने हाथ में होना चाहिए। बनाओ हाथ-बने सूत की चूड़ियाँ मंगल-सूत्र। हमारा सौभाग्य कारखानेवाला कैसे सम्हालेगा?

इसके बाद मिर्च-मसाले चाय के दूध-घी आदि पर भी बातें होती रहीं। इन सबका मनपर तात्कालिक प्रभाव क्या पड़ा होगा, ठीक याद नहीं। घर पर आते ही सबसे पहले वह पेटीकोट निकाल फेंका कुंकुम पोंछ

[1] यह किस जंगल का जानवर आया है?

मुझे विशेष स्मरण नहीं। लिखाई-पढ़ाई की दृष्टि से मैं 'गंवार' रही यह मैं मानती हूं और इसका मुझे रंज भी है। एक बात याद आती है। बाबा ने मुझे 'गीताई' का एक अध्याय नित्य कण्ठस्थ करने को कहा था। यह काम मैं खूब तल्लीनता से करती और रोज सुबह एक अध्याय बाबा को सुनाती। लेकिन नये अध्याय के समय घबराहट होती। मन-ही-मन प्रार्थना किया करती—हे भगवान् पाठ सुनाते समय कोई मेहमान या मिलनेवाला विनोबाजी के पास आ जाय या कोई गपशप ही छिड़ जाय ताकि पाठ पक्का करने को एक दिन और मिल जाय मुझे। बाबा के उलाहने का इतना डर जमा रहता था मन में।

वैसे मेरे बाल-मन को उनका परिचय इस रूप में हुआ कि 'यह विनोबाजी भले आदमी हैं।

घर का बाजार आदि का सारा काम मैं ही किया करती थी। आश्रम से शहर काफी दूर था और रास्ता एकदम सुनसान। बाजार से लौटते समय मेरे पास काफी सामान हो जाता था। मैं रास्ते में रुक-रुककर आराम से घर पहुंचती। विनोबाजी अक्सर मुझे घूमते हुए मिलते और सामान उठाने में थोड़ी-बहुत सहायता कर दिया करते। लेकिन बाद में तो यह नियम-सा बन गया कि यह 'भले आदमी विनोबा' मुझे रास्ते में आकर मिलते और मेरा बोझ काफी हलका कर देते। मैं भी आशा से निश्चित जगह उनकी राह देखती। मुझे लगता है कि वह मेरा बोझ हलका करने की सोचकर ही आया करते थे। आज जब इस बात को सोचती हूं तो मेरा दिल गद्गद् हो जाता है। मैं अर्जुन तो हूं नहीं लेकिन फिर भी स्मरण हो आता है कि अर्जुन को भी भगवान का विश्व-रूप देखने पर कहना पड़ा था—

"समान मानी अविनीत भावें जसा मनस्वा होय बाधीव मारी।
न जाणता हा महिमा तुझा जी। प्रेमें प्रमादें बहुबोल बोलें।"

●

आपकी महिमा को न समझकर प्रेम तथा प्रमाद में आपको कृष्ण, सखा आदि नामों से संबोधन करना मेरा अविनय ही था।

४

अगर आज बापूजी और काकाजी होते !

कमला नेवटिया

पूज्य विनोबाजी से परिचय तो कम-से-कम पैंतीस चालीस वर्षों से है। वह तब बजाजवाड़ी के पीछे बाग के बंगले में रहते थे। छोटी-सी उनकी संस्था चलती थी। उनके चार आजन्म ब्रह्मचारी थे। मुझे बराबर ख्याल है कि विनोबाजी तब बहुत गंभीर रहते थे। हंसी मुंह पर झलकती ही न थी। फिर चेले भी ऐसे ही गंभीर चेहरों से रहते थे। जैसे गुरु वैसे ही चेले हैं, अभी उनका साथ निभता है। उन दिनों मेरा तो भूलकर भी विनोबाजी के पास जाने का मन नहीं होता था।

आज जहां महिला-आश्रम है, वहां विनोबाजी दस-बारह साल रहे होंगे। वहां छत के ऊपर प्रार्थना होती थी। काकाजी अक्सर विनोबाजी की प्रार्थना में जाने को कहते थे। परंतु शाम को मेरी तो बगीचे में जाने की इच्छा होती थी। काकाजी जब भी वर्धा रहते और शाम को कोई खास कार्यक्रम न रहता तो विनोबाजी की प्रार्थना में ही जाने का उनका मन होता। पहले पहुंचते तो उनके पास बैठने का मौका मिलता। बहुत कम लोग उस समय विनोबाजी के पास जाते थे। विनोबाजी को शायद विशेष आना-जाना अच्छा भी नहीं लगता था। वहां भी विनोबाजी रहते काफी गंभीर वातावरण रहता। मुझे लगता कि आखिर ये वर्धा क्यों रहने लगे? और जब देखो तब शाम को घूमने-फिरने के समय भी काकाजी ऐसी जगह ले जाते हैं, जहां कोई मौज भी न कर सके। उस समय तो मुझे विनोबाजी जरा भी अच्छे नहीं लगते थे। काकाजी ने कई बार मुझे समझाया कि विनोबाजी के पास दस-पन्द्रह महीने रहो तो उनसे काफी सीखने को मिलेगा। वे बहुत विद्वान तथा संस्कारी व्यक्ति हैं। पर मैंने तो साफ इन्कार कर दिया। वहां पांच मिनट भी रहना मुझे बेंत से भी अधिक भारी लगता था। भाई कमल काकाजी के कहने से विनोबाजी के

चक्कर में आ गया था। कोई चार-पाँच साल उनके आश्रम में रहा होगा। चक्की पीसना पानी भरना रोटी बनाना अनाज चुनना आदि सभी कार्य हाथ से करो तब खाओ, यह उनका ध्येय था। ८॥-९ बजे सोना ४-४॥ बजे उठना। हिमालय में रहकर तपस्या करने वाले जैसे कठिन नियम थे। ये नियम संन्यासियों को लागू होते हैं, पर विनोबाजी ने तो बच्चों को भी ऐसे कठोर नियम सिखा दिये—बाहर में न जाओ मां-बाप से न मिलो, यह मत करो वह मत करो आदि। बच्चे आखिर ये नियम कैसे पाल सकते थे ? विनोबाजी को उस समय सांसारिक ज्ञान मेरी समझ से थोड़ा भी नहीं था।

सच बात यह है कि जबतक मनुष्य गृहस्थ न हो वह व्यावहारिक रूप से कुछ नहीं सोच पाता। बीवी-बच्चों के चक्कर में फंसे रहने से मनुष्य का दिमाग ठीक से रहता है। ब्रह्मचारी लोगों में तो एक प्रकार की सनक रहती है। सीधी भाषा में उसे 'मिरजापुरी लकड़ी' ही कहिये। गृहस्थ मनुष्य कितना भी कड़क क्यों न हो समयानुसार अपने नियमों को बेंत की तरह झुका लेता है।

दुनिया के साथ कैसे बोलना-चालना यह व्यावहारिक गुण बापूजी में थे। मनुष्य की खूबी इसीमें है कि वह ऐसे विचारों का प्रचार करे जो अधिक-से-अधिक व्यावहारिक हों। बापूजी हंसने के समय हंसना काम के समय काम करना चर्चा के समय गंभीर रहना डांट के समय खूब कड़क, यानी जैसा समय वैसा रूप बदल लेते थे। पर विनोबाजी तो उस समय मेरी समझ में चौबीसों घंटे गंभीर ही रहते थे। पत्थर पिघले तब इनके विचार पिघलें। ऐसे व्यक्ति के पास जाने को किसका मन करे ?

पूज्य काकाजी हमेशा विनोबाजी से कहा करते थे कि आप बहुत विद्वान हैं, आपमें काफी शक्ति है। यदि आप सार्वजनिक सभाओं में भाषण दें तो उससे लोगों को काफी लाभ होगा। लेकिन वह बरसों तक बाहर में ही नहीं आये। एकांत में अध्ययन करते रहे। जो साथ रहते थे उनको पढ़ाते रहे। लोगों में आना-जाना उन्हें पसंद न था। बचपन से संन्यासियों की तरह ही रहते थे।

पर अब तो उनका स्वभाव बिलकुल ही बदल गया है। चेहरे पर मुस्कुराहट रहती है और समय पर हँसी-मजाक भी कर लेते हैं। बच्चों से प्यार रहता है। वह सर्वगुण-संपन्न हो गये हैं। इतना बड़ा भूमिदान-यज्ञ आरंभ किया कि उसकी आजतक किसीको कल्पना भी न थी। पैदल चलकर देहातों में भूमि-दान का इतने अच्छे ढंग और इतनी तेजी से काम किया कि किसी ने कभी सोचा भी न था कि ऐसा हो भी सकता है। किसानों को तो उन्होंने जीवन-दान ही दे दिया।

पता नहीं एकदम यह परिवर्तन कैसे हो गया? अब तो वह हिंदुस्तान के हृदयों में हैं। आज पू. बापूजी और काकाजी होते तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहता। उनके सामने विनोबाजी काफी दबे-सूखे से रहे, पर जो भूमिदान का जो चमत्कार इन्होंने करके दिखाया शायद ही कोई दूसरा कर सकता। काफी बड़ी शक्ति इनके अंदर छिपी हुई थी। उसका अच्छी तरह से उपयोग हो रहा है।

हरेक मनुष्य को अपनी शक्ति का जितना भी हो सके अच्छे-से-अच्छा और ज्यादा-से-ज्यादा सदुपयोग करना चाहिए। इसमें अपना जीवन तो सार्थक है ही और न जाने कितनों का भला हो सकता है। हमेशा अपने जीवन की दृष्टि अच्छी बनाये रखने की कोशिश करते रहना चाहिए। इसमें अपना भला होगा और देश का भी, यही विचार पूज्य विनोबाजी के जीवन से सहज लिये जा सकते हैं।

ठीक नहीं। उसमें मोह है और हिंसा भी।

मैंने उसी आवेश में कहा, "बापूजी ने भूल की है, यह कहनेवाले आप कौन?

उन्होंने उसी सहजता से जवाब दिया, "बापू को लाखों लोग मिले हैं तथा एक-से-एक महान् विभूति और आत्माएं मिली होंगी। यदि बापू उन्हें नहीं पहचान पाये या पहचानकर भी लिखते समय भूल की हों तो उससे उन लोगों की महानता कम तो नहीं हो जाती। हमें स्पष्ट ही समझना चाहिए कि बापू ने स्नेह या मोह के कारण मेरे प्रति काफी कुछ लिख दिया है। उसमें भूल है, उसे सहेजकर रखने की जरूरत क्या?

मैंने दोहराया, "भूल क्यों कहते हैं? बापू ने समझ-बूझकर ही लिखा होगा।

विनोबाजी ने धीरज के साथ कहा, "मान लिया उन्होंने जो लिखा वह सत्य ही है तो उससे मुझे लाभ क्या? यदि कुछ हो सकता है तो घमंड ही। जिससे अपना कुछ लाभ न हो, उसे रखने से मतलब?

मैंने फिर कहा, "बापू जैसे महापुरुष की लिखी हुई चीज, भले ही वह आप ही के बारे में क्यों न हो, वह केवल आपके लिए नहीं, दुनिया के लिए है—उसे फाड़ने का आपको क्या अधिकार?

विनोबाजी ने कुछ अधिक समझाते हुए फिर कहा, "ऐसा कहने में हमारा मोह ही है। उसमें काम की चीज जो स्नेह है, उसका हमने ले लिया। बाकी को नष्ट कर देने ही में लाभ है। यदि वह सत्य भी हो तो मेरे उस पत्र को फाड़ डालने से वह सत्य मिट नहीं जाता। सत्य तो सत्य ही रहेगा, फाड़ने से घटेगा थोड़े। लेकिन यदि वह मोह है तो उसे रखने में नुकसान ही होगा। इसलिए उसे फाड़ डालने में कोई जोखिम नहीं, न रखने से कोई लाभ।

विनोबाजी की बात मेरे दिल में पैठती ही चली गई। मेरा रोष काफूर हो गया। इस घटना ने मेरे जीवन को एक मोड़ दिया। कुछ 'दुर्गुण' भी इसकी वजह से मुझमें आ गये। अच्छी-से-अच्छी चीजों और पत्र-व्यवहार के प्रति लगाव की आदत नहीं रही। कुछ लापरवाही भी आ गई।

मेरे जीवन में एक बहुत बड़ा समाधान और संतोष इस घटना से मुझे मिला, जिसे मैं अपने जीवन की एक बड़ी कमाई मानता हूं।

दूसरा प्रसंग लीजिये—

गीता ज्ञानेश्वरी रामायण आदि ग्रन्थों में से किसी विशेष प्रसंग या विषय को लेकर विनोबाजी चर्चा छेड़ देते थे। जिस छंद में मूल श्लोक हो उसी छंद में हिंदी मराठी या गुजराती में उसका सरल भाषांतर अथवा भावार्थ कर देते। यह भी उनके पढ़ाने का एक तरीका था। इस प्रकार तत्काल रूपांतर करने के बावजूद कई बार वह मूल से भी अधिक स्पष्ट और अच्छा हो जाता था। यह सब अक्सर वह कागज के टुकड़ों या पट्टी पर लिखते और काम हो जाने पर फाड़ देते अथवा मिटा देते थे।

अहिंसा के विषय को समझाते हुए मराठी में एक श्लोक उन्होंने बनाया। उसकी शब्दावली तो मुझे याद नहीं लेकिन उसका भावार्थ मेरे दिल पर सीधा-सीधा अंकित हो गया। वह कुछ ऐसा था—पत्थर ने फूल से कहा "मैं तुझे कुचल डालूंगा।" फूल ने जवाब दिया "मेरी सुगंध को दुनिया में फैलाने का मौका देकर मुझपर तुम अनंत उपकार करोगे।" पत्थर का घमंड चूर-चूर हो गया। नम्रता और क्षमा के साथ फूल ने दोनों तरह से जीत प्राप्त कर ली। कुचला जाता तो उसकी जीत थी ही और बच गया तो उसने विरोधी दुखाये बिना अपने शील की रक्षा की। अहिंसा का इससे अधिक सरल सुंदर तथा गहन विश्लेषण आज तक मेरे देखने में नहीं आया—ऐसा विश्लेषण जो सीधा मानस में उतरता चला जाय।

लेकिन कागज के टुकड़ों को फाड़ देने से मुझे बहुत वेदना होती। अंत में जब मुझसे नहीं रहा गया तो एक दिन पूछ ही बैठा "आप इन कागजों को फाड़ क्यों देते हैं? यदि इन्हें जमा करके प्रकाशित किया जाय तो साहित्यिकों के अलावा अनेक विद्यार्थियों को भी इससे लाभ मिलेगा।"

उन्होंने कहा "मनुष्य अमर नहीं है। जब वह स्वयं अमर नहीं तो किसी प्रकार कृति या निर्माण उसके हो ही कैसे सकता है? फिर भी यह संभव है कि जीवन की अनुभूति और विचार-मंथन के बाद ऐसी कोई कृति बन जाय जो लम्बा अमरत्व को प्राप्त कर सके। लेकिन यदि वह कृति

ऐसी न हो तो उसके रखने से क्या लाभ ? अंत में तो समाज अथवा काल उसे नष्ट कर ही देगा। यह कष्ट समाज या काल को क्यों दिया जाय ? *इसमें हिंसा है और खुद का अपमान भी। अपमान इसलिए कि मैं तो रखना चाहूं* और दूसरे उसे नष्ट करें। इससे तो अच्छा यही है, और इसमें हमारे स्वाभिमान की रक्षा भी होती है कि जबतक ऐसी कोई अच्छी चीज न बन जाय हम स्वयं ही उसे नष्ट कर दें। अच्छा रसोइया तो वही माना जायगा जो अच्छी बनी रसोई ही परोसे।

मैंने कहा "आपने यह कैसे तय किया कि जो कुछ लिखा गया वह इस तरह की अमर कृति नहीं है ? हमें तो वे बहुत अच्छी लगती हैं। जो मर्म आप समझाना चाहते हैं, वह आसानी से हृदय में उतरता चला जाता है। इस तरह हमारे लोगों को उससे लाभ मिले तो कितना अच्छा हो ?

वह बोले "आखिर मैं जब कुछ लिखता हूं, तो जानता भी हूं कि उस चीज की क्या कीमत है। यदि वह अमरत्व को प्राप्त कर सकनेवाली कृति है तो नष्ट करने से भी मिट कैसे सकती है ? वह तो जमाने के साथ ही प्रमाणित होती रहेगी—मुझसे तुममें तुमसे और किसीमें—इस तरह *उसका प्रकाश होगा। उसमें सत्य है तो अमरत्व है, और अमरत्व है तो जमाने* पर हमेशा असर करता रहेगा सारे वातावरण में फैल जायगा।"

कितना गहरा विचार, कितनी सरलता से कहा गया है ! दूसरों को कष्ट भी न दूं, समाज के सामने अपकच्ची चीज भी न लाऊं और मेरे स्वाभिमान की भी रक्षा हो। एक विचार यदि बन गया है, और वह शक्ति रखता है तो वह नष्ट नहीं हो सकता। यही सत्य की कसौटी है। ऐसी श्रद्धा और विश्वास से हम जैसे सामान्य लोगों को भी चाहे ही अवसर के लिए ही क्यों न हो आभास तो हो ही जाता है कि सत्य अमर है, अटल है।

विनोबाजी की 'गीताई' यद्यपि गीता का मराठी अनुवाद ही है, फिर *भी कहीं-कहीं वह मूल से भी अधिक सुंदर बन गई है। 'गीताई' को* उनके इसी तरह के पूर्व-प्रयत्नों का संकलित फल समझना चाहिए।

—

हरिजन-सेवा का चिंतन करते हुए विनोबाजी के मन में कोई संकल्प उठा और वह प्रातःकालीन प्रार्थना के बाद स्नानादि से निवृत्त होने के बाद

ऐसी न हो तो उसके रखने से क्या लाभ ? अंत में तो समाज अथवा काल उसे नष्ट कर ही देगा । यह कष्ट समाज या काल को क्यों दिया जाय ? इसमें हिंसा है और खुद का अपमान भी । अपमान इसलिए कि मैं तो रचना करूं और दूसरे उसे नष्ट करें । इससे तो अच्छा यही है, और इसमें हमारे स्वाभिमान की रक्षा भी होती है कि जबतक ऐसी कोई अच्छी चीज न बन जाय हम स्वयं ही उसे नष्ट कर दें । अच्छा रसोइया तो यही समझा जायगा जो अच्छी बनी रसोई ही परोसे ।

मैंने कहा, "आपने यह कैसे परख लिया कि जो कुछ लिखा गया वह इस तरह की अमर कृति नहीं है ? हमें तो वे बहुत अच्छी लगती हैं । जो धर्म आप समझाना चाहते हैं वह आसानी से हृदय में उतरता चला जाता है । इस तरह हजारों लोगों को उससे लाभ मिले तो कितना अच्छा हो ?"

वह बोले, "आखिर मैं जब कुछ लिखता हूं, तो जानता भी हूं कि उस चीज की क्या कीमत है । यदि वह अमरत्व को प्राप्त कर सकनेवाली कृति है तो नष्ट करने से भी मिट कैसे सकती है ? वह तो जमाने के साथ ही प्रवाहित होती रहेगी—मुझसे तुममें, तुमसे और किसीमें—इस तरह उसका भजन होगा । उसमें सत्य है तो अमरत्व है, और अमरत्व है तो जमाने पर हमेशा असर करता रहेगा, सारे वातावरण में फैल जायगा ।"

कितना महान विचार, कितनी सरलता से कहा गया है ! दूसरों को कष्ट भी न दूं, समाज के सामने अपकारी चीज भी न लाऊं और मेरे स्वाभिमान की भी रक्षा हो । एक विचार यदि बन गया है और वह शक्ति रखता है, तो वह नष्ट नहीं हो सकता । यही सत्य की कसौटी है । ऐसी श्रद्धा और विश्वास से हम जैसे सामान्य लोगों को भी, भले ही अल्पमात्र के लिए ही क्यों न हो, आभास तो हो ही जाता है कि सत्य अमर है, अटल है ।

विनोबाजी की 'गीताई' यद्यपि गीता का मराठी अनुवाद ही है, फिर भी कहीं-कहीं वह मूल से भी अधिक सुन्दर बन गयी है । 'गीताई' को उनके इसी तरह के पूर्व-प्रयत्नों का संकलित रूप समझना चाहिए ।

—

हरिजन-सेवा का चिंतन करते हुए विनोबाजी के मन में कोई संकल्प उठा और वह प्रातःकालीन प्रार्थना के बाद स्नानादि से निवृत्त होने के बाद

६

साधक जीवन का नया पहलू

श्रीमन्नारायण

अपने स्वर्गवास के कुछ दिनों पहले पूज्य काकाजी (जमनालालजी बजाज) ने पवनार के बंगले में एक सप्ताह का उपवास किया था। जिस दिन उन्होंने उपवास छोड़ा वह पवनार के मकान की सबसे ऊंची छत पर चुपचाप बैठे थे और कुछ प्रार्थना कर रहे थे। उन्होंने मुझे ऊपर बुलाया और थोड़ी देर बाद पूछने लगे "क्या तुम विनोबाजी के संपर्क में आये हो ?"

"कई बार उनसे मिला तो हूं लेकिन अभी तक उनसे मेरा कोई घनिष्ठ परिचय नहीं है। मैंने धीरे-से उत्तर दिया।

काकाजी ने फिर कहा "मैंने इस समय एक हफ्ते का उपवास पवनार में इसलिए किया कि मैं पूज्य विनोबाजी के सान्निध्य में रह सकूं। उनके लिए मेरे मन में बहुत गहरी श्रद्धा है। मैं मानता हूं कि भारतवर्ष के बड़े-बड़े प्राचीन ऋषियों की अपेक्षा उनकी प्रतिभा और श्रेणी किसी तरह कम नहीं है।

पूज्य काकाजी के ये वाक्य मुझे अभी तक स्पष्ट रूप से याद हैं। तभी मेरे मन में पूज्य विनोबाजी के अधिक निकट आने की प्रेरणा हुई और ज्यों-ज्यों मैं उनके अधिक संपर्क में आया पूज्य काकाजी के इन शब्दों की गहराई को सार्थक पाया।

शायद १९३८ की बात होगी। उस समय मैं वर्धा के नवभारत-विद्यालय का आचार्य था। एक दिन कुछ शिक्षकों व विद्यार्थियों के साथ मैं विनोबाजी के दर्शन करने के लिए पवनार गया। वह उस समय वेदों का अध्ययन कर रहे थे। कताई और बुनाई के नये प्रयोग तो उनके चलते ही रहते थे। जैसे ही विनोबाजी ने हम लोगों को आते देखा वह पीठ फेरकर बैठ गये और अपना अध्ययन चालू रखा। हम लोग थोड़ी देर चुपचाप

प्रकार का आनंद और ज्ञान अनुभव होता है। जिस प्रकार मोर्चे पर कोई सिपाही यह नहीं कह सकता कि मैं अभी लड़ने को तैयार नहीं हूं, क्योंकि मेरे पास हथियार नहीं है उसी तरह एक 'सफैया' भी सफाई के समय यह नहीं कह सकता कि सफाई के औजार मेरे पास नहीं हैं, इसलिए अभी मैं सफाई नहीं कर सकता।"

शायद यही कारण था कि विनोबाजी अपना फावड़ा आदि अन्य किसी को उठाने भी नहीं देते थे। सिपाही अपना हथियार किसी और को कहां रखने देता है?

विविध कर्म करते हुए ज्ञान प्राप्त करने का विनोबाजी का अपना अनुपम तरीका रहा है। चलते-फिरते, खाते-पीते और खेती-बाड़ी के अनेक प्रयोग करते हुए उनका सारा व्यवहार मानो 'ज्ञान-गंगा का पावन प्रवाह' ही है, जिसकी जितनी पात्रता हो, उतना ज्ञान वह अपने पात्र में ले सकता है।

●

नाचने भी लग जाते थे। यह मार्मिक दृश्य देखने के लिए काफी लोग वर्धा शहर से आया करते थे। जिस समय प्रार्थना चलती थी सूर्य भगवान धीरे-धीरे अस्ताचल की ओर जाते हुए दिखाई देते थे और पवनार की धाम नदी का शांतिपूर्ण प्रवाह भी मानों प्रार्थना के स्वर में अपना सुमधुर स्वर मिला देता था।

जवाहरलालजी के निमन्त्रण पर जिस दिन विनोबाजी पवनार-आश्रम से दिल्ली पदयात्रा के लिए रवाना हुए, मैं भी उनके साथ था। रास्ते में वह मुझसे कहने लगे "कुमारप्पाजी का ख्याल है कि भूदान-यज्ञ द्वारा मैं देश की भूमि-समस्या को अधिक जटिल बना रहा हूं। भारतवर्ष में पहले ही जमीन छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटी हुई है और कुमारप्पाजी की राय है कि भूदान-यज्ञ से यह समस्या और भी बेढंगी बन जायगी। किन्तु क्या चीन में भी जमीन के टुकड़े नहीं किये जा रहे हैं ?

"जी हां साम्यवादी शासन आने पर चीन में बेजमीन किसानों को बहुत बड़ी संख्या में जमीन बांटी जा रही है। उनका इरादा है कि एक बार जमीन बंट जाने पर फिर उसका समूहीकरण किया जायगा।" मैंने कहा।

विनोबाजी बोले "हमारे देश में भी यदि इसी प्रकार जमीन तेजी से बंट जायगी तो हरेक गांव में बेजमीनों को बड़ा संतोष मिलेगा और उससे देश में शांति फैलेगी। किन्तु मुझे तो जमीन के टुकड़े हो जाने का इतना भय नहीं है जितना लोगों के दिलों के टुकड़े हो जाने की चिंता है। भूदान-यज्ञ द्वारा मैं तो करोड़ों टूटे हुए दिलों को जोड़ना चाहता हूं।

२८ फरवरी १९५६ को हैदराबाद राज्य के तेलंगाना जिले में स्थित महबूब नगर नामक एक छोटे-से कस्बे में जहां विनोबाजी का शिविर था मैं पहुंचा और उनके साथ लगभग एक सप्ताह पैदल-यात्रा का मौका मुझे मिला। दिल्ली में कई महीनों के व्यस्त वातावरण के बाद विनोबाजी का यह आध्यात्मिक साथ मुझे बहुत ही सुखद प्रतीत हुआ। आज दुनिया के सामने जितनी भी महत्त्वपूर्ण समस्याएं पेश हैं, उनमें से प्रायः सभी के बारे में विनोबाजी के ताजे मौलिक व तर्कपूर्ण विचारों से कोई भी व्यक्ति विशेष

खड़े रहे और फिर उनके अध्ययन में किसी प्रकार खलल देना उचित न समझकर वापस चले आये। सब लोगों को बड़ा आश्चर्य-सा हुआ। किंतु उस समय विनोबाजी का जीवन अध्ययन-परायण था और वह वस्त्र-स्वावलंबन तथा खादी के प्रयोगों में तन्मय रहते थे। इसलिए बाह्य जगत से उनका बहुत कम संबंध रहता था। १९४० में जब पूज्य बापूजी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान उनको पहला सत्याग्रही चुना तब दुनिया ने पहली बार उनका नाम सुना। इसके बाद भी उनका जीवन मुख्यतः अध्ययनशील ही बना रहा और वह अपने आश्रम के उद्योगों और प्रयोगों में ही लगे रहे।

राष्ट्रपिता गांधीजी के महानिर्वाण के पश्चात विनोबाजी के जीवन का एक नया दौर शुरू हुआ। वह पवनार-आश्रम में शाम को सामूहिक रूप से प्रार्थना करने लगे। उन दिनों उनका 'कांचनमुक्ति' का प्रयोग चलता था। विनोबाजी आश्रमवासियों के साथ प्रतिदिन तीन-चार घंटे कुदाली चलाकर कड़ी धूप में खेती का काम करते थे। सिंचाई के लिए एक कुआं भी खोदना शुरू किया था जिसमें वर्धा की कई संस्थाओं के कार्यकर्ता पवनार जाकर अपना श्रमदान देने लगे थे। कुछ दिनों तक तो आश्रम की सायंकालीन प्रार्थना कुएं के रहट को चलाते हुए ही चलती थी। बैलों की जगह विनोबाजी तथा अन्य आश्रमवासी स्वयं रहट चलाते थे और साथ में मंत्रोच्चार तथा गीता-पाठ भी करते थे। उन दिनों विनोबाजी कहा करते थे कि हमारी प्रार्थना भी श्रममय होनी चाहिए और हमें प्रतिक्षण काम करते-करते ही भगवान का स्मरण करना चाहिए। आगे चलकर जब कुएं की खुदाई का काम बहुत तेजी से बढ़ गया तब यह प्रार्थना सामूहिक रूप से आश्रम के सामने होने लगी। विनोबाजी तथा सब आश्रमवासी खड़े होकर प्रार्थना करने लगे। जो लोग बाहर से विनोबाजी के दर्शन करने के लिए आते थे वे भी प्रार्थना में खड़े-खड़े शरीक हो जाते थे। उन दिनों प्रार्थना के बाद विनोबाजी उच्च स्वर से गायत्री-मंत्र का तीन बार उच्चार करते थे। संतों के विभिन्न भजन और अभंग भी मधुर कंठ से गाए जाते और बाद में सामूहिक रूप से राम-धुन गुंजाते थे। उस समय हाथों से तालियां बजाते-बजाते वह

तक मुझे कुछ ही मिनटों में पहुँचा दे।

शहर और गाँवों की चर्चा करते हुए एक दिन पाठकों को उन्होंने एक बहुत ही दिलचस्प मिसाल दी। एक शहर में एक बड़े जमींदार ने जिसने भूदान में कुछ जमीन दी थी अपने परिवार को आशीर्वाद दिलाने के लिए विनोबाजी को निमन्त्रित किया। जमींदार ने बड़े गर्व से उन्हें उगते हुए सूरज का एक चित्र दिखलाया जो उसने कोई १ रुपये में खरीदा था। विनोबाजी मुस्करा पड़े और बोले "सौ रुपयों में उगते हुए सूरज का चित्र खरीदने की बजाय क्या यह ज्यादा अच्छा नहीं कि गाँव में रहकर रोज सवेरे उगते हुए सूरज का मुफ्त दर्शन किया जाय? रहन-सहन के उच्चतम स्तर का उपभोग कौन करता है? वह तथाकथित धनी व्यक्ति जो शहर की घनी बस्ती में रहता है और अपनी दीवारों पर प्राकृतिक दृश्योंवाले अनेक चित्र टाँग रखता है, या वह जो गाँव के स्वस्थ वातावरण में रहता है और प्रकृति के प्रत्यक्ष सम्पर्क का सुख भोगता है?

अपने बारे में वह एक दिन बोले "लोग समझते हैं कि भूदान के लिए गाँव-गाँव घूमने के कारण मुझे बहुत शारीरिक बोझ उठाना पड़ता है। लेकिन बात ऐसी नहीं है। मुझे पद-यात्रा में बड़ा आनंद आता है। दिनभर परिश्रम के बाद रात में जब नींद आती है तो मैं बच्चे की तरह निश्चिन्त सो जाता हूँ। स्वप्न मेरी नींद में बाधा नहीं डालते। नींद इतनी मजेदार आती है कि पहरवालों को क्या नसीब होती होगी! मेरा सौभाग्य है कि हर दिन मुझे नया घर मिलता है। मैं खुले आकाश और तारों के नीचे सोता हूँ। वास्तव में सारी दुनिया ही मेरा परिवार है।

नेहरूजी और विनोबाजी की भेंट के दृश्य बहुत ही मार्मिक होते हैं। दो-एक बार मैंने देखा है, नेहरूजी से मिलते ही विनोबाजी गद्गद् हो जाते हैं और उनकी आँखों से प्रेमाश्रु बहने लगते हैं। नेहरूजी भी भावनावश काफी देर तक स्तब्ध-से बैठे रह जाते हैं। ऐसे भावुकतापूर्ण क्षणों में मुझे ही कोई सवाल छेड़ देना पड़ता था ताकि दोनों में वार्तालाप शुरू हो सके।

निजामाबाद की यात्रा के अवसर पर नेहरूजी ने विनोबाजी से एक

रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। भविष्य के बारे में वह बिल्कुल वैज्ञानिक की तरह सोचते हैं। उनके विचारों में कहीं भी अस्पष्टता नहीं। उनके साथ पैदल चलना एक जंगम विद्यापीठ के चिंतनपूर्ण वातावरण में विचरण करने जैसा है।

इस पदयात्रा के दौरान कई विषयों पर उनसे वार्तालाप हुआ और उनके विचार जानने का मौका मिला। सरकार और जनता के संबंधों की चर्चा करते हुए वह बोले "राज्य एक बाल्टी है और जनता कुआं। बाल्टी कुएं में से सिर्फ थोड़ा-सा ही पानी ले सकती है। इसी तरह सरकार के पास जनता की क्षमता और शक्ति का बहुत ही कम अंश होता है। मैंने अक्सर यह बात कही है कि सरकारी शक्ति एक शून्य ( ) के समान है, जबकि जनता की शक्ति पूर्णांक (१) की तरह है। जब ये दोनों इकट्ठे कर दिये जाते हैं तो हमें १ की संख्या मिलती है। इस तरह जनता और राज्य की शक्तियां जब एक में जोड़ दी जाती हैं तो एक महान् शक्ति का निर्माण होता है। लेकिन जब हम उनमें से किन्हीं को भी अलग-अलग महत्त्व देंगे जनता के पास केवल १ की शक्ति रह जायगी और सरकार की शक्ति केवल शून्य बनकर रह जायगी।

एक दिन प्रातःकाल पैदल चलते हुए बातचीत के सिलसिले में विनोबाजी ने मुझसे ग्राम और कुटीर-उद्योगों के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा "कुछ लोगों का ख्याल है कि मैं अव्यवहारिक हूं। किंतु अव्यवहारिक होने के अलावा मैं एक आधुनिक वैज्ञानिक भी होने का दावा करता हूं। यह सोचना गलत है कि मैं ग्रामोद्योगों की टेक्नीक सुधारने में आधुनिक विज्ञान के उपयोग का पक्षपाती नहीं हूं। दरअसल मेरा मत है कि आधुनिक विज्ञान संतोषजनक और पर्याप्त प्रगतिशील नहीं है। उदाहरण के लिए, मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि हमारे हवाई जहाज अधिक तेज और ज्यादा आरामदेह क्यों न हों। मैं आमतौर पर पैदल चलना इसलिए पसंद करता हूं कि जनता से मेरा सजीव संपर्क बना रहे और मेरी यात्रा हवाई न होने पाये। लेकिन यदि किसी वजह से मुझे हवाई सफर करना पड़े तो मैं ऐसे जहाज से यात्रा करना पसंद करूंगा जो दिल्ली या कलकत्ता या न्यूयार्क

(पंजाब) में मिला था। उस समय उनका एक नया रूप मैंने देखा। वह अधिकतर अपना समय छोटे-छोटे कार्यकर्ताओं से मिलकर उनके घरेलू जीवन-संबंधी जानकारी प्राप्त करने में लगाने लगे थे। वेद-कुरान आदि के अध्ययन का क्रम करीब-करीब समाप्त हो गया था और वह देश के बहुत से रचनात्मक कार्यकर्ताओं से विस्तारपूर्वक व्यक्तिगत चिट्ठी-पत्री भी करने लगे थे। मैंने विनोबाजी से पूछा "आजकल आपने अपना अध्ययन बहुत कम कर दिया है और पूज्य बापूजी की तरह आपका व्यक्तिगत संपर्क कार्यकर्ताओं से बढ़ रहा है। क्या यह आपका कोई नवीन प्रयोग है?

इसपर विनोबाजी ने गंभीर होकर कहा "हां मैं आजकल फिजिकल प्लेन (भौतिक स्तर) के बजाय सुपरमेंटल प्लेन (अतिमानस स्तर) पर काम करने लगा हूं। इसके लिए यह जरूरी है कि मैं कार्यकर्ताओं के दिल एवं दिमागों में गहराई से उतरने की कोशिश करूं। इसी दृष्टि से मैं उनसे व्यक्तिगत चर्चाएं करता हूं और उनके भीतर प्रवेश करने का प्रयत्न करता हूं। मैं समझता हूं कि इस प्रकार जो मेरा काम होगा वह व्याख्यानों की अपेक्षा अधिक कारगर होगा। फिर थोड़ी देर बाद मुस्कराकर बोले "तुम शायद नहीं जानते कि आजकल पंडितजी से भी मेरा संपर्क मेंटल प्लेन (मानसिक स्तर) पर ही अधिक होता है और मानसिक स्तर का संपर्क भौतिक स्तर के अनुभव से कम यथार्थ नहीं है।"

इन दिनों भी विनोबाजी बापू की तरह कार्यकर्ताओं के दुख-सुख उनकी घरेलू कठिनाइयां और व्यक्तिगत समस्याएं जानने की अधिक कोशिश करते हैं और उनका पत्र-व्यवहार पहले से बहुत अधिक बढ़ गया है। विनोबाजी के जीवन का यह नया पहलू बापू की आत्मीयता और वात्सल्य का स्मरण हमेशा ताजा करता रहेगा।

●

गांव में भेंट करने का निश्चय किया। यह गांव हैदराबाद से सौ मील की दूरी पर है। विनोबाजी का विशेष आग्रह रहा है कि जब नेहरूजी उनसे मिलने आयें उस समय मैं भी हाजिर रहा करूं। मुस्कुराकर वह अक्सर मुझसे कहते थे "मैं तो अपढ़-अज्ञ हूं। इसलिए जो कुछ नेहरूजी कहेंगे वह तीर से मुझको पूंगा।

इस बार की भेंट में राष्ट्रीय महत्त्व के विभिन्न मसलों जैसे बुनियादी शिक्षा विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता पंजाब का पुनर्गठन आदि पर विनोबा और नेहरूजी की बातचीत हुई। लगभग दो घंटे यह वार्ता चली फिर वे पास के मैदान में गये। वहां लगभग पांच हजार व्यक्ति उनके दर्शनों के लिए खड़े थे। नेहरूजी कुछ जल्दी में थे अतः उन्होंने कुछ ही मिनट उपस्थित भीड़ के सामने भाषण दिया और फिर वह विनोबाजी के साथ-साथ अपनी कार की ओर लौट पड़े। विनोबाजी से विदाई लेते समय नेहरूजी ने विनोबाजी के हाथों को अपने हाथों में ले लिया और भावनापूर्ण स्वर में बोले "अपनी तन्दुरुस्ती का जरा खयाल रखिये। हद से ज्यादा मेहनत न कीजिये।

विनोबाजी की आंखें भर आईं।

नेहरूजी से हुई बातचीत पर विनोबाजी की प्रतिक्रिया जानने के लिए मैं एक घंटे और वहीं रुका रहा। विनोबाजी भावनाओं में डूबे हुए थे। वह कुछ क्षण चुप रहे। फिर उन्होंने धीरे-से मुझसे कहा, "यह सही है कि मैं हद से ज्यादा श्रम कर रहा हूं। दिनों-दिन मेरी शारीरिक शक्ति घटती जा रही है। पहले मैं रोजाना १ से १५ मील तक पैदल चला करता था। अब मैं प्रतिदिन ८ मील से ज्यादा सफर नहीं कर सकता। मैं सिर्फ तरह ११ कैलरी तक का भोजन कर पाता हूं और वह भी लगभग बारह बार में। लेकिन जिस समय मैं दूसरे विषयों की चर्चा करता हूं उस समय भी मेरा दिमाग लगातार भूदान के लक्ष्य को हासिल करने पर ही टिका रहता है।"

और फिर उन्होंने भाव-विह्वल होकर कहा—

"मेरे लिए तो यह 'करो या मरो'-जैसा विषय हो गया है।

कुछ समय पहले मैं विनोबाजी से 'कस्तूरबा सेवा मंदिर' राजपुरा

प्रतिदिन चल सकी। इसे मैं किसका अनुग्रह मानूं? एक दिन तो मई-जून के महीने में सूर्य-नारायण की तीनों लोकों को तपा देनेवाली तीक्ष्णतम कृपा के सहारे अठारह मील तक जो चलना हुआ वह तो मेरे जीवन का एक 'रेकार्ड' ही बन गया है।

इस यात्रा के पूर्व सन् १९४९ में मुझे अपने पति श्रीमन्नारायणजी के साथ हवाई जहाज से विश्व-प्रदक्षिणा करने का मौका मिला था। उसी के बाद यह पैदल-यात्रा का सुअवसर प्राप्त हुआ। उस समय मेरा परिचय कराते हुए बाबा प्रायः कहते "यह मेरी लड़की अभी तो आसमान में उड़ कर आई है पर अब मैं इसे धरती पर चलना सिखा रहा हूं।

इसी पद-यात्रा में एक दिन एक पहाड़ी चढ़ाई पर मैं पू. बाबा के साथ अकेली आगे चल रही थी। बाबा का साथ छूट जाना और कभी दो-चार कदम भी मैं पीछे रह गई तो फिर पड़ाव पर पहुंचना मेरे लिए पहाड़ बन जाता था। इसलिए अपने तन-मन की हर सावधानी से मैं सदा बाबा के साथ ही रहने की कोशिश करती थी बल्कि वह मेरी भावना ही बन गई थी।

पर उस दिन का रास्ता बड़ा साफ-सुथरा लम्बा-चौड़ा और पक्का होते हुए भी वह चढ़ाई चढ़ना मेरे लिए भारी हो गया और एक जगह तो मेरे पैर ऐसे लड़खड़ाये कि बाबा से बात करते-करते ही मैं अपने दाहिने पैर पर एकदम लुढ़क पड़ी। यह देखकर बाबा एकदम ठिठककर खड़े रह गये। कुछ देर बाद जब मैं कुछ सम्भली तो मैंने बाबा से पूछा "आप रुक क्यों गये बाबा?" वह बोले "अगर तुझे कुछ हो जाता तो मुझे रुकना ही पड़ता न?"

उनके इस तरह रुकने और बोलने में कितनी ममता भरी थी?

एक दिन एक वन प्रांत में बाबा घूमकर रहे थे। केवल महादेवीताई और मैं ही उनके साथ चल रहे थे। वह वनवासियों का प्रदेश था। वहां भी वनवासी बहुत यानी आस-पास के गांवों के लोग बाबा के दर्शनों के लिए मार्ग पर आ खड़े होते। मार्ग में मैंने एक वनवासिन को देखा। उसकी

७

प्रेमात्मन् बाबा

मदालसा

सन् १९३२ में पश्चिम खानदेश की धुलिया-जेल में पू. काकाजी और पू. विनोबाजी दोनों काफी दिनों तक साथ रहे थे। तभी एक मुलाकात के मौके पर काकाजी ने विनोबाजी से मुझे पहली बार व्यक्तिगत रूप से मिलाया और उन्हें बताया कि मेरी इच्छा उनके पास अध्ययन करने की है। विनोबाजी ने बात मंजूर करली।

जेल से छूटकर आते ही उन्होंने सुबह सात बजे से आठ बजे तक मेरा वर्ग लेना शुरू कर दिया। वह वर्धा स्टेशन के निकट काटन-मार्केट में रहते थे और मैं आश्रम के निकट कन्याशाला में। मुझे पढ़ाने के लिए प्रतिदिन विनोबाजी स्वयं तीन मील पैदल चलकर आते थे। पढ़ाने के बाद जब वह अपने निवास-स्थान पर लौटकर जाते तब मैं अक्सर करीब आधी दूर तक उनके साथ जाया करती थी। उस समय खुले मन से बातचीत करने का मौका मुझे मिलने लगा और अपने मन के सवाल और शंका का समाधान भी मैं सुगमता से पाने लगी। मुझे ऐसा महसूस होने लगा कि मेरे मनोभावों को जितनी आसानी से और अच्छी तरह विनोबाजी समझ लेते थे, उतना अभी तक पू. बापूजी, काकाजी या माँ भी नहीं समझ पाये थे।

विनोबाजी के साथ अध्ययन करते हुए मेरे मन में यह इच्छा जागृत हुई कि कभी अवसर मिला तो मैं उनके साथ पैदल-यात्रा करूँगी।

१९५१ में भूदान-यज्ञ का आरंभ हुआ। तब वर्धा से हैदराबाद और हैदराबाद से तेलंगाना होते हुए वापस सेवाग्राम तक की भूदान-यात्रा में पू. बाबा के साथ पैदल चलने का अवसर मुझे मिला और मैं एक पैर में कष्ट होते हुए भी रोजाना दस से पन्द्रह मील तक

जाता है, यह तो हम माताएं ही जान सकती हैं।

बाबा मेरा भाव समझ गये। पालने में सोये हुए बालक को उन्होंने देखा। अपने हाथों से शहद-पानी की घूंटी दी और न जाने किस गहराई से कैसे आशीर्वाद दिये कि दवाखाने से घर पहुंचते-पहुंचते नवजात बालक माता की ममता से दूर होता गया और गाय के दूध पर ही उसकी परवरिश होने लगी। बरसों तक बाबा उससे यही कहा करते थे "तुम तो गाय के बच्चे हो न?

दवाखाने से घर आते ही मेरी तबीयत खराब हो गई। छाती में गांठें पड़ गईं, जिनका आपरेशन कराना पड़ा। सुशीला बहन की एलोपैथी की तीव्र दवाइयां चलीं और निसर्गोपचार का आहार, नियमन मेरी मां का। नतीजा जो होना था वही हुआ। पोषण तो हुआ नहीं शोषण ही हो गया। बापूजी रोज ड्रेसिंग के समय मेरे पास आ जाया करते थे और भी प्रभाकर भाई सुमधुर कंठ से बापू के दो प्रिय भजन मुझे सुनाया करते थे। एक था "आया हार तुम्हारे रामा आया हार तुम्हारे" दूसरा था "और नहीं कछु काम के मैं भरोसे अपने राम के।"

बापू तो फिर नोआखाली चले गये। तभी एक दिन पू बाबा मुझे देखने आ गये। देखकर मेरा मन आनंद और प्रेम से गद्‌गद् हो गया। बाबा ने कहा "हमारी बेटी क्या कहती है? आनंद में तो हो न? ईश्वर का जो जितना लाड़का होता है, वह उसकी उतनी ही अधिक कसौटी करता है। भाव तो भर रहा है न? मैंने कहा "बाबा ड्रेसिंग के समय बहुत हिम्मत रखनी पड़ती है। प्रभाकरजी भजन गाते हैं तब ड्रेसिंग के लिए धीरज धर पाती हूं नहीं तो मुश्किल ही होती है।

बाबा बोले "यह तो अच्छा है। इसमें क्या हर्ज है? मैंने कहा "बाबा मुझे कुछ खाने के लिए दीजिये न? बहुत भूख लगी है। मां तो भरपेट कुछ देती नहीं है।" बाबा ने पूछा "क्या चाहिए तुझे? मैंने कहा "बाबा आपके भजन और अभंग सुनने की बहुत इच्छा होती है। बाबा पलंग पर मेरे पास बैठ गये। उन्होंने तुलसीदासजी की 'विनयपत्रिका' के कई मधुर भजन और संत तुकारामजी के कई सुंदर अभंग गाकर सुनाये।

उनका वह भक्तिभाव से भरा सुमधुर स्वर सुनकर मुझे जो तृप्ति

वेशभूषा निराली थी। शरीर जरूर एकदम स्वस्थ एवं सुदृढ़ था। ऊंचाई पठानों जैसी-सी थी। हाथ-पांव मर्दों से लगते थे और उसके सिर पर एक बहुत बड़ी डलिया रखी थी। वह चकित हिरनी की तरह दूर से खड़ी-खड़ी हमें देखती रही। मैं भी बड़े कौतूहल से उसकी ओर देखती जा रही थी। मेरी बहुत इच्छा हो रही थी कि कुछ देर रुककर उससे मिलें और बातचीत करें पर बाबा कैसे रुकें? इसी विचार में थी कि क्षेत्र में खड़ी उस बहन को बाबा के रूप-रंग और चाल-ढाल से कुछ विश्वास-सा हुआ। वह तेजी से दौड़ती हुई हमारे निकट पहुंच गई और बाबा के चरणों में डलिया रखकर उसने प्रणाम किया। डलिया बड़ी सावधानी से एक मैले कपड़े से ढंकी हुई थी। मैंने और ताई ने समझा कि उसमें कुछ कंद-मूल होंगे। ताई ने कपड़े को एक हाथ से जरा सरकाया तो हम दोनों एकदम चौंक पड़ीं। उसमें तो एक श्याम सलोना, सुकुमार शिशु सोया हुआ था।

ताई ने उसे गोद में उठाकर बाबा के हाथों में दे दिया। बाबा उसे न जाने किन विचारों में मुग्ध हुए-से देखते रहे। उस शिशु की माता गद्गद् हो उठी। एक अपूर्व वन्दना का भाव उसके चेहरे पर झलक आया। हमारे लिए भी वह एक अनोखा अनुभव था। उन चंद मिनटों के प्रसंग की स्मृति आज भी हृदय को अपूर्व ममता से भर देती है।

मेरे छोटे पुत्र चि॰ रजत का जन्म रात को दो बजे दवाखाने में हुआ था। उस समय मेरी मां की तबीयत बहुत खराब थी। मेरे दवाखाने जाते समय वह बेहोश-सी थी। सुबह बालक का जन्म होने की खबर सुनते ही मां का बुखार न जाने कहां गायब हो गया। वह बिस्तर से उठ खड़ी हुई।

बाबा को जब यह पता चला तो वह मां से बोले "हूं करूं हूं करूं एव अज्ञानता" वाली बात ही हुई न? आप कितना डरती थीं? वहीं भी जाती-आती नहीं थी। पर जब बच्चा हुआ तो आपका पता ही नहीं चला। देखा न?

फिर बाबा ने मुझसे पूछा कैसी हो? बहुत तकलीफ हुई क्या? मैंने कहा "बाबा आप संत-महात्मा लोग सदा कहते हैं कि व्याकुल होकर भगवान को पुकारा करो। लेकिन व्याकुल होकर भगवान को कैसे पुकारा

बाबा उस दिन केवल इतना ही बोले 'भक्त की भूमिका तो रुक्मिणी बनकर भगवान को एक तुलसी-पत्र से तोलने की हो सकती है। कृष्ण बनकर तुलाने की नहीं।

पुनः उनके नेत्रों से प्रेमाश्रु बह चले। सारा वातावरण एकदम मुग्ध-गंभीर हो गया। लोग जहां-के-तहां स्तब्ध बैठे रहे।

पर मां का बेचैन मन नहीं माना। उन्होंने 'गीता प्रवचन' की एक प्रति बाबा के हाथ में थमा दी उसपर बाबा से हस्ताक्षर करवा लिये और पुः बाबा के हाथों ही तुला के दूसरे पलड़े में वह प्रति धरवा दी। न जाने क्या चमत्कार की-सी बात हुई कि तुला के निकट बैठे हुए हम सबों-ने यह महसूस किया कि तुला उसीसे समतोल हो गई।

प्रेमात्मन् बाबा के मन-मुग्ध कर देनेवाले सान्निध्य के ऐसे अगणित प्रसंगों का स्मरण करती हूं तब संत तुकाराम महाराज का एक भजन मुझे सदा याद हो आता है। उसका भावार्थ इस प्रकार है—

"संतजनों के उपकारों का वर्णन मैं किस प्रकार करूं? वे निरंतर मेरी याद करते हैं। उन्हें क्या दिया जाय और कैसे उनसे उऋण हुआ जाय? चरणों में ये प्राण अर्पण कर दिये जायं फिर भी कमी रह ही जाती है। उनका सहज बोलना ही हितभरा उपदेश होता है। वे कितने यत्नपूर्वक मुझे सिखाते हैं। तुकाराम कहते हैं कि जैसे माय का ध्यान हमेशा अपने बच्चे में लगा रहता है, वैसे ही वे मुझे संभाला करते हैं।

●

और आनंद प्राप्त हुआ उसका वर्णन शब्दों में करना संभव नहीं।

तैलंगाना की भूदान-यात्रा की परिसमाप्ति शिवरामपल्ली में हुई। इस सारी यात्रा में श्री रुक्मिणी मां हमारे साथ थीं। ठिगना कद और दुबली-पतली देह। पर उनके मानस में सबके प्रति सहज स्नेह का सागर लहराता ही रहता था। पू. बाबा के प्रति उनके भक्ति-प्रेम की सीमा नहीं थी। उनके मन में एक अनोखा संकल्प उठा कि शिवरामपल्ली-सम्मेलन में प्रेमावतार बाबा का "फूल-तुला-भार" समारंभ किया जाय। इसके लिए पुष्पाल उन्होंने घर-घर से ढेर-सा फूल इकट्ठा किया। भांति-भांति के रंगपुष्प से छोटा-सा सुंदर मंडप सजवाया, उसमें एक बड़ी तराजू खड़ी करवाई और एक पलड़े में फूल की लच्छियां भर दीं। दूसरे पलड़े में बाबा को बिठाने के लिए वह अत्यंत भय और संकोच से उनकी प्रतीक्षा करने लगीं।

सायंकालीन प्रार्थना और प्रवचन के विचार से बाबा समारंभ-स्थान पर पधारे। रास्ते में ही उन्हें रुक्मिणी मां की भक्तिपूर्ण भावुकता का थोड़ा आभास दे दिया गया था। फिर भी वह कहीं तुला आदि के आडंबर को देखकर एकदम लौट न जायं इसकी सावधानी भी हम रख रहे थे। बाबा मंडप के नीचे मंच पर पहुंचे। बड़ी कठिनाई से उन्हें तुला के निकट आसन पर बैठने को राजी किया गया। फूल-तुला-समारंभ की वह भव्य तैयारी बाबा ने देखी। उनका मन भगवद्-स्मरण में मग्न हो गया। गोपियों की भक्तिपूर्ण भूमिका के स्मरण से वह आत्म-विभोर हो उठे। उनकी आंखों की कोरों से अविरल अश्रुप्रवाह बह निकला। स्वस्थ चित्त होने पर वह अंतर की गहराई में से एकदम गा उठे—

"दयाघन भक्ति वात्सलिका
दयाघन भक्ति वात्सलिका।
रुक्मिणी ने एका तुलसी वाहने।
गिरिधर प्रभु तुलिला।"

—दयाघन भगवान भक्ति से वश में कर लिये गए। रुक्मिणी ने एक तुलसी-पत्र रखकर प्रभु को तोल लिया। गोवर्धन-पर्वत को धारण करनेवाले प्रभु एक हल्के से तुलसी-पत्र से तोल लिये गए।

गणित का अभ्यास हो व्याकरण जैसा शुष्क विषय हो या कोई साधारण बात या लेख हो प्रत्येक चीज में वह इतने तन्मय हो जाते थे कि उन्हें किसी आगंतुक के आने-जाने की या नमस्कार का जवाब देने की भी सुध नहीं रहती थी। भगवान के भक्तों की गाथा या महापुरुषों की जीवनी के स्मरण या भजन गाते समय तो वह इतने गद्गद् और विह्वल हो जाते कि उनकी अश्रुधारा रोके नहीं रुकती थी।

सबसे पहले विनोबाजी के पास रहने का मौका मुझे नालवाड़ी में मिला। वर्धा से करीब ढाई-तीन मील पर यह एक हरिजनों की एक बस्ती है। शुरू में कुछ रोज मैं वहां बजाजवाड़ी से साइकल पर आती-जाती थी। फिर वहीं बाबा के पास रहने लगी। वहां चटाइयों से बनी एक झोंपड़ी थी। एक ओर बाबा के बैठने के लिए चौंकड़ी बिछी थी और एक ओर हम सब—इन्नादासभाई, दत्तोबा मदालसा और मैं—रहते थे। मदालसा बाबा से 'ज्ञानेश्वरी' पढ़ती थी। बाबा का 'ज्ञानेश्वरी' की ओवियों का अर्थ समझाने का वह दृश्य अद्भुत था। 'ज्ञानेश्वरी' के ज्ञान-भंडार से बाबा एक-से-एक बढ़कर अमूल्य रत्न निकालते और अंधे को भी प्रकाश दे सके इस सरलता से विद्यार्थी के सामने रखते थे। मैं तो यह 'ज्ञानेश्वरी' का पढ़ाना अक्सर बाहर से ही सुनती थी। पर कानों में अभी भी उस ध्वनि की भनक मौजूद है। मुझे बाबा 'गीताई' पढ़ाते थे। पहले अठारहों अध्याय के उच्चारण ठीक करवाये फिर रोज पूरे एक अध्याय को कंठस्थ करती थी। उस समय की एकाग्रता पर अब तो ईर्ष्या होती है। बाबा के सामने 'गीताई' के पाठ में ह्रस्व-दीर्घ की गलती भी बड़ी लज्जास्पद मालूम देती थी। उनके ध्यान से वह बचती भी नहीं थी। शुद्धता के अभ्यस्त उनके कानों के लिए तो मैं यातनाएं असह्य ही होंगी यद्यपि उनके चेहरे से यह प्रकट नहीं होता था।

शाम की प्रार्थना होते ही बाबा मौन ले लेते थे। वह एक बड़ी ही संकरी—शायद एक-डेढ़ फुट चौड़ी—लकड़ी की बेंच पर, एक ही करवट से गहरी नींद में काष्ठवत् सो जाते थे। इस बे-सहारे की पतली-सी बेंच को तख्त भी कैसे कहूं। शुरू-शुरू में मुझे डर लगता रहता था कि कहीं बाबा गिर न पड़ें। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ।

८

चिरस्मरणीय

उमा अग्रवाल

मेरी उम्र सात-आठ साल की रही होगी। हम तब साबरमती से वर्धा रहने आये और यहाँ बजाजवाड़ी में रहने लगे। तबका पू. विनोबाजी का मुझे कुछ-कुछ स्मरण है। वह उस समय सत्याग्रह-आश्रम में रहते थे। सारे आश्रम का वातावरण बड़ा ही शांत और गंभीर था। कुछ साधक और कुछ विद्यार्थी विनोबाजी के पास रहते थे। विनोबाजी एक बड़े हॉल में फर्श से ऊँचे ओटे पर, जिसे मराठी में ओसरी कहते हैं, मुख्य द्वार के सामने दीवार से बिना टिके, पालथी मारे तनकर बैठे हुए बाहर से ही दिखाई दे जाते थे। पू. काकाजी के साथ अक्सर उनके पास जाने का मौका मिलता था। विनोबाजी हर समय बच्चों के अध्ययन में या किसी-न-किसीको पढ़ाने में मग्न रहते थे। पढ़ाते समय उनकी आवाज से सारा आश्रम गूंज उठता था। वह इस कारण पसीने-पसीने हो जाते थे। कम-से-कम विद्यार्थी पर भी इतनी मेहनत करते थे कि आश्चर्य के साथ दुःख होता था कि वह अपनी अमूल्य शक्ति ऐसों पर क्यों खर्च करते हैं। उन दिनों भाई कमलनयनजी वहीं आश्रम में रहकर विनोबाजी के पास पढ़ते थे। दो-चार बार उनके वर्ग में एक ओर चुपचाप बैठकर उनका यह अद्भुत पढ़ना-पढ़ाना देखने और सुनने का भी स्मरण है।

मुझे विनोबाजी का कभी भय लगा हो ऐसा याद नहीं है। उनके वर्ग में कुछ सुनने का आकर्षण हमेशा रहा। लेकिन मेरी जैसी बाचाल लड़की भी वहाँ जाकर गंभीर हो जाती थी यह सच है। पढ़ाते, कातते, चक्की पीसते, कमरे से उठाऊ पाखानों के लिए गड्ढा खोदते, खेत में कुदाली चलाते या खाने के बाद रसोई के बरतन मांजते समय हरेक क्रिया में विनोबाजी इतने तल्लीन हो जाते थे कि उन्हें देखनेवाले को भी बरबस एकाग्र हो जाना पड़ता था। उपनिषदों का अध्ययन हो, गीता के श्लोकों का पाठ हो,

१९४६ की बात है। मार्च का महीना था। पेड़ों पर शहतूत मीठा व गहरा रंग पकड़ रहे थे। तोते और चिड़ियों के लिए यह दावत का निमंत्रण था। इन्हीं दिनों में बाबा दिल्ली आये और अपने घर को उनके चरण-स्पर्श का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहां बाबा करीब पंद्रह दिन रहे। घर के सामनेवाली दूब के एक कोने में कागजी नीबू का बारहमासी पेड़ है। बाबा रोज उसके नीचे बैठते थे। एक दिन उन्होंने सब जानकारी प्राप्त की— हम यहां कबसे रहते हैं, क्या भाड़ा देते हैं आदि। फिर बोले कि इतनी रकम तो इस बड़े शहर में यहां खुले में इस पेड़ के नीचे बैठने की भी कोई मांगे तो मैं देने को तैयार हूं।

१९४८ में हम लोग मसूरी में थे। सितंबर का सुहावना पहाड़ी मौसम था। बाबा के मसूरी आने की संभावना थी। उनको ठहरानेवाले तो स्वाभाविक ही बिरला-हाउस को पसंद करते। वहां सब तरह का आराम भी था। मैंने बाबा को लिखा कि मैं मसूरी में हूं। हमारा मकान छोटा तो है पर मुझे म काफी ऊंचाई पर, बिल्कुल वनहिल के पास ही है। बाबा ने जवाब में लिखा "मली मेरी काली कमलिया"। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। पहाड़ आने का बाबा का यह दूसरा मौका था। मसूरी पहुंचने पर बाबा ने बताया कि पहली बार तो वह घर से भागकर हिमालय के लिए निकले थे पर बीच में ही हिमालय के समान बापूजी उन्हें मिल गये और वह वहीं रुक गये। अब करीब तीस साल बाद फिर से हिमालय में आए थे। बाबा करीब बारह रोज यहां ठहरे। बड़ा आनंद रहा। मेरी छोटी लड़की उस समय कोई आठ महीने की थी। उसका कोई नाम नहीं रखा गया था। उससे तीन साल बड़ी उसकी बहन उसे बब्बूलोया कहती थी। मैंने बाबा से उसका नामकरण करने को कहा। मुझे तो बिल्कुल नया ही नाम चाहिए था। उन्होंने कहा कि पूर्णिमा तो सब रखते हैं तुम अमावस्या रखो। इस पर सबका वह छोटा-सा कमरा हंसी के वातावरण से गूंज उठा। फिर उन्होंने अमावस्या शब्द का अर्थ और महत्व भी समझाया। कोल (मेरा घर का नाम) की बेटी सोम था गुलाब भी उन्होंने दिया। पर मैं कहां माननेवाली थी। आखिर बाबा ने कहा "तुम कुछ नामों की लिस्ट मेरे

कुछ सालों बाद बाबा पवनार रहने लगे थे। तब भी समय मिलता काकाजी हमें लेकर बाबा के पास जाते थे। उनकी आपस की चर्चाएं सुनने लायक होती थीं। पवनार के पास सुरगांव नामक एक बिलकुल छोटे-से गांव में बाबा कई दिनों तक रोज बस्ती की सफाई करने जाते थे। काकाजी हमें लेकर वहां भी पहुंच जाते थे। बाबा पर शुरू से ही उनकी कितनी गहरी श्रद्धा और स्नेह था इसकी कल्पना जानकार ही कर सकते हैं। उन दिनों बाबा प्रार्थना में कभी-कभी सुर में भजन गाते थे। उस भाव-गंभीर मधुर आवाज को सुनने का सौभाग्य कितनों को मिला होगा।

एकाकी मगन और तेज चलनेवाले बाबा की चाल भी आकर्षक थी। वह हमेशा पंद्रह मिनट में एक मील की रफ्तार से चलते थे। उस जमाने में बाबा को दूर से चलते देखकर ही संतोष हो जाता था। लेकिन पू. बापूजी के तो साथ चलने में ही आनंद आता था। गुरु और पितामह का यह फर्क तो अनादिकाल से चला ही आ रहा है।

सन् १९४ में मेरी शादी में पू. विनोबाजी उपस्थित नहीं थे। कुछ लोगों ने कहा कि तुमने बाबा से आग्रह नहीं किया वरना वह शादी में जरूर आते। मेरे मन में आया कि बाबा को क्या तकलीफ देनी थी। इन सांसारिक बातों के लिए उनका समय लेने में संकोच भी होता था। वह इन बातों से परे हैं। पर शादी की विधि पूरी होते ही पू. काकाजी ने हमें सब बरातियों के साथ बाबा को प्रणाम करने पवनार भेजा। सुबह काफी बारिश हो चुकी थी। हम पवनार के पुल तक पहुंचे। नदी चढ़ी हुई थी। दोनों ओर से मोटर-गाड़ी-तांगा आदि सब आवागमन बिलकुल बंद था। हम लोग पुल के इसी ओर उतर पड़े। नदी के उस पार का आश्रम बहुत सुंदर दिखाई दे रहा था। इतने में स्वच्छ सफेद उत्तरीय से ढकी हुई एक दुबली-पतली लेकिन भव्य मूर्ति बंगले के बरामदे में आकर स्थिर हुई। लम्बी सुभग नाक व शुभ्र दाढ़ी से महाभारत के ऋषि-मुनियों की याद दिलानेवाली यह आकृति बाबा की ही थी। वह भी हमारी ही प्रतीक्षा में थे। हमने यहीं से झुककर उन्हें प्रणाम किया। बाबा ने भी वहीं से हाथ हिलाकर हमारा स्वागत किया और आशीर्वाद दिया। अब भी कई बार वह दृश्य आंखों के सामने घूम जाता है।

महत्त्व समझा रहे थे। सब बच्चों से कौन सबसे ज्यादा पैदल चल चुका है इसपर हाथ उठवाये। इस धीर-गंभीर संत के पास से बच्चे भी हँसते कूदते वापस लौटे। इन्ही दिनों एक रोज सुबह की प्रार्थना के बाद अंधेरे में ही बाबा अपने पथप्रदर्शक की लालटेन के प्रकाश में अजमेर की प्रसिद्ध दरगाह के दर्शन के लिए निकले। उनकी तेज चाल में आज और भी तेजी थी। मानों दरगाह की श्रद्धा और वहां इकट्ठे भक्तगण उन्हें बरबस खींच रहे थे। सैकड़ों पैरों ने पीछा किया। भागते टकराते चप्पलों को सम्हालते ठोकरों से बचते हम सब बाबा का साथ न छूटे इस फिकर में दौड़े चले जा रहे थे। इस पांच मील की पदयात्रा के बाद उस इतिहास-प्रसिद्ध मुसलमानों के पवित्र तीर्थ पर हम लोग पहुंचे। वहां बाबा का भव्य स्वागत हुआ। दरगाह के विशाल प्रांगण में जन-समुदाय मधुमक्खियों की तरह ठसाठस भरा था। प्रवचन के रूप में बाबा की वाणी से मधु की ही वर्षा हुई। इस प्रसंग की भी स्मृति पर अमिट छाप है।

अमृतसर में बाबा के पास श्रीमन्नारायणजी ने सारे देश के साहित्यिकों और खासकर कवियों के सम्मेलन का आयोजन किया था। दर्शक की हैसियत से मुझे भी इसमें सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। चंद महीनों पहले काकासाहब की गुजराती किताब का मेरे द्वारा किया हुआ हिंदी अनुवाद 'सूर्योदय का देश' मैंने बाबा को भेजा था। बाबा भूले नहीं थे। मुझे देखते ही श्रीमन्नारायणजी से बोले "हां अब तो यह भी लेखिका बन गई है न। इसे तो आना ही चाहिए था। अमृतसर के बाबा के पास के वे दो दिन सबके लिए बड़े ही प्रेरणादायी रहे।

o

सामने रखो फिर उसमें से तय करेंगे।" मैंने कुछ नाम इकट्ठे कर रखे थे। उसमें से 'विदुला' नाम चुनकर रखा था पर उसका अर्थ और महत्व कुछ भी नहीं मालूम था। नाम का महत्व जाने बिना नाम रखना पसंद नहीं था। बाबा ने बड़े सरल ढंग से इसका अर्थ बताया। विद् याने विद्वान विदुला याने विदुषी। फिर महाभारत में आये हुए विदुला-आख्यान की पूरी कथा सुनाई। उसी समय से 'बम्पूतोदा' का नाम 'विदुला' हो गया।

पूज्य बापूजी के निर्वाण के बाद सन् १९४८ की फरवरी में पहला अखिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन सेवाग्राम वर्धा में हुआ। हर साल सम्मेलन में जाने का आकर्षण तो रहता ही था खासकर बाबा से मिलने और नये-नये स्थान देखने का। पर ऐसा मौका मिले तब न। एक साल शंकराचार्य की जन्मभूमि कालडी (केरल) में सम्मेलन होने का सुना। दिल तो बड़ा ललचाया। पर बच्चों को कहां छोड़ें यह सवाल सामने था। आखिर श्रीमन्नारायणजी ने जोर लगाया। बच्चों को बंबई छोड़कर उन्हीं के साथ मैं भी अरणाकुलम पहुंची। इस बार कई दिनों बाद मैं बाबा से मिली थी। उन्होंने बड़े स्नेह से बच्चों के घर के सबके कुशल पूछे। किसी के घर की बीवि का नाम भी उन्हें याद था। शंकराचार्य की पवित्र भूमि में मनोरम सृष्टि-सौंदर्य के बीच बाबा के सान्निध्य में यह कालडी-सम्मेलन अद्भुत रहा। मेरे लिए सबसे ज्यादा खुशी की बात तो यह थी कि कालडी से सात मील दूर अपने पड़ाव तक मैं बाबा के साथ-साथ पैदल चल सकी। इतनी दूर बाबा के साथ चलने का मेरा यह पहला ही मौका था। पैरों ने भी बाबा से अधिक अच्छी तरह साथ दिया। गांवों में बाबा के पहुंचते ही विराट हुआ देहाती स्नेह उमड़ा आता था। इस पद-यात्रा की स्मृति हमेशा रहेगी।

एक सर्वोदय-सम्मेलन अजमेर में था। राजस्थान का आकर्षण मुसलमानों का ऐतिहासिक तीर्थ गोकुलभाई भट्ट का अधिकारपूर्ण आग्रह, हटुंडी-आश्रम का मोह और दिल्ली से पास। आग्रह से फिर बाबा के साथ पहुंचने को मिल ही गया। वहां दिनभर भाषण व चर्चाएं सुनने का सुअवसर मिलता था। मेयो कालेज के स्कूल के छोटे बच्चों को बाबा पैदल चलने का

एक-एक शब्द सोच-सोचकर बोलते हैं। उनके प्रवचनों में प्रार्थना की तल्लीनता ही अधिक होती है उपदेश की भावना कम। ऐसे वचनों का धीमे-धीमे निकलना स्वाभाविक ही है।

१९४२ के आंदोलन में मुझे नागपुर-जेल में फिर विनोबाजी के साथ ही रख दिया गया। इस बार उन्होंने गीता के द्वारा संस्कृत पढ़ाना शुरू किया। संस्कृत भाषा के साथ-ही-साथ गीता का विषय भी वह मुझे समझाते। उस समय दूसरे लोग भी वहां आकर बैठ जाते। धीरे-धीरे श्रोताओं की यह संख्या बढ़ने लगी। दो-ढाईसौ कैदी वहां रहे होंगे। उनमें से आधे से अधिक मेरे साथ बैठने लगे। विनोबाजी की आवाज तो धीरे की होती ही थी सो सुनने में लोगों को कोई कठिनाई नहीं होती थी। परेशानी होती थी तो मुझे क्योंकि वह अकेले मझको ही संबोधित करके पढ़ाते थे और मैं सबसे छोटा था। मेरे सवाल बालोचित होते हुए भी विनोबाजी के उत्तर और उत्तर देने का ढंग ऐसा होता था कि बड़ों तथा बड़ाओं को भी उसमें रस आये बिना नहीं रहता था।

जेल में शाम की प्रार्थना के बाद नित्य नियमित रूप से प्रवचन होते थे। सत्याग्रह के अलग-अलग पहलुओं का विनोबाजी विवेचन करते और उनको समझाते। महीनों बीत गये फिर भी उनके प्रवचन गंगा की अखंड धारा के समान चलते ही रहे। सुननेवालों को विचार के लिए नित-नई खुराक मिलती थी। हम लोग प्रवचन की राह देखते रहते और उसमें कमी नागा नहीं होने देते। विनोबाजी प्रतिदिन लगभग ४ मिनट बोलते थे। विचित्र बात यह थी कि बिना घड़ी देखे ही उनके प्रवचन ठीक ४ मिनट पर समाप्त हो जाते थे। कभी एक मिनिट कम तो कभी एक मिनट ज्यादा बस! इससे ज्यादा अंतर नहीं पड़ता था। विषय पर पूर्ण अधिकार होने पर ही यह संभव है।

१९४२ के अगस्त मास से कोई आठ-दस महीने तक जेल के वातावरण में बड़ी सनसनी रही। बाहर से उड़ती हुई कोई भी ताजा खबर भीतर पहुंचते ही खलबली मच जाती। हमें अखबार नहीं मिलते थे। शुरू-शुरू में तो पत्र मुलाकात आदि सब बंद थे। कई महीनों तक

६

शिष्य में भगवान देखनेवाले !

रामकृष्ण बजाज

विनोबाजी के प्रति प्रारम्भ से ही इतना अलौकिक पूज्य एवं आदर भाव रहा है कि कभी उनका विश्लेषण करने या उनके व्यक्तित्व का अंदाजा लगाने का प्रश्न ही नहीं उठा। उनकी प्रकांड विद्वत्ता और अपार ज्ञान के सामने बचपन में हमें वह जैसे लगते थे वैसे ही आज भी लगते हैं। ऐसी स्थिति में उनके संबंध में कुछ लिखना बहुत कठिन है। उनके संपर्क की कुछ घटनाएं याद आती हैं जिनमें से कुछ नीचे दे रहा हूं।

व्यक्तिगत सत्याग्रह के दिनों की बात है। मुझे नागपुर-जेल भेजा गया और काकाजी और विनोबाजी के साथ रख दिया गया। मेरे लिए यह परम संतोष की बात थी। मेरे वहां पहुंचते ही काकाजी ने मुझे विनोबाजी के हवाले कर दिया और कहा "यदि मेरे और विनोबाजी के विचारों में कभी मतभेद हो तो हरेक मामलों में तुमको मेरी राय से चलना चाहिए, लेकिन सत्याग्रह और राजनैतिक मामलों में विनोबाजी की राय पर ही चलना तुम्हारा कर्तव्य है।

जेल में विनोबाजी ने मुझे संस्कृत पढ़ाना शुरू किया। पहले दिन से ही मुझे वह संक्षिप्त वाल्मीकि-रामायण पढ़ाने लगे। उनके पढ़ाने का तरीका इतना रसभरा था कि उनसे पढ़ने में एक अजीब आनंद आता था। उनका अध्यापन आज की शिक्षा के समान बोझिल नहीं था। पढ़ाने में अक्सर वह इतने खो जाते थे कि जोर-जोर से श्लोकों का पाठ करने लगते थे। सारी बैरक में उनकी आवाज गूंज उठती थी। पर शाम को प्रार्थना के बाद उनका जो प्रवचन होता उस समय वे इतने धीमे बोलते कि लोगों को सुनने में भी कठिनाई होती थी। लोग मजाक में मुझसे कहा करते थे कि सुबह इतने जोर से तुमको पढ़ा देने के बाद शाम तक उनकी आवाज में जोर ही नहीं रह जाता। असल में बात यह थी और है कि प्रवचन के समय वह

बन जाते हैं। इस संबंध में एक प्रसंग याद आता है। कैम्प में हमारे साथ हमारा एक और मित्र था। उसका मानसिक विकास पूरा नहीं हो पाया था। वह कई बार बेहूदी या पागलपनभरी बातें किया करता और हम लोग उसे हमेशा किसी-न-किसी बहाने चिढ़ाया करते। हम उसे छेड़ते न इस लिए विनोबाजी ने उसका कुछ अधिक ख्याल रखना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे विनोबाजी उसे संस्कृत आदि पढ़ाने लगे। वह पढ़ाई में काफी कमजोर था फिर भी विनोबाजी बड़े धीरज से उसे पढ़ाते और जरूरत से ज्यादा समय देते। हमने उन्हें उसपर कभी नाराज होते नहीं देखा न धीरज खोते हुए। वह कोई चीज न समझता तो उसे वह बार-बार समझाते। उन्होंने इसे भी अपनी कसौटी ही माना होगा।

शायद उनके इसी गुण के कारण लोग अनजाने ही उनके नजदीक खिंचे चले आते हैं और उनके साथ न जाने किन आत्मिक संबंधों में बंध जाते हैं।

कल की ही एक और बात याद आती है। विनोबाजी खुद सुबह बहुत जल्दी उठते थे और उनकी इच्छा रहती कि और लोग भी ब्राह्ममुहूर्त में उठें। उस समय का अधिक-से-अधिक लाभ उठाया जाय यह इच्छा उनकी रहती थी। मुझे भी जोश चढ़ा और मैंने उनसे कह दिया कि मैं भी सुबह चार बजे उठा करूंगा। उनका तो सुबह मौन रहता था इसलिए वह पास में आकर उठाने के लिए धीरे-से ताली बजाया करते और चले जाते। मेरी आंख अपने-आप ही खुलने लगी क्योंकि मुझे सदा यह ख्याल बना रहता था कि कहीं वह आकर और ताली बजाकर चले न गये हों।

मैं जितने भी व्यक्तियों के संपर्क में आया हूं विनोबाजी जैसा व्यक्तित्व दिखाई नहीं देता। उनका दिमाग जितना गहरा और साफ जितना स्पष्ट है, उतना शायद ही किसीका हो। एक बार मैं अपनी कुछ व्यक्तिगत समस्याएं लेकर उनके पास पहुंचा। उन्होंने मुझे दौरे में आते हुए 'स्वधर्म' का अर्थ विस्तार से समझाया। उनके कहने का मतलब था कि

जब जापान युद्ध में बराबर जीतता हुआ हिंदुस्तान की सरहद तक आया था वातावरण एकदम अनिश्चित-सा और आशंकाओं से भरा हुआ रहता था। जापान ने हिंदुस्तान पर हमला कर दिया तो ? अंग्रेजों को अपनी योजना के अनुसार पीछे हटना पड़ा और हमारे देश पर भी जापानियों ने कब्जा कर लिया तो ? यदि अंग्रेजों को बुरा-न-मानता भारत छोड़ना पड़ा तो कांग्रेसी लोगों को वे गोली से उड़ा भी सकते हैं क्योंकि वे तो जाहिरतौर पर उनके खिलाफ हैं। दुश्मनों के दुश्मन दोस्त इस नाते हमें जापानियों का दोस्त समझा जायगा ऐसे ही भांति-भांति के विचार हर शख्स के दिमाग को परेशान करते रहते। विनोबाजी ने इन सारे वातावरण को आध्यात्मिक धरातल पर ले जाकर लोगों के दिलों से डर को बहुत हद तक कम कर दिया। फलस्वरूप दिमागों में स्थिरता दृढ़ता और चैन ने स्थान ले लिया और हममें हर परिस्थिति का सामना करने की हिम्मत आयी। विनोबाजी के व्यक्तित्व का जेल के वातावरण पर कितना गहरा असर था यह हमने तब अनुभव किया जब उन्हें नागपुर से वेलोर जेल भेज दिया गया।

जेल से छूटकर जब मैं वर्धा पहुंचा तो स्टेशन पर अन्य लोगों के बीच विनोबाजी को भी देखा। उन्हें देखकर मैं मानो धन्य हो गया। प्रेमाधीन होकर गुरुजी स्वयं चलकर स्टेशन आये थे अपने शिष्य की हिम्मत व प्रोत्साहन बढ़ाने ! एक दिन बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, "वेलोर में भी तुम्हारा गीता का वर्ग तो चलता ही रहा। मैं चक्कर में पड़ गया। मैं तो नागपुर में था फिर वेलोर में मेरा वर्ग कैसे चलता रहा ? बात समझ में नहीं आई। पूछने पर विनोबाजी ने बताया "कुछ मित्रों के आग्रह से वहां भी गीता का वर्ग चला। लेकिन मैं तो तुम्हारा ही स्मरण करके ऐसी भावना से वर्ग लेता था मानो तुम्हें ही पढ़ा रहा हूं।" मैं गद्गद् हो गया। शिष्य में भगवान को देख पाना उन्हीं के बस की बात है।

विनोबाजी अपने शिष्य के लिए सब-कुछ त्यागने सब-कुछ सहने को तैयार रहते हैं। ऐसे महान गुरु के लिए तो उनके शिष्य ही उनकी कसौटी

आदमी के लिए ऐसा लगता है कि मानो उसके गले में बड़ा-सा पत्थर बांधकर उसको कुएं में धकेल दिया गया हो। मुझे तो उसके प्रति दया आती है क्योंकि उसे जीवन-भर कुटुंब का कितना बोझ और चिंता उठानी पड़ती है। कितना प्रपंच फैलाना पड़ता है उसे ? कुटुंबीजनों की समस्याओं को हल करने में उसका कितना समय और कितनी शक्ति खर्च हो जाती है ?

"इसके विपरीत जिनको गृहस्थाश्रम में सुख एवं चैन मिला है उन्हें मेरे सरीखों पर दया आती है। उनको लगता होगा कि देखो इनका भी जीवन क्या है ? कहीं कोई सरसता या मिठास नहीं। इसके सुख-दुख की परवा करनेवाला कोई व्यक्ति नहीं। जिनके प्रति यह अपनापन बता सके ऐसा इसका कोई निकट का संबंधी नहीं। इसका जीवन कितना शुष्क और कठोर होगा ?

"असल में मनुष्य की दृष्टि हमेशा अपने गुणों के विकास की ओर होनी चाहिए। गृहस्थाश्रम में त्याग निःस्वार्थ सेवा वात्सल्य आदि गुणों का विकास होता है। इसी तरह अलग-अलग आश्रमों में अलग-अलग गुणों की वृद्धि होती है। यदि किसीमें उपरोक्त गुण पहले से काफी मात्रा में विद्यमान हों तो फिर उसे विवाह की आवश्यकता नहीं ऐसा मानना चाहिए।

एक दिन काकाजी के बारे में चर्चा चलने पर उन्होंने कहा "कई बड़े-बड़े व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनका देश पर बड़ा असर होता है, लेकिन उनका अपने कुटुंबीजनों पर असर हो यह जरूरी नहीं। कुटुंब पर तो उन लोगों का असर होता है, जिनका अपना जीवन सचमुच शुद्ध हो। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए कहा "वस्तुओं के विज्ञापनों से दूर के लोग तो भले ही प्रभावित हों लेकिन निकट के लोगों को असलियत का पता रहता है। इसलिए उनपर उसका प्रभाव नहीं पड़ता। जिनका अपने निकट के लोगों पर भी प्रभाव पड़े ऐसे लोग मैंने बहुत कम देखे हैं। बापूजी और जमनालालजी उनमें से थे। यह कहकर उन्होंने एक घटना सुनाई, "एक बाबाजी थे। बड़े मनस्वी। मुझपर और महादेवभाई पर भी उनका अच्छा असर पड़ा। एक बार महादेवभाई बापू को उनके बारे में बहुत-सी बातें बता रहे थे। अंत में उन्होंने कहा कि उनकी स्त्री भी उनके कार्य से पूर्णतया प्रभावित है

काम छोटा हो या बड़ा उसका क्षेत्र संकुचित हो या विस्तृत इसकी परवा मत करो। जो काम स्वाभाविक रूप से सामने आजाय उसे अच्छी तरह से निभाना ही हरेक का स्वधर्म है। यह भी करूं और वह भी कर यहां भी जाऊं और वहां भी इसे भी खुश करूं और उसे भी—इस प्रपंच में पड़ गये तो माया मिली न राम न इधर के रहे, न उधर के। अतः सहज और स्वाभाविक कार्य को नजर ऊपर रखकर स्वधर्म निश्चित करो। जबतक स्वधर्म निश्चित नहीं होता व्यक्ति का जीवन मंझधार में बिना नाविक की नाव जैसे डगमगाता रहता है। एक बार स्वधर्म निश्चित कर लेने पर उसे सफल बनाने में जुट जाना चाहिए। फिर तो उसमें हर तरह से मदद मिलने लगती है—बनजाने लोगों से भी, समाज से भी और ईश्वर से भी। इसका उन्होंने एक उदाहरण भी दिया। बोले "एक बार मैं घूमने जाने के लिए बाहर निकला तो देखा कि पानी के हौज में एक कीड़ा पड़ा है। वह सतत प्रयत्न कर रहा था कि किसी तरह हौज के बाहर निकल जाय लेकिन उसे सफलता नहीं मिल रही थी। पर उसने अपना प्रयत्न नहीं छोड़ा। एक लकड़ी की सहायता से मैंने उसे बाहर निकाल दिया। इस तरह भगवान ने उसे राहत पहुंचाई।"

उनकी यह बात मेरे दिल में इतनी गहरी पैठ गई कि आज भी जब कोई समस्या सामने आती है तो उसके बनाये स्वधर्म के मानदंड पर उसे उतारने की कोशिश करता हूं। फिर तो सारी बातें अपने-आप ही स्पष्ट हो जाती हैं।

एक बार विनोबाजी से चर्चा हो रही थी। विषय था ब्रह्मचर्याश्रम और गृहस्थाश्रम में कौन-सा श्रेष्ठ है? विनोबाजी ने कहा, "ये दोनों ही आश्रम अपनी-अपनी जगह बहुत ही महत्त्व रखते हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि एक दूसरे से बेहतर है। दोनों को बराबरी का ही मानना चाहिए। किसीके लिए गृहस्थाश्रम अच्छा है तो किसीके लिए ब्रह्मचर्याश्रम अधिक उपयोगी है।"

इसी बीच किसीने पूछ लिया "विनोबाजी आपको कभी शादी करने की इच्छा नहीं होती ?"

उन्होंने बड़े ही स्वाभाविक ढंग से उत्तर दिया "मुझे शादी-शुदा

और उनके कार्य में प्रसन्नतापूर्वक सहयोग देती हैं। तब बापू के मुंह से निकला कि तब तो वह व्यक्ति जरूर मनस्वी होगा।

बाद उन्होंने कहा, "जमनालालजी का असर जो भी उनके कुटुंब पर था, उसकी वजह उनकी मृदुता थी। वह इसके बारे में बहुत सोचा करते थे और मौके-मौके पर मुझसे भी सलाह-मशविरा किया करते थे। लेकिन उनके जीवन के इस पहलू को लोग बहुत कम जानते हैं। एक बार मैं जानकी-देवी से मजाक में कह रहा था कि आप तो जमनालालजी की अपेक्षा अच्छी मराठी बोल लेती हैं और भाषण भी उनसे अच्छा देती हैं। वह बोलीं 'इसमें कौन-सी बड़ी बात है? मेरे तो मन में आये वह बोल देती हूं पर वह तो जो नहीं वैसा करें, यह बोझ हरदम साथ लिये रहते हैं। उन्हें हरेक शब्द जवाबदारी के साथ समझ-बूझकर बोलना पड़ता है।' जानकीदेवी ने जो कहा, इसमें भारी तथ्य है और जमनालालजी के बारे में यह बात बराबर लागू होती है।"

यह कहते-कहते उनकी पुरानी स्मृतियां जाग्रत हो उठीं। अपने बचपन की बातों का उल्लेख करते हुए बोले—

"मैं बचपन में स्कूल में अधिक नहीं पढ़ा यह मैं अपना सौभाग्य समझता हूं। पहले पांच वर्ष कोंकण में घर पर पढ़ा। चौथी कक्षा के बाद अंग्रेजी स्कूल में जा सकता था पर मराठी अधिक सीखकर छठी कक्षा के बाद अंग्रेजी में जाऊं, ऐसी पिताजी की इच्छा थी। डेढ़ वर्ष में छठी का अभ्यास पूरा हुआ। फिर अंग्रेजी का चार वर्ष का अभ्यास तीन वर्ष में ही पिताजी ने घर पर करवा दिया। वह तो एक ही वर्ष में करवाना चाहते थे। पर मैं पढ़ाई के अलावा दूसरे भी कई काम करता था। पिताजी को मालूम था कि मैं अपना समय बरबाद नहीं करता। इसलिए अंग्रेजी के अभ्यास में समय कुछ अधिक लगा। बाद में बड़ौदा कालेज में भरती हुआ। स्वभाव से तो मैं एकदम निडर था। मुझे किसीका डर नहीं लगता था। शिक्षकों से तो कतई नहीं डरता था। वे ही मेरे सवालों से डरते रहते थे। इसलिए मैं सवाल भी कम ही पूछता था। पर इस शहर के लड़कों की संगति से मैं जरूर डरता था। इतने दिन वहां रहकर भी गोपालराव आदि चार-पांच मित्रों को छोड़कर वहां के पांच-छः सौ विद्यार्थियों में

दूसरे जो नहीं सिखा पाते वह उन्होंने इफ्तेमर में सिखा दिया। बाबा का पढ़ाने का तरीका बड़ा ही रोचक था। संस्कृत को मैं बहुत ही मुश्किल भाषा समझती थी। किन्तु कुछ ही दिनों में वह मुझे सरल महसूस होने लगी।

बाबा के निकट आने का यह मेरा प्रथम अवसर था। फिर भी उनसे मुझे इतनी आत्मीयता अनुभव हुई कि अपने मन के कई सवाल मैं उनसे बिना हिचक पूछने लगी। एक बार मैंने विवाहित जीवन के संबंध में कुछ सवाल पूछे तो उन्होंने बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से उनका जवाब दिया। बालक का अपने माता-पिता के साथ किस तरह का संबंध होता है, यह समझाते हुए उन्होंने कहा "बच्चा स्वयं अपने माँ-बाप का चुनाव करता है। वह अपने पूर्व-गुणों के विकास की गति के अनुरूप अपने माँ-बाप चुनता है। अगर बालक गुणवान होता है तो इससे माँ-बाप को अहंकार नहीं होना चाहिए। लेकिन अगर वह बुरा निकला तो उन्हें अफसोस होना चाहिए कि उसके निमित्त वे बने। ऐसा समझो कि अगर कोई माता-पिता सुंदर हैं नीतिमान हैं और बलिष्ठ भी हैं तो बालक इनमें से एक या दो गुणों को ध्यान में रखकर भी अपने माँ-बाप को चुन सकता है। चुने हुए गुणों के अलावा दूसरे गुण उसमें बिल्कुल न हों यह संभव है। ईश्वर का स्मरण करके हम अपने विवाहित जीवन का प्रारंभ करें तो वह बालक के लिए बहुत गुणकारी सिद्ध हो सकता है और उसका असर उसके आगे के जीवन पर पड़ता है। बालक एक तीर के समान होता है और माता-पिता धनुष के समान। तीर की दिशा पक्की करना और उसे गति देना यह धनुष पर निर्भर है। इसलिए अगर माता-पिता अपने गुण विकास और व्यवहार के मामले में सदा सावधान रहें तो बालक पर अच्छा असर होता है।

बाबा का इस तरह समझाना मुझे बहुत अच्छा लगा। मेरे मन को इससे काफी समाधान और प्रोत्साहन मिला।

इसके बाद लखनऊ के पास भोला पुरवा मिल में दुबारा बाबा से मिलना हुआ। इस बीच कई साल बीत गये थे। उनकी भूदान-पद-यात्रा का श्रीगणेश हो चुका था। मैंने सोचा, मुझे भी फिर से अपना परिचय न देना पड़े। जो उपस्थित मन से मैंने उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने तुरंत पूछा

१०

मानव-प्रेम से परिपूर्ण योगी

विमला ठकार

ग्यारह-बारह साल पहले जब बाबा पवनार में रहते थे तबकी बात है। उनकी तेजस्विता और कर्मनिष्ठा, एकाग्रता और लगन, ध्यान और चिंतन-मनन के बारे में जो-कुछ भी सुना था उससे मैं बहुत प्रभावित थी। किन्तु किसी महान हस्ती से मिलने के पहले जो एक प्रकार का भय और संकोच मन में छाया रहता है, उससे मुक्त भी नहीं थी। ऐसे ही कुछ मिश्रित भावों के साथ मैंने पवनार में कदम रखा। उस गोधूलि बेला में धाम नदी के किनारे स्थित पवनार-आश्रम बहुत सुहावना लग रहा था। उस वातावरण में बाबा इसी प्रकार समरस थे जैसे देह में धड़कन। वहाँ के शांत निस्तब्ध वातावरण में उनके चेतन और चिन्तनमय व्यक्तित्व का आभास होता था। उस समय वह किसीके साथ तेजी से घूम रहे थे। साथ-साथ बातचीत भी चल रही थी। दूसरा व्यक्ति बड़ी कोशिश के बाद उनके कदम-से-कदम मिला पा रहा था। कुछ देर खड़ी मैं यही दृश्य देखती रही। एक कौतूहल-सा एक आनंद-सा मन में उठ रहा था। कुछ समय बाद बाबा पास आये तो हमने आगे बढ़कर उन्हें प्रणाम किया।

इन दिनों वर्धा से हमारा प्रतिदिन ही आना-जाना रहता था और बाबा को भी काफी फुरसत थी। उसका लाभ उठाने की दृष्टि से मैंने उनसे संस्कृत पढ़ना शुरू कर दिया। कुछ लोगों ने बताया था कि वह बड़े कठोर अनुशासक हैं। अगर कभी किसी भूल पर नाराज होते हैं तो जोर से डाँट भी देते हैं। मैंने मन में सोचा कि अब खैर नहीं क्योंकि काफी दिन पहले संस्कृत पढ़ी थी और इसलिए भूलें होना स्वाभाविक था। लेकिन मेरे आश्चर्य और खुशी का ठिकाना न रहा जब मैंने देखा कि वह मेरे साथ उसी तरह पेश आते थे जैसे एक छोटे बच्चे के साथ। मैंने उन्हें स्नेह से ओत-प्रोत पाया। बड़ी नरमी से वह हरेक बात समझाते और गलतियों में भी

उठाते हुए फिर चल पड़े। करीब ७ बजे तक हम एक छोटे-से गांव में जा पहुंचे। आज बाबा का पड़ाव यहीं था। वहां नाश्ता आदि करने के बाद बाबा के साथ फिर विचार-विनिमय हुआ। तदुपरांत हम मोटर से वापस लौट आये।

इन कुछ सालों में बाबा के व्यक्तित्व में बहुत-कुछ परिवर्तन आ गया है। जब यह पवनार में थे तब कई बार उनमें शुष्कता का आभास होता था। किंतु अब तो उनके बोलने-चालने में पर्याप्त सरसता आ गई है। उनके समूचे जीवन-क्रम को ध्यान से देखने पर ऐसा लगने लगा मानो एक योगी में मानव-प्रेम से परिपूर्ण कोमल भावनाएं हिलोरें ले रही हैं। पहले वह लोगों से बोलते भी बहुत कम थे लेकिन अब तो उनके पास बैठकर ऐसा लगा मानो वे भी हम में से ही एक हैं बल्कि कभी-कभी तो हम यह भूल ही जाते कि वह एक बहुत बड़े युग-प्रवर्तक हैं। बात-बात में विनोद करना लोगों से बड़ी आर्द्रता और प्रेम से मिलना मानो उनका स्वभाव बन गया है।

मैं अपने मन पर पड़े बाबा के इन प्रभावों का विचार करती हूं तो मेरे लिए यह निश्चय करना मुश्किल हो जाता है कि वह वैरागी हैं या कर्म योगी चिंतक हैं या भक्त या ये चारों ही रूप उनके हैं क्योंकि मैंने उनके ऐसे कई रूप पवनार में देखे थे। सुबह सूर्योदय के साथ-साथ हाथ में फावड़ा लेकर वह घंटों खेतों में परिश्रम करते थे। नियम-पूर्वक अध्ययन तो उनका निर्बाधित चलता ही था। शाम को तेजी से घूमते हुए चिंतन और चर्चाएं भी करते थे। बीच-बीच में विशेष व्यक्तियों को पढ़ाते भी थे। सुबह शाम प्रार्थना यथा-समय होती थी। इधर कुछ दिनों से वह खड़े रहकर प्रार्थना करने लगे थे और चैतन्य महाप्रभु की तरह नाचने भी लग जाते थे। यह सब देखकर ऐसा लगता था कि उनका हर प्रयास सत्य की खोज है और समस्त जीवन एक मंगलमय प्रयोग।

●

"तुम निर्मला हो न ?" मैंने समझा वह शायद मुझे कोई और समझ रहे हैं। इसलिए मैंने उनको अपना नाम बताया—'विमला'। वह मुस्कराकर बोले "अर्थ तो वही है।" फिर तो उनसे जितनी भी बार मिलती हूँ वह मुझे जान-बूझकर निर्मला ही कहते हैं।

एक बार मुझे उनके साथ एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव तक पद-यात्रा में शामिल होने का अवसर भी मिला। मध्य प्रदेश में इंदौर के निकट एक देहात में बाबा का पड़ाव था। बाबा जिस कमरे में ठहरे थे उसीमें हमने कई घंटे बिताये। उनका उठना-बैठना लोगों से मिलना-जुलना खाना-पीना बड़ी दिलचस्पी और कौतूहल से मैंने देखा क्योंकि वे सब कार्य एक साधारण मानव के न होकर एक असाधारण साधक के थे। उनकी हर क्रिया में गहन-गूढ़ अर्थ रहता था।

शाम को टेकड़ी पर जो प्रार्थना और प्रवचन हुआ उसमें शामिल हुई। रात को जल्दी ही सो गई, क्योंकि सुबह पद-यात्रा में शामिल होना था। दूसरे दिन सुबह करीब तीन बजे से ही शिविर में हलचल शुरू हो गई। ठीक चार बजे बाबा अगले पड़ाव की ओर चल पड़े। हमेशा की तरह सैक-ड़ों लोग उनके साथ हो गये। वह समय ऐसा था जब प्रकृति अमृत बरसाती है। जब बाबा चले तब अंधेरा ही था। एक व्यक्ति ने लालटेन ले ली। रास्ता समतल न था इसलिए एक-एक कदम सम्हालकर उठाना पड़ता था। किंतु क्या मजाल जो बाबा की चाल में धीमापन का नाम। धीरे-धीरे अंधकार का साम्राज्य कम होता गया और ऐसा प्रतीत होने लगा कि शीघ्र ही सूर्योदय होनेवाला है। बाबा ने हम सबको एक खेत के समीप रुकने का इशारा किया। बाबा एक जगह बैठ गये और हम उनके इर्द-गिर्द। उस मधुर-बेला में हम सबने मिलकर प्रार्थना की। अरुणोदय की लालिमा मधुमालती के आगमन का संदेश दे रही थी। एक ओर मेरे कानों में बाबा के मित-भूषण चिंतन से प्रवाहित विचारधारा बह रही थी दूसरी ओर सुदूर क्षितिज से 'जयजगत्' का उद्घोष करती हुई प्रभात की किरणें फैल रही थीं। ऐसे क्षणों की तो केवल अनुभूति ही हो सकती है।

प्रातःकालीन प्रवचन समाप्त करके बाबा उठ खड़े हुए और कदम

पटाते हुए फिर चल पड़े। करीब ७ बजे तक हम एक छोटे-से गांव में जा पहुँचे। आज बाबा का पड़ाव यहीं था। यहां नाश्ता आदि करने के बाद बाबा के साथ फिर विचार-विनिमय हुआ। तदुपरांत हम मोटर से वापस लौट आये।

इन कुछ सालों में बाबा के व्यक्तित्व में बहुत-कुछ परिवर्तन आ गया है। जब वह पवनार में थे तब कई बार उनमें शुष्कता का आभास होता था। किंतु अब तो उनके बोलने चालने में पर्याप्त सरसता आ गई है। उनके समूचे जीवन-क्रम को ध्यान से देखने पर ऐसा लगने लगा मानो एक योगी में मानव प्रेम से परिपूर्ण कोमल भावनाएं हिलोरें ले रही हैं। पहले वह लोगों से बोलते भी बहुत कम थे लेकिन अब तो उनके पास बैठकर ऐसा लगा मानो वे भी हम में से ही एक हैं बल्कि कभी-कभी तो हम यह भूल ही जाते कि वह एक बहुत बड़े युग-प्रवर्तक हैं। बात-बात में विनोद करना लोगों से बड़ी आर्द्रता और प्रेम से मिलना मानो उनका स्वभाव बन गया है।

मैं अपने मन पर पड़े बाबा के इन प्रभावों का विचार करती हूं तो मेरे लिए यह निश्चय करना मुश्किल हो जाता है कि वह वैरागी हैं या कर्मयोगी शिक्षक हैं या भक्त या ये चारों ही रूप उनके हैं क्योंकि मैंने उनके ऐसे कई रूप पवनार में देखे थे। सुबह सूर्योदय के साथ-साथ हाथ में फावड़ा लेकर वह घंटों खेतों में परिश्रम करते थे। नित्य-नूतन अध्ययन तो उनका नियमित चलना ही था। शाम को तेजी से घूमते हुए चिंतन और चर्चाएं भी करते थे। बीच-बीच में विशेष व्यक्तियों को पढ़ाते भी थे। सुबह शाम प्रार्थना यथा-समय होती थी। इधर कुछ दिनों से वह खड़े रहकर प्रार्थना करने लगे थे और चैतन्य महाप्रभु की तरह नाचने भी लग जाते थे। यह सब देखकर ऐसा लगता था कि उनका हर प्रयास सत्य की खोज है और समग्र जीवन एक मंगलमय प्रयोग।

"तुम निर्मला हो न ?" मैंने समझा वह शायद मुझे कोई और समझ रहे हैं। इसलिए मैंने उनको अपना नाम बताया—'विमला' वह मुस्कराकर बोले "फर्क तो नहीं है।" फिर तो उनसे जितनी भी बार मिलती हूँ, वह मुझे जान-बूझकर निर्मला ही कहते हैं।

एक बार मुझे उनके साथ एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव तक पद-यात्रा में शामिल होने का अवसर भी मिला। मध्य प्रदेश में इंदौर के निकट एक देहात में बाबा का पड़ाव था। बाबा जिस कमरे में ठहरे थे उसीमें हमने कई घंटे बिताये। उनका उठना-बैठना, लोगों से मिलना-जुलना, खाना-पीना बड़ी दिलचस्पी और कौतूहल से मैंने देखा क्योंकि वे सब कर्म एक साधारण मानव के न होकर एक असाधारण साधक के थे। उनकी हर क्रिया में गहन-गूढ़ अर्थ रहता था।

शाम को टेकरी पर जो प्रार्थना और प्रवचन हुआ उसमें शामिल हुई। रात को जल्दी ही सो गई, क्योंकि सुबह पद-यात्रा में शामिल होना था। दूसरे दिन सुबह करीब तीन बजे से ही शिविर में हलचल शुरू हो गई। ठीक चार बजे बाबा अगले पड़ाव की ओर चल पड़े। हमेशा की तरह पाँच-सात सौ लोग उनके साथ हो गये। वह समय ऐसा था जब प्रकृति अमृत बरसाती है। जब बाबा चले तब अंधेरा ही था। एक व्यक्ति ने लालटेन ले ली। रास्ता समतल न था इसलिए एक-एक कदम सम्हालकर उठाना पड़ता था। किंतु क्या मजाल जो बाबा की चाल में धीमापन आ जाय। धीरे-धीरे अंधकार का साम्राज्य कम होता गया और ऐसा प्रतीत होने लगा कि शीघ्र ही सूर्योदय होनेवाला है। बाबा ने हम सबको एक खेत के समीप रुकने का इशारा किया। बाबा एक जगह बैठ गये और हम उनके इर्द-गिर्द। उस मंगल-बेला में हम सबने मिलकर प्रार्थना की। अरुणोदय की लालिमा अंशुमाली के आगमन का संदेश दे रही थी। एक ओर बूढ़े होंठों में बाबा के चिर-नूतन चिंतन से प्रवाहित विचारधारा बह रही थी दूसरी ओर सुदूर क्षितिज से 'जयजगत' का उद्घोष करती हुई प्रताप की किरणें फैल रही थीं। ऐसे क्षणों की तो केवल अनुभूति ही हो सकती है।

प्रातःकालीन प्रवचन समाप्त करके बाबा उठ खड़े हुए और लंबे कदम

११

मेरा सौभाग्य

सुमन जैन

विनोबाजी को देखने और उनसे मिलने का मौका मुझे हाल ही में मिला। इससे पहले मैंने उन्हें देखा जरूर था, बात भी की होगी पर कुछ खास ध्यान नहीं। जब मैं सात या आठ साल की थी उस समय कुछ दिनों के लिए वह बम्बई में हमारे घर पर ठहरे थे। उस समय की मुझे सिर्फ यही याद है कि वह पीछे के बरामदे में खूब घूमते रहते थे। सुबह हो या शाम जब देखो चहलकदमी करते हुए ही नजर आते। उनका पहनाव और दाढ़ी को देखकर भी मुझे कुछ कम कौतूहल न होता था।

पर उन दिनों मेरे मन में यह बात कभी नहीं आई कि विनोबाजी के पास बैठूं, उनसे कुछ पूछूं या सुनूं। अब लगता है कि वैसा अमूल्य समय व्यर्थ ही खोया।

वर्धा में भी बचपन में मैंने बापूजी के साथ उन्हें देखा था पर उस समय बहुत छोटी होने के कारण मुझे कुछ अधिक याद नहीं। सिर्फ इतना जरूर ध्यान है कि पवनार में लाल बंगले में सब बच्चों के साथ मैं भी उनके पास जाती थी। कुछ ऐसा भी याद आता है कि उन्होंने एक बार मुझसे बिच्छू पकड़ने के लिए कहा और बताया भी कि बिच्छू कैसे पकड़ते हैं। पर यह सिर्फ ख्याल भ्रम भी हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

१९६ में विनोबाजी जब अपनी पद-यात्रा के दौरे पर अमृतसर आये। उस समय मैं दिल्ली में थी। उनसे मिलने और उन्हें देखने की उत्कण्ठा तो थी ही सो मैं अपनी चाचीजी, बुआजी और भाइयों के साथ अमृतसर चली गई। जिस समय हम लोग वहां पहुंचे उनका भाषण हो रहा था। बीसों-से लोग सभा के [illegible]। मैं भी चुपचाप एक तरफ जाकर बैठ गई।

मैं कांगड़ा जिले में होशियारपुर से ही उनके साथ हो लिया था। पठानकोट में बाबा तीन दिन रहे। यहां पंजाब के कार्यकर्ताओं ने विदा की। कुछ काश्मीर में एक पड़ाव तक साथ भी आये।

काश्मीर एक बड़ीबोगरीब प्रदेश है। ज्यादातर जमीन पहाड़ों पथरीले टीलों और नदी-नालों ने घेर रखी है। उपजाऊ जमीन बहुत ही कम है। वहां भूदान की चर्चा ही बेकार थी। गांवों में दस-पांच घर से ज्यादा नहीं होते। इसलिए गांवी-दल का पूरा बोझ गांववालों द्वारा न उठा सकने के कारण हमारा सारा सरंजाम और रसद सरकार की ओर से साथ चलता था। इसके अलावा डाक्टरी के पूरे सामान की दो ट्रकें और एक जीप भी साथ रहती थी। पुलिस की दो ट्रकें खाना बनानेवाले फर्राश आदि भी सब जनरल मकबूलबख्शजी के नेतृत्व में बाबा की सेवा के लिए आये थे। बाबा को अपनी सुरक्षा के लिए पुलिस आदि रखना बिल्कुल नहीं सुहाता था लेकिन विरोधियों की वजह से सरकार को बाबा की फिक्र थी। अंत में बाबा की ही जीत हुई। सारी पुलिस वापस भेज दी गई। यही हाल दवा-दारू की ट्रकों का हुआ। केवल एक डाक्टर और दवाइयों की एक पेटी को साथ रहने का 'परमिट' दिया गया। बाबा ने अपनी निजी पार्टी की संख्या भी दस नियत कर दी।

इस प्रकार करीब तीस व्यक्तियों का हमारा दल पठानकोट से कठुआ होते हुए जम्मू पहुंचा। बाबा वहां से उत्तर-पश्चिम की ओर नौशेरा होते हुए पुंछ पहुंचे। पुंछ से श्रीनगर जाने के लिए बाबा को लगभग १५, फुट ऊंची 'पीर पंजाल' की पर्वतमाला पार करनी थी। रास्ता कैसा-क्या है यह देखने के लिए श्रीनगर से उस तरफ एक दल भेजना निश्चय हुआ। मुझे भी उस दल के साथ पीर पंजाल लांघने का मौका मिला। श्रीनगर से टनमर्ग तक हम एक फौजी ट्रक में आये। वहां से हमने पैदल प्रस्थान किया और ४ फुट पर, सीमा की एक पुलिस चौकी पर रात बिताई। दूसरे दिन वहां से सुबह ६ बजे चले। मौसम बड़ा ही सुहावना था। चमली रमझमी खाते हुए हम ११ बजे १५ फुट ऊपर पीर पंजाल पहुंचे। वहां का दृश्य बहुत ही सुंदर था। चारों ओर बर्फ, बीच में कहीं-कहीं आधी जमी हुई झीलें। हम वहां से ७ फुट उतरे और फिर १ फुट

१२

विनोबाजी के साथ एक रोमांचकारी यात्रा

भरतकुमार

पूज्य बाबा का हाथ तो जन्म से ही मेरे सिर पर रहा है परंतु मुझे उनकी पहली याद परंधाम-आश्रम से ही है। मैं मां और बापू (पिताजी) के साथ हफ्ते में एकाध बार आश्रम हो आया करता था। मां तो बाबा के पास ही ज्यादा समय बिताती थी पर मेरा अधिक समय नदी में नहाने और आश्रम में खेलने में ही बीतता था।

जब पूज्य बाबा ने कांचन-मुक्ति का प्रयोग आरंभ किया तो आश्रम में कुछ और आकर्षण बढ़ गये। खाने में मूंगफली का 'मक्खन' और गुड़ का 'अमृत' मुझे अत्यंत प्रिय थे। उनके साथ ज्वार के आटे को कूटकर में भाप कर बनाई हुई गरमागरम भाकरी मुझे बहुत अच्छी लगती थी। उन दिनों प्रातः छह बजे ही भोजन बन जाता था। एक मेज पर सब वस्तुएं रख दी जाती थीं खड़े होकर बाबा खुद सबकी थालियां परोसा करते थे।

सन् १९५१ में सर्वोदय-यात्रा का आरंभ हुआ। तेलंगाना के पोचम-पल्ली ग्राम में बाबा को भूदान-यज्ञ की प्रेरणा मिली। वहां से लौटकर बाबा पुनः आश्रम में आ गये। कुछ दिनों बाद वह दिल्ली की ओर रवाना हुए। कुछ साथी उनके साथ चले। मैं भी नागपुर तक साथ रहा। पवनार से नागपुर कोई चालीस मील है। पांच दिन में वहां पहुंचे। बाबा के साथ पदयात्रा में रहने का यह मेरा पहला अवसर था। तबसे यह क्रम अबतक चालू है। छुट्टियों में जब-जब भी मौका मिलता है, मैं बाबा के साथ पद-यात्रा में शामिल हो जाता हूं। अनेक स्मरणीय यात्राएं हुई हैं पर सबसे अधिक रोमांचकारी तो उनकी कश्मीर की यात्रा है। आज भी जब इस यात्रा का स्मरण करता हूं तो शरीर रोमांचित हो उठता है। इस यात्रा में मैंने बाबा के जितने रूप देखे वे मेरे हृदय पर अमिट छाप छोड़ गये हैं।

दूसरे दिन हम लोग मंडी पहुंचे। दो नालों के संगम पर स्थित यह कोई १५ की आबादीवाला गांव है। यहां बाबा का बड़े जोरों से स्वागत हुआ। सारा गांव झंडियों से सजाया गया था। सड़कों के दोनों ओर स्कूलों के बच्चे 'जयजगत' के नारे लगा रहे थे। साथ में कुछ लोग ढोल बजाते हुए चल रहे थे। लोगों के स्नेह और स्वागत को देखकर बाबा इतने भावविभोर हो गये कि उन्होंने भी एक ढोल ले लिया और उन लोगों के साथ ही करीब दो फर्लांग तक उसी लय में ढोल बजाते चले। बीच में मुझसे बोले "दिनभर फिल्म बरबाद करता है। अब मेरी फोटो ले न!

हम लोगों के ठहरने का प्रबंध 'बूढ़े अमरनाथ' के मंदिर में किया गया था। इधर वर्षा लगातार हो ही रही थी। उससे नालों में पानी बढ़ने लगा। दूसरे दिन सुबह तक हमारे पासवाले नाले में पानी की सतह करीब २५ फुट बढ़ गई। किनारे के लोग घर खाली कर-करके ऊपर की ओर भाग रहे थे। नाला धीरे-धीरे किनारों को निगलता हुआ चौड़ा होता चला जा रहा था। दोपहर तक पानी का स्तर करीब २ फुट और बढ़ गया। इतने में खबर मिली कि मंडी का पुल टूट गया, यानी पुंछ की ओर से हमारा संपर्क समाप्त। अब एक-एक करके किनारे के घर पानी में विलीन होने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया। वर्षा उसी रफ्तार से जारी थी। थोड़ी देर में खबर आई कि ऊपर की ओर लोरन के रास्ते का भी पुल टूट गया है। अब हम चारों ओर से पानी से घिर गये। एकदम प्रलय का-सा दृश्य दिखाई देने लगा।

शाम को खबर आई कि प्रवाह ने मंदिर के पास की जमीन को काटना आरंभ कर दिया है। हम बाबा को सोने से उठाकर बारिश में ही ऊपर की ओर जाते। बाबा जबतक कुछ कहें, तबतक तो हम उन्हें करीब ७ फुट ऊपर के एक छोटे-से पंचायत-घर में पहुंचा चुके थे। मंदिर में वापस जाने की किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी। न जाने कब मंदिर पानी में समा जाय? महादेवीताई को बाबा के सामान की चिंता थी। अतएव अनुमानसिंह ने मुझे अपने साथ चलने को कहा। हम दोनों ने जाकर निरीक्षण किया तो लगा कि जिस नींव के पानी मिट्टी काट रहा है। उसने पूरे

पहले के बाद करीब ३५ मील का सफर उसी दिन तय करके कोरेल पहुँचे। वहा से मंडी और मंडी से बस द्वारा पुंछ। यहाँ बाबा से आ मिले। रास्ता बिल्कुल साफ था।

किन्तु दैवयोग से पुंछ में मूसलाधार वर्षा होने लगी। लेकिन बाबा रुकनेवाले कहाँ थे? दूसरे दिन सुबह ठीक चार बजे उसी बरसते पानी में चल पड़े। दो ट्रकें और एक जीप हमारा सामान लेकर आ रही थीं। उनमें से एक मोड़ पर जीप और एक ट्रक तो निकल गई। उसके बाद ही बड़े जोर से जमीन धंस गई। १५ गज पीछे आती हुई दूसरी ट्रक न जाने किसके प्रताप से उन पत्थरों की वर्षा से बची जिनको सड़क से हटाने में बीस आदमियों को पूरे तीन दिन लगे। आगे हमें एक बरसाती नाला मिला, जो काफी वेग से बह रहा था। उसे पार करना खतरे से खाली न था। बाबा को जबरदस्ती रोका, पर वह न माने और मौका मिलते ही धर्मदेवभाई और जालमभाई का हाथ पकड़कर उस नाले में उतर पड़े। फिर हम क्यों रुकते? करीब बीस लोगों ने हाथ से हाथ पकड़कर सांकल-सी बनाई और कमर तक पानी में वैसे ही नाला पार किया कि ऊपर से एक तेज प्रवाह आया। पानी का स्तर एकाएक करीब चार फुट बढ़ गया। सोचता हूँ, यदि यही प्रवाह कुछ मिनट पहले आ गया होता तो क्या होता? हम दो भागों में विभाजित हो गये थे। एक टोली में बाबा के साथ हम करीब दस जने थे। दूसरी में सब सामान और रसद के साथ बाकी लोग। जब हम पांच मील बारिश में चलकर अगले गांव में पहुँचे तो पूरी तरह ठिठुर रहे थे। पानी अभी तक बरस ही रहा था। दोपहर का समय हो गया था। बाबा ने और हमने कुछ भी नहीं खाया था। गांववालों ने थोड़ा दूध और रोटी लाकर दी। वह हमें अमृत से भी प्रिय लगी। हमें बाबा की चिंता थी। उनका खाना नाले के उस पार रह गया था। उस दिन बाबा के लिए बड़ी कठिनाई से दलिया और दूध का प्रबंध किया गया। प्रार्थना-सभा के समय बूंदाबांदी हो रही थी। लोग कम थे परंतु बाबा काफी बोले। शाम को किसी तरह एक फौजी ट्रक में जो भाग्यवश नाले के उस ओर खड़ा था जनरल कुलवन्तसिंह ने हमारा कुछ सामान भिजवाया, अन्यथा उन भीगे कपड़ों में हमें वह ठंडी रात न जाने कैसे बितानी पड़ती।

लकड़ियां हटाने पर एक बारह वर्ष के लड़के को निकाला। उसके नाक मुंह, आंख कान में मिट्टी भरी हुई थी पर सांस चालू थी। डाक्टर ने उसे ग्लूकोज दिया और इंजेक्शन लगाये। चेहरे पर से मिट्टी हटाई और उसे कैंप में ले गये। बाद में चार और बच्चे निकले लेकिन मरे हुए। सारा गांव शोक में डूबा हुआ था। सबको अपनी-अपनी पड़ी थी सो हमें ही उनको उठाना पड़ा। वहीं उनकी झोंपड़ी के पास ही गढ़ा खोदकर हमने पूरे परिवार को पूर्ण संस्कार के साथ दफनाया। शाम को प्रार्थना में पू बाबा ने ईश्वर से उस परिवार की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

नाले का पानी बारिश बंद होते ही उतरना शुरु हो गया। इस बीच एक दुर्घटना और हो गई। जब पानी का स्तर नाले से कम हुआ तो बहकर आई हुई लकड़ियां इधर-उधर पत्थरों से अटकी पड़ी थी। पंचायत-घर का चौकीदार अपने तीन दोस्तों के साथ लकड़ियां बटोरने लगा। अचानक पानी का वेग बढ़ गया और वे बीच में एक छोटे-से मिट्टी के टीले पर फंस गये। उनकी सहायता के लिए रस्से फेंके गए। चौकीदार के तीनों साथी तो किसी तरह आ गये पर उस बेचारे की हिम्मत ने जवाब दे दिया। वह बोला कि रस्से से तो मैं बीच में ही मर जाऊंगा। जरा पानी कम होने पर शायद आ सकूं। पर पानी तो घटने के बजाय बढ़ने लगा। उसने पूरी कोशिश की परंतु वह रस्सी को ठीक से न पकड़ सका। एक ओर का प्रवाह आया और हम सबके देखते-देखते उसे अपने साथ बहा ले गया।

दिल दहलानेवाली ऐसी कई घटनाएं घटी। हमारा कैंप तो पूरा अस्पताल बना हुआ था। जिस लड़के को हम दो दिन पहले मलबे से निकालकर लाये थे उसके हाथ की हड्डी टूट गई थी और सिर में दिमाग के पास काफी बड़ा घाव था। डाक्टर ने बड़ी कुशलता के साथ उसका आपरेशन किया। उसकी हालत सुधरती दिखाई दी। हम बारी-बारी से बराबर उसके पास रहे। एक दिन वह कुछ बोला भी और अपने एक चाचा को शायद पहचाना भी लेकिन उसके चाचा ने उसके होश में आते ही गलती से सब घरवालों के मरने की खबर उसे सुना दी। इस सदमे को वह सह न सका और चल बसा।

पुल तैयार होने की सूचना मिलने पर बाबा ने आगे चलने की इच्छा

मंदिर को पानी में आने में करीब एक घंटा लगेगा। हमने बाबा का सामान पंचायत-घर पहुँचा दिया। नाले में पानी की सतह बढ़ती ही जा रही थी। जो नाला मंदिर से करीब ४ फुट नीचे बह रहा था वह अब बराबर में बहता नजर आ रहा था। थोड़ी देर में ही अंधेरा हो गया। ऊपर पंचायत-घर के दो छोटे-छोटे कमरों में जिनमें तीन खाटें भी एक साथ नहीं आ सकती थीं बाबासहित करीब ५ आदमी ठहरे हुए थे। एक कमरे में बाबा का पलंग और उनकी मंडली के लोग थे दूसरे में बाकी के लोग और कुछ गांव-वाले तथा मिस्त्री के बीस बच्चे थे। पास ही एक तंबू में खाना बन रहा था। उस दिन एक-एक रोटी सबके हिस्से में आई। रात में सब लोग तो ऊपर सोये पर कर्नलसाहब के साथ मैं नीचे मंदिर में ही सोया। एक-एक मंदिर से बीस गज पर आकर पानी ने मिट्टी काटनी शुरू कर दी। फिर तो हमारी देखा-देखी और भी दस-बारह लोग आ गये। हम बारी-बारी से पहरा देते रहे कि कहीं पानी और जमीन तो नहीं काट रहा है। हम लोग ऊपरवालों की अपेक्षा अधिक आराम से सोये।

सुबह पता चला कि आधे से ज्यादा मंडी शहर को नाला निगल चुका था। दो दिन पहले जिस सड़क से हम आये थे अब वहां पानी के सिवा और कुछ दिखाई नहीं देता था। सड़क के एक तरफ के सब घर और दुकानें पानी में समा गई थीं। जो लोग घर छोड़कर भागे थे उनके पास पहने हुए कपड़ों के अलावा कुछ न बचा था।

सुबह वर्षा बंद हो गई। कैंप में कर्नलसाहब ने राशनिंग कर दी। दो रोटी सुबह दो रोटी शाम। बाबा ने आदेश दिया कि सब अपनी चिंता छोड़कर गांववालों की मदद में लग जायें। एक दस बरस का लड़का दौड़ता हुआ आया कि कैंप से कोई डेढ़ मील दूर जमीन धसक जाने से एक घर दब गया है। उसका कहना था कि उसमें भी आदमी थे। कर्नल अनुपालसिंह के आदेश से तत्काल डाक्टर को साथ लेकर हम उस ओर रवाना हुए। वहां पहुंचने पर हमें सिर्फ मिट्टी का एक टीला-सा नजर आया। हमने उसे खोदना शुरू किया। एक-एक करके चार आदमियों की लाशें निकलीं। फिर दो मरी हुई गायें पांच मरी हुई और दो जिन्दा बकरियां। इतने में मलबे में से किसीके कराहने की-सी आवाज आई। मिट्टी और

अगले दिन हमें पीर पंजाल पार करना था पर बफ के लोगों को इसकी तनिक भी चिन्ता न थी। सब काश्मीर पहुँचने की प्रसन्नता में गा बजा रहे थे। एक खास बात यहाँ देखी। रात के ग्यारह बजे भी हमें सूर्यास्त की लालिमा दिखाई दे रही थी। वैसे भी चाँदनी रात थी। चारों ओर के धवल हिम-शिखर हमारे साथ आँख-मिचौनी खेल रहे थे। जैसे ही चाँद बादल में छिपता चारों ओर अंधेरा छा जाता। कभी कोई शिखर चमकता तो कभी कोई और कभी एकदम प्रकाश हो जाता था।

रोज की तरह सबके सो जाने पर जनरलसाहब और मैं अगले दिन का कार्यक्रम तय करने लगे। मैं तो जनरलसाहब का असिस्टेंट-सा बन गया था। जहाँतक हो सकता था वह मुझे अपने साथ ही रखते थे। हम सुबह तीन बजे चलकर छह बजे सूर्योदय के पहले पीर पंजाल पहुँचने का विचार करके सोये। बाबा प्रातः छह और सात के बीच निकलनेवाले थे।

सुबह ठीक तीन बजे घोड़ेवाला आकर उठा गया और साढ़े तीन बजे कैंप से हम चले। क्षितिज पर अब भी हमें लाली दिखाई दे रही थी। जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गये लालिमा बढ़ती गई। बर्फ सख्त थी इसलिए हमें संभल-कर चलना पड़ता था। धीरे-धीरे टार्च से रास्ता देखते-देखते बढ़े। जनरल-साहब और मैं इस रास्ते से एक बार पहले आ चुके थे। अतः हमें कोई खास परेशानी नहीं हुई। ठीक ६॥ बजे हम दर्रे पर पहुँच गये। अब हम करीब १४ फुट की ऊँचाई पर थे। अरुणोदय तो और तीन बजे से ही होता दिखाई दे रहा था पर प्रातःकाल का वर्णन शब्दों से बाहर की बात है। जैसे ही पहली किरणें आई नंगा पर्वत का शिखर स्वर्ण-मुकुट की तरह चमचमा उठा। शनैः-शनैः चारों ओर स्वर्ण मुकुटों की एक पंक्ति खड़ी हो गई और फिर रंग-बिरंगा आकाश—मानो अर्वाचीन इन्द्र-धनुष आकाश में खिल गये हों। जनरलसाहब तो एक अच्छा-सा पत्थर देखकर अपनी रोजाना की पूजा में बैठ गये। आम तौर पर वह करीब १५ मिनट से आध घंटे तक ध्यान करते थ फिर रामायण, गीता, बाइबल या कुरान में से कुछ पढ़ते थे। किन्तु उस दिन तो उनकी पूजा बढ़ाई पर चली। इस बीच मैं पास के ढालों पर से फिसलने का मजा ले रहा था।

इस दर्रे पर सब कुछ ही दिशा में बिल्कुल बदल गया था। सिर्फ मौ

प्रकट की। इसपर जनरल यदुनाथसिंह ने आगे जाकर एक बार रास्ता देखने की आज्ञा मांगी। बाबा ने उन्हें २४ घंटे का अवकाश दे दिया। परंतु उनके चल देने के बाद बाबा ने मुझे बुलाकर कहा कि उनको वापस बुला-कर लाओ। मैं तुरंत दौड़ता हुआ गया। पर वह क्यों आने लगे। वह जानते थे कि यदि आगे रास्ता देखने नहीं गये तो बाबा को कठिनाई उठानी पड़ सकती है। इसलिए उन्होंने बाबा की इच्छा टाली और २४ घंटे में करीब ५६ मील का चक्कर लगाकर बाबा के पास खबर भिजवाई कि हमें जिस रास्ते से पीर पंजाल जाना है, वह आगे एकदम टूटा है। पर एक दूसरा रास्ता देख लिया गया है। उससे भी कठिनाई तो होगी पर जाया जा सकता है। वह हमको अगले पड़ाव कोरेन पर मिलेंगे।

बाबा को जैसे ही यह सूचना मिली वह वहां से चल दिये। सब समझे कि रोज की तरह घूमने जा रहे होंगे। पर जब काफी देर हो गई और बाबा वापस नहीं आये तो लोगों को चिंता हुई। समाचार मिला कि बाबा अगले पड़ाव कोरेन पहुंच गये हैं। अब तो कैंप में भगदड़ मच गई। तुरंत बाबा का सामान खच्चरों पर लदवाकर पहले चलीं फिर बाकी के सामान के साथ हम। रास्ते की ऐसी हालत थी कि खच्चरवाले सिर्फ पैसों पर जाने को राजी न थे। वे साथ में अनाज भी मांगते थे। उनका कहना था "हम आखिर रुपये खा थोड़े ही सकते हैं। हमें अनाज चाहिए, नहीं तो हम नहीं चलते। अंत में कुछ राशन भी उन्हें देना तय हुआ।

कोरेन पहुंचे। बहुत ही सुहावनी जगह है। दूसरे दिन कई पहाड़ी बस्तियों से होते हुए 'पोशपथर' पहुंचे। यहां सिर्फ दो झोंपड़ियां थीं। यह जगह ११ फुट की ऊंचाई पर थी। चारों ओर हिमाच्छादित पर्वत शिखर। पास में ही पानी के झरनों का मनमोहक निनाद। घास ऐसी कि नरम-से-नरम कालीनों को भी मात कर दे। उसके बीच बहुरंगी फूल एक विचित्र दृश्य उपस्थित कर रहे थे। आज हम काफी कड़ी चढ़ाई चढ़कर आये थे पर इस जगह पर पहुंचते ही सारी थकान दूर हो गई।

बाबा बहुत प्रसन्न थे। वह बराबर वेदों के मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे। बीच-बीच में हमें भी कुछ बातें बता रहे थे—काश्मीर के अतीत के बारे में।

दिन पूर्व ही तो हमने इस पार किया था। उस समय चारों ओर बर्फ के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं देता था। पर अब पत्थरों में बर्फ ढूंढने के लिए आंखें चौकन्नी पड़ती थीं। दर का आकार बदल गया था। मैं समझता हूँ ४ से ५ फुट तक बर्फ पिघल गई होगी। यही नदी में बाढ़ का कारण थी। लेकिन पहले दिन जम-जमी झीलों का मैं देख गया था वे अब झरनों का रूप धारण कर चुकी थीं।

बाबा ११ बजे ऊपर पहुंचे। वह बड़ी ही धीमी गति से आ रहे थे। हर ५ फुट के बाद १ मिनिट का विश्राम ले रहे थे। बलरामसाहब ने और मैंने उनका स्वागत किया। हमें यहां देखकर वह आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि रास्ते में तो हमने उन्हें पार किया नहीं था। पर जब मैंने उन्हें बतलाया कि हम कई बजे से आपका यहां इंतजार कर रहे हैं तो वह यहां के बारे में हमसे प्रश्न पूछने लगे। हमने उन्हें कुछ मुख्य चोटियां दिखलाईं। काश्मीर घाटी का संक्षिप्त परिचय कराया। बलरामसाहब ने वूलर झील श्रीनगर, डल-झील अमरनाथ वगैरह बतलाये। जब मैंने सूर्योदय के दृश्य के बारे में उनसे चर्चा की तो बोले ऐसा मालूम होता तो मैं भी तुम्हारे साथ ही आता।

सब यहीं बैठे। प्रार्थना हुई। बाबा एकदम ध्यान-मग्न हो गये। जगह ही ऐसी थी। हमारे मन में एक अजीब-सा संतोष का भाव था, मानो हम संसार की सबसे ऊंची चोटी पर बैठे हों।

दर्रा एक बजे से पहले पार कर लेना चाहिए। बाद में ऐसी तेज हवा चलने लगती है कि बड़े हुए पत्थरों तक को उठाकर फेंक देती है। बादल घिरने शुरू हो गये। यही उस आनेवाली हवा की पूर्व-सूचना थे। हम चाहते हुए भी रुक न सके। अब तो उतार-ही-उतार था। गुलमर्ग दिखाई दे रहा था। पहला मुकाम हमने ८ फुट पर 'ढुंगस' पर किया दूसरा ४ फुट पर। फिर गुलमर्ग आ पहुंचे। बख्शीसाहब के साथ एक बड़ी भीड़ ने बाबा का प्रेमभरा स्वागत किया। सबको हमारे सकुशल पहुंचने की खुशी थी।

●

खा रहे थे। जैसे ही उन्होंने खाना समाप्त किया मैंने उनसे हस्ताक्षर देने की प्रार्थना की। वह बोले "मैं 'गीता प्रवचन' पर ही हस्ताक्षर करता हूं।" किंतु यह कहते हुए भी उन्होंने हाथ-कागज की उस पुस्तिका पर हस्ताक्षर कर दिए फिर मुस्कराकर विनोदपूर्वक बोले "देखो किसीको बताना नहीं। यह तुम्हारे लिए अपवाद है।"

अपनी पद-यात्रा के दौरान बाबा दिल्ली के पास पटटीकल्याण और मेरठ भी गये। मुझे इन दोनों जगह जाने का मौका मिला। बाबा के दर्शन हुए और उनके साथ रहने का अवसर भी मिला परंतु उनकी पद-यात्रा में शामिल होने की चाह मेरे मन में अबतक बनी है। भगवान ने चाहा तो वह भी पूरी होगी

•

बाबा के दर्शन के लिए गये। बाबा एक सफेद चद्दर की बैठक पर आगे बैठे हुए थे। बदन पर खादी की एक सफेद छोटी धोती थी। कंधे पर एक दुपट्टा। चेहरे पे तेज झलकता था। उस समय आकृति में सादगी का कैसा अद्भुत समावेश था। गांव के कई लोग बाबा से बातचीत करने आए थे। हम भी उन्हें प्रणाम कर उन्हींके बीच बैठ गये। वे जो बातचीत कर रहे थे वह तो कुछ समझ पड़ी नहीं लेकिन उनको देखने में ही आनंद आता रहा। फिर तो रोज सुबह तैयार होकर बाबा की घास-फूस की आकार से मिली झोंपड़ी में जाते और रात होने पर लौटते। सुबह बाबा कार्यकर्ताओं की बैठक में बोलते और शाम को मैदान में आम जनता के सामने भाषण देते। ये दोनों भाषण मेरे मौसेरे भाई रमण और मैंने लिखे थे। बीच-बीच में काफी छूट जाता था। संध्या का भाषण हमें खासतौर से पसन्द आता था क्योंकि वह बाबा की भूमिदान से संबंधित रोचक घटनाओं से भरपूर रहता था। उन घटनाओं को इकट्ठा किया जाय तो कहानियों की अच्छी पुस्तक बन सकती है। आम जनता की समझ में आ सके इसलिए ये भाषण सीधे सरल और स्पष्ट रहते थे। हर घटना के पीछे कुछ शिक्षा रहती थी।

कई साल बाद सीकर के एक छोटे-से ग्राम काशीकाबास में मुझे पुनः बाबा के दर्शन हुए।। काशीकाबास पू. जमनालालजी की जन्मभूमि थी इसलिए बाबा वहां के प्रति खासतौर से आकर्षित हुए थे। वह एक पाठशाला में ठहराए गए थे। पाठशाला के आस-पास का दृश्य मनोरम था। राजस्थान के सुनहरी बालू के टीलों की चकाचौंध देखने लायक थी। पास ही कुआं था। रंग-बिरंगे घाघरे-ओढ़ने पहने और चांदी के गहनों से लदी ग्रामीण औरतें सिर पर मटका रखे पानी भरने चलती चली आ रही थीं। बाबा उनके गांव में आते हैं, इससे वे अपनेको धन्य मानती थीं। मैं बाबा के हस्ताक्षर लेने के लिए अपने साथ ग्रामोद्योग के कागज की स्वाक्षरी कापी (आटोग्राफ बुक) ले गई थी। मुझे मालूम था कि बाबा 'गीता-प्रवचन' के अलावा किसी और चीज पर हस्ताक्षर नहीं देते। परंतु मैंने मौके का फायदा उठा लिया। जब हम उनके कमरे में गये वह पत्र-व्यवहार

जिस दिन किसी भाई का हाथ न पकड़ता उस दिन मैं अवश्य पीछे छूट जाता और फिर मुझे भागकर भीड़ में से आने का रास्ता मांगते हुए आगे आना पड़ता था।

रास्ते में लोग बाबा का शंख-ध्वनि के साथ स्वागत करते थे। अगले पड़ाव पर पहुंचकर बाबा स्वागतार्थ आये हुए लोगों से दो शब्द कहते। हम लोग भी अपनी कापियों में दूसरे यात्रियों की देखा-देखी बाबा की कही हुई बातें जैसे-तैसे लिख लेते और बड़े प्रसन्न होते।

दिनभर हम पद-यात्री कार्यकर्ताओं के साथ खेलते और उनके काम में बाधा डालते रहते थे। उस कष्ट का बदला हम शाम को प्रार्थना-सभा के बाद 'गीता-प्रवचन' 'हमारी प्रार्थना' आदि बेचकर चुकाते। 'हमारी प्रार्थना—एक आना' 'गीता-प्रवचन—एक रुपया' आदि की आवाज लगाते और जब लोग हमसे पुस्तकें खरीदते तो हमें बहुत खुशी होती।

इस तरह हमने बाबा के साथ झरिया देखा वहां की कोयले की खानें देखीं सिंदरी का कारखाना देखा दामोदर नदी पार की बंगाल में प्रवेश किया, बांकुड़ा जिले म चल मेदिनीपुर जिले में पहुंचे। श्री रामकृष्ण परमहंस के गांव विष्णुपुर में भी ठहरे। आगे खड़गपुर पहुंचे। वहां का रेलवे स्टेशन देखा।

बंगाल-प्रवेश का दृश्य मुझे अब भी अच्छी तरह याद है। बिहार के अंतिम पड़ाव से जिस दिन बाबा चले उस दिन बिहार के लगभग १५ कार्यकर्ता और ग्रामीण भाई साथ में हो गये थे। बिहार और बंगाल की सीमा पर बाबा कुछ देर रुके। बिहार के कार्यकर्ताओं से कुछ बात की और उन्हें विदाई का संदेश दिया। बिहारवाले वहीं से वापस लौट गए। सीमा की दूसरी ओर बंगाल के लोग स्वागत करने आये। उन्होंने बाबा का जयघोष किया। उस समय बच्चों की बहुत भीड़ होने के कारण बाबा ने बच्चों का हाथ पकड़ लिया और बच्चों की दोनों ओर दो पंक्तियां बना दीं और फिर तो बाबा को ऐसा जोश आया कि बच्चों की तरह दौड़ने लगे। उस दिन करीब डेढ़ फर्लांग तक दौड़े। बाकी के पदयात्रियों को दौड़ने में पहले तो कुछ हिचकिचाहट हुई परन्तु फिर पीछे छूट जाने के डर से वे भी दौड़ने लगे।

इन तीन सप्ताहों में मुझे बहुत-कुछ सीखने को मिला। बाबा के प्रेम

१४

बाबा की वत्सलता

रजतकुमार

जब मैं चार-पांच साल का था तब से उस समय तक की पू. बाबा के साथ की बातें मुझे याद हैं। बाबा धाम नदी के किनारे परंधाम-आश्रम पवनार में रहते थे। हम लोग कई बार शाम को वहां जाते और आश्रम के अन्य साथियों की तरह रहट चलाते कुएं की खुदाई में सहायता करते। पू. बाबा स्वयं भी खुदाई तथा मेहनत के दूसरे काम करते थे। रोज शाम को नदी के किनारे कुंड में प्रार्थना होती थी। प्रार्थना एक गोल चक्कर में खड़े-खड़े ही होती।

१९५०-५१ में जिस दिन बाबा ने वर्धा से तेलंगाना की यात्रा के लिए प्रस्थान किया उस दिन का भी मुझे थोड़ा स्मरण है। सुबह के चार बजे होंगे। हम लोग जल्दी उठकर तैयार हुए और पवनार पहुंचे। वहांपर सब लोग जगे हुए थे और वहीं चलने के लिए तैयार थे। काफी भीड़ जमा थी। जब बाबा चलने को खड़े हुए तब मैंने और मेरे बड़े भाई भरत ने एक-एक एकड़ भूमि के रूप में दो जमीनें बाबा को भेंट कीं। तत्पश्चात् शायद एक-दो मील तक हम लोग उनके साथ पैदल भी गये।

उसके बाद हैदराबाद सर्वोदय-सम्मेलन और तेलंगाना की यात्रा में मैं कुछ दिन बाबा के साथ रहा।

लेकिन पू. बाबा के साथ मेरी पहली लंबी यात्रा बिहार और बंगाल में हुई। मैं बिहार में चनपटिया से उनके साथ हो गया था और बंगाल में बल-रामपुर तक रहा। मेरा बड़ा भाई भी साथ था। उस समय हम दोनों भाइयों की दिनचर्या बड़ी कठिन रहती थी। सुबह करीब तीन साढ़े-तीन बजे उठ जाते और बिस्तर बांधकर तैयार हो जाते। सर्दी के दिन थे इसलिए गरम कपड़े बहुत पहनने पड़ते थे। चार बजे सब बाबा के साथ चल पड़ते। बाबा इतने तेज चलते थे कि मुझे तो करीब-करीब भागना ही पड़ता था।

जिस दिन किसी भाई का हाथ न पकड़ता उस दिन मैं अवश्य पीछे छूट जाता और फिर मुझे भागकर भीड़ में से आगे का रास्ता मांगते हुए आगे जाना पड़ता था।

रास्ते में लोग बाबा का शंख-ध्वनि के साथ स्वागत करते थे। अगले पड़ाव पर पहुँचकर बाबा स्वागतार्थ आये हुए लोगों से दो शब्द कहते। हम लोग भी अपनी कापियों में दूसरे यात्रियों की देखा-देखी बाबा की कही हुई बातें जैसे-तैसे लिख लेते और बड़े प्रसन्न होते।

दिनभर हम पद-यात्री कार्यकर्ताओं के साथ खेलते और उनके काम में बाधा डालते रहते थे। उस कष्ट का बदला हम शाम को प्रार्थना-सभा के बाद 'गीता-प्रवचन' 'हमारी प्रार्थना' आदि बेचकर चुकाते। 'हमारी प्रार्थना—एक आना' 'गीता-प्रवचन—एक रुपया' आदि की आवाज लगाते और जब लोग हमसे पुस्तक खरीदते तो हमें बहुत खुशी होती।

इस तरह हमने बाबा के साथ झरिया देखा, वहां की कोयले की खानें देखीं, सिंदरी का कारखाना देखा, दामोदर नदी पार की, बंगाल में प्रवेश किया, बांकुड़ा जिले में जा मेदिनीपुर जिले में पहुंचे। श्री रामकृष्ण परमहंस के गांव विष्णुपुर में भी ठहरे। आगे खड़गपुर पहुंचे। वहां का रेलवे स्टेशन देखा।

बंगाल-प्रवेश का दृश्य मुझे अब भी अच्छी तरह याद है। बिहार के अन्तिम पड़ाव से जिस दिन बाबा चले उस दिन बिहार के लगभग १५ कार्यकर्ता और ग्रामीण भाई साथ हो गये थे। बिहार और बंगाल की सीमा पर बाबा कुछ देर रुके। बिहार के कार्यकर्ताओं से कुछ बातें कीं और उन्हें विदाई का संदेश दिया। बिहारवाले वहीं से वापस लौट गये। सीमा की दूसरी ओर बंगाल के लोग स्वागत करने आये। उन्होंने बाबा का जयघोष किया। इस समय बच्चों की कम भीड़ होने के कारण बाबा ने बच्चों का हाथ पकड़ लिया और बच्चों की दोनों ओर दो पंक्तियां बना दीं और फिर तो बाबा को ऐसा जोश आया कि बच्चों की तरह दौड़ने लगे। उस दिन करीब दस कदम तक दौड़े। बाबा के पदयात्रियों को दौड़ने में पहले तो कुछ हिचकिचाहट हुई परन्तु फिर पीछे छूट जाने के डर से वे भी दौड़ने लगे।

इन तीन महीनों में मुझे बहुत-कुछ सीखने को मिला। बाबा के साथ

भरे संदेश ने साम्यवादियों के क्रांतिकारी संदेश से अधिक असर दिखाया।

दो वर्ष बाद मुझे बाबा के पास रहने का फिर सुअवसर प्राप्त हुआ। गर्मी की छुट्टियां थी। बाबा पठानकोट में थे। मुझे पता था कि इस बार का अनुभव अपूर्व होगा क्योंकि जाने का मार्ग पहाड़ी था। पिछली यात्राओं में मैं इतना छोटा था कि अनुभवों का पूरा आनंद नहीं उठा पाया था।

काश्मीर प्रांत में प्रवेश करते ही हमारे नये अनुभव आरंभ हो गये। पहले पड़ाव लखनपुर में बाबा के हाथों से मेरे भाई भरत श्री देवदासजी गांधी के सबसे छोटे पुत्र गोपालकृष्ण और मेरा उपनयन संस्कार हुआ। हम तीनों को बाबा ने अपने हाथ से लिखकर मुण्डकोपनिषद् का एक मंत्र दिया

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येषआत्मा, सम्यक ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम् ।
अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषा ॥

इसके बाद उन्होंने अपने हाथ से हमें एक-एक जनेऊ दिया।

काश्मीर में बाबा की दिनचर्या बड़ी रोचक रहती थी। उठना तो नित्य की भांति सुबह तीन बजे ही होता। फिर प्रार्थना के बाद सब लोग अगले पड़ाव के लिए प्रस्थान करते थे। रास्ते में बाबा कुछ देर दूध और शहद लेने के लिए रुकते। काश्मीर प्रांत तो सुन्दर-सुन्दर वादियों से भरा पड़ा है। यद्यपि बाबा अभी ऊंचे हिमाच्छादित पर्वतों के पास नहीं पहुंचे थे तथापि छोटी-मोटी पहाड़ियों को हमें लांघना पड़ा। बाबा तो प्रकृति के प्रेमी हैं ही। बचपन में भी उन्हें अकेले ही वनों तथा पर्वतों में भटकने का शौक था। अतः जब कभी कोई सुंदर स्थान दीखता था तो बाबा रुक जाते और दस-पांच मिनट बैठे हुए उस स्थान की रमणीयता को निहारते। एक दिन रावी नदी के तट पर उसकी अलौकिक सुषमा से प्रभावित होकर वह ध्यानस्थ हो गये। उसी समय जलधारों के बारे में उन्होंने बहुत सुंदर ढंग से समझाया।

बाबा में बच्चों-जैसी साहसी वृत्ति भी कम नहीं है। कई बार बाबा जोश में आकर पर्वतीय स्थानों में पक्के रास्ते को छोड़कर पहाड़ पर चढ़ना शुरू कर देते थे। बाबा के साथी स्वयं डर जाते परंतु बाबा तनिक

भी नहीं घबराते और उसी उत्साह के साथ चलते जाते ।

अगले पड़ाव पर पहुंचने के बाद लगभग ग्यारह बजे कुरान शरीफ का पाठ बाबा स्वयं करते । बाबा को अरबी का ही नहीं बल्कि कई अन्य विदेशी भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान है । भारत की तो लगभग सभी भाषाएं वह अच्छी तरह जानते हैं । बाबा जिस प्रांत में जाते हैं, वहां की भाषा सीख लेते हैं । काश्मीर में उन्होंने एक माई से कश्मीरी सीखी । कश्मीर में प्रवेश करते ही बाबा ने कहा था कि कश्मीर में वह केवल देखने सुनने और प्यार पाने के लिए आये हैं, मांगने या बोलने के लिए नहीं । वह कहते थे प्रेम बिजली है विश्वास बटन । उसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए बाबा की पूरी यात्रा चलती रही । शाम की प्रार्थना-सभा में भी वह अधिक नहीं बोलते थे । अधिकतर तो वह स्थानीय लोगों को ही बुलाकर उनके दुख-दर्द सुनते गांव के बारे में जानकारी लेते और सलाह मांगी जाने पर सलाह देते । इस प्रकार उन्होंने लोगों के हृदयों में विश्वास उत्पन्न किया । फिर तो विश्वास का बटन दब जाने पर प्रेम की बिजली ने सबको चकाचौंध कर दिया । बिना मांगे ही लोगों ने उन्हें भूमि दी । बिना बुलाये ही पुराने बैरी बाबा के पास आये और अपने झगड़े निपटाकर हंसी-खुशी वापस लौटे । बिना कहे ही स्त्रियां और पुरुष स्वेच्छा से शांति-सैनिक बनने के लिए आगे बढ़े ।

भूदान और ग्रामदान का कार्य करते हुए भी अध्ययन और अध्यापन में बाबा को सबसे अधिक आनन्द आता है । इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि बालक-बालिकाओं के लिए उनके हृदय म अपार प्रेम हो ।

जम्मू में प्रार्थना-सभा थी । भीड़ में अधिकतर बच्चे ही थे । गर्मी के कारण बच्चे बेचैन थे और उनका ध्यान पूरी तरह बाबा की ओर न था । यह देखकर बाबा ने बच्चों से कहा कि वे अभी अपनी कमीज उतार दें जिससे गर्मी न लगे । सबसे पहले बाबा ने स्वयं अपना उत्तरीय उतारा । फिर एक लड़के ने हिम्मत की । धीरे-धीरे एक-दूसरे की देखा-देखी सभीने कमीजें उतार दीं और बाबा के कहने पर सब अपनी-अपनी कमीजें हवा में हिलाने लगे । बाबा ने खूब तालियां बजाई और नाचने लगे। तब लड़कों ने उनका अनुसरण किया ।

यह छोटी-सी घटना बाबा के वात्सल्य और प्रभाव को प्रदर्शित करती है।

विद्यार्थियों से सम्बन्धित एक और प्रसंग याद आता है। पिछले वर्ष मेरे स्कूल की कुछ बालिकाओं के उत्साह प्रदर्शित करने पर स्कूल की ओर से बाबा के पास जाने का कार्यक्रम निश्चित हुआ। बाबा उस समय दिल्ली से ४ मील की दूरी पर पिलाना नामक ग्राम में थे। कड़कती धूप में सब लोग एक बस में चले। वहां पहुंचकर हम सबका बाबा से परिचय कराया गया। हमारे साथ दो अंग्रेज नवयुवक भी थे जो कुछ महीनों के लिए भारत में अध्यापक की हैसियत से आये हुए थे। परिचय के बाद हम सबने उनका प्रार्थना-प्रवचन सुना जिसमें उन्होंने हम लोगों से बहुत रोचक प्रश्न पूछे। प्रवचन के बाद हम सब बालक-बालिकाओं ने पूरे गांव को घूम-कर देखा। शाम को बाबा की टोली के साथ ही सबने भोजन किया। रात को सब लोग गांव के ही एक घर में सोये। बड़े आश्चर्य की बात थी कि जो विद्यार्थी जिनका घर में बड़े ठाट-बाट से लालन-पोषण हुआ था एक गांव के टूटे-फूटे घर में जमीन पर एक चादर डालकर सोये।

अगले दिन सब लोग तड़के उठे और बाबा के साथ अपने पड़ाव के लिए चल पड़े। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे और चारों ओर शुभ्र चांदनी बिखेर रहे थे। चारों ओर सन्नाटा था। पौ फटने लगी। बाबा की प्रार्थना के स्वर ने सन्नाटे को भंग कर दिया। प्रार्थना शुरू हुई। जो प्रार्थना जानते थे वे प्रार्थना में शामिल हुए। प्रार्थना के बाद बाबा ने स्वयं अपने साथियों से पूछा "अरे, ये दिल्ली से कुछ बच्चे आये हैं न इन्हें हमने समय दिया है, वे आ जायं। एक-एक विद्यार्थी हिचकिचाता हुआ आगे बढ़ता और अस्फुट स्वर में अपना प्रश्न पूछता। बाबा प्रेम से उसका हाथ पकड़ लेते और बड़े सुन्दर ढंग से प्रश्न का उत्तर देते। विद्यार्थी की हिचकिचाहट भगी जाती और यदि उसे कोई और शंका होती तो उसे भी वह बाबा के सामने रख देता। सब विद्यार्थियों का पूर्ण समाधान हो गया। विद्यार्थियों ने सर्वोदय के विचार से लेकर आत्मा और परमात्मा तक के विषय में सवाल पूछे। बाबा को बड़ी प्रसन्नता हुई कि

दिल्ली में रहनेवाले विद्यार्थी भी ऐसे विषयों पर सोच सकते हैं।

अगले पड़ाव पर पहुँचकर स्वागत-सभा में दिल्ली के बच्चों की इस टोली का उल्लेख किया उनकी प्रशंसा की और अपना पूरा प्रवचन उन्हींको संबोधित करके दिया।

हम सब बहुत प्रसन्नचित्त से बाबा के अपार प्रेम और ज्ञान से प्रभावित होकर दिल्ली लौटे। वे सब विद्यार्थी अभी तक उस अनुभव को याद करते हैं और एक बार फिर से बाबा के दर्शन करने की इच्छा प्रकट करते हैं।

●

१५

एक बालक की निगाह में

शिशिर बजाज

भारत में कई संत हुए हैं—उनमें से एक हैं विनोबाजी। जैसे लोग गांधीजी को 'महात्मा' कहते थे वैसे ही विनोबाजी को 'संत' कहते हैं। कई लोग उन्हें 'बाबा' के नाम से भी पुकारते हैं।

मैं पू० बाबा से दो बार मिला हूं—एक बार आगरा में और दूसरी बार इन्दौर में। आगरा में तो मैं उनके साथ दो-एक घण्टे ही रहा लेकिन इंदौर में एक सप्ताह उनके साथ रहने का मौका मिला। इन्दौर में श्रीमन् बुआजी और दादीजी (श्रीमती जानकीदेवी बजाज) के साथ गया था। हम लोग कस्तूरबा ग्राम में विनोबाजी के साथ ही ठहरे थे। पहले दिन तो मेरा वहां रहने का मन नहीं हुआ क्योंकि मेरी उम्र का कोई साथी वहां था ही नहीं। लेकिन दूसरे-तीसरे दिन से मेरा मन लगने लगा। मैं रोज सुबह चार बजे की प्रार्थना में जाया करता। प्रार्थना के बाद विनोबाजी किसी खास विषय पर प्रवचन देते थे। प्रार्थना के बाद वह घूमने जाते और फिर लौट कर कुछ काम करते। शाम को पांच बजे बाबा गांव की एक टेकड़ी पर जाते जहां ढेर से लोग जमा होते। बाबा उनके सामने प्रवचन देते। फिर रात को आठ बजे प्रार्थना होती। इस तरह मैंने देखा बाबा हमेशा काम में ही लगे रहते हैं—थोड़ी भी फुरसत उन्हें नहीं मिलती।

शान्तिकुमारजी भी वहां आये हुए थे। जब उन्होंने अपने आपरेशन की बात बाबा से कही तो विनोद में बाबा ने कहा कि आजकल तो आपरेशन कराने का फैशन ही हो गया है।

इन तीन दिनों में मैंने यह भी देखा कि बाबा बहुत ही भावुक हैं। शान्तिकुमारजी ने एक पुस्तक बाबा को पढ़ने को दी। बाबा उस पुस्तक को पढ़ने लगे और पढ़ते-पढ़ते उनकी आंखों में आंसू आ गये।

जब भी मैं बाबा की बात करता हूं तो मुझे एक बात याद आ जाती है

जो मैंने कभी पढ़ी थी। जब बाबा छोटे थे तब एक दिन स्कूल से आते ही वह अपने सार्टिफिकेट जलाने लगे। उनकी मां ने उनसे कहा "विन्या तुम ये सार्टिफिकेट क्यों जला रहे हो? आगे चलकर ये तुम्हारे काम आयेंगे। विनोबाजी ने कहा "ये मेरे क्या काम आयेंगे? मुझे आगे कोई नौकरी तो करनी नहीं। अपने उद्देश्य की तरफ इतनी लगन कितने लोगों में दिखाई देती है?

इसी कमजोरी और ऊंची धोती पहने विनोबाजी भारत के गांव-गांव में घूमकर लोगों को प्रेम से रहने की शिक्षा देते हैं। वह चाहते हैं कि अमीर लोग गरीबों की मदद करें। वह जिस किसी गांव में जाते हैं वहां उनके आने की सूचना पन्द्रह-बीस दिन पहले दे दी जाती है। जब गांववालों को यह खबर मिलती है तो वे बहुत खुश होते हैं और उनके स्वागत का इन्तजाम शुरू कर देते हैं।

पेट में अलसर होने के कारण बाबा शहद और छाछ ही पीते हैं। डॉक्टरों ने उनसे कई बार कहा कि आप आपरेशन करवा लें नहीं तो यह और बढ़ जायगा। उन्होंने यह भी कहा कि हम आपका आपरेशन जीप में चलते-चलते ही कर देंगे ताकि आपकी यात्रा में देरी न हो परन्तु वह नहीं मानते। डॉक्टरों को तो आश्चर्य है कि वह इतना चल-फिर कैसे लेते हैं? विनोबाजी इसके उत्तर में कहते हैं "मैं रोज सुबह आसमान और हवा खाता हूं यह तुम्हारी दवाइयों से कहीं ज्यादा अच्छा है। उनका कहना है कि सुबह के समय आसमान से अमृत बरसता है इसलिए सबको उठकर कुछ देर घूमना चाहिए। बाबा के पास रहकर मुझे बहुत सीखने को मिला। मुझे लगा कि वह सादा जीवन बसर करते हैं। वह चरखा कातते हैं और खादी पहनते हैं। उन्हें पन्द्रह-बीस भाषाएं आती हैं लेकिन संस्कृत का ज्ञान सबसे अधिक है। बहुत लोगों को वह पढ़ाते भी हैं लेकिन बिना फीस के।

इन्दौर में मैं बाबा के साथ एक सप्ताह तक पैदल भी गया था और भी बहुत-से लोग साथ थे। बीच में एक जगह हम लोग रुके थे जहां बाबा ने प्रवचन दिया। बाबा के साथ मेरा एक चित्र भी है। मेरे पास 'गीता प्रवचन' की दो प्रतियां भी हैं जिन पर बाबा के हस्ताक्षर हैं।

●

परिशिष्ट

१
शेष पत्र

[पुस्तक छपने के बाद कुछ आवश्यक पत्र फाइलों में और मिले। उन्हें यहां दिया जा रहा है।]

१

विनोबा के पत्र जमनालाल बजाज के नाम

नालवाडी-आश्रम
२-८-१९

श्री जमनालालजी

साथ के सिद्दप्पा के पत्र को पढ़कर उसके विषय में अपनी राय लिखें और पत्र भी लौटा दें। मानप्पा सिर्फ नौकरीपेशा व्यक्ति नहीं बल्कि सार्वजनिक कार्य में रुचि रखनेवाले व्यक्ति हैं और नासिक के सार्वजनिक काम में कई वर्षों से (कम-अधिक) हिस्सा लेते आये हैं। ऐसी स्थिति में उनके लिए नासिक छोड़ना जहांतक संभव या उचित होगा यह सवाल उपस्थित होता है। मेरी राय में शायद यह उचित न होगा।

विनोबा के प्रणाम

२

नालवाडी वर्धा
५-१-१८

श्री जमनालालजी

साथ का पत्र जानकीबाई की इच्छानुसार आपके अवलोकनार्थ भेज रहा हूं। उसे लौटाने की आवश्यकता नहीं।

महादेवी के पत्र में मदालसा के स्वास्थ्य के संबंध में इस प्रकार उल्लेख है:

"मदालसा का वजन ही नहीं बढ़ता है। उसके बुखार को अब लगभग पौने तीन महीने होने आए, वह वैसी-की-वैसी है। अब वह उतना भी गई है।

उस दिन आपके कहने से मैं समझा था कि मदालसा का वजन बढ़ रहा है। वस्तुस्थिति क्या है?

विनोबा

३

जानकीदेवी का पत्र जमनालाल बजाज के नाम

पवनार, १८ ९ ४

पूज्य श्री

विनोबाजी वृक्षिका-खेत में दिये गए गीता के प्रवचनों का सुधार सुन्दर से कराते हैं। तब मुझे भी सुनने को मिल जाते हैं।

खाते समय रोज विनोबाजी थोड़ा-सा कहीं निकालते हैं तब स्पष्ट कहता है कि कुछ बातोंमें भी कि यह निकाल वह निकाल करोगे। तब विनोबाजी कहते हैं कि तेरे कहने से खाता तो आज तक पवनार में मेरी चिता (समाधि) बन जाती। मैंने कहा—यह तो आपकी रुचि ही है जो खाने का आग्रह करता है। खाने का मजा तो खानेवाले और खिलानेवाले में होड़ हुए बिना आ ही नहीं सकता।

जानकी का प्रणाम

४

विनोबा का पत्र कमलनयन बजाज के नाम

पड़ाव कुठ (धनी)
२५-११-५२

कमलनयन

दिवंगत किशोरलालभाई के स्मारक की जो बात सोचते हो तो वह तो ठीक है। लेकिन उसके लिए पैसे इकट्ठा करना मुझे नहीं जंचता। मैं मानता हूं कि किशोरलालभाई को भी न जंचता। पैसे तो गांधी-स्मारक के लिए इकट्ठे किये गए, वह भी मुझे अच्छा नहीं लगा था। लेकिन उस समय नेताओं ने जाहिर कर दिया और उसका विरोध करना बेकार था। उस समय किशोरलालभाई की भी मेरे-जैसी ही राय थी। लेकिन हम दोनों चुप रह गये। फिर भी जहां-तहां लोगों ने मुझसे सीधा सवाल उस बारे में पूछा वहां मैंने अपना मतभेद कह भी दिया।

यह बात तो हो गई। अब मैं चाहता हूं कि फिर से हम वैसी गलती न करें।

परन्तु किशोरलालभाई की स्मृति को शोभादायक हो ऐसा कोई स्मारक हमें सोचना चाहिए। उस बारे में अधिक सोचो। आखिर वह भूदान यज्ञ के विचार के साथ अत्यंत एकरूप हो गये थे उसका भी ख्याल रखना होगा। उस बारे में कुछ सूझे तो मुझसे मिलकर चर्चा करना बेहतर होगा।

मैं २९ ता. को रांची पहुंच रहा हूं। वहां विद्यार्थियों का सम्मेलन होने जा रहा है। वहां तो शायद नहीं पहुंच सकोगे और उतनी उतावली भी नहीं है।

विनोबा

५

विनोबा के पत्र रामकृष्ण बजाज के नाम

पड़ाव अकबरपुर, फैजाबाद
२८-४-५२

चि. रामकृष्ण

अब तो जमनालालजी का पत्र-व्यवहार पूरा ही छाप दो। मुझे मेरे मन के मुताबिक लिखने की फुर्सत अभी मिलनेवाली नहीं है। कहीं बारिश के दिनों में स्थिर बैठ जाऊंगा तब लिख सकूंगा। वैसे दो चार लकीरें लिख देने में सार नहीं है। जमनालालजी का मेरा संबंध या तो अव्यक्त सोहेगा या सुव्यक्त सोहेगा यथा-तथा व्यक्त नहीं सोहेगा। मेरी राय में पहला उत्तम है दूसरा मध्यम है तीसरा कनिष्ठ। कनिष्ठ पक्ष का आश्रय तो हमें लेना ही नहीं चाहिए।

सर्वोदय-सम्मेलन में सर्व-सेवा-संघ ने भूमि-दान का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। इसके बाद अब हममें से किसीको एक क्षण की भी फुर्सत लेने का अधिकार नहीं रहता। सर्वोदय का और बापूजी का चिंतन करने का काम सर्वोदय का समर्थन नहीं करता है बल्कि किया हुआ काम सर्वोदय को

विनोबाजी ने यह पत्र जमनालालजी का गांधीजी से हुआ पत्रव्यवहार 'पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद' पुस्तक की भूमिका लिखने की प्रार्थना किये जाने पर लिखा है।

समर्पित करता हूँ। तुम हो कमलनयन हैं मानाजी हैं सबके नाम मैं नहीं लेता हूँ और बहुत-से हैं हरेक को इस कार्य की रोज चिंता रहती है।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। लोग कहते हैं "देह दिन-ही-दिन दुबरी होई" लेकिन काम दिन-दिन अगर परिपुष्ट होता है तो कोई फिक्र नहीं है।

विनोबा

६[1]

ग्राम बैंगनाबाड़ा (असम)
१९.१.६२

रामकृष्ण

पत्र मिला। अखबार मैंने नहीं देखे थे। कमलनयन मिला तो था लेकिन उसने उस विषय में बात नहीं की थी। तुम्हारे पत्र और पत्रक से ही मालूम हुआ। दिल की बात पर कायम रहने की जो हिम्मत तुमने दिखाई, उससे मुझे खुशी हुई। तुम्हारी आजकल प्रवृत्ति क्या चल रही है, कभी फुरसत से मुझे लिखो।

विमला को आशीर्वाद।

बाबा के आशीर्वाद

---

[1]तीसरे आम चुनाव के अवसर पर एक व्यक्ति-विशेष की योग्यता के लिए कांग्रेस का टिकट दिये जाने से मतभेद होने के कारण रामकृष्ण बजाज ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया था। इस सिलसिले में उन्होंने विनोबाजी को एक पत्र लिखा था, जिसके साथ कांग्रेस के अध्यक्ष के नाम लिखे पत्र की प्रतिलिपि भेजते हुए अपनी मनःस्थिति प्रकट की थी। लिखा था, "मैं जानता नहीं हूँ कि इस बारे में आपकी क्या राय होगी लेकिन यह जरूर आत्म-विश्वास है कि यदि दिल में कोई बात जमती हो तो उसे सच्चाई से जाहिर करना और उसीपर चलना चाहिए, फिर वह गलत ही साबित क्यों न हो। यह बात जरूर स्वीकार करेंगे। इसी वजह से मुझे विश्वास है कि इस बारे में भी आपका आशीर्वाद मुझे प्राप्त होगा।" इसी पत्र के उत्तर में विनोबाजी ने उपरोक्त पत्र लिखा था।

१७ जून १९२३ नागपुर में गिरफ्तारी।

१ जुलाई, १९२३ डेढ़ वर्ष की कैद और तीन हजार रुपये के जुर्माने की सजा।

३ सितंबर, १९२३ नागपुर-जेल से रिहा।

१९२५ वरधा-संघ के कौपाध्यक्ष 'सस्ता साहित्य मण्डल' की स्थापना।

जनवरी १९२६ साबरमती-आश्रम में बापू की उपस्थिति में कमला-बाई का विवाह।

१९२६ अखाड़ा महासभा दिल्ली-अधिवेशन के सभापति।

१९२८ वर्धा का निजी लक्ष्मीनारायण-मंदिर हरिजनों के लिए खोल दिया।

१९२९ हिन्दी-प्रचार के लिए दक्षिण-यात्रा।

१९३ नमक-सत्याग्रह में विलेपार्ले छावनी की स्थापना।

७ अप्रैल १९३ गिरफ्तारी २ वर्ष की सख्त कैद और ३ रुपये जुर्माने की सजा।

२६ जनवरी १९३१ नासिक-जेल से रिहा।

१४ मार्च १९३२ बम्बई में गिरफ्तारी १ वर्ष का सपरिश्रम कारावास तथा ५) जुर्माने की सजा 'सी' वर्ग के कैदी।

१९ मार्च १९३२ बीसापुर-जेल में।

२५ मार्च १९३२ धुलिया-जेल में।

२६ नवम्बर, १९३२ यरवदा सेंट्रल जेल में।

२५ मार्च १९३३ यरवदा-मंदिर से बम्बई आर्थर रोड जेल में।

५ अप्रैल १९३३ बम्बई-जेल से रिहाई।

१९३४ बापू को वर्धा में बसाया।

१९३४ कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष।

१९३७ हिंदी साहित्य सम्मेलन मद्रास-अधिवेशन के सभापति।

१९३८ जयपुर राज्य प्रजा-मंडल के अध्यक्ष महर्षि रमण के साथ वार्तालाप योगिराज अरविंद के दर्शन।

२ दिसम्बर, १९३८ जयपुर-राज्य में प्रवेश-निषेध।

१ फरवरी १९३९ जयपुर-सरकार के हुक्म की अवज्ञा।

१२फरवरी १९३९ जयपुर-सत्याग्रह में गिरफ्तार।

९ अगस्त १९३९ जयपुर से रिहाई।

११सितंबर, १९४ वर्धा में गिरफ्तारी।

१ जून १९४१ नागपुर-जेल से रिहाई।

१९४१ मां आनन्दमयी में जगन्माता का साक्षात्कार।

२१सितंबर, १९४१ सेवाग्राम में बापूजी की सलाह से गो-सेवा के कार्य का निश्चय।

२२सितंबर, १९४१ गो-सेवा-संघ का कार्य शुरू किया।

१ सितंबर १९४१ बापूजी के हाथों गो-सेवा-संघ का उद्घाटन गोपुरी की स्थापना।

७ नवम्बर, १९४१ गोपुरी की कच्ची झोंपड़ी में रहना शुरू किया।

१ फरवरी १९४२ वर्धा में गो-सेवा-सम्मेलन गो-सेवा-संघ के सभापति।

११फरवरी १९४२ वर्धा में देहावसान।

१

संस्मरण-लेखकों का परिचय

जानकीदेवी बजाज (जन्म माघ वदी ५, संवत् १९४९—७ जनवरी १८ १)—श्री जमनालाल बजाज की धर्मपत्नी पद्म विभूषण।

राधाकृष्ण बजाज (जन्म श्रावण शुक्ल १ वि. सं. १९६२)—श्री जमनालाल बजाज के भतीजे, विनोबाजी द्वारा स्थापित 'ग्राम-सेवा मण्डल' और बापूजी द्वारा संस्थापित 'गो-सेवा-संघ' के प्रमुख कार्यकर्ता 'अखिल भारतीय सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन' के संचालक।

अनसूया बजाज (जन्म १ अप्रैल १९१८)—श्री राधाकृष्ण बजाज की पत्नी तथा स्व. श्री श्रीकृष्णदास जाजू की पुत्री।

कमला नेवटिया (जन्म २७ अगस्त १९११)—श्री जमनालाल बजाज की पहली पुत्री तथा श्री रामेश्वरप्रसाद नेवटिया की पत्नी।

कमलनयन बजाज (जन्म २३ जनवरी १९१५)—श्री जमनालाल बजाज के बड़े पुत्र, लोकसभा के सदस्य।

श्रीमन्नारायण (जन्म १५ जून १९१२)—श्री जमनालाल बजाज के दामाद, योजना-आयोग के सदस्य।

मदालसा (जन्म जुलाई, १९१७)—श्री जमनालाल बजाज की दूसरी पुत्री तथा श्री श्रीमन्नारायण की पत्नी।

उमा अग्रवाल (जन्म १२ अगस्त १९१९)—श्री जमनालाल बजाज की तीसरी पुत्री तथा श्री राजनारायण अग्रवाल की पत्नी।

रामकृष्ण बजाज (जन्म २२ सितंबर, १९२८)—श्री जमनालाल बजाज के दूसरे पुत्र, 'वर्ल्ड असेम्बली आफ यूथ' की भारतीय समिति अध्यक्ष।

विमला बजाज (जन्म १ अप्रैल १९२१)—श्री रामकृष्ण बजाज की पत्नी तथा कलकत्ता के श्री लक्ष्मणप्रसाद पोद्दार की तीसरी पुत्री।

सुमन जैन (जन्म ७ अगस्त १९३९)—श्री कमलनयन बजाज की पुत्री।

शरत्कुमार (जन्म ३ अक्तूबर १९४१)—श्री श्रीमन्नारायण के पहले पुत्र।

सविता अग्रवाल (जन्म १८ फरवरी १९४५)—श्री रामनारायण अग्रवाल की पहली पुत्री।

रमणकुमार (जन्म ३ नवम्बर, १९४५)—श्री श्रीमन्नारायण के दूसरे पुत्र।

शिशिर बजाज (जन्म १ दिसंबर, १९४७)—श्री कमलनयन बजाज के दूसरे पुत्र।

●